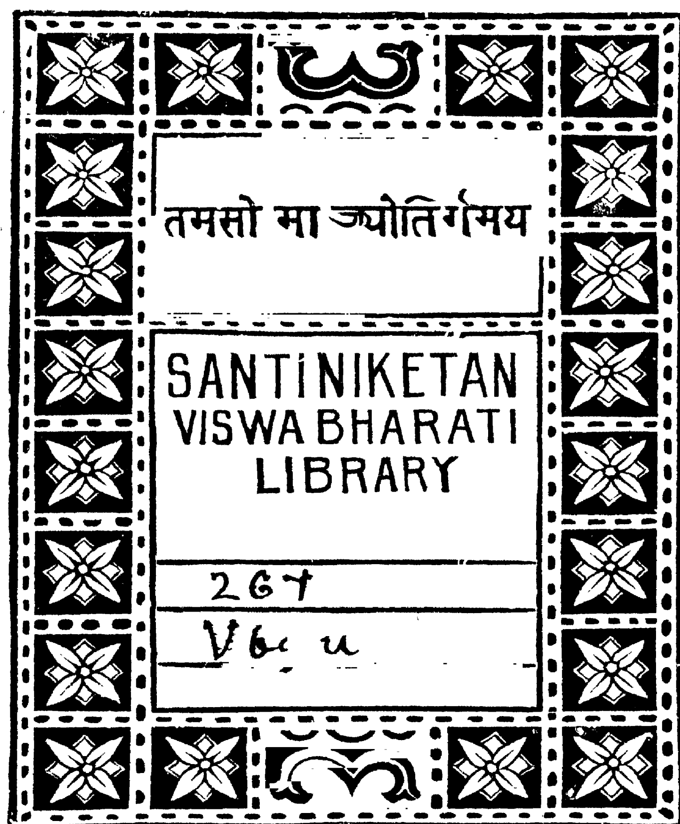
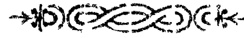

तमसो मा ज्योतिर्गमय
SANTINIKETAN
VISWABHARATI
LIBRARY
267
V6c u

श्री विजयलक्ष्मी सूरि महाराज विरचित

श्री

उपदेशप्रासाद भाषांतर.

भाग २ जो.



स्थंभ ५–६–७–८–९

व्याख्यान ६२ थी १३५.



पांच अणुव्रत तथा त्रण गुणव्रतोनुं स्वरूप

अनेक कथाओ युक्त

श्रावकवर्गने माटे खास उपयोगी

संस्कृत गद्यपद्यात्मक अने भाषान्तर गुजरातीमां

प्रसिद्धकर्त्ता

श्री जैनधर्म प्रसारक सभा—भावनगर.



आवृत्ति बीजी



धी 'आनंद' प्रीन्टींग प्रेसमां शाह गुलाबचंद लल्लुभाइए छाप्युं—भावनगर.



विक्रम संवत १९७८, वीर संवत २४४८



मूल्य रु. २–०–०

प्रथमावृत्तिनी प्रस्तावना.



आ उपदेशप्रासादग्रंथना पहेला भागनी अंदर आपेली प्रस्तावना उपरथी वांचकवर्गने विदित थयुं छे के, आ ग्रंथ श्री विजयलक्ष्मीसूरीए भव्यजीवोना हितने माटे रच्यो छे. तेने एक प्रासाद-मकान-महेलनी उपमा आपीने तेना २४ स्थंभ ठराव्या छे. ते दरेक स्थंभमां प्राये १५-१५ व्याख्यानो छे. एकंदर आखा ग्रंथमां वर्षना दिवसो जेटला एटले ३६० व्याख्यानो छे. जेथी आखा वर्ष माटे सतत वांचवा योग्य आ ग्रंथ छे. आ ग्रंथ संस्कृत गद्यपद्यात्मक सरल भाषामां रचेलो छे. पद्यभाग तो मात्र प्रासांगीकज छे.

आ ग्रंथना मुख्य त्रण खंड पाडेला छे. प्रथम खंडमां सम्यक्त्वनुं स्वरूप, बीजा खंडमां देश विरतिनुं स्वरूप ने त्रीजा खंडमां सर्वविरतिनुं स्वरूप छे. प्रथम भागमां प्रथम खंड पूरो आपेलो छे, परंतु बीजो खंड ते करतां लगभग डबल होवाथी आ विभागमां संपूर्ण आपी शक्या नथी. आ विभागमां पांचमाथी नवमा सुधी पांच स्थंभ आपेला छे. तेमां कुल ७४ व्याख्यान छे अने पांच अणुव्रत तथा त्रण गुणव्रतनुं स्वरूप आपेलुं छे.

पांचमा स्थंभमां ६२ थी ७४ सुधी (१३) व्याख्यानो छे. तेमां प्रथम व्रतनुं स्वरूप आपेलुं छे. छठ्ठा स्थंभमां ७५ थी ९० सुधी (१६) व्याख्यानो छे. तेमां बीजा त्रीजा, ने चोथा व्रतनुं स्वरूप आपेलुं छे. सातमा स्थंभमां ९१ थी १०५ सुधी (१५) व्याख्यानो छे. तेमां चोथा व्रतसंबंधीज विशेष स्वरूप आपेलुं छे. आठमा स्थंभमां १०५ थी १२० सुधी (१५) व्याख्यानो छे. तेमां पांचमा, छठ्ठा ने सातमा व्रतनुं स्वरूप आपेलुं छे. नवमा स्थंभमां १२१ थी १३५ सुधी (१५) व्याख्यानो छे. तेमां सातमा व्रतनुं शेष स्वरूप तथा आठमा व्रतनुं स्वरूप आपेलुं छे. एकंदर ७४ व्याख्यानोमां पहेला व्रतना १३, बीजा व्रतना ५, त्रीजा व्रतना ५, चोथा व्रतना २१, पांचमा व्रतना ४, छठ्ठा व्रतना ४, सातमा व्रतना १७, अने आठमा व्रतना ५ व्याख्यानो छे.

आ ग्रंथमां दरेक व्रतनुं स्वरूप एटलुं बधुं स्पष्ट समजाव्युं छे के बाळबुद्धिवान् पण सहेजे समजी शके तेम छे. ते साथे दरेक वांचनारने आनंद उत्पन्न थाय तेम छे. चोथा व्रतने बहु विस्तारथी वर्णव्युं छे. सातमा व्रतमां बावीश अभक्ष्य तथा पंदर कर्मादानोनुं स्वरूप बहु सारी रीते समजाव्युं छे. ते साथे शुद्ध व्यवहार अथवा शुद्ध व्यापारने माटे जे समजुती सविस्तर आपी छे ते परिपूर्ण उपयोगी छे; तेने माटे असे दरेक जैनबंधुओने ते भाग खास लक्षपूर्वक वांचवानी भलामण करीए छीए. आठमा व्रतमां प्रमादाचरण अनेक प्रकारना समजाव्या छे ते पण ध्यानमां लेवा लायक छे. १०४ मा व्याख्यानमां चोमासी कृत्यो बताव्या छे. अशाड चतुर्मासना प्रारंभमां अवश्य ए व्याख्यान वांचवा योग्य छे.

आ ग्रंथमां चरणकरणानुयोग साथे धर्मकथानुयोग पण एटलो बधो दाखल करेलो छे के, बंने प्रकारना जीज्ञासुओना दिल तृप्त थइ शके तेम छे. दरेक व्याख्यानमां एक कथा तो छेज पण केटलाकमां एकथी वधारे छे. एकंदर आ पांच स्थंभमां १०० उपरांत कथाओ, दृष्टांतो ने प्रबंधो छे. ते विषे विशेष वर्णन लखी वांचकवर्गने न रोकतां अनुक्रमणिका वांचीजवानीज खास भलामण करीए छीए; जेथी आ विभागनुं रहस्यं तरतज ध्यानमां आवशे.

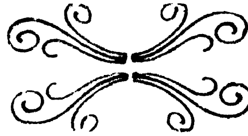
आ ग्रंथनी प्रतिओ प्राये टबावाळीज मळे छे; परंतु तेनुं मूळ ने टबो एटलो बधो अशुद्ध देखाय छे के तेनुं भाषांतर करवामां पूरा अनुभवीनीज आवश्यकता छे. आ भाषांतर शास्त्री पासे कराव्या बाद अमल प्रति साथे मेळवीने तेने एटलुं बधुं दुरस्त करवामां आव्युं छे के बनता सुधी भूल रहेवा दीधी नथी. ते छतां मतिदोषथी अथवा दृष्टिदोषथी कांइ भूल रही गयेली जणाय तो तेने माटे अमारी तरफ लखी मोकलवा कृपा करवी, जेथी तेने सुधारवानो योग्य उपाय थइ शके.

हवे पछीना त्रीजा विभागमां देशविरतिनुं स्वरूप संपूर्ण आवशे. एटले के १० माथी १४ मा सुधी पांच स्थंभोनुं भाषांतर आपवामां आवशे. प्रयास विगेरेना प्रमाणमां किंमत वास्तविक राखेली होवाथी जैनबंधुओ विशेष लाभ लेशे एवी आशा छे. तेमज बाकीना विभागो पण बनती ताकीदे बहार पाडवानी इच्छा वर्त्ते छे.

ग्रंथकर्त्ताए खास उपयोगी जाणीने दाखल करेला स्वमत परमतना श्लोको तथा गाथाओ पहेला विभागमां परता दाखल करेला नहीं: परंतु आ विभागमां दरेक श्लोक दाखल करीने तेनी नीचे तेना अर्थ पण आपेला छे. एम करवाथी आ ग्रंथनी उपयोगीता वधारी छे.

ग्रंथकर्त्तांना चरित्रने माटे शोध चाले छे. मळी शकशे एटले हवे पछीना विभागमां प्रगट करीशुं.

माघ शुदि १५ संवत् १९६०	}	श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा—भावनगर. चीमनलाल सांकळचंद मारफतीया—मुंबइ.



बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.



आ विभागनी आ बीजी आवृत्ति १८ वर्षे करवामां आवी छे. आपणा वर्गमां वांचननो शोख केवो छे ? तेनुं आ प्रत्यक्ष दृष्टांत छे. आ बुकनी अंदर जे ग्रंथ आपेल छे ते कथाओ साथे बोध आपनार होवाथी बहुज उपयोगी छे. दरेक व्रतनुं स्वरूप बहु सारी रीते आप्युं छे. अभक्ष्योनुं—कर्मादाननुं-चौद नियमनुं-चार प्रकारना अनर्थदंडनुं स्वरूप बहु स्पष्टताथी आपेलुं छे. खास वांचवा लायक छे. प्रथमावृत्ति करतां आमां कांइ फेरफार करवामां आव्यो नथी. फेरफार मात्र प्रसिद्धकर्त्ताना संबंधमांज थयेलो छे. ते सिवाय कांइक शुद्धतामां विशेषपणुं थयुं हशे. तेनी खरी खात्री तो वांचनार साक्षी आपे त्यारे थाय. अमे तो कांइपण अशुद्धि रही गइ होय तेने माटे क्षमा याचना करी वीरमीए छीए अने आशा राखीए छीए के आ ग्रंथनो लाभ घणा बंधुओ लेशे.

फाल्गुन शुदि १५
संवत १९७८.

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा,
भावनगर.



विषयानुक्रमणिका.



स्थंभ ५ मो—पृष्ट १ थी ६१

व्याख्यान ६२ थी ७४

(प्रथम व्रत).

स्थंभ ६ ट्टो. पृष्ठ ६२ थी १२४

व्याख्यान ७५ थी ९०

(बीजा, त्रीजा, चोथा अणुव्रत विषे).

स्थंभ ७ मो पृष्ठ ११५ थी १८६

व्याख्यान ९१ थी १०५

चोथा व्रतनुं विशेष स्वरूप

स्थंभ ८ मो पृष्ट १८७थी २४१

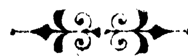
व्याख्यान १०६ थी १२०

(पांचमा, छट्टा सातमा व्रतनुं स्वरूप)

स्थंभ ९ मो. पृष्ठ २४२ थी ३०४

व्याख्यान १२१ थी १३५

सातमा तथा आठमा व्रतनुं स्वरूप.



॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर ॥

भाग २ जो.

स्तंभ ५ मो.

व्याख्यान ६२ मुं.

प्रथम खंडमां समकित संबंधी वर्णन कर्युं, ते तत्त्व जाणवाथी प्राप्त थाय छे, अने ते सम्यक् श्रद्धानरूप समकित जेने होय छे तेने प्राये व्रत पण प्राप्त थाय छे, ए संबंधथी आवेलो व्रतो संबंधी अधिकार आ बीजा खंडमां कहेवामां आवशे.

अणुव्रतानि पंचैव । गुणानां च व्रतत्रिकम् ॥
शिक्षाव्रतानि चत्वारि । द्वादशैते भिदा मिताः ॥१॥

व्याख्या.

'पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत—ए प्रमाणे व्रतना बार भेद छे.' तेमां पांच अणुव्रतोमां पहेलुं अणुव्रत **स्थूल जीवोनी हिंसानुं निवारण** ते गृही श्रावकोए द्विविध त्रिविध भांगाए ग्रहण करवुं. 'स्थूल जीव' ए शब्दथी द्वींद्रियादि त्रस जीवो ग्रहण करवा. आदिशब्दथी निरर्थक स्थावर जीवोनी पण हिंसा द्विविध त्रिविधे न करवी. ते प्रथम अणुव्रत गृहस्थ श्रावकोए हर्षथी ग्रहण करवुं. ते द्विविध त्रिविधनुं स्वरूप आ प्रमाणे छेः—स्थूल जीवोनी हिंसा करवी नहिं अने करावची नहीं ए द्विविध, अने मन वचन कायाए करवी नहीं अने करावची नहीं ए द्विविध त्रिविध. आदिशब्दथी एकविध एकविध पण थाय छे. अहिं हिंसादिकनी विरति करे छे, ते स्थूल जीवनी हिंसा मन वचन कायाए करता नथी अने करावता नथी, पण तेने अनुमोदनानो प्रतिषेध नथी; कारणके गृहस्थने संतान विगेरे परिग्रह होय छे तेथी तेने अनुमोदनानो संभव छे. अहिं कोई शंका करे के, श्रीभगवतीसूत्रमां गृहस्थने पण 'त्रिविधं त्रिविधेन' एटले त्रिविध त्रिविध प्रत्याख्यान कहेल छे. ते कथन आगमोक्त

होवाथी निर्दोष होवुं जोईए, माटे ते प्रमाणे अहीं केम नथी कहेता? तेना प्रत्युत्तरमां गुरु कहे छे के, ते प्रमाणे त्रिविध त्रिविध भंगनुं अविशेषपणुं छे, एटले अल्प ठेकाणे तेमनुं व्यापकपणुं छे. ते आ प्रमाणेः–जे पुरुष तरतमां दीक्षा लेवाने इच्छतो होय ते अथवा जे अंत्य समुद्रमां रहेला मत्स्यादिकना मांसनुं पच्चक्खाण करे के खास धारीने कोई अमुक प्रकारनी (बीलकुल अगवड विनानी) स्थूल जीवहिंसाथी विरति करे ते 'त्रिविधं त्रिविधेन' एम उच्चरीने नियम ग्रहण करे, पण घणुंकरीने 'द्विविध त्रिविध' भांगे ग्रहण करे. एमां आदिशब्द लीधेलो छे, तेथी 'द्विविध द्विविध' ए बीजो भांगो; 'द्विविध एकविध' ए त्रीजो भांगो. 'एकविध त्रिविध' ए चोथो भांगो. 'एकविध द्विविध' ए पांचमो भांगो अने 'एकविध एकविध' ए छठ्ठो भांगो. एम छ भांगा पहेला अणुव्रतमां कहेला छे. तेवी रीते बीजा व्रतोमां पण छ भांगा जाणी लेवा. पहेला व्रतना जे छ भांगा कर्या तेने साते गुणीने तेमां छ उमेरवाथी अडतालीश भांगा थाय छे. तेवी रीते आगळना व्रतोना पण थाय छे. एम बारमा व्रतसुधी जाणी लेवा. एकंदर एक संयोगी, द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी, एम बारे व्रतना परस्पर संयोगी भांगा करतां सर्व भांगानी संख्या तेरशें ने चोराशी कोटी, बार लाख, सत्याशी हजार अने बसोनी थाय छे. अहींयां आ विषे घणुं जाणवानुं छे ते "श्रावक व्रतभंग प्रकरण" तथा "धर्मरत्न" विगेरे ग्रंथोथी जाणी लेवुं.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, "जे मुनिओ गृहस्थ तथा राजादिकना अभियोग (आगार) विना स्थूल प्राणीओनी हिंसाथीज निवृत्ति करावे तेमने स्थावर जीवोनी हिंसा संबंधी अनुमतिनो दोष लागे अने तेथी मुनिओने सर्वविरतिपणानी हानिनो प्रसंग आवे, अने गृही श्रावकोने ए प्रकारे पच्चक्खाण करतां पोतानी करेली प्रतिज्ञामां अतिचार प्राप्त थाय; केमके जे स्थावर जीव छे ते त्रसपणे उत्पन्न थाय छे अने त्रस जीव स्थावरपणे उत्पन्न थाय छे, तो करेलो नियम न सचवायाथी तेमनी प्रतिज्ञानो भंग थाय छे. जेमके कोईए **नगरना वासी जनने मारी नाखवो नहीं*** एवी जे काळे प्रतिज्ञा करी ते काळे जे कोई नगरमां होय अने पछी उद्यानमां जाय ते माणसने नगरवासी नहीं गणीने जो ते हणी नाखे तो तेने प्रतिज्ञा भंग कर्यानो दोष केम नहीं लागे? एम श्रावके त्रसपणामां रहेला जीवने मारवानी निवृत्ति करी, पण ज्यारे ते जीव

---

* अहिं नगरमां होय तेने न मारवो, पण उद्यानमां होय तेने मारवानी छुट एवो अर्थ नीकळे छे

स्थावरपणाने प्राप्त थयो, त्यारे तेने मारवाथी तो उपर प्रमाणे दोष केम न लागे ? अवश्य लागवो जोईए. तेथी पच्चक्खाण करनार अने करावनार बंनेनी प्रतिज्ञानो लोप थाय छे." तेना प्रत्युत्तरमां गुरु कहे छे-"अरे शिष्य! तने आ शो व्यामोह थयो छे के जेथी आवो अणसमज भरेलो पक्ष करे छे. गृही श्रावको ज्यारे साधु पासे व्रत लेवा आवे छे, त्यारे ते कहे छे के 'हे मुनिवर्य ! अमे अणगारपणुं (साधुपणुं) लेवाने शक्तिमान् नथी, पण अमे निरपराधी त्रसकाय जीवनो बध करवानुं पच्चक्खाण पाळवाने शक्तिमान् छीए.' आवी धारणा करीने तेओ व्रत ले छे, तेथी तेमनी प्रतिज्ञानो भंग थतो नथी. वळी तेओ रायाभियोगेणं विगेरे छ छींडीओ सहित व्रत अंगिकार करे छे, तेथी राजादिकना अभियोगथी कदी त्रस जीवनो वध करवो पडे, तोपण तेमना व्रतनो भंग थतो नथी." आ संबंधमां एक कथा छे ते आ प्रमाणे—

गृहस्थने अणुव्रत ग्रहण करावतां साधुने स्थावर जीवोनी हिंसानी अनुमोदना लागती नथी ते उपर कथा.

रत्नपुर नामना नगरमां **रत्नशेखर** नामे राजा हतो. एक दिवस तेणे पोताना अंतःपुरनी स्त्रीओने अने नगरना लोकोने स्वेच्छाए क्रीडा करवाने माटे कौमुदी महोत्सव करवानी आज्ञा आपी; अने नगरमां एवी आघोषणा करावी के, 'राजा विगेरे सर्व पुरुषोए उद्यानमां आववुं, कोईए नगरमां न रहेवुं.' आथी सर्वेए तेम कर्युं. ए वखते एक वणिकना छ पुत्रो क्रयविक्रय विगेरे व्यापारमां व्यग्र होवाथी नगरमांज रही गया अने राजसेवकोए शहेरना दरवाजा बंध करी दीधा. बधा नीकळी गया पछी राजाए पुररक्षकोने कह्युं के, 'तपास करो के नगरमां कोइ पुरुष छे के नहीं ?' तपास करतां ते छ वणिकपुत्र तेमना जोवामां आव्या, तेथी तेमने दोरडावडे बांधीने रक्षको राजा पासे लाव्या. राजाए कोप करीने तेमनो वध करवानी आज्ञा करी. कह्युं छे के,—

आज्ञाभंगो नरेंद्राणां । महतां मानमर्दनम् ॥
मर्मवाक्यं च लोकाना-मशस्त्रवध उच्यते ॥ १ ॥

" राजाओने आज्ञानो भंग, मोटा लोकोने अपमान, अने लोकोने मर्मवचन ते शस्त्र वगरनो वध कहेवाय छे."

राजाए करेला हुकमनी वात सांभळीने शेठ कहेवा लाग्या के, 'हे देव ! मारा कुळनो क्षय करो नहीं. मारुं सर्व धन लई ल्यो, पण मारा पुत्रोने छोडी मूको.' तथापि राजाए कोई रीते तेमने छोड्या नहीं. पछी पिताए सर्वनो घात थतो जोई तेमांथी पांच पुत्रोने छोडवानी प्रार्थना करी, राजाए तेम पण कर्युं नहीं. पछी चार पुत्रोने माटे मागणी करी, तो पण राजाए मान्युं नहीं. पछी त्रण, बे अने छेवटे एक पुत्रने छोडवानी प्रार्थना करी. ते वखते सर्व नगरजनोए पण विज्ञप्ति करी एटले राजाए सर्वथी ज्येष्ठ पुत्रने छोडी दीधो.

आ दृष्टांतनी योजना एवी छे के, 'राजा ते समकितधारी गृहस्थ श्रावक छे. ते सर्वथा प्राणातिपातनो त्याग करवाने (छ पुत्रोने छोडाववाने) अशक्त छे, तेने छ काय जीवना पितारूप साधुए ते छोडवानी प्रेरणा करी तोपण सर्वविरति करवाने ते अंगीकार करतो नथी. ए पितारूप मुनि छकाय हिंसाथी विरति कराववा इच्छे छे, पण राजारूप श्रावक तेने छोडी देवा अशक्त छे. छेवटे एक ज्येष्ठपुत्ररूप त्रसकायवध (स्थूल हिंसा) छोडी शके छे, एटले स्थूल हिंसानी विरति ग्रहण करे छे अने ते प्रमाणे पाळे छे. तेथी पितारूप साधु पोताना आत्माने कृतार्थ माने छे.' जेम ते शेठनी कांई पांच पुत्रोने मारवामां अनुज्ञा नथी, तेम साधुने पण पांच स्थावरोनी हिंसामां अनुमति लागती नथी, पण श्रावक व्रत लईने जेटलो संकल्पवडे स्थूळ जीवोना वधमांथी निवृत्त थाय छे, तेटलाना निमित्त कारण थवाथी ते मुनिने उलटो कुशलानुबंध (पुन्यबंध) थाय छे.

हवे त्रसजीव एटले द्वींद्रियादि जीवो लेवा. ज्यारे त्रसजीवनुं आयुष्य क्षीण थाय, तेमज त्रसपणानी कायस्थिति पण क्षीण थाय, त्यारे (ते कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्टी बे हजार सागरोपमनी छे.) ते त्रससंबंधी आयुष्य पूर्ण करी तेमज बीजा पण त्रस जीवोना कर्मनो त्याग करी एटले त्रसपणुं त्यजी स्थावरपणामां पाछा आवे छे. तेमज जे स्थावर छे ते स्थावरपणानुं आयुष्य पूरुं करीने अने स्थावरपणानी कायस्थिति पण पूर्ण करीने (स्थावरनी कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्टी अनंत काळनी छे. तेमां असंख्य पुद्गल परावर्त्त थई जाय छे.) ते पछी स्थावरपणानी कायस्थितिनो अभाव छे तेथी सामर्थ्यने लीधे ते त्रसपणामां पाछा अवतरे छे. ते त्रसपणामां प्रत्येक विगेरे नामकर्मथी युक्त थाय छे. त्रसपणामां उत्कृष्टी भवस्थिति तेत्रीश सागरोपमनी छे. ए उपरथी स्थावरोथी त्रसनुं जूदापणुं सिद्ध थाय छे अने एथीज श्रावकोए त्रसजीवोनी हिंसाथी निवृत्ति करेली छे, स्थावरहिंसाथी निवृत्ति करेली नथी. वळी आ ठेकाणे नागरिकनुं दृष्टांत पण घटतुं नथी, कारणके जेनामां

नगरना धर्म होय ते बहार उद्यानमां रह्यो होय तोपण नागरिक ज छे, ते कदि नगरना धर्मनो त्याग करतो नथी; पण जो नगरधर्मनो सर्वथा त्याग करे तो ते नागरिकज न कहेवाय, ते जूदोज कहेवाय छे, तेम अहिं त्रस जीव पण ज्यारे स्थावरपणाने पामे छे, त्यारे ते जूदोज कहेवाय छे, तेथी कदि कोई कारणे तेनी हिंसा थाय तो तेथी करी गृही श्रावकने व्रतनो भंग थतो नथी. एथी हे शिष्य! तारो पक्ष अयुक्त छे. आ विषे विशेष जाणवुं होय तो श्रीसूयगडांग सूत्रनी दीपिकामांथी जाणी लेवुं. आ व्रत कुमारपाळे मुख्य भांगाथी स्वीकार्युं हतुं, तेनो अधिकार आ प्रमाणे छे—

(प्रथम अणुव्रत पर कुमारपाळनी कथा.)

धर्मो जीवदयातुल्यो । न क्वापि जगतीतले ॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । कार्या जीवदया नृभिः ॥१॥
गोपो बब्बूलशूल्यग्रे । प्रोतयूकोऽथ पातकात् ॥
अष्टोत्तरशतवारान् । शूलिकारोपणान्मृतः ॥२॥

एक वखते पाटण नगरमां श्रीहेमचंद्राचार्ये राजसभामां कह्युं के, "आ पृथ्वी उपर जीवदया जेवो बीजो कोई धर्म नथी, तेथी मनुष्योए सर्व प्रयत्नथी जीवदया पाळवी. कोई एक गोपे बावळनी शूली उपर जू परोवी हती ते पापवडे ते एकसो ने आठवार शूली उपर चढीने मृत्यु पाम्यो हतो." केटलाएक लोको कहे छे के, "जे स्थाने गायो तृषा रहित थाय तेवा नवाण करावनार पोताना सात कुळने तारे छे, तेथी सर्व प्रयत्नवडे पृथ्वी उपर जलाशयो कराववा." अहिं गायोने पाणी पावामां जे दया कही छे ते अन्य मत प्रमाणे समजवी, कारणके जलाशय कराववाथी पृथ्वीकाय जीवोनी, अप्काय जीवोनी अने पूरा विगेरे अनेक त्रस जीवोनी पण हिंसा थाय छे."

आ प्रमाणे श्रीहेमचंद्राचार्यनो उपदेश सांभळी कुमारपाळे प्राणातिपात विरमण व्रत लई पोताना अढार देशोमां अमारी पळावी तथा बीजा देशोमां मैत्रीवडे तेमज बळवडे अमारी पळावी. वळी पोताना अढार लाख घोडा, अग्यारसो हाथी, एंशी हजार गायो अने पचास हजार उंटोने गळीने जळपान कराववानी गोठवण करी.

एक वखते कुमारपाळ राजा कायोत्सर्गे उभा रहेल तेवामां पगे मंकोडो चोंट्यो. ते वखते पासेना सेवकोए तेने उखेडवा मांड्यो. पण राजाए मंकोडाने

व्याकुलता थती जोइ, एटले तीक्ष्ण कातरवडे पोतानी त्वचा उखेडी मंकोडाने दूर कर्यो. वळी तेणे एवो नियम लीधो के, 'वर्षाऋतुना चार महीना पोताना नगरना दरवाजा बहार जवुं नहीं.'

एक वखते आचार्ये कुमारपाळने जळने गळी पीवा विषे पुराणमांहेना श्लोको आ प्रमाणेना कही संभळाव्या:—

त्रैलोक्यमखिलं दत्वा । यत्पुण्यं वेदपारगे ॥
ततः कोटीगुणं पुण्यं । वस्त्रपूतेन वारिणा ॥१॥
ग्रामाणां सप्तके दग्धे । यत्पापं जायते किल ॥
तत्पापं जायते राजन् । नीरस्यागलिते घटे ॥२॥
संवत्सरेण यत्पापं । कैवर्तस्येह जायते ॥
एकाहेन तदाप्नोति । अपूतजलसंग्रही ॥३॥
यः कुर्यात् सर्वकार्याणि । वस्त्रपूतेन वारिणा ॥
स मुनिः स महासाधुः । स योगी स महाव्रती ॥४॥
म्रियंते मिष्टतोयेन । पूतराः क्षारसंभवाः ॥
क्षारतोयेन मिष्टानां । न कुर्यात् संकुलं ततः ॥५॥

"वेदना पारंगत ब्राह्मणने समग्र त्रण लोक आपवाथी जेटलुं पुण्य थाय छे, तेनाथी कोटीगुण पुण्य वस्त्रवडे गळीने पाणी पीवाथी थाय छे. वळी सात गाम बाळवाथी जेटलुं पाप थाय छे, तेटलुं पाप अणगळ पाणीनो घडो वापरवाथी थाय छे. मच्छीमारने एक वर्षमां जेटलुं पाप लागे छे, तेटलुं पाप गळ्या वगरना जलने संग्रही राखनारने एक दिवसमां लागे छे. जे गळेला जळथी सर्व कार्य करे, ते मुनि, ते महासाधु, ते योगी अने ते महाव्रती कहेवाय छे. खारा पाणीना उत्पन्न थयेला पूरा मीठा पाणीमां मरी जाय छे अने मीठा पाणीना पूरा खारा पाणीथी मरी जाय छे, तेथी खारुं अने मीठुं पाणी एकठुं करवुं नहीं."

आवा पुराणना श्लोको सांभळीने कुमारपाळे ते श्लोको लखावी तेना पत्र लइ लइने पोताना सेवकोने पोताना राज्यमां दरेक शहेर शहेर अने गामे गाम जीवदयाने माटे मोकलाव्या. वळी राजा कुमारपाळे जीवदयाने माटे गुप्त बातमीदारोने राख्या हता के "कोई हिंसा करे छे के नहीं ?" तेओ गुप्त रीते तेना विशाळ राज्यमां सर्वत्र फरता हता. एक वखते एवुं बन्युं के, कोई गाममां

'महेश्वर' नामना कोई वणिकना केशमांथी तेनी स्त्रीए एक जु काढीने ते श्रेष्ठीना हाथमां मूकी, एटले ते महेश्वर शेठे तेने मारी नाखी. ते राजाना गुप्त चरोना जोवामां आव्युं तेथी तत्काळ ते श्रेष्ठीने जुना कलेवर साथे पकडीने पाटण कुमारपाळ पासे लई गया. राजाए पूछयुं 'अरे शेठ! आवी दुष्ट चेष्टा केम करी?" श्रेष्ठीए कह्युं 'महाराज! आ जु मारा मस्तकमां मार्ग करीने मारुं रुधिर पीती हती, ते अन्यायथी में तेने मारी छे.' कुमारपाळे कह्युं, 'अरे दुष्ट! केश तो जुने रहेवानुं स्थान छे, त्यांथी ते जीवने तें स्थानभ्रष्ट कर्यो तेथी तुं पोतेज अन्यायी छुं. कदि तुं जीवहिंसाथी व्हीनो नहीं, पण शुं मारी आज्ञाथी पण व्हीनो नहीं?' एम कही तेनो घणो तिरस्कार कर्यो. पछी ते महेश्वरे जीवितरूप भिक्षा मागी एटले दयाळु राजाए कह्युं के, 'जा, तने छोडी मुकुं छुं, पण तारुं सर्व द्रव्य खर्चीने आ जुना पापनुं प्रायश्चित करवा माटे "यूकाविहार" नामे एक प्रासाद कराव, के जेने जोईने कोई पण जीववध न करे.' महेश्वर शेठे तेम करवुं स्वीकार्युं. कह्युं छे के—

अमारीकरणं तस्य। वर्ण्यते किमतःपरम् ॥
द्युतेपि कोपि यन्नोचे। मारीरीत्यक्षरद्वयम् ॥१॥

"अहो! कुमारपाळ राजानां अमारी कर्तव्यनुं शुं वर्णन करीए के जेना राज्यमां द्युतक्रीडामां पण कोई 'मारी' एवा बे अक्षर बोली शकतुं नहीं."

एक वखते राजा कुमारपाळे सात व्यसनने हिंसाना कारणभूत जाणी माटीना सात पुरुषोना रूप बनाव्या. तेमना मुख उपर मषी लगाडी, गधेडे बेसाडी, तेनी आगळ काहल विगेरे तुच्छ वाजीत्रो वगाडतां तेने पाटण नगरना चोराशी चौटामां फेरवी, लाकडी तथा मुष्टि विगेरेथी ताडन करावी, तेने पोताना नगरमांथी अने पोताना देशमांथी बहार काढी मूकाव्या. इत्यादि घणां वृत्तांतो श्रीजिनमंडनसूरिए रचेला कुमारपाळ चरित्रमांथी जाणी लेवा.

श्रीकुमारधरणीभृतः कथं। कथ्यतेऽत्र महिमा प्रमातिगः ॥
यः कृपाव्रतमिहाश्रितः स्वयं। तन्मयं च निखिलं जगद् व्यधात् ॥

"आ श्रीकुमारपाळ राजानी कथानो महिमा वचनथी अगोचर छे, ते राजाए पोते दयाव्रत लइने सर्व जगतने पण दयामय करी दीधुं हतुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
प्रथमाणुव्रतदयाविषये द्विषष्टितमः प्रबंधः ॥ ६२ ॥

व्याख्यान ६३ मुं.

हवे गृहस्थ श्रावकोने मुनिथी सवा विश्वा (सवा वसा) नी दया होय ते बतावे छे.

आद्यव्रते गृहस्थानां । सहपादो विंशोपकः ।
दया हि दर्शिता पूज्यैः । नाधिका तु प्रकाशिता ॥१॥

व्याख्या.

"पूज्य पुरुषोए गृहस्थ श्रावकोने प्रथम दयाव्रतमां सवा वसा दया दर्शावी छे, तेथी अधिक दर्शावी नथी."

अहिं सवा वसो दया केवी रीते थाय ते उपर प्राचीन सूरिओ आ प्रमाणे कहे छे.

थूला सुहमा जीवा, संकप्पारंभओ भवे दुविहा ॥
सावराहनिरवराहा, साविक्खा चेव निरविक्खा ॥१॥

'स्थूल अने सूक्ष्म एम बे प्रकारना जीवो, संकल्प अने आरंभथी एम बे प्रकारे हणाय छे. ते जीवो वळी सापराधी अने निरपराधी एम बे प्रकारना होय छे, तेनी हिंसा सापेक्ष अने निरपेक्ष एम बे प्रकारे थाय छे.'

तेनो भावार्थ एवो छे के, प्राणीओनी हिंसा प्राणीना स्थूल अने सूक्ष्मपणाथी बे प्रकारे कहेली छे. तेमां स्थूल एटले त्रसजीवो अने सूक्ष्म एटले एकेंद्रिय जीवो जाणवा. तेना पृथ्वीकाय विगेरे पांच भेद छे, पण तेमां ते नहीं के जे सूक्ष्म नामकर्मना उदयथी सर्व लोकमां व्यापी रह्या छे; कारणके तेना वधनो अभाव छे. तेओ तो पोताना आयुष्यना क्षयवडेज मृत्यु पामे छे, तेथी ते जीवो संबंधी अविरतिजन्य पापबंध छे, पण हिंसाजन्य पापबंध नथी, साधुओ ते बंने प्रकारना (स्थूल अने सूक्ष्म जीवना) वधथी निवृत्त छे, तेथी तेमनामां विशवसानी दया होय छे अने गृहस्थने मात्र स्थूलजीवना वधथी निवृत्ति छे, कारणके ते पृथ्वी, जल विगेरेनो सदा आरंभी छे; तेथी दश वसा ओछा थया. हवे ते स्थूलजीवनो वध पण बे प्रकारे छे. संकल्पथी अने आरंभथी. तेमां संकल्पथी एटले 'आने हुं मारुं' एवा मनःसंकल्पथी जे हिंसा थाय ते. तेनाथी गृहस्थ निवृत्त थई शके छे, पण आरंभथी ते निवृत्त थई शकतो नथी; कारणके खेती विगेरेना आरंभमां त्रसजीवनो पण घात थाय छे. ते शिवाय पोतानो तथा स्वजननो निर्वाह थई शकतो नथी. एथी दश वसामांथी वळी पांच गया एटले

पांच बाकी रह्या. हवे संकल्पथी त्रसजीवनी हिंसामां पण सापराधी अने निरपराधी जीव आश्री बे भेद छे. तेमां गृहस्थ निरपराधीनी हिंसाथी निवृत्त थई शके छे, पण सापराधीने माटे तो तेना अपराधना नाना मोटापणा संबंधी विचार करवो पडे छे; तेथी तेना गुरु अपराधमां तेना वधनो संकल्प पण करे छे, तेथी पांच वसामांथी अढी वसा गया. ते निरपराधीना वधना त्यागमां पण बे प्रकार छे. सापेक्ष अने निरपेक्ष. तेमां गृहस्थ निरपेक्ष हिंसाथी निवृत्त थइ शके छे, पण सापेक्ष हिंसाथी निवृत्त थइ शकतो नथी. एटले निरपराधी एवा पण भार वहन करनारा पाडा, बळद, घोडा विगेरेने तेमज पठन करवामां प्रमादी एवा पुत्रादिकने सापेक्षपणे वध बंधनादि करे छे; तेथी अढी वसामांथी अर्ध जतां बाकी सवा वसो रहे छे. तेथी गृहस्थ श्रावकने सवा वसो दया कहेली छे.

ए प्रमाणे श्रावकनुं पहेलुं अणुव्रत छे. ते प्रथम अणुव्रतना पांच अतिचार त्याग करवा योग्य छे ते कहे छे.

क्रोधाद् बंधश्छविच्छेदो–ऽधिकभाराधिरोपणम् ।
प्रहारोऽन्नादिरोधश्चा–ऽहिंसायाः परिकीर्त्तिताः ॥

"क्रोधथी आकरुं बंधन बांधवुं, कर्णादिकनो छेद करवो, अधिक भार मूकवो, प्रहार करवो अने अन्न तथा जलनो निरोध करवो--ए प्राणातिपात विरमण व्रतना पांच अतिचार छे."

तेनुं विवेचन करे छे के, रज्जु विगेरेथी गाय वा मनुष्यने बांधवा, पोताना पुत्रोने पण विनय शिखववा माटे तेवी शिक्षा करवी, तेमां क्रोधथी एटले प्रबल कषायथी जे बंधन बांधवुं ते पहेलो अतिचार छे. शरीरनी त्वचानो अथवा कान विगेरेनो क्रोधथी जे छेद करवो ते बीजो अतिचार छे. क्रोधथी वा लोभथी वहन करी शकाय नहीं तेटलो (प्रमाणथी अधिक) बोजो वृषभ, उंट, गधेडा तथा मनुष्यादिकनी पीठपर आरोपण करवो ते त्रीजो अतिचार छे. क्रोधथी निर्दयपणे चाबुकादिवडे प्रहार करवो ते चोथो अतिचार छे अने क्रोधादिकथी भातपाणीनो या घासचारानो अटकाव करवो ते पांचमो अतिचार छे.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, " आ वधादि पांच अतिचार शी रीते लागे? कारणके, व्रत ग्रहण करतां तेणे बंधन प्रहारादिनो त्याग करेलो नथी, जेथी व्रतना मलीनपणानो अभाव छे अने जे व्रत लीधुं छे ते तो अखंड छे, तेथी

तेमां अतिचार शी रीते उत्पन्न थाय ?" गुरु तेनुं समाधान करे छे के-"मुख्य-पणे तो प्राणातिपातनोज त्याग करेलो छे, वधबंधनादिकनो त्याग करेलो नथी, पण परमार्थे तो तेनुं पच्चक्खाण करेलुं छे; कारणके ते प्राणातिपातना हेतु छे." शिष्य कहे छे के "जो तेम छे तो तेवी रीते न पाळवाथी व्रतनोज भंग थवो जोइए, अतिचार शा माटे लागे ?" गुरु कहे छे के "एम नहीं. व्रत बे प्रकारे पळाय छे-बहिर्वृत्तिथी ने अंतर्वृत्तिथी. तेमां ज्यारे कोपादिकने वश थइ वध विगेरेमां (प्रहारादि करवामां) प्रवर्ते त्यारे निर्दयपणाने लीधे अंतर्वृत्तिथी व्रतनो भंग थाय छे, पण आयुष्यना बळने लीधे ते जीव मरण नहीं पामवाथी बहिर्वृत्तिथी व्रत पाळ्युं गणाय छे. तेथी कांइक भांग्युं-ते भंगाभंगरूप अतिचार गणाय छे. ते उपर अन्यत्र कह्युं छे के, 'मारे जीवनो वध करवो नहीं, एवुं जेने व्रत छे तेने जीव मृत्यु पाम्या विना अतिचार केम लागे ?' एवी आशंकानो उत्तर आपे छे के, 'जे क्रोध करीने वध विगेरे करे छे ते समये तेने निरपेक्षपणुं थइ जाय छे, व्रत नियम सांभरता नथी. तेवे प्रसंगे जीव मृत्यु न पामवाथी तेनो नियम रहे छे, पण कोपवडे निर्दयपणुं करवाथी तेना व्रतनो भंग थाय छे. एटले देशथी भंग अने देशथी प्रतिपालन थवाथी पूज्य पुरुषो तेने अतिचार गणे छे.' माटे जेम आ अतिचारो न लागे तेम प्रवर्त्तवुं. आ व्रत उपर श्रीकुमारपाळनो प्रबंध नीचे प्रमाणेः—

श्री कुमारपाळ प्रबंध.

एक वखते उदयनमंत्रीए पाटणमां महोत्सव सहित श्रीहेमचंद्रसूरिने प्रवेश कराव्यो. अन्यदा सूरिए मंत्रीने कह्युं के, तमारे राजाने एकांतमां कहेवुं के, 'आजे तमारे नवी राणीने महेले सुवा न जवुं; कारणके रात्रे त्यां विघ्न थवानुं छे. कदि राजा तमने पूछे के, तेवुं कोणे कह्युं ? तो ते अति आग्रह करे तो तमारे मारुं नाम आपवुं.' पछी मंत्रीए तेम कर्युं. राजाए ते वचन मान्य कर्युं. ऊ-रात्रे विद्युत् (वीजळी) पडवाथी ते राणीनो महेल बळी गयो अने राणी मृत्यु पामी. आ चमत्कार जोइ राजाए मंत्रीने पूछवाथी हेमचंद्राचार्यने त्यां आव्या जाणी तरत बोलाव्या. सूरि सभामां आव्या एटले राजा आसन छोडी तेमना चरणमां पडीने बोल्यो के,-'हे भगवन् ! हुं तमने मुख बतावी शकुं तेम नथी. केमके प्रथम तमे स्तंभतीर्थ (खंभात) मां मारी रक्षा करी हती अने अहिं पण जीवितदान आप्युं छे, माटे हवे मारुं राज्य लइने मने अनृणी करो.' आचार्य बोल्या के, 'हे राजन् ! अमारे निःसंगने राज्यनुं शुं काम छे ? जो तमे

कृतज्ञ थइने प्रत्युपकार करवाने इच्छता हो तो तमारुं मन श्रीजैनधर्ममां जोडी दो. कह्युं छे के, प्राणीने घर, स्त्री, पुत्रो, सेवको, बांधवो, शहेर, खाण, गाम अने राज्यसंपत्ति विगेरे पगले पगले प्राप्त थाय छे पण विद्वानोए पूजेली निर्मल तत्त्वज्ञानपर रुचि प्राप्त थती नथी.' ते सांभळी राजाए कह्युं, 'स्वामी ! तमारे कृपा करी प्रतिदिन सभामां मने प्रतिबोध करवा आववुं, के जेथी अनेक ब्राह्मणादि वर्गे स्थापित करेला पक्षना विनाशथी मारी बुद्धि सम्यग् धर्ममां जोडाय.' पछी श्रीहेमचंद्रसूरि प्रतिदिन राजसभामां जवा लाग्या अने ब्राह्मणोनी साथे विवाद करीने स्याद्वाद मतनुं स्थापन करवा लाग्या. एक दिवस राजाए सभामां पूछ्युं के, 'सर्व धर्ममां श्रेष्ठ धर्म कयो ?' सूरि बोल्या–'भोजराजानी आगळ सरस्वतीए आ संवाद विषे श्लोक कह्यो छे ते सांभळवा योग्य छे. तेमां कह्युं छे के, "सौगत धर्म सांभळवा योग्य छे, आर्हत धर्म करवा योग्य छे, वैदिक धर्म व्यवहारने माटे युक्त छे अने परम शिव ध्यान करवा योग्य छे.' राजाए फरीथी पूछ्युं के 'भगवन् ! वेदमां लखे छे के "जे औषधिओ, पशुओ, वृक्षो, तिर्यंचो अने पक्षीओ यज्ञने माटे निधन (विनाश) पामे ते पुनः उन्नत पदने पामे छे." आ प्रमाणे वेदोक्त हिंसाने केटलाएक धर्म माने छे ते विषे आप शुं कहो छो ? सूरि बोल्या राजन् ! ए सत्य वचन नथी. स्कंदपुराणना अट्ठावनमा अध्यायमां कह्युं छे के, "वृक्षोने छेदी पशुओने हणी; रुधिरनो कादव करी अने अग्निमां तिल घृतादि होमी स्वर्ग मेळवे छे ते आश्चर्य छे. जो यज्ञने माटे पशु सर्जेला छे एम स्मृति कहेती होय तो स्मार्त्तधर्मीओ तेमनुं मांसभक्षण करनारा राजाओने केम वारता नथी ? वळी जो ब्रह्माए यज्ञने माटे पशुओ बनाव्या छे तो वाघ विगेरेना होमथी देवता संतुष्ट केम थता नथी ? हे राजन् ! अहिंसाथी उत्पन्न थनारो धर्म हिंसाथी शी रीते प्राप्त थाय ? जलथी उत्पन्न थनारा कमलो अग्निमांथी केम उत्पन्न थाय ? ब्रह्मपुराणमां पण लखे छे के, "प्राणीनी हिंसा करनारा पुरुषो वेद भणवाथी, दान देवाथी, तप करवाथी के यज्ञो करवाथी कदी पण सद्गति पामता नथी." सांख्य मतवाळा कहे छे केः—

षट्त्रिंशदंगुलायामं, विंशत्यंगुलविस्तृतम् ।
दृढं गलनकं कार्यं, भूयो जीवान् विशोधयेत् ॥ १ ॥

"छत्रीश आंगळ लांबु अने वीश आंगळ पोहोळुं एवुं गळणुं राखवुं अने ते वडे वारंवार जीवोने शोधवा अर्थात् पाणी गळवुं." वळी लिंगपुराणमां कह्युं छे केः—

त्रिंशदंगुलमानं तु, विंशत्यंगुलमायतम् ।
तद्वस्त्रं द्विगुणीकृत्य, गालयित्वोदकं पिबेत् ॥ १ ॥
तस्मिन् वस्त्रे स्थितान् जंतून्, स्थापयेज्जलमध्यतः ।
एवं कृत्वा पिबेत्तोयं, स याति परमां गतिम् ॥ २ ॥

" त्रीश आंगळ लांबुं अने वीश आंगळ पोहोळुं वस्त्र बेवडुं करी ते वडे जलने गळीने पछी पीवुं. ते वस्त्रने लागेला जीवोने पाछा जळनी मध्यमां नाखवा. एम करीने जे जळ पीवे ते सद्गतिने पामे छे." उत्तर-मीमांसामां पण कह्युं छे केः–

लुतास्यतंतुगलिते, ये बिंदौ संति जंतवः ॥
सूक्ष्मा भ्रमरमानास्ते, नैव मांति त्रिविष्टपे ॥ १ ॥
कुसुंभकुंकुमांभोव–न्निचितं सूक्ष्मजंतुभिः ॥
तद् दृढेनापि वस्त्रेण, शक्यं नो शोधने जलम् ॥ २ ॥

" करोळीआना मुखमांथी नीकळेला तंतुओथी गळेला जळना बिंदुओमां जे जंतुओ छे ते एटला बधा सूक्ष्म छे के जो ते दरेकने भ्रमरा जेवडी काया वाळा करीए तो त्रण जगतमां समाय नहीं. वळी कसुंबाना तथा कुंकुमना जळनी अंदर रहेला कसुंबा तथा कुंकुमनी जेम पाणीमां एवा सूक्ष्म त्रस जंतुओ रहेला छे के घाटा वस्त्रथी गळतां छतां पण तेने शोधवां अशक्य थइ पडे छे. अर्थात् तेमांथी पण ते बहार नीकळी आवे छे."

उपर प्रमाणे सर्व धर्मशास्त्रोमां कहेल छे तेथी सर्व धर्म दयामूळ छे. अने एज धर्म प्रमाण छे, माटे हे राजन् ! भ्रांतिने छोडीने दया धर्ममां स्थिर था. " आ प्रमाणेना हेमचंद्राचार्यना वचनोथी जैनधर्मने सत्य मानता राजाए फरीवार पूछयुं के, " हे भगवन् ! केटलाएक कहे छे के, जैन लोको वेदबाह्य छे माटे ते नमवा योग्य नथी. ते विषे आप शुं कहो छो ! " सूरि बोल्या–"राजन् ! वेद कर्म मार्गना प्रवर्त्तक छे अने अमे निष्कर्म मार्गी छीए, तेथी वेद शी रीते प्रमाण थाय ? उत्तरमीमांसामां कह्युं छे के " वेद अवेद छे, लोक अलोक छे अने यज्ञ अयज्ञ छे. कारण के वेदमां अविद्या कहेली छे." वळी रुचि प्रजापतिना स्तोत्रमां पुत्रनुं पिताप्रत्ये वचन छे के, " वेदमां कर्ममार्ग छे ते अविद्या छे तो हे पितामह ! तमे मने कर्ममार्गनो उपदेश केम

करो छो ? " जो वेदमां किंचित् पण जीवदया कहेली छे तो सर्व शास्त्र संमत शुद्धदयाने पाळनारा अमे वेदबाह्य शी रीते कहेवाइए ? पुराणमां लखे छे केः—

सर्वे वेदा न तत्कुर्युः । सर्वे यज्ञाश्च भारत ! ॥
सर्वे तीर्थाभिषेकाश्च । यत्कुर्यात्प्राणिनां दया ॥ १ ॥

" हे भारत ! (युधिष्ठिर) जे प्राणीओ पर दया करवाथी थाय ते सर्व वेदोथी, सर्व यज्ञोथी अने सर्व तीर्थाभिषेकथी पण थतुं नथी." वळी हे राजन् ! " जो वेदमां दया न होय तो ते वेद नास्तिकना शास्त्रोनी जेम अमारे प्रमाण नथी." आ प्रमाणेना गुरुमहाराजना वाक्योथी कुमारपाळ राजा वेदोने अमान्य मानतो हवो.

एक वखते राजाए सूरिने कह्युं " भट्टारक ! केटलाएक एम कहे छे के, जैन लोको सूर्य जेवा प्रत्यक्ष देवने पण मानता नथी. " सूरि बोल्या—"राजन् ! सांभळ. स्कंदपुराणे रुद्रप्रणित कपालमोचन स्तोत्रमां कह्युं छे केः—

त्वया सर्वमिदं व्याप्तं । ध्येयोऽस्ति जगतां रवे ! ॥
त्वयि चास्तमिते देव ! । आपो रुधिरमुच्यते ॥
त्वत्करैरेव संस्पृष्टा । आपो यांति पवित्रताम् ॥

" हे सूर्यदेव ! तमाराथी आ सर्व जगत् व्याप्त छे, तमेज जगतमां ध्यावा योग्य छो, ज्यारे तमे अस्त पामो छो त्यारे जळ रुधिर कहेवाय छे; तमारा किरणो वडे स्पृष्ट थवाथीज जल पवित्र थाय छे. " आवा प्रमाणवाक्योथी रात्रे अन्नजलनो त्याग करनारा अमेज तत्त्वथी तो सूर्यने मानीए छीए. वळी कह्युं छे के,—

पयोदपटलैश्छन्ने । नाश्नंति रविमंडले ॥
अस्तंगते तु भुंजाना । अहो ! भानोः सुसेवकाः ॥१॥

" ज्यारे मेघना वादळमां सूर्य ढंकाइ गयो होय त्यारे सूर्यभक्तो भोजन करता नथी अने सूर्य अस्त पामे छे त्यारे भोजन करे छे, तो ते केवा सूर्यभक्त कहेवाय ! "

राजाए फरीवार पूछ्युं के, " केटलाएक कहे छे के, " जैनो विष्णुने मानता नथी तेथी तेनी मुक्ति थती नथी, तेनुं शी रीते ?" हेमचंद्राचार्य बोल्या के,—" हे राजन् ! ते सत्य छे, परंतु खरेखरा वैष्णव तो जैनमुनिओ ज छे. गीतामां कह्युं छे के,—

पृथिव्यामप्यहं पार्थ ! । वायावग्नौ जलेप्यहम् ॥
वनस्पतिगतश्चाहं । सर्वभूतगतोप्यहम् ॥ १ ॥
यो मां सर्वगतं ज्ञात्वा । न च हिंसेत्कदाचन ॥
तस्याहं न प्रणस्यामि । यश्च मां न प्रणस्यति ॥ २ ॥

" हे अर्जुन ! हुं पृथ्वीमां, वायुमां, अग्निमां, जलमां, वनस्पतिमां अने सर्व भूतोमां रहेलो छुं. तेथी जे मने सर्वव्यापक जाणी हिंसा करशे नहीं तेनो विनाश हुं पण करीश नहीं. अर्थात् जे मने हणशे नहीं तेने हुं पण हणीश नहीं. " वळी विष्णुपुराणमां पारासर ऋषिए कह्युं छे के,—

परस्त्रीपरद्रव्येषु । जीवहिंसासु यो मतिम् ।
न करोति पुमान् भूप ! । तोष्यते तेन केशवः ॥ १ ॥
यस्य रागादिदोषेण । न दुष्टं नृप ! मानसम् ।
विशुद्धचेतसो विष्णु–स्तोष्यते तेन सर्वदा ॥ २ ॥

" हे राजन् ! जे पुरुष परस्त्री, परधन अने जीवहिंसामां बुद्धि करशे नहीं, तेनी उपर विष्णु भगवान् संतुष्ट थशे. हे राजा ! जेनुं मन रागादि दोषथी दूषित थयुं नथी तेवा शुद्ध मनवाळा पुरुष उपर विष्णु संतुष्ट थाय छे. " वळी तेज पुराणमां यमराज अने विष्णुना दूतोना संवाद प्रसंगे कह्युं छे के,–" जे पोताना वर्णाश्रम धर्मथी चलित थतो नथी, शत्रु अने मित्रमां समान दृष्टि राखे छे, जे कोइने मारतो नथी, तेमज कोइनुं हरी लेतो नथी, तेवा स्थिर मनवाळा पुरुषने विष्णुभक्त जाणवो. जेनी बुद्धि निर्मळ छे, जे मत्सर रहित, प्रशांत, पवित्र आचरणवाळो अने सर्व प्राणीमात्रनो मित्र छे, तेमज जेनां वचन प्रिय अने हितकारी छे, तेमज जे मान माया रहित छे तेवा पुरुषना हृदयमां ज वासुदेव वसे छे. "

आ प्रमाणे विचारतां तत्त्ववृत्तिवडे सर्व जीवना रक्षको जैन ज छे, ब्राह्मणो नथी, केमके तेओ तो तेथी विपरीत चालनारा छे. वळी परमार्थरूपे नित्य चिद्रूपपणे तथा ज्ञानात्मपणे जे व्यापे ते विष्णु छे, तेथी तेना भक्तोने मुक्ति प्राप्त थाय एवो निश्चय छे. "

आ प्रमाणे अनेक प्रकारना धर्मोपदेशथी राजाए धर्मनो मर्म जाणीने अहिंसादिक बार व्रत ग्रहण कर्या. पछी तेणे " चारे वर्णोमां पोताने तथा बीजाने माटे जे कोइ जीवहिंसा करशे ते राजद्रोही गणाशे. " एवी पाटण,

शेहेरमां उद्घोषणा करावी; एटलुंज नहीं पण मच्छीमार तथा कसाइ विगेरेनो पण निष्पाप निर्वाह चाले तेवी गोठवण करी सर्वने दयामय करी दीधा. ते पछी काशी देशमां घणा जीवनी हिंसा थती सांभळीने ते निवारवाने माटे एक चित्रपट तैयार कर्युं. तेमां हिंसा अने अहिंसाना फलरूप स्वर्ग नरकना चित्रो आलेख्या. तेनी वचमां श्रीगुरु (हेमचंद्रसूरि) नी मूर्त्ति करावी अने तेमनी आगळ पोतानी नम्र मूर्त्ति चितरावी. ते चित्र साथे बे कोटी सुवर्ण तथा बे हजार जातिवंत अश्व विगेरेनी मोटी भेट आपी पोताना मंत्रीने त्यां मोकल्यो. वाणारसीनो राजा **जयचंद्र** सातसो योजन भूमि उपर राज्य करतो हतो. तेनी पासे चार हजार हाथी, साठ लाख अश्व अने त्रीश लाख पेदलनी सेना हती. ते गंगा यमुनाना तीर उल्लंघी बीजे जइ शकतो नहीं तेथी ते पोताने "पंगुराज" कहेवरावतो हतो. कुमारपाळनो मंत्री चित्रपट विगेरे लइने त्यां गयो. केटलेक दिवसे राजानुं मुख जोवामां आव्युं, एटले तेणे चित्रपट बताव्यो अने तेनुं यथार्थ स्वरूप जणावतां कह्युं के-" आ मध्ये रहेली मूर्त्ति अमारा राजगुरुनी छे, ते गुरुए पुण्य पापनुं फल आ चित्रमां बताव्या अनुसार दर्शाव्युं तेथी आ अमारा राजाए जीवदया धर्म स्वीकार्यो छे, अने तेमणे पोताना राज्यमां सर्वत्र अमारी घोषणा करावी छे. वळी अमारा राजानी कुलदेवी प्रतिवर्ष चोवीश पाडानुं बलिदान लेती हती, तेने पण गुरुनी सहायथी पोताना अढार देशमां जीवहिंसा न थवा देवा माटे तलारच्च बनावी छे. हमणां अमारा राजानी वैरिणी थवाथी हिंसाने कोई ठेकाणे स्थान मळ्युं नहीं, तेथी आ काशी देशमां आवीने ते व्यापी रही जणाय छे. तेने निवारवाने माटे आ भेटणुं लइने मने अहिं मोकल्यो छे." आ प्रमाणेना मंत्रीनां वचनो सांभळी पंगुराज संतुष्ट थयो अने बोल्यो के, "तमारो गुर्जर देश विवेकमां बृहस्पति जेवो कहेवाय छे ते घटित छे, कारण के जेमां आवा दयाळु राजा प्रदीप्तमान छे." ते राजा पोते प्रेरणा करीने मारी पासे दया करावे छे, ते छतां जो हुं ते न करूं तो पछी मारी बुद्धि केवी कहेवाय!" आ प्रमाणे कही पोताना देशादिकमांथी एकठी करावीने एक लाख ने एंशी हजार माच्छीनी जाळ अने हजारो बीजा हिंसाना साधनो सोलंकी राजाना मंत्रीनी समक्ष बाळी नखाव्या, पोताना बधा देशमां अमारी आघोषणा करावी अने ते मंत्रीने बमणी भेट आपीने पाटण तरफ विदाय कर्यो.

मंत्रीए पण पाटण आवी चौलुक्यवंशी राजाने सर्व वृत्तांत निवेदन कर्युं. जेथी ते संतुष्ट थयो.

कुमारपाळे पोताना अढार लाख अश्वोने माटे पलाणदीठ पुंजणी तथा गळणीओ करावी. आ प्रमाणे बीजा वृत्तांतो तेना चरित्रमांथी जाणी लेवा.

इत्यब्ददिनपरिमितोपसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ जीवदयाविषये त्रिषष्टितमः प्रबंधः ॥६३॥

व्याख्यान ६४ मुं.

हवे हिंसाना अभावथी विरति थाय छे ते कहे छे.

चतुर्धा द्रव्यभावाभ्यां, हिंसा त्याज्या हितेच्छुभिः ।
ततस्तेषां भवेद्देश–विरतिः प्राणिसौख्यदा ॥१॥

व्याख्या.

"आत्महितेच्छु प्राणीओए चार प्रकारे[1] द्रव्यभावथी हिंसानो त्याग करवो. तेथी तेमने प्राणीओने सुख आपनारी देशविरति प्राप्त थाय छे." अहिं विवेचन करे छे के, द्रव्यथी अने भावथी चार प्रकारे हिंसा थाय छे तेमां इर्यासमितिवाळा मुनिने द्रव्यथी हिंसा थाय छे, भावथी थती नथी, ते पहेलो प्रकार अने **अंगारमर्दक** नामना आचार्य **महावीर** ना कीडा चंपाय छे एवी बुद्धिथी कोयलानुं मर्दन कर्युं ते भावथी हिंसा छे, द्रव्यथी नहीं; तेमज मंद प्रकाश छते सर्पनी बुद्धिथी रज्जुने हणवुं ते पण द्रव्यथी नहीं परंतु भावथी हिंसा छे, ते बीजो प्रकार. जे मन वचन अने कायाए शुद्ध एवा मुनि छे तेने द्रव्यथी पण हिंसा नहीं अने भावथी पण नहीं, ते त्रीजो प्रकार. अने हुं मारुं एवी बुद्धिए मृगनी हिंसा करनार शीकारीने द्रव्यथी अने भावथी बंने प्रकारे हिंसा थाय छे, ते चोथो प्रकार.

हिंसा शब्दनी व्याख्या विषे तत्त्वार्थभाष्यमां श्रीउमास्वातिवाचक लखे छे के, प्रमादथी प्राणनो त्याग कराववो ते हिंसा." वळी ते विषे कह्युं छे के—

१ हिंसाना चार प्रकार–१ द्रव्यथी हिंसा, भावथी नहीं २ भावथी हिंसा द्रव्यथी नहीं. ३ द्रव्यथी पण हिंसा, भावथी पण हिंसा ४ द्रव्यथी पण नहीं, भावथी पण नहीं.

पंचेंद्रियाणि त्रिविधं बलं च । उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः ॥
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्ता–स्तेषां वियोगीकरणं तु हिंसा॥१॥

'पांच इंद्रियो, मन वचन काया ए त्रण प्रकारनुं बळ, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य ए दश प्राण कहेवाय छे. ते दश प्राणनो वियोग कराववो तें हिंसा कहेवाय छे.' ते हिंसानो त्याग करवाथी अने बीजो कषाय जे अप्रत्याख्यानी तेनी चोकडी क्रोध, मान, माया, लोभ दूर थवाथी पांचमे गुणठाणे रहेल श्रावक देशविरति कहेवाय छे आत्महितेच्छु पुरुषोए ते अवश्य करवा योग्य छे.

अहिं कोइ शंका करे के 'गृहस्थोने त्रस जीवोनी हिंसा निषिद्ध छे, स्थावरनी हिंसा निषिद्ध नथी; तो शुं तेओए तेनी हिंसा यथेच्छ करवी?' तेना उत्तरमां कहे छे के, "मोक्षनी इच्छावाळा दयाळु उपासकोए स्थावर जीवोनी हिंसा पण निरर्थक करवी नहीं." एकला त्रस जीवोनी हिंसानो निषेध करवाथी संपूर्णपणे अहिंसा धर्म प्राप्त थाय एम नथी, परंतु शरीर तथा कुटुंबादिकना प्रयोजने स्थावर हिंसानी गृहस्थने जरुर पडे छे. पण तेवा प्रयोजन विना स्थावरनी हिंसा करनारानुं व्रत मलिन थाय छे. एथी श्रावकोए अनिषिद्ध एवी स्थावर हिंसामां पण यतना करवी जोइए. जेमके पाणीनो संखारो सारी रीते जाळवीने तेमां रहेला जीवो न हणाय तेम योग्य स्थाने (जळाशयमां) नाखवो अने इंधणा पण थोडा अने सम्यक् प्रकारे शोधीने उपयोगमां लेवा. नहीं तो अनुकंपा न होवाथी अतिचार लागे. ते विषे कह्युं छे के, "त्रस जीवना रक्षणाने माटे शुद्ध जळ ग्रहण करवुं अने इंधण तथा धान्यने शोधीने उपयोगमां लेवुं."

वळी पृथ्वी विगेरेमां जीवपणुं आगमने विषे कह्युं छे ते आ प्रमाणेः—

अद्दामलग पमाणे, पुढवीकाये हवंति जे जीवा ॥
ते पारेवयमित्ता, जंबुद्दीवे न मायंति ॥ १ ॥
एगंमि उदगबिंदुमि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ॥
ते जइ सरिसवमित्ता, जंबुद्दीवे न मायंति ॥ २ ॥

" लीला आमळा प्रमाण पृथ्वीकायने विषे जेटला जीवो छे तेनुं दरेकनुं शरीर जो पारेवा जेवडुं करीए तो तेओ जंबुद्वीपमां समाय नहीं. एक जळना बिंदुमां श्रीजिनेंद्रोए जेटला जीवो कहेला छे तेनुं दरेकनुं शरीर जो सरसव

जेवडुं करीए तो ते आ जंबुद्वीपमां समाय नहीं." ते पृथ्वीकाय पांचे प्रकारना जीवोनी जघन्य ने उत्कृष्ट बंने प्रकारे अवगाहना एक अंगुलना असंख्यातमा भाग जेवडी जाणवी. अने तेवा अनंत जीवोना एकठापणाथी आश्रित एवुं एक शरीर ते सूक्ष्म निगोदनुं[1] एक शरीर थाय, तेवा असंख्य शरीर एकत्र करीए त्यारे एक सूक्ष्म वायुकायनुं शरीर थाय, तेथी असंख्यगुणुं एक सूक्ष्म तेउकायनुं शरीर थाय, तेवा असंख्य देह एकठा करीए त्यारे एक सूक्ष्म अप्कायनुं शरीर थाय, तेथी असंख्यगुणुं एक सूक्ष्म पृथ्वीकायनुं शरीर थाय, तेथी असंख्यगुणुं एक बादर वायुकायनुं शरीर थाय, तेथी असंख्यगुणुं बादर अग्निकायनुं शरीर, तेथी असंख्यगुणुं बादर जलकायनुं शरीर, तेथी असंख्यगुणुं एक बादर पृथ्वीकायनुं शरीर अने तेथी असंख्यगुणुं एक बादर निगोदनुं[2] शरीर थाय. अहिं बादर पृथ्वीकायना शरीरनी सूक्ष्मता बतावे छे—

जेम कोइ युवान पुरुष एरण उपर हीरो मूकी ते पर प्रयत्नथी घणनो घा करे तो ते हीरानो भंग थतो नथी, पण ते उलटो एरणमां पेसी जाय छे. तेवा हीराने चक्रवर्त्तीनी स्त्री (रत्न) पोताने हाथे मर्दन करी तेनुं चूर्ण करीने स्वस्तिक पूरे छे. ते स्त्रीरत्न पण पृथ्वीकायना पिंडने एक निसातरा पर मूकी मर्दन करे त्यारे तेमांना कोइ जीवने पीडा थाय, कोइने बीलकुल पीडा न थाय, कोइनुं मरण थाय अने कोइने अल्प पण दुःख न थाय, एटली बधी पृथ्वीकाय जीवोनी सूक्ष्मता छे.

वळी जेम कोइ मोटा नगरमां कोइना घरमांथी चोरे द्रव्य लुंटयुं तो तेनी वार्ता तेना पाडोशी जाणे छे, पण कोइ तो मूळथी जाणता नथी. तेवी रीते लवण विगेरे पृथ्वीकायने माटे जाणी लेवुं.

तेज प्रमाणे स्थावर एवा वनस्पतिकायमां पण सिध्धांतने अनुसारे जीवत्व जाणवुं. तेओ वधे छे, पत्र आवे छे, पुष्पित थाय छे, फल आपे छे, पोतापोताने पत्र, पुष्प, फळ आववानो काळ जाणे छे, इंद्रियोना अर्थने ग्रहण करे छे, गीतादिकनी असर थाय छे, बकुलादिना वृक्षोमां तेवुं देखाय छे. वळी तेने जन्म, वृद्धि अने जरा प्राप्त थाय छे, तेथी वनस्पतिने जीवपणुं केम न होय? होयज. ते विषे कह्युं छे के, 'वनस्पति ए जीव छे, कारणके तेमां मनुष्यनी जेम जरा अने वृद्धि विगेरे गुणो छे. जळ पण सजीव छे, ते भूमिमांथी देडकानी

---

१ सूक्ष्म वनस्पतिकाय ते सूक्ष्म निगोद तेनुं. २ साधारण वनस्पति ते बादर निगोद, तेना पण एक शरीरमां अनंता जीवो होय छे.

जेम स्वाभाविक रीते प्रगटे छे. अग्नि पण सजीव छे, कारणके बालकनी जेम आहारथी तेनी वृद्धि जोवामां आवे छे. पवन पण सजीव छे, ते गायनी जेम बीजानी प्रेरणाथी आडो अथवा नियतपणे गमन करे छे. तेमज वृक्ष पण सजीव छे, जो तेनी सर्व त्वचा उखेडी नाखे तो गर्भनी जेम ते विनाश पामे छे.

आ प्रमाणे आगमवाक्यथी तथा युक्तिथी ते स्थावरनुं जीवपणुं जाणीने तेमज तथाप्रकारे दयारूप धर्मने समजीने श्रावके स्थावर जीवनी पण निरर्थक हिंसा करवी नहीं-ए तात्पर्यार्थ छे.

हवे प्रथम व्रतनी स्तुति करे छे.

सर्वव्रतेष्विदं मुख्यं, सर्वज्ञैः परिभाषितम् ।
पालनीयं प्रयत्नेन, सर्वपापापहं नरैः ॥ १ ॥

व्याख्या.

"सर्व व्रतोमां सर्वज्ञ प्रभुए ए व्रतने मुख्य व्रत कहेलुं छे, तेथी सर्व पापने नाश करनारुं ते व्रत मनुष्योए यत्नवडे पाळवुं." आ विषयपर श्री जिनदास श्रावकनो प्रबंध छे. ते प्राकृत मुनिपतिचरित्रमांथी अहिं लखीए छीए:—

श्री जिनदास श्रावकनी कथा.

चंपा नगरीमां **जिनदास** नामे श्रावक रहेतो हतो. गुरुमुखथी धर्मदेशना सांभळीने तेणे समकितमूल बार व्रत ग्रहण कर्यां. एक वखते तेणे दयावडे एक बळदने निर्लांछन (खासी करवा) थी मूकाव्यो. कह्युं छे के—

दयां विना देवगुरुक्रमार्चा—स्तपांसि सर्वेंद्रिययंत्रणानि ।
दानादि शास्त्राध्ययनानि सर्वे। सैन्यं गतस्वामि यथा वृथैव॥१॥

"देव गुरुना चरणनी पूजा, तप, सर्व इंद्रियोनुं दमन, दान अने शास्त्राध्ययन ते सर्व दया विना, सैन्य वगरना राजानी जेम वृथा छे." वळी "हाथीना भवमां ससलुं उगार्याथी ते जीव मेघकुमार थयो हतो, मेतार्यमुनि क्रौंच पक्षीने उगार्याथी मोक्षे गया हता, कपोतने बचाववाथी श्रीशांतिनाथ तीर्थंकर थया हता अने श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अश्वने उगारवा साठ योजन गया हता." चाणक्य नीतिमां पण कह्युं छे के—

त्यजेद्धर्मं दयाहीनं, क्रियाहीनं गुरुं त्यजेत्।
त्यजेत् क्रोधमुखीं भार्यां, निःस्नेहान् बांधवांस्त्यजेत् ॥ १ ॥

"दया वगरना धर्मने छोडी देवो, क्रिया वगरना गुरुने छोडी देवा, क्रोधमुखी स्त्रीने छोडी देवी अने स्नेह वगरना बांधवोने छोडी देवा."

हवे ते बळद हंमेशा श्रेष्ठीना मुखथी प्रतिक्रमण अने शास्त्रादि सांभळीने देशविरतिपणुं पाम्यो, तेथी अष्टमी विगेरे पर्वतिथिए ते प्रासुक तृण जळ शिवाय कांइ खातो पीतो नहीं अने दररोज जिनदास शेठ जे पोताना गुरु हता तेना दर्शन कर्या विना पण कांइ खातो नहीं.

एक वखते अष्टमीने दिवसे श्रेष्ठी शून्यगृहमां रात्रे पोसह लइ कायोत्सर्गे रह्या हता. ते दिवसे तेनी कुलटा स्त्रीए कोइ जारनी साथे ते शून्यगृहमांज रात्रे मळवानो संकेत कर्यो हतो, तेथी रात्रे पाया नीचे लोढाना चार खीलावाळा पलंग सहित जारने लइने ते स्त्री ज्यां शेठ कायोत्सर्गे रह्या हता त्यां आवी. अंधकारमां शेठने त्यां रहेला नहीं जाणती ते कुलटाए ते चार खीलावाळो पलंग तेनी पासेज मूक्यो. दैवयोगे पलंगनो एक पायो शेठना पग उपर आव्यो. पछी पलंग स्थिर करवाने माटे मुद्गरना घा करी पेला चारे खीला जमीनमां नाख्या. तेमांना एक खीलाथी श्रेष्ठीनो पग वींधाइ गयो, अने तेनी महा व्यथा थवा लागी. पछी ज्यारे ते जारदंपतीए ते पलंग पर रहीने मैथुन करवा मांड्युं ते वखते विशेष भार पडतां वधारे पीडा उत्पन्न थवाथी ते श्रेष्ठी क्रोध नहीं करतां शरीर उपर विचार करी मनमां चिंतववा लाग्या के-"हे जीव! तने स्ववशपणुं घणुं दुर्लभ छे, ज्यारे तुं घणुं सहन करीश त्यारे तने स्ववशपणुं प्राप्त थशे; बाकी जे परवशपणुं छे तेमां तारे कांइ पण गुण मानवो नहीं. अर्थात् तुं परवशपणे गमे तेटला कष्ट सहन करे तेमां तने कांइ गुण नथी, पण स्ववशपणे सहन करीश तो गुण प्राप्त थशे. तेवो वखत अत्यारे स्वयमेव प्राप्त थयो छे. वळी तुं मृत्युथी शा माटे बीहे छे? ते कांइ भय पामेलाने छोडतुं नथी, पण जे जन्म्युं न होय तेने ग्रहण करी शकतुं नथी. तेथी जन्म लेवो न पडे तेवो यत्न कर. वळी हे प्राणी! सज्जन पुरुषो दोषजालने छोडी दइने पारका गुणनेज मनमां धारण करे छे. जेम मेघ समुद्रना खारपणारूप दोषने छोडी दइ मात्र जलनेज ग्रहण करे छे." एवी रीते श्रेष्टीए पोताना दोषना विचार कर्या पण तेना उपर कोप कर्यो नहीं. छेवटे तेज रात्रीए शुभ ध्यानवडे मृत्यु पामी सौधर्म देवलोके देवता थया.

प्रातःकाळे पोताना स्वामीनुं ते प्रकारे मरण जांणी "अहो! आ अकार्य थयुं, हवे हुं शुं करीश?" एम तेनी स्त्री चिंतामां पडी. एवामां पेलो बळद प्रातःकाळ थवाथी आवश्यक सांभळवा, पच्चक्खाण लेवा तेमज श्रेष्टीना दर्शन करवा त्यां आव्यो. एटले पेली कुटिल स्त्री श्रेष्टीनुं रुधिर ते बळदना शींगडा उपर चोपडी बुंबारव करती सती हृदय पर ताडन करवा लागी अने कहेवा लागी के, 'आ बळदे मारा पतिने मारी नाख्यो.' ते सांभळी घणा लोको बळदनी निंदा करवा लाग्या. कारणके, "जळमां माछलाना पगलां जणाय नहीं, आकाशमां पक्षीना पगलां जणाय नहीं अने स्त्रीना हृदयनो मार्ग जणाय नहीं. ते त्रणे अमार्गमां मार्ग छे." ते वखते लोकोए करेली पोतानी निंदा सांभळीने ते बळद मस्तकनी संज्ञाथी 'में नथी मार्यो' एम जणाववा लाग्यो. पछी लोको ते बंनेने राजा पासे लइ गया. मंत्रीए न्याय कर्यो के, 'आ बंनेमां जे सत्य होय ते जिह्वा वडे तपावेला लोढाना गोळाने चाटे.' बळदे ते वात संज्ञाथी स्वीकारी अने तत्काळ तपावीने लावेला लोढाना गोळाने चाटवा लाग्यो. ते जोइ पेली कुलटा स्त्रीनुं मुख श्याम थइ गयुं. तेथी तत्काळ राजाए तेने हद पार करी दीधी.

जिनदास श्रेष्ठीए तेवुं महा आकरुं दुःख पडतां छतां पण पोताना धर्मने मन वचन कायावडे जरा पण छोड्यो नहीं. वळी बळदने धर्मवान् कर्यो अने पोतानी स्त्रीने मोटा अपराधवाळी जोइने मनमां जरा पण तेनी हिंसा चिंतवी नहीं. उत्तम जनोए तेनुं यथाशक्ति अनुकरण करवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ प्रथमव्रतविषये चतुःषष्टितमः प्रबंधः ॥ ६४ ॥

व्याख्यान ६५ मुं.

हवे कुलक्रमथी चाली आवती हिंसाने छोडनारनी स्तुति करे छे.

वंशक्रमागतां हिंसा–मपि त्यजति यो बुधः ॥
स स्याद् हरिबलस्येव, राज्यादिसंपदां पदम् ॥१॥

व्याख्या.

“जे प्राज्ञ पुरुष कुलक्रमथी चाली आवती हिंसाने पण छोडी दे छे, ते हरिबळनी जेम राज्यादिकनी संपत्तिनुं स्थान थाय छे.”

श्री हरिबळ माछीनी कथा.

कांचनपुर नगरमां **जितारी** नामे राजा हतो. तेने **वसंतश्री** नामे लावण्यरुपवती पुत्री हती. ए गाममां एक हरिबळ नामे मच्छीमार रहेतो हतो. ते एक दिवस पोतानी स्त्रीना कलहथी उद्वेग पामी जाळ लइने नदीने तीरे आव्यो. त्यां एक मुनिने जोइ ते तेनी पासे गयो. ते मुनि पासेथी तेणे आ प्रमाणे धर्मदेशना सांभळीः–“ मेरु पर्वतथी शुं मोटुं छे, समुद्रथी शुं गंभीर छे, आकाशथी विस्तारवाळुं शुं छे अने अहिंसा धर्मथी बीजो धर्म शो छे ? अर्थात् ते चार वानाज मोटा छे. ज्यांसुधी एटलुं पण जाण्युं नहीं के बीजाने पीडा करवी नहीं, त्यांसुधी पराळना पुळानी जेवा कोटी अक्षरोना पदने भणी गया तो तेथी शुं ? कांइ नहीं. ते विषे महाभारतमां पण कह्युं छे के—

यो दद्यात्कांचनं मेरुं, कृत्स्नां चैव वसुंधराम् ।
एकस्य जीवितं दद्याद् , न च तुल्यं युधिष्टिर ! ॥ १ ॥

हे युधिष्टीर ! जो कोइ सुवर्णनो मेरु आपे अने समग्र पृथ्वीनुं दान करे तो पण ते एकने जीवितदान आपवा तुल्य थतुं नथी.” इत्यादि देशना सांभळी धर्मना मर्मने जाणीने हरिबळ बोल्यो–‘हे भगवन् ! चक्रवर्त्तीना भोजननी जेम मच्छीमारना कुळमां जन्मेला मारा जेवा रांकने हिंसा त्याग करवी अशक्य छे.’ मुनि बोल्या के–“जो तुं अधिक त्याग करी शके नहीं तो ‘ जे प्रथम जाळमां मत्स्य आवे तेने छोडी देवो ’ एवो अल्प नियम ग्रहण कर.” हरिबळे ए नियम ग्रहण कर्यो. पछी नदीमां जाळ नाखी एटले तेमां एक मोटो मत्स्य आव्यो. फरीवार जाळ नाखतां पण तेनो ते मत्स्य आव्यो. एटले एंधाणी राखवा सारु तेना कंठमां एक कोडी बांधीने तेने छोडी मूक्यो. पाछो फरीवार पण तेज आव्यो. एवी रीते संध्याकाळ सुधी अन्य अन्य स्थाने जइने जाळ नाखी तोपण तेज मच्छ आव्यो अने तेने छोडी मूक्यो. आवी तेनी दृढताथी कोइ देव प्रसन्न थयो अने संतुष्ट थइने कह्युं के, “वरदान माग.” हरिबळे कह्युं, “ आपत्तिमां तत्काळ मारी रक्षा करजो.” देव तेवो वर आपीने अंतर्धान थई गयो. पछी मत्स्य मळ्यो नहीं तेथी स्त्रीना भयथी घेर नहीं जतां ते कोइ देवालयमां जइने सुइ रह्यो.

आ अरसामां नगरमां एवुं बन्युं के, एक दिवस राजकन्या गोखे बेठी हती. ते हरिबळ नामना कोई गृहस्थना पुत्रने जोइने तेनी पर सरागी थइ. तेथी तेणीए कोइ उपायथी हरिबळ श्रेष्ठीपुत्रने पोतानी तरफ सरागी कर्यो. दैवयोगे तेमणे परस्पर ज्यां पेलो हरिबळ मच्छीमार सुतो हतो तेज देवालयमां तेज दिवसे आववानो संकेत कर्यो. राजकुमारी वसंतश्री तो ते रात्रे पोतानुं सर्वस्व लइ अश्व उपर बेसीने ते देवालयने द्वारे आवी. अहीं श्रेष्ठीपुत्रे विचार्युं के, 'आ काम करवुं गुणीजनने युक्त नथी. ए कार्य करवाथी कुळनी मलीनता थाय. वळी ते राजपुत्री होवाथी बीजा पण कष्ट प्राप्त थाय.' आवा विचारथी ते रात्रे घेरज रह्यो. कह्युं छे के, "स्त्री जातिमां दंभ, वणिक जातिमां अत्यंत ब्हीकणपणुं, क्षत्रीय जातिमां रोष अने ब्राह्मण जातिमां लोभ ए स्वाभाविक रहेला छे."

अहिं पेली राजकुमारीए देवद्वारे आवीने 'हरिबळ!' एवा नामथी सांकेतिक श्रेष्ठीपुत्रने बोलाव्यो ने कह्युं के–'स्वामी! चालो आपणे देशांतर जइए, जेथी आपणा मनोरथ सफल थाय.' मच्छी हरिबळ कोइ साथे संकेत छे एम जाणी हुंकारो दइने तैयार थयो. बन्ने एकज अश्व उपर बेसी आगळ चाल्या. राजपुत्री वारंवार तेने बोलावे, पण ते तो मात्र हुंकारोज आपे. छेवटे राजसुताए खेद पामी विचार्युं के, 'आ कोइ बीजो पुरुष छे.' तेम करतां ज्यारे रविनो प्रकाश थयो त्यारे तो तेनुं रूप जोइ तेणे विचार्युं के, 'मने धिक्कार छे, पेला हाथीनी जेम मारी बंने इष्ट वस्तु नष्ट थइ.' जेमके–"कोइ हाथीने ग्रीष्म ऋतुमां दाहथी पीडित थतां घणी तृषा लागी, तेथी कोइ सरोवर जोइने ते उतावळो तेनी पासे जवा चाल्यो, जेवो ते कांठानी नजिक आव्यो तेवामां ते कादवमां एवो खुंची गयो के, दुर्दैवयोगे ते तीर अने नीर बंनेथी भ्रष्ट थयो." आवा निर्भागी, दुष्ट कुळमां जन्मेला, मूर्ख, अनिष्ट पतिना नित्य संयोग करतां तो एक वार मरवुं सारुं छे.' आ प्रमाणे खेद करती राजकुमारीने जोइने हरिबळे विचार्युं के, 'मने धिक्कार छे, में कपट करीने राजपुत्रीने छेतरी छे.' ते वखते तेनी चिंता दूर करवा माटे पेला देवे तेनुं कामदेव जेवुं स्वरूप करी दीधुं अने आकाशवाणी करी के, 'हे राजपुत्री! आवा पुण्यवान् पतिने मेळवीने बीजी शेनी इच्छा करे छे?' पछी बंनेने प्रीति थवाथी ते देवे तेमने गांधर्वविवाहवडे परणाव्या.

त्यांथी तेओ विशाळा नगरीमां आव्या. त्यां एक सुंदर गृह भाडे राखीने

तेमां रह्या. केटलेक दिवसे हरिबळ केटलीक भेटो आपीने राजानो मानपात्र थयो. एक दिवस मंत्रीए राजानी पासे वसंतश्रीना रूप लावण्यनुं वर्णन कर्युं. ते सांभळी राजा तेनी उपर लुब्ध थयो. तेथी हरिबळने हणवानी इच्छाथी एक वखत तेणे सभा वच्चे कह्युं के, 'मारी सभामां हरिबळ जेवो बीजो कोइ साहसीक नथी के जे मारे घेर आववा माटे लंकापति विभीषणने निमंत्रण करी लावे.' हरिबळे पोतानो उत्कर्ष सांभळी राजाने कह्युं के—' स्वामी ! जो तेमने निमंत्रण करवुं हशे तो हुं थोडा दिवसमां ए काम करी आवीश ' राजाए आज्ञा आपी एटले त्यांथी उठीने हरिबळ पोताने घेर आव्यो अने वसंतश्रीने ए वृत्तांत जणावीने कह्युं के, " हुं आवुं त्यांसुधी तुं रुडी रीते शीळ पाळजे, हुं करेली प्रतिज्ञानो निर्वाह करवा माटे जाउं छुं. नीतिमां कह्युं छे के, कदि मस्तक छेदाय के वधबंधन प्राप्त थाय तथापि उत्तम पुरुषोए अंगीकार करेलुं पाळवुं. पछी जे भावी होय ते थाय." आ प्रमाणे कहीने ते घरेथी चाली नीकळ्यो. अनुक्रमे समुद्रने तीरे आवीने विचारवा लाग्यो के, 'अहो ! आ कार्यनो निर्वाह शी रीते थशे ?' तत्काळ पेला देवे तेने उपाडीने लंकाना उपवनमां मूक्यो. त्यां एक रमणीय महेल जोइने ' आ शुं ? ' एम आश्चर्य पामी हरिबळ तेमां पेठो. त्यां एक ओरडामां एक यौवनवती बाळा अचेतन स्थितिमां पडेली जोवामां आवी. ते जोइने हरिबळ विचारमां पड्यो के ' आ शुं आश्चर्य ! ' त्यां नजीकमां एक अमृतपूर्ण तुंबी तेना जोवामां आवी. तेने जळ जाणीने तेणे ते बाळाना सर्व अंगपर सिंचन कर्युं. जेथी तत्काळ ते कन्या उंघमांथी जागे तेम बेठी थइ अने हरिबळने जोइ लज्जा धारण करीने उभी रही. पछी तेणीए पुछ्युं के 'हे स्वामी ! अहिं केम आव्या छो ?' हरिबळे आववानुं सर्व वृत्तांत जणाव्युं. पछी तेणे ते बाळानुं स्वरूप पूछ्युं, एटले ते बोली-" स्वामी ! मारो पिता आ लंकापतिना देवनो पूजारी छे. एक दिवस मारा पिताए कोइ निमित्तिआने पूछ्युं के, ' मारी पुत्रीने केवो पति मळशे ?' तेणे कह्युं के, ' तेनो पति राजा थशे. ' ए सांभळीने राज्यना लोभथी ते मारो पिताज मूर्खपणाथी मने परणवाने इच्छवा लाग्यो. एवा लोभी पुरुषने धिक्कार छे, के जे उन्मार्गमांज गमन करे छे. रात्र्यंध, दिवांध, जात्यंध, मायांध, मानांध, क्रोधांध, कामांध अने लोभांध-ए उत्तरोत्तर अधिक अधिक अंध गणाय छे. आथी हुं स्वच्छंद रीते न वर्त्तुं तेटला माटे मंत्रवडे मने मूर्छित करीने ते बहार जाय छे अने पाछो आवी आ अमृतवडे मने सजीवन करे छे. एनी दुर्मतिथी सर्व स्वजनोए तेने दूर कर्यो छे. तेना आवा

कृत्यथी कोइ वार मारुं मृत्यु थशे; माटे हे महाभाग ! आ लग्न वेळाएज मारुं पाणिग्रहण करो के जेथी हुं चिरकाळ जीवुं." हरिबळे तत्काळ तेम कर्युं, एटले ते बोली–'स्वामी ! हवे अहिंथी आपणे पलायन करवुं योग्य छे. कारणके मारो पिता आवी चडशे तो विघ्न उत्पन्न थशे. वळी न बनी शके एवुं जे विभीषणने आमंत्रण ते करवानी कांइ जरुर नथी. ते छतां तमे अहिं आव्या छो तेवी तमारा राजाने प्रतीति कराववा माटे हुं विभीषणनुं चंद्रहास खड्ग कोइ उपाये लावी आपीश.' पछी तेनी संमतिथी ते स्त्रीए विभीषणनुं चंद्रहास खड्ग गुप्त रीते लावी आप्युं. ते स्त्रीनी बुद्धिथी चमत्कार पामेलो हरिबळ पेली अमृत-तुंबी, ते स्त्री अने चंद्रहास खड्ग लइ लंका नगरीनी बहार नीकळ्यो.

अहिं हरिबळना गया पछी राजा गुप्त रीते तेने घेर आव्यो अने वसंतश्री पासे तेना संगमनी प्रार्थना करी. ते चतुरा द्वेष अने खेद अंतरमां गोपवी बोली के, 'हे राजा मारा पतिनी शुद्धि आवता सुधी राह जुओ.' राजाए कपटवृत्तिए विचार्युं के, "हवे आ स्त्री मारे वशज थवानी छे अने तेनो पति तो मृत्युज पामवानो छे तेथी थोडा दिवस राह जोवी ठीक छे." आवुं विचारी तेनुं वाक्य स्वीकारीने ते पाछो राजमहेलमां गयो.

अहिं हरिबळ देवसानिध्ये समुद्र उतरी कुसुमश्रीने पोताना नगरना उद्यान-मां मूकी गुप्त रीते पोताने घेर आव्यो. त्यां वसंतश्री पतिनी विरहव्यथाथी पीडाती हती, तेने प्रत्यक्ष मळ्यो. बंनेए पोतपोताना वृत्तांत जणाव्या. पछी हरि-बळे राजानी इच्छानुं मर्दन करवा माटे राजानी पासे पोताना खबर मोकलाव्या, पछी तेणे पोते जइने राजाने कह्युं के, "हुं विभीषणने नोतरी तेनी पुत्री परणीने आव्यो छुं. ते स्त्री उपवनमां छे अने विभीषण कुशळ छे." आवुं कर्णकटु वचन सांभळी राजा विस्मय पाम्यो, पण लोकापवादना भयथी तेने प्रियासाथे महोत्सवपूर्वक स्वनगरमां प्रवेश कराव्यो. पछी राजाए तेने वृत्तांत पूछयुं, एटले ते बोल्यो "हे राजन् ! हुं अहिंथी चाली अनुक्रमे दुस्तर सागर पासे गयो. त्यारे समुद्र जोइने मने घणो उद्वेग थयो. तेवामां समुद्रमांथी आवता एक राक्षसने में दीठो. तेने जोइ में निर्भयपणे लंकामां जवानो उपाय पूछयो. एटले तेणे कह्युं के, 'जे पुरुष अहीं काष्ठभक्षण (अग्निप्रवेश) करे तेनोज त्यां प्रवेश थाय छे.' एम सांभळी 'सेवके स्वामीनुं कार्य अवश्य करवुंज जोइए.' एवुं हृदयमां धारी हुं चितामां पेठो; एटले मारा देहनी भस्म लइ तेणे

विभीषण पास मूकी अने मारुं वृत्तांत जणाव्युं. पछी विभीषणे मारी सात्विक वृत्तिथी संतुष्ट थइ अमृत छांटीने मने सजीवन कर्यो अने पोतानी पुत्री परणावी. पछी में तेमने तमारुं आमंत्रण जणाव्युं. त्यारे ते बोल्या के, "मोटा माणसे पोताथी न्यून होय तेने घेर जवुं ते मान हानि छे, तेथी प्रथम तारा राजाए अहिं आववुं योग्य छे, पछी हुं तारा कहेवा प्रमाणे करीश. आ वातनी एंधाणी तरीके हुं मारुं चंद्रहास खड्ग तने आपुं छुं." एम कही मने खड्ग आप्युं. पछी तेमणे पोतानी शक्तिथी प्रिया सहित मने अहिं पहोंचाडी दीधो.'

आवा युक्तिवाळा तेना वाक्यने सत्य मानी राजा मंत्रीनी साथे विचारमां पड्यो के, 'अहो! आ तो जीवतो आव्यो. माटे हवे फरीवार कांइक छळ करीने तेने दुःखमां पाडीए.' कह्युं छे के, "राजा, सर्प, पिशुन, चोर, क्षुद्रदेवता, शिकारी प्राणी, शत्रु अने डाकण ते दुष्ट छे तोपण छल विना शुं करी शके, ते शिवाय तेमनो आरंभ निष्फळ थाय छे."

एक वखते हरिबळे भविष्यमां थवाना अनर्थनो विचार कर्या वगर मंत्रीओ सहित राजाने भोजननुं निमंत्रण कर्युं. राजा जमवा आव्यो त्यारे तेनी स्त्रीनुं लावण्य जोइने अत्यंत कामपीडित थइ गयो. पछी तेणे मंत्रीने पोतानो अभिप्राय जणाव्यो. एटले मंत्रीए कह्युं के, 'हे स्वामी! यमराजाने आमंत्रण करवा जवाने मिषे एने अग्निमां नाखी दइए, तो आपणुं इच्छित पूर्ण थाय.' राजाने ते विचार पसंद पड्यो. अन्यदा राजाए हरिबळने बोलावीने कह्युं के, 'हे सात्विक शिरोमणि! तमारा शिवाय बीजो कोण अग्निमार्गे जइने यमराजने मारे घेर तेडी लावे?' ते सांभळी हरिबळे विचार्युं के, 'राजाने आवी बुद्धि मंत्रीथी प्राप्त थइ छे.' पछी ते तो राजानी आज्ञा प्रमाण करीने घेर आव्यो अने विचारवा लाग्यो के, "खल पुरुषोने उपकार करवाथी उलटो महादोष उत्पन्न थाय छे, शुं अनुकूळ वर्तवाथी (मन गमतुं भोजन खावाथी) रोग अतिशय कोप करता नथी? करे छे. माटे हवे खलने योग्य शिक्षा करवी."

पछी राजाए एक चिता रचावी. हरिबळ पण तरत पेला देवने संभारीने त्यां आव्यो अने जाज्वल्यमान अग्निमां प्रवेश कर्यो. तत्काल तेनी काया सुवर्णवत् देदीप्यमान थइ अने ते पोताने घेर आव्यो पण कोइए तेने जोयो नहीं. ए समये राजा पण निर्भयपणे हरिबळने घेर आव्यो अने तेनी स्त्रीओनी पासे कामभोगनी याचना करी. त्यारे ते स्त्रीओ बोली के–"हे स्वामी! आपने सेवकनी स्त्रीओ पासे आवुं वाक्य बोलवुं घटित नथी. कारण के आ तो पहेरे-

गीरोएज चोरी करवी, रत्नकोएज धाड पाडवी, जळमांथीज ल्हाय उत्पन्न थवी अने सूर्यथीज अंधकार उत्पन्न थवा जेवुं छे. आवी रीते अनेक युक्तिथी समजाव्यो तथापि तेणे पोतानो आग्रह मूक्यो नहीं, एटले ते बंने स्त्रीओए मळीने राजाने दृढ बंधनथी बांधी लीधो अने तेना अवयव जर्जरित करी दीधा. पछी दया लावीने तेने छोडी मूक्यो एटले प्रातःकाळे ते लज्जाथी पोताना अंतःपुरमां पेसी गयो.

हवे हरिबळे विचार्युं के, 'कोइ वार आ दुष्ट मंत्री आवा दंभ करीने मने मारी नाखशे माटे हुंज दंभ करीने तेने यमराजनो अतिथि करुं.' कह्युं छे के:-

व्रजंति ते मूढधियः पराभवं भवंति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य ही घ्नंति शठास्तथाविधा–नसंवृतांगान्निशिता इवेषवः॥१॥

"जे मायावीनी साथे मायावी थता नथी ते मूढ लोको पराभवने पामे छे. कारण, तेवा शठ लोको कवच वगरना शरीरवाला पुरुषोने जेम तीक्ष्ण बाण पराभव करे छे तेम अंदर पेशीने हेरान करे छे." आ प्रमाणे विचारी हरिबळ कोइ पुरुषने यमराजनो छडीदार बनावी तेनी साथे राजसभामां आव्यो. राजा तेने जोइ विस्मय पामी गयो. तेणे हरिबळने यमराजनुं स्वरूप पूछयुं. एटले हरिबळे स्वबुद्धि प्रमाणे तेनुं वर्णन करी बताव्युं. पछी जणाव्युं के, "हे स्वामी! हुं यमराजनुं वर्णन वचनथी शुं करी शकुं, कारण के मोटा मोटा योगींद्रो पण तेना भयथी योगाभ्यास करे छे. वधारे शुं कहुं! त्रण भुवन तेनी सेवा करे छे. हे राजेंद्र! में ज्यारे सारी युक्तिथी तेने आमंत्रण कर्युं त्यारे तेमणे पोतानो छडीदार मारी साथे आपीने कह्युं के, मारी समृद्धि जोवाने माटे तारा राजाना मंत्रीने आनी साथे मोकलजे, पछी हुं तेनी साथे आवीश." हरिबळे आ प्रमाणे कह्युं एटले पेला कृत्रिम छडीदारे पण कह्युं के, 'हे मंत्री! सत्वर त्यां पधारो.' ते वखते राजा पण ज्वलता अग्निमां प्रवेश करवाने उत्सुक थइ गयो. ते जोइ स्वामीद्रोहना भयथी हरिबळे कह्युं के, 'महाराज! प्रथम तमारा आववाना खबर आपवा मंत्रीने मोकलो, पछी आप पधारजो.' एटले मंत्री राजानी वधामणी देवा माटे उत्सुक थइ सत्वर अग्निमां पड्यो अने भस्मावशेष थइ गयो. पछी हरिबळे राजाने कह्युं के, 'हे स्वामी! परस्त्रीना अंगनो संग करवानी बुद्धि छोडी आप चिरकाल दीर्घायु थाओ. स्वामीद्रोहनुं महा पाप जाणी में आपने मृत्युथी बचाव्या छे. हवे फरीवार पापबुद्धि आपनथी ते मंत्रीना दर्शन थशे नहीं.' आ प्रमाणे सांभळी खेद करतो सतो राजा पोताना महेलमां गयो, पण राजा तेनुं चातुर्य जोइने घणो संतुष्ट थयो, तेथी तेनी साथे पोतानी कन्यानो विवाह कर्यो.

अहिं कांचनपुरना राजाए मुसाफरोना मुखथी पोतानी पुत्रीना तथा हरिबळना खबर सांभळ्या. तेथी तत्काळ तेणे पोताना जामाताने तेडावी पोतानुं राज्य अर्पण कर्युं. पछी हरिबळ राजाए पोताना राज्यमां अमारीघोषणा करावी. अन्यदा विहार करतां करतां तेना धर्मगुरु मुनिमहाराज त्यां पधार्या. तेमने वंदना करी धर्मदेशना सांभळी. पछी पोताना देशमांथी साते व्यसनोने दूर कराव्या.

छेवटे पोतानी राजगादी उपर पोताना पुत्रने बेसाडी त्रणे राणीओ साथे तेणे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे हरिबळ राजर्षि मुक्तिने प्राप्त थया.

हे भव्यो ! आ प्रमाणे हरिबळनुं चरित्र सांभळी आ लोकमां पण पूर्ण फळने आपनारी जीवदयाने विषे महान् प्रयत्न करो. आ हरिबळनुं वधारे विस्तारवाळुं चरित्र श्री प्रतिक्रमण सूत्रनी बृहद्वृत्तिथी जाणी लेवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
हिंसात्यागविषये पंचषष्टितमः प्रबंधः ६५ ॥

व्याख्यान ६६ मुं.

हवे जे प्राणी निरंतर छकायनी हिंसा करवामां तत्पर रहे छे तेनुं फळ बतावे छे.

निरपराधजंतूनां, कुर्वंति वधमन्वहम् ।
असंयता गतघृणा, भ्रमंति भवकंदरे ॥१॥

व्याख्या.

"जे प्राणी हंमेशा निर्दयपणे अने अविरतपणे निरपराधी प्राणीओनी हिंसा करे छे ते आ संसारने विषे परिभ्रमण करे छे." श्री पुष्पमालानी टीकामां कह्युं छे के. " जे जीव प्राणीने वध बंधन करवामां तेमज मारवामां निरंतर तत्पर होय छे अने जीवोने अति दुःख आपनार होय छे ते मृगावतीना पुत्रनी जेम सघळा दुःखना स्थानरूप थाय छे " आ ठेकाणे वध शब्दे ताडनादि करवावडे पीडा उपजाववानुं समजवुं. बंध शब्दे दोरडा विगेरेथी सख्त बंधन करवानुं समजवुं अने मारण शब्दवडे प्राणथी वियोग करवानुं समजवुं. ते वध, बंध तथा

मारणमां रक्त अने जुठुं आळ देवा विगेरेथी प्राणीने घणुं दुःख उत्पन्न करनार प्राणी मृगापुत्रनो जेम समस्त प्रकारना दुःखनुं भाजन थाय छे. ते मृगापुत्रनुं दृष्टांत श्री विपाकसूत्रने अनुसारे अहीं लखीए छीए.

श्री मृगापुत्रनी कथा.

श्री वीरप्रभु पृथ्वीने पवित्र करता करता अन्यदा मृग नामना गामना उद्यानमां समवसर्या. पछी प्रथम गणधर श्री इंद्रभूति प्रभुनी आज्ञा लइने मृग गाममां गोचरीए गया. त्यांथी एषणीय अन्नादि लइ पाछा वळतां मार्गमां एक वृद्ध अने अंध कोढीआने जोयो. तेना मुख उपर माखीओ बणबणी रही हती अने ते पगले पगले स्खलित थतो हतो. एवा दुःखना घररूप तेने जोइ गौतमस्वामीए प्रभुनी पासे आवीने पूछयुं के " हे भगवन् ! आजे में एक एवा महा दुःखी पुरुषने जोयो छे के तेना जेवो विश्वमां कोइकज दुःखी हशे ? "

प्रभु बोल्या-" हे गौतम! एने कांइ मोटुं दुःख नथी, आज गाममां विजय राजानी पत्नी मृगावती नामे राणी छे, तेनो प्रथम पुत्र लोढीआना जेवी आकृतिवाळो छे, तेना दुःखनी आगळ आनुं दुःख कोण मात्र छे. ए मृगापुत्र मुख, नेत्र अने नासिकादिके रहित छे, तेना देहमांथी दुर्गंधी, रुधिर अने परु श्रव्या करे छे, ते जन्म लीधा पछी सदा भूमिगृहमांज रहे छे. " आ प्रमाणे सांभळी गौतमस्वामी आश्चर्य पाम्या अने प्रभुनी आज्ञा लइ तेने जोवानी इच्छाए राजाने घेर गया. राजपत्नी मृगावती गणधर महाराजने अचानक आवेला जोइ बोली- ' हे भगवन् ! तमारुं दुर्लभ आगमन अकस्मात् केम थयुं छे ? ' गणधर भगवंत बोल्या-'मृगावती ! प्रभुना वचनथी तारा पुत्रने जोवा माटे आव्यो छुं.' राणीए तरतज पोताना सुंदर आकृतिवाळा पुत्रो बताव्या, एटले गणधर बोल्या-' हे राजपत्नी ! आ शिवाय तारा जे पुत्रने भूमिगृहमां राख्यो छे ते बताव.' मृगावती बोली के-' भगवन् ! मुखे वस्त्र बांधो अने चणवार राह जुवो के जेथी हुं भूमिगृह उघडावुं ने तेमांथी केटलीक दुर्गंध नीकळी जाय तेम करुं.' पछी चणवारे मृगावती गौतमस्वामीने भूमिगृहमां लइ गइ. गौतमस्वामीए नजीक जइने मृगावतीना पुत्रने जोयो. ते पगना अंगुठा, होठ, नासिका, नेत्र, कान अने हाथ वगरनो हतो; जन्मथी नपुंसक, बधिर अने मुंगो हतो; दुस्सह वेदना भोगवतो हतो; जन्मथी मांडीने शरीरनी अंदरनी आठ नाडीमांथी अने बहारनी आठ नाडीमांथी रुधिर तथा परु श्रव्या करतुं हतुं. जाणे मूर्तिमान् पाप होय तेवा ते लोढकाकृति पुत्रने जोइ गणधर बहार नीकळ्या. अने प्रभुनी पासे आवीने

पूछयुं के, 'हे स्वामी ! आ जीव कया कर्मथी नारकीनी जेवुं दुःख भोगवे छे ?' प्रभु बोल्या—

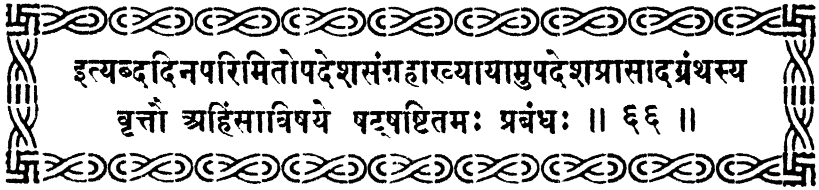
'शतद्वार नामना नगरमां धनपति नामना राजाने इकाई राष्ट्रकूट नामे एक सेवक हतो. ते पांचसो गामनो अधिपति हतो. तेने साते व्यसन सेववामां घणी आसक्ति हती. ते घणा आकरा करोथी लोकोने पीडतो हतो. अने कान, नेत्र विगेरे छेदीने लोकोने हेरान करतो हतो. एक समये तेना शरीरमां सोळ रोग उत्पन्न थया. ते आ प्रमाणे—श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, पेटमां शूळ, भगंदर, हरष, अजीर्ण, नेत्रभ्रम, मुखे सोजा, अन्न पर द्वेष, नेत्रपीडा, खुजली, कर्णव्याधि, जलोदर अने कोढ, कह्युं छे केः—

दुष्टानां दुर्जनानां च पापीनां क्रूरकर्मणाम् ।
अनाचारप्रवृत्तानां पापं फलति तद्भवे ॥१॥

" दुष्ट, दुर्जन, पापी, क्रूरकर्म करनार अने अनाचारमां प्रवर्तनारने तेज भवमां पाप फळे छे." ते राठोडे क्रोध अने लोभने वश थइ अनेक पापो कर्यां. तेणे पोतानो बधो काळ पाप करवामांज गुमाव्यो. एवी रीते अढीशें वर्षनुं आयुष्य भोगवी मरण पामीने पहेली नरके गयो. त्यांथी नीकळीने अहिं मृगावतीना पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे. तेने मुख न होवाथी तेनी माता राब करीने तेना शरीर उपर रेडे छे. ते आहार रोगना छीद्रद्वारा अंदर पेसी परु अने रुधिरपणाने पामी पाछो बहार नीकळे छे. आवा महा दुःखवडे बत्रीश वर्षनुं आयुष्य पूरुं करी मरण पामीने आज भरतक्षेत्रमां वैताढ्य समीपे सिंह थशे. त्यांथी मरण पामीने फरीवार पहेली नरके जशे. त्यांथी सर्पोळीया (नोळीया) पणाने पामी बीजी नरके जशे. त्यांथी पक्षी थइ त्रीजी नरके जशे. एम एक एक भवने आंतरे सातमी नरक सुधी जशे, पछी मच्छपणुं पामशे. पछी स्थलचर जीवोमां आवशे. पछी खेचर—पक्षी जातिमां उपजशे, पछी चतुरिंद्रिय, तेइंद्रिय अने बेइंद्रियमां आवशे. पछी पृथिवी विगेरे पांचे थावरमां भमशे. एवी रीते चोराशी लाख योनिमां वारंवार भमी अकामनिर्जराए लघुकर्मी थवाथी प्रतिष्ठानपुरे एक श्रेष्ठीने घेर पुत्रपणे उपजशे. त्यां साधुना संगथी धर्मपाळी मरण पामीने देवता थशे त्यांथी. चवी अनुक्रमे सिद्धिपदने पामशे.

आ प्रमाणे श्री वीरप्रभुए गौतमस्वामीने लोढकनो संबंध कह्यो. आ कथा

सांभळी आस्तिक पुरुषोए चराचर जीवोनी हिंसा छोडी देवी अने हंमेशा पोतानुं चित्त अहिंसक करवुं.



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ अहिंसाविषये षट्षष्टितमः प्रबंधः ॥ ६६ ॥

व्याख्यान ६७ मुं.

जे पुरुष हिंसानो मनोरथ करे ते पोतेज दुःखी थाय छे, ते विषे कह्युं छे के—

यदि संकल्पतो हिंसा–मन्यस्योपरि चिंतयेत् ।
तत्पापेन निजात्मा हि, दुःखावनौ च पात्यते ॥१॥

व्याख्या.

"जो कोइ प्राणी संकल्पथी पण बीजानी उपर हिंसानुं चिंतवन करे, तो ते पापथी पोताना आत्मानेज दुःखनी भूमिमां पाडे छे." आ विषे दासीपुत्रनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

दासीपुत्रनी कथा.

कौशांबी नामनी नगरीमां महीपाल नामे राजा हतो. ते नगरना उद्यानमां त्रण ज्ञानने धारण करनार वरदत्त नामे मुनि पधार्या. तेमणे चतुर्विध संघने आ प्रमाणे देशना आपी–" जैनीओ अपराधी अने निरपराधी बंनेनी उपर दया करे छे. जेम चंद्र, राजा अने चंडाळ बंनेना घर उपर सरखी कांति प्रसारे छे तेम."

आ प्रमाणे धर्मदेशना देतां गुरुए अकस्मात् हास्य कर्युं. ते जोइ सभ्य जनो विस्मय पामीने बोल्या–' भगवन् ! प्रवचनमां कह्युं छे के हास्य करवाथी सात अथवा आठ प्रकारना कर्मनो बंध थाय छे, तो तमारा जेवा मोहने जीतनारा पुरुषोने अवसर विना हास्य उत्पन्न केम थयुं ?' मुनि बोल्या–' भद्रो ! सांभळो, आ लींबडाना वृक्ष उपर समळी नामे पक्षिणी देखाय छे, ते पूर्वभवना वैरथी क्रोध लावी बे पगवडे मने मारी नाखवाने इच्छे छे.' ते सांभळी सभ्य जनोए कौतुकथी तेनो पूर्वभव पूछ्यो. मुनिए ते समळीने प्रतिबोध थवा माटे कह्युं के–

" आ भरतखंडमां आवेला श्रीपुर नामना नगरमां धन्य नामे श्रेष्ठी हतो. तेने सुंदरी नामे स्त्री हती. ते व्यभिचारिणी हती. एक वखते तेना जारपुरुषे तेने कह्युं के, ' आजथी तारे मारी पासे आववुं नहीं, कारण के हुं तारा स्वामीथी भय पामुं छुं. ' सुंदरी बोली—' प्रियतम ! एवुं बोलो नहीं, थोडा दिवसमां हुं एवुं करीश के आपणे निर्भय थइशुं. अर्थात् मारा पतिने हुं मारी नाखीश. ' एक वखते ते सुंदरीए पतिने मारी नाखवा झेर साथे दुधनो प्यालो तैयार कर्यो. पछी पतिने पीरसवा माटे ते प्यालो लेवाने जेवी ते घरमां गइ तेवामां तेने सर्पे डशी, एटले ते पृथ्वीपर पडीने मृत्यु पामी. धन्यश्रेष्ठी तेना पडवानो अवाज सांभळी संभ्रमथी भोजन करतो उभो थयो अने ' आने शुं थयुं ? ' एम बोलतो तेनी पासे गयो. तत्काळ सुंदरीने मृत्यु पामेली जोइ तेना परना स्नेहथी तेना दुश्चरित्रने नहीं जाणनारो ते विलाप करवा लाग्यो. सुंदरी मृत्यु पामीने सिंह थइ. धन्यश्रेष्ठीए वैराग्य पामीने दीक्षा लीधी.

अन्यदा कोइ वनमां ते धन्यमुनि कायोत्सर्गे रह्या हता. त्यां दैवयोगे पेली सुंदरीनो जीव सिंह आवी चड्यो. तेणे पूर्व भवना वैरथी मुनिने मारी नाख्या. धन्यमुनि मृत्यु पामीने बारमा अच्युत देवलोके देवता थया अने ते सिंह मरीने चोथी नरके गयो.

धन्यमुनिनो जीव बारमा स्वर्गथी चवी चंपानगरीमां दत्त नामना श्रेष्ठीने घेर वरदत्त नामे पुत्र थयो. ते बाल्यवयथीज विवेकी, दातार अने दयाळु हतो. थोडा वखतमां तेणे समकित रत्न प्राप्त कर्युं. सुंदरीनो जीव चोथी नरकमांथी नीकळी अनेक भवमां भमी वरदत्तने घेर कामुका नामे दासीनो पुत्र थयो. ते चंपामां दासीपुत्र एवा नामथी प्रख्यात थयो. ए दासीपुत्र वरदत्तने शत्रुनी जेम जोवा लाग्यो, तथापि तेने प्रीति उत्पन्न करवा थोडी थोडी दया पाळवा लाग्यो. तेने धर्मिष्ठ जाणी संतुष्ट थयेला श्रेष्ठीए विचार्युं के, 'आ मारो धर्मबंधु छे. ते कर्मयोगे नीच कुलमां उत्पन्न थयो छे, पण जैन सिद्धांत प्रमाणे परमार्थथी कुलनी प्रधानता जोवाती नथी. ' आवुं विचारी तेणे लोकोनी समक्ष तेने पोताना भ्राता तरीके स्थापन कर्यो. त्यारथी लोकोमां पण ते श्रेष्ठीभ्राता एवा नामथी प्रसिद्ध थयो. दासीपुत्र, उपरथी कपटवृत्तिवडे भक्ति बतावतो, पण अंदरथी गृहनो स्वामी थवा माटे श्रेष्ठीने मारी नाखवा सारु विविध प्रकारना उपायो योजतो हतो.

एक वखते तेणे शयन समये श्रेष्ठीने विषयुक्त नागरवेलनुं पान आप्युं,

पण वरदत्ते ते समये चोविहारनुं पच्चक्खाण करेलुं होवाथी ते ओशीके मूकीने सुइ गयो. प्रातःकाळे नवकारनुं स्मरण करतो ते देरासरे प्रभुने नमवा गयो. ए समये वरदत्तनी स्त्रीने ते तांबूलपत्र हाथ आवतां दासीपुत्रने आंगणामां उभेलो जोइ ते बोली के–'देवर! आ तांबूल ग्रहण करो.' दासीपुत्र तेना रूप तथा कंकणादि अलंकारमां मन लगाडी तेनी मनोहर वाणीथी मोह पामी प्रसन्न थइ गयो हतो, तेथी ते तांबूलपत्र भक्षण करी गयो. तत्काल विषप्रयोगथी भूमी उपर पडी, आर्त्तध्याने मृत्यु पामी, आ समळीरूपे उत्पन्न थयो छे. तेनुं एवुं स्वरूप जोइ संसारथी वैराग्य पामी स्वद्रव्यने उत्तम क्षेत्रमां वावी वरदत्ते दीक्षा लीधी, ते आ हुं छुं अने आ प्रमाणे मारुं पूर्व वृत्तांत छे."

ए वखते ते समळी पोतानो पूर्वभव सांभळी जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थवाथी वृक्षनी नीचे उतरी गुरुना चरणमां पडी, अने तेणे पोताना अपराध खमाव्या. पछी मुनिना वचनथी अनशन करी मृत्यु पामीने ते स्वर्गे गई. ते जोइ राजा विगेरेए अहिंसा धर्म स्वीकार्यो. मुनि चारित्र पाळीने मोक्षे गया.

आ प्रमाणे दासीपुत्रना प्रबंधथी हिंसानो संकल्प करवो ते पण अति दुःखदायक छे, एम जाणी रागद्वेषवडे थती हिंसाने तजी दइ ते मुनि चिद्रूप-लक्ष्मी (मोक्ष लक्ष्मी) ने प्राप्त थया.

इत्यब्दादिनपरिमितोपसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद ग्रंथस्य वृत्तौ
अहिंसासंकल्पविषये सप्तषष्टितमः प्रबंधः ॥ ६७ ॥

व्याख्यान ६८ मुं.

कोइक अज्ञानी एम कहे छे के " जे माछी के वागुरिक जातना लोको छे तेओने बोकडा, कुकडा विगेरेनी हिंसा करवी ते तो कुलाचार प्रमाणे चाली आवे छे. तेथी ते कांइ पापनो हेतु थती नथी. कारण के, तेओ कहेछे के, अमने तो ईश्वरे आवोज अवतार आप्यो छे, अने अमारा पूर्वजोए जे आचर्युं छे ते अमे पण आचरीए छीए तो तेमां कांइ दोष नथी." आ प्रमाणे कहेनाराओ प्रत्ये जे शिक्षा छे, ते नीचे प्रमाणे छेः—

कुलक्रमागतां हिंसां, परित्यजति यो बुधः ।
कुमारपालवद् ज्ञेयः, स श्रेष्ठः श्रावकोत्तमः ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जे प्राज्ञ पुरुष कुलक्रमथी चाली आवती हिंसाने त्यजी दे तेने कुमारपाळनी जेवो श्रेष्ठ श्रावक समजवो. " आ विषे कुमारपाळनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

श्री कुमारपाळ राजानी कथा.

पाटण नगरमां ज्यारे सिद्धराज जयसिंह मृत्यु पाम्यो त्यारे संवत ११९९ना वर्षमां कुमारपाळ राजा थयो. कह्युं छे के,

न श्रीः कुलक्रमायाता । शासने लिखिता न च ।
खड्गेनाक्रम्य भुंजीत । वीरभोग्या वसुंधरा ॥ १ ॥

"लक्ष्मी कांइ कुलक्रमथी चाली आवती नथी, अने लेखमां लखाती नथी, पण ते तो मात्र खड्गथीज मेळवीने भोगवाय छे, कारण के, पृथ्वी वीरभोग्याज छे. " ते राजाए पचास वर्ष पर्यंत देशांतरमां फरवाथी मेळवेली निपुणतावडे राजनीति स्थापन करी हती. तेणे दिग्विजय करीने अग्यार लाख घोडा, अग्यारसो हाथी, पचास हजार रथ, बोंतेर सामंत अने अढार लाख पेदल—एटली समृद्धि एकठी करी हती. तेना दिग्विजयनुं प्रमाण श्री वीरचरित्रमां आ प्रमाणे कहेल छे के—" कुमारपाळ राजा पूर्वमां गंगा सुधी, दक्षिणमां विंध्याचळ सुधी, पश्चिममां सिंधु नदी सुधी अने उत्तरमां तुर्क देश सुधी पोतानी आज्ञा प्रवर्तावशे. " एक वखते राजा कुमारपाळ सभा भरीने बेठो हतो तेवामां श्री हेमचंद्रसूरि तेने प्रतिबोध पमाडवा माटे त्यां आव्या. सूरिने आवता जोइ राजाए उभा थइ आसन आप्युं अने गुरुए पूर्वे करेला उपकारो संभारीने तेमने वंदना करी. पछी राजाए पूछयुं के—' हे भगवन् ! सर्व धर्ममां कयो धर्म श्रेष्ठ?' गुरु बोल्या—' हे राजन् ! सर्व धर्ममां अहिंसा धर्म श्रेष्ठ छे अने ते सर्व शास्त्रोमां विख्यात छे. जे धर्ममां जीवदया नथी, ते धर्मने सर्व रीते छोडी देवो. ' वळी कृष्णे युधिष्ठिरने कह्युं छे के,—

ध्रुवं प्राणिवधो यज्ञे । नास्ति यज्ञस्त्वहिंसकः ।
सर्वसत्त्वेष्वहिंसैव । धर्मयज्ञो युधिष्ठिर ! ॥

' हे युधिष्ठिर ! यज्ञमां प्राणीनो वध जरूर थाय छे. कोइ यज्ञ हिंसा विना

થતો નથી; તેથી સર્વ પ્રાણી ઉપર જે દયા તેજ મોટો ધર્મયજ્ઞ છે.' વળી મીમાંસામાં પણ કહ્યું છે કે—

अंधे तमसि मज्जामः । पशुभिर्ये यजामहे ।
हिंसायां न भवेद्धर्मो । न भूतो न भविष्यति ॥

"જે પશુવડે યજ્ઞ કરે છે તે અંધકારમાં મગ્ન થાય છે. હિંસાથી કદિ પણ ધર્મ થતો નથી, થયો નથી અને થશે પણ નહીં."

જૈન શાસ્ત્રમાં પણ કહ્યું છે કે, 'ધર્મ ધર્મ એ શબ્દ જગતમાં ઘણે પ્રકારે પ્રવર્ત્તે છે, તેથી ઘર્ષણ, તાપ અને છેદવડે જેમ સુવર્ણની પરીક્ષા કરીએ છીએ તેમ તેની ત્રણ પ્રકારે પરીક્ષા કરવી.' પરસ્પર વિરોધી એવા દર્શનોના ૩૬૩ ભેદ છે, પણ તેઓ અહિંસાને દૂષિત કરતા નથી. તેથી જ્યાં વિશેષ પ્રકારે અહિંસા વર્त्तती હોય તે ધર્મને ગ્રહણ કરવો." આ પ્રમાણે સૂરિના ઉપદેશથી સમ્યક્ પ્રકારે ધર્મને જાણ્યા છતાં પણ કુમારપાળ રાજા લોકલજ્જાથી મિથ્યાત્વને છોડી દેવા ઇચ્છતો નહોતો. કહ્યું છે કે, "કામરાગ અને સ્નેહરાગ ટાળવા સુલભ છે, પણ દૃષ્ટિરાગ તો એવો મહાપાપી છે કે તે સત્પુરુષોને પણ દુઃખ આપે છે."

રાજાએ સૂરિને કહ્યું કે, 'ભગવન્! કુલ તથા દેશનો ધર્મ તો ઉલ્લંઘન કરવો નહીં. નીતિમાં પણ એ પ્રમાણે કહ્યું છે, તેથી કુલાચારને ત્યજવો તે યોગ્ય જણાતું નથી.' સૂરિ બોલ્યા—'રાજન્! આ વાક્ય શુભ કર્મ ન તજવા માટે ગ્રહણ કરવાનું છે, કદિ કુલક્રમથી દરિદ્રતા ચાલી આવતી હોય તો તેને નિવારવા કોણ ઇચ્છા ન કરે? કહ્યું છે કે, "જ્યાંસુધી બીજાની પ્રતીતિમાંજ બુદ્ધિ વર્તતી હોય ત્યાંસુધી તેના બધા વિચાર દુઃખદાયક છે; તેથી પોતાના મનને પોતાના ખરા સ્વાર્થમાં યોજવું, કારણકે કાંઇ આપ્તવચન આકાશમાંથી પડતા નથી. મૂઢ બુદ્ધિવાળા પુરુષો કુલક્રમવડે ધર્મનું આચરણ કરે છે અને વિદ્વાનો પરીક્ષા કરવાવડે પોતાના ચિત્તમાં નિશ્ચય કરીને ધર્મ આચરે છે." કોઇ એવા પણ મૂઢ હોય છે કે જેઓ લોઢાના ભારને વહન કરનારની જેમ રુપું તથા સુવર્ણાદિ મળ્યા છતાં લોઢુંજ રાખવારૂપ પોતાનો કદાગ્રહ કદિ પણ છોડતા નથી તેઓ આ દુરંત સંસારમાં પરિભ્રમણ કરે છે. તેથી હે રાજા! સર્વ ધર્મ દયામૂલ છે અને તે સર્વ શાસ્ત્રોવડે પ્રમાણ ગણાય છે; તેથી ભ્રાંતિને છોડી દઇ દયાધર્મમાં સ્થિર થાઓ." આચાર્યની આવી યુક્તિથી પ્રતિબોધ પામીને કુમારપાળ રાજાએ પ્રાણાતિપાતવિરમણ વ્રત ગ્રહણ કર્યું અને પોતાના રાજ્યમાં સર્વત્ર પટહ વગડાવીને જણાવ્યું કે, "ચારે વર્ણમાં જે કોઇ પોતાને માટે કે બીજાને માટે જીવને હણશે

ते राजद्रोही गणाशे." पछी पोताना राज्यमां जे पारधि, कसाइ, माछी अने दारुना पीठावाळा हता तेमना व्यापार बंध कराव्या अने तेओनी उपरना कर मात्र छोडी दीधा, तेमज तेओनो निष्पापवृत्तिए निर्वाह चाले तेवी योजना करी आपी.

एक वखते कुमारपाळना शरीरमां कुळदेवीए करेला कष्टने जोइने वाग्भट नामना मंत्रीए कह्युं के, 'स्वामी! आत्मरक्षा माटे देवीने पशु आपो.' ते सांभळी 'अरे! आ वणिक केवो निःसत्त्व छे. मारी भक्तिमां घेलो थइ आवां वचन बोले छे.' एवुं धारी राजा बोल्यो के, अरे मंत्री! सांभळ—

भवे भवे भवेद्देहो, भविनां भवकारणम्।
न पुनः सर्वविरप्रोक्तं, मुक्तिकारि कृपावृतम् ॥१॥
श्वासश्चपलवृत्तिः स्या–ज्जीवितं च तदात्मकं ॥
तत्कृतेऽहं कथं मुंचे, स्थिरां मोक्षकरीं कृपाम् ॥२॥

"आ भवना कारणरूप देह भवे भवे प्राप्त थया करे छे, पण सर्वज्ञ प्रभुए कहेलो दयाधर्म वारंवार प्राप्त थतो नथी. वळी श्वास चपल छे अने जीवित तेने आधिन छे, तो तेने अर्थे मोक्षने आपनारी एवी स्थिर दया हुं शामाटे छोडी दउं.?" आवी धर्मदृढताथी तेना देहमांथी सर्व रोग नाश पामी गया.

एक वखते कुमारपाळ गुरुने प्रणाम करी उभा हता ते वखते गुरु बोल्या– 'राजन्! आवुं देहमां कष्ट छतां पण तमे अर्हतना शासनथी भ्रष्ट थया नहीं, तेथी आजथी तमने परमार्हतनुं बिरुद आपुं छुं.

आ प्रमाणे राजाना मुखमां, मनमां, घरमां, देशमां अने नगरमां सर्वत्र दया व्यापवाथी हिंसाने कोइ ठेकाणे स्थान मळ्युं नहीं, तेथी ते पोताना पिता मोहनी पासे गइ. मोहे चिरकाळे जोएली हिंसाने ओळखी नहीं, तेथी पूछ्युं के– 'हे सुंदरी! तुं कोण छे?' ते बोली–'पिताजी! हुं तमारी वहाली पुत्री हिंसा छुं.' मोहे पूछ्युं के 'तुं केम ग्लानि पामी गइ छुं?' हिंसा बोली के–'हे तात! कांइ कहेवानी वात नथी. राजा कुमारपाळे मने देशमांथी काढी मूकी छे.' ए सांभळी मोह रोष पामीने बोल्यो 'वत्से! रुदन कर नहीं, हुं तारा वैरीओने रुदन करावीश.' आ प्रमाणे आश्वासन आपी मोहे गर्वथी कह्युं 'अरे पुत्री! आ त्रण भुवनमां कोइ एवो नथी के जे मारी आज्ञानो लोप करे.' पछी मोहराजाए पोताना सैन्यने सज्ज कर्युं. तेमां कदाग्रह नामे मंत्री हतो, अज्ञानराशी नामे सेनापति हतो, मिथ्यात्व,

विषय अने दुर्ध्यानरूप सुभटो हता अने हिंसानी सांथे पाणिग्रहण करावनारा यज्ञकर्ता ब्राह्मणो पण हता. ते सर्व सैन्य चौलुक्यवंशी कुमारपाळनी साथे युद्ध करवा गयुं, पण पराभव पामी पाछुं आव्युं, एटले मोह दुःखथी विलाप करवा लाग्यो. ते वखते रागादि पुत्रो तेने कहेवा लाग्या–' पिताजी ! तमारी जेवा गरुडने टीटोडीरूप कुमारपाळनी धर्मबुद्धिने छेदवामां आटलो बधो खेद केम थाय छे ?' मोहनो मोटो पुत्र राग बोल्यो –'तात ! हुं एकलोज आ त्रण भुवनने जीती शकुं तेवो छुं. जुओ ! इंद्र अहल्यानो जार थयो, ब्रह्मा पोतानी पुत्री पछवाडे गया अने चंद्रे गुरुनी स्त्रीने सेवी, ए प्रमाणे में कोने कोने अस्थाने पग नथी मुकाव्यो ? मारा बाणने जगतने उन्माद उत्पन्न करवामां शो श्रम पडे ?' पछी क्रोध बोल्यो–' पिता ! मारुं पराक्रम सांभळो, हुं आखा जगतने अंध अने बधिर करी दउं, धीर अने सचेतनने अचेतन प्राय करी दउं, मारा प्रभावथी बुद्धिमान् पण कृत्याकृत्य जोता नथी, हितनी वात सांभळता नथी अने भणेलुं पण भूली जाय छे.' ए प्रमाणे लोभे अने दंभे(कपटे) गर्जना करी पोतानी भुजानो आस्फोट करीने पोतानुं पराक्रम जणाव्युं. पछी पोताना शत्रु धर्मराजा साथे तेमज तेने स्वदेशमां अवकाश आपनार कुमारपाळ साथे युद्ध करवाने ते सर्वे एकठा थइ गया. राजा कुमारपाळे धर्मराजाना मंत्री सदागम (सच्छास्त्र) नी सलाह प्रमाणे वर्तीने तेमने क्षणवारमां जीती लीधा.

कुमारपाळनुं आवुं साहस अने बळवानपणुं जोइ धर्मराजा प्रसन्न थया अने पोतानी पुत्री कृपासुंदरी (दया) तेने आपी (वाग्दान कर्युं). पछी श्री हेमचंद्रसूरिरूप ब्राह्मणे (कुळगुरुए) श्री अर्हतदेवनी समक्ष, धर्मध्यानना चार भेदरूप चोरीमां नवतत्त्वरूप वेदीनी उपर प्रबोधरूप अग्नि प्रगटावी अने तेमां भावनारूप घी होमी कुमारपाळने कृपासुंदरी नामनी कन्या साथे पाणिग्रहण कराव्युं. (फेरा फेरव्या). ते वखते चत्तारिमंगलं विगेरे वेदोच्चार कर्यो. पछी धर्मराजाए पोताना जामाताने पाणिमोचन पर्वमां सौभाग्य, आरोग्य, बळ अने अनेक सुख आप्यां. राजा कुमारपाळे कृपासुंदरीने पटराणी पद आप्युं.

एक वखते राजा कुमारपाळने पूर्वे पृथ्वीमां फरतां एक पाप कर्युं हतुं ते याद आव्युं. ते एवी रीते बन्युं हतुं के, ' एक वखते राजा दधिस्थळीने मार्गे जतो हतो. त्यां मार्गमां वृक्षनी छायामां विश्रांत थइने बेठो. तेवामां एक उंदर दरमांथी रूपामोहोर काढतो जोवामां आव्यो. राजाए विचार्युं के ' आ मूषक केटली मुद्रा काढे छे ते जोइए. ' क्षणवारमां तेणे एकवीश मुद्रा काढी. पछी ते उपर नृत्य करी अने शयन करी एक मुद्रा लइने पाछो बिलमां पेठो. ते वखते

कुमारपाळे चिंतव्युं के, 'अहो ! आ प्राणीने कांइ भोग नथी, कांइ गृहकार्य करवाना नथी, कांइपण राजाने आपवानुं नथी, बीजानो कांइ सत्कार करवानो नथी. वळी तीर्थयात्रादिक सुकृत कांइ करवानुं नथी, तथापि ते लुब्धबुद्धिथी धन उपर केवी प्रीति राखे छे ? तेथी हुं मानुं छुं के, आ जगतमां धनना जेवुं बीजुं कांइपण मोहक नथी.' आ प्रमाणे विचारी राजाए बाकीनी मुद्रा लइ लीधी अने दूर उभो रह्यो. एटलामां तो उंदर बिलमांथी नीकळ्यो, पण त्यां एके मुद्रा न दीठी एटले तत्काळ हृदय फाटी जवाथी मृत्यु पामी गयो. ते जोइ राजा घणो खेद पाम्यो सतो विचारवा लाग्यो के—

धनेषु जीवितव्येषु, स्त्रीषु चान्येषु सर्वदा ॥
अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे, याता यास्यंति यांति च ॥१॥

"अहो ! प्राणीओ, धननी इच्छामां, जीवितमां, स्त्रीमां अने बीजामां सदा अतृप्त रह्या सता चाल्या गया छे, चाल्या जाय छे अने चाल्या जशे."

आ प्रमाणे पूर्व पापने याद करीने ते पापनुं प्रायश्चित करवा सारु प्रथम व्रत ग्रहण करवाने समये ते स्थळे जइ त्यां उंदरीकाविहार नामे प्रासाद कराव्यो. ते अद्यापि पण त्यां रहेलो छे.

एक वखते शाकंभरी नगरीनो स्वामी आनाक नामे राजा जे कुमारपाळनी बेननो स्वामी (बनेवी) थाय, ते पोतानी पत्नी साथे सोगठाबाजी रमतो हतो. तेणे हास्यथी रमतां रमतां कह्युं के, "हेमसूरि विगेरे मुंडाओने मारो." त्यारे पत्नीए कह्युं, "स्वामी ! एम बोलो नहीं, ते आचार्य तो मारा भाइना गुरु थाय छे अने हिंसाने निवारनारा छे." राणीए आ प्रमाणे कह्या छतां आनाक राजा वारंवार ते प्रमाणे कहेवा लाग्यो, त्यारे राणी कोप करीने बोली के–'अरे जांगडा ! जीभने संभाळी राखो. हुं तमारी स्त्री छुं एम धारी मारो कदि भय न होय पण शुं मारा भाइ कुमारपाळनो पण भय नथी ?' राणीनां आवां वचन सांभळी आनाके रोष करी पत्नीने पाटु मारी. पत्नीए कह्युं, 'अरे दुष्ट ! जो तमारी जीभ मारा भाइ पासे अवळा मार्गे खेंची कढावुं तो मने राजपुत्री सत्य जाणजो.' आ प्रमाणे कहीने ते पाटण चाली गइ, अने पोतानी प्रतिज्ञा भ्राताने जणावी. तत्काळ सैन्यथी विंटाएला चौलुक्ये शाकंभरी उपर चडाइ करी. कुमारपाळनी मोटी सेना आवेली सांभळी आनाक राजा पण त्रण लाख घोडा, पांचसो हाथी अने दशलाख पायदल लइ सामो चाल्यो. बन्ने लश्कर भेळा थया. परंतु चौलुक्यराजानी मोटी सेना जोइने आनाके

घणुं द्रव्य आपी कुमारपाळनी मोटी सेनामां फाटफुट करी दीधी. पछी ज्यारे संग्राम शरु थयो, त्यारे सामंतोने युद्ध करवामां उदास वृत्तिवाळा जोइ राजा कुमारपाळे महावतने पूछयुं के 'आ सामंतो युद्ध केम करता नथी?' महावते जणाव्युं के, 'महाराज! तमारा सैन्यना आगेवानोने आनाकराजाए द्रव्य आपीने खुटव्या छे.' राजा बोल्यो-'हे महावत! तुं केवो छुं?' ते बोल्यो-हुं, आ कलह पंचानन हाथी अने तमे ए त्रण जण फर्या नथी.' आ हकीकत सांभळी राजा चिंतातुर चित्ते युद्ध करवा तैयार थयो. ते वखते एक चारण बोल्यो—

कुमारपाळ मम चिंत कर । चिंतर्युं किमपि न होय ॥
जिणे तुह रज्ज समप्पियुं । चिंता करशे सोय ॥१॥
अमे थोडा रिउ घणा । इय कायर चिंतंत ॥
मुद्ध निहाळो गयणलों । के उज्जोय करंत ॥२॥

"हे राजा कुमारपाळ! मनमां चिंता करीश नहीं, चिंतवेलुं कांइ थतुं नथी, केमके जेणे तने राज्य आप्युं छे, तेज तारी चिंता करशे. हे भोळा राजा! अमे थोडा अने शत्रु घणा छे एम चिंतववुं, ते तो कायरनुं काम छे; आ आकाशमां जो के उद्योत करनार थोडा छे के घणा." आवा तेना शब्द सांभळी राजा कुमारपाळ युद्ध करवा चाल्या. बंने वच्चे मोटुं युद्ध थयुं. प्रांते अतुल बळवाळो कुमारपाळ विजळीनी जेम ठेकीने शत्रुना हाथीना स्कंध उपर चडी जइ, हाथीनी ध्वजा छेदी, शत्रुने पृथ्वी उपर पाडी, तेनी छाती उपर चडी बेठो. पछी कह्युं के, 'अरे वाचाळ! मारी बेनना वचन सांभरे छे? हुं तेनी प्रतिज्ञा पूरी करवा माटे आ तरवारवडे तारी जिह्वा छेदी नाखुं? हवे पछी हिंसक वाक्य बोलीश?' आ प्रमाणे बोलवावडे यमराजानी जेवा दुर्दर्श कुमारपाळने जोइ आनाकराजा कांइ पण बोली शक्यो नहीं. ते वखते कुमारपाळनी पासे तेनी बेने आवी पतिरूप भिक्षा मागी. एटले कुमारपाळ बोल्यो के 'अरे जांगडा! तने बेननो पति जाणी मूकतो नथी, पण दयाधर्मने अधिक मानी जीवतो मूकुं छुं. पण तारे जिह्वा खेंचावानुं आ चिह्न पोताना देशमां धारण करवुं. आजथी तारा देशमां वाम अने दक्षिण भागे जिह्वाना आकारे मस्तकने ढांकवानो वस्त्रनो बुरखो चिरकाल रहेशे. तारी पछवाडे पण परंपराए आ जिह्वानुं चिह्न मारी आज्ञाथी राखवुं, के जेथी पृथ्वीमां मारी बेननी प्रतिज्ञा पूर्ण थयेली विख्यात थाय.' तेणे आ सर्व अंगीकार कर्युं. 'बळवाननी साथे कोण विरोध

करे ?' पछी कुमारपाळे आनाकराजाने काष्ठना पांजरामां त्रण दिवस सुधी पूरी पोताना सैन्यमां राख्यो. जे सामंतो द्रव्यथी खुटेला हता ते घणा लज्जा पाम्या; परंतु गुर्जरपतिए गंभीरपणाने लीधे तेमने कांइ पण उपालंभ आप्यो नहीं. पछी आनाकराजाने तेनुं राज्य पाछुं आपी पोतानी आज्ञा मनावीने कुमारपाळराजा पाटणमां आव्या. त्यारथी 'मारी' एवा अक्षरो पण कोइ बोलतुं नहोतुं.

एक समये कोइ ब्राह्मण हेमचंद्रसूरिनी कीर्तिने सहन न करवाथी तेमने आवता देखी आ प्रमाणे निंदा करवा लाग्यो के--" अरे आ हेमड सेवडो के जेना कांबळामां लाखो जुओनी श्रेणी चाली जाय छे, दांतना मळथी मुखमां दुर्गंध छुटे छे, नाकमां छिद्रोनो रोध थवाथी भणवामां गणगणाट करे छे ते लपलपाट करतो भरवाडनी जेम आवे छे." आ प्रमाणे निंदा सांभळी सूरि बोल्या–'अरे पंडित ! 'विशेषणं पूर्वं' आ सूत्र शुं तुं नथी भण्यो के जेथी आ श्लोकमां 'हेमड सेवड' बोल्यो ? त्यां तो 'सेवड हेमड एम बोलवुं जोइए.' कुमारपाळे आ खबर सांभळी ते ब्राह्मणनी आजीविका छेदी नाखी, जेथी तेनो अस्त्र वगर वध कर्यो. त्यारथी ते ब्राह्मण दुःखे जीववा लाग्यो.

एक वखते कोइ कवि देवजेवुं कृत्रिम रूप करी हाथमां लेखपत्र लइ कुमारपाळनी सभामां आव्यो. कोइए तेने ओळख्यो नहीं. राजाए पूछ्युं, 'तुं क्यांथी आव्यो ? अने कोण छे ?' ते बोल्यो–'राजन् ! मने इंद्रे आ लेख आपी मोकल्यो छे.' राजाए लेख फोडीने वांच्यो. तेमां आ प्रमाणे लख्युं हतुं-"स्वस्तिश्री पाटण नगरमां राजगुरु श्रीहेमचंद्रसूरिने हर्षथी नमी इंद्र विज्ञप्ति करे छे के, 'हे भगवन् ! चंद्रसुं चिह्न मृग, यमराजानुं महिष (पाडो), वरुणनुं वाहन जलजंतु अने विष्णुना अवतार मत्स्य, कच्छप अने वराह तेमना कुलमां तमे अभयदान अपाव्युं ते बहु सारुं कर्युं. पूर्वे श्रीवीरप्रभु जेवा धर्मवक्ता अने बुद्धिमान् अभयकुमार जेवो मंत्री छतां पण श्रेणिकराजा जे करी शक्या नहीं तेवी जीवरक्षा जेना अमृतरस जेवां वचन सांभळी कुमारपाळ राजाए करी छे, ते हेमचंद्रगुरुने धन्य छे." आ प्रमाणेनो लेख वांच्या पछी ते कविने ओळखीने धर्मनुं माहात्म्य सांभळवाथी संतुष्ट थयेला परमार्हत् कुमारपाळे ते कवि ब्राह्मणनी आजीविका बमणी करी आपी.

एक वखते कुमारपाळ घेबर जमतो हतो, तेवारे तेने कांइक मळतापणाथी पूर्वे करेलुं मांसभक्षण याद आवी गयुं. एटले तत्काळ खावुं बंध करी सूरि पासे जइने पूछयुं के 'स्वामी ! अमारे घेबरनो आहार करवो घटे के नहीं ?' गुरु

बोल्या-" ते वणिक अने ब्राह्मणने घटे, पण अभक्ष्यनो नियम राखनारा क्षत्रीयने घटे नहीं, कारणके ते खावाथी पूर्वे करेला निषिद्ध (मांस) आहारनुं स्मरण थइ आवे छे." गुरुनी कहेली आ वात कुमारपाळे स्वीकारी परंतु पूर्वे करेला मांसनुं स्मरण करतां बत्रीश ग्रास भर्या हता तेना प्रायश्चित्तमां एक साथे घेबरना वर्ण सदृश बत्रीश विहारो कराव्या.

आवा अनेक लोकोत्तर चरित्रथी सूरिए घणाना हृदयने हरी लीधा हता. जन्मथी आत्मस्तुति तथा मनुष्यस्तुति विषे तेमणे नियम राख्यो हतो, तोपण तेओ राजाने कहेता हता के—

किं कृतेन न यत्र त्वं, यत्र त्वं किमसौ कलि ॥
कलौ चेद् भवतो जन्म, कलिरस्तु कृतेन किं ॥१॥

"ज्यां तुं नथी त्यां कृतयुग होय तोपण शा कामनो अने ज्यां तुं छे त्यां कलि होय तोपण शुं करवानो छे? जो तारो जन्म कलियुगमां छे, तो अमारे कलियुग हो, कृतयुगनी शी जरुर छे?"

आ प्रमाणे अनेक दृष्टांत परमार्हत कुमारपाळ विषे छे. जे कुमारपाळ आवती चोविशीमां पद्मनाभप्रभुना शासनमां प्रथम गणधर थशे; ते जिनधर्मने वधारनारा कुमारपाळे कुलक्रमथी चाली आवती हिंसाने पण छोडी दीधी हती.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ अहिंसाविषये अष्टषष्टितमः प्रबंधः ॥ ६८ ॥

व्याख्यान ६९ मुं.

केटलाएक जीवो क्रोधथी हिंसावचन बोले छे, तेमने माटे शिक्षा कहे छे.

वचोऽपि हिंसाविषयं । महानर्थविधायकम् ॥
अत्र मातृसुतचंद्रासर्गयोश्च निदर्शनम् ॥१॥

व्याख्या.

'हिंसा विषे वचन बोलवुं ते पण मोटा अनर्थने करनारुं छे. ते विषे माता अने पुत्र चंद्रा अने सर्गनुं उदाहरण छे.' ते आ प्रमाणे—

चंद्रा अने सर्गनी कथा.

वर्द्धमान (वढवाण) नगरमां सघड नामे कुलपुत्र हतो. तेने चंद्रा नामे स्त्री हती. तेमने सर्ग नामे एक पुत्र थयो हतो. आ सर्वे दुःखदायक स्थितिमां हता. चंद्रा पारका घरनुं काम करती हती, अने सर्ग वनमांथी इंधण लावतो हतो. एक वखते सर्गने माटे शींका उपर खावानुं मूकी चंद्रा जळ भरवाने गइ. सर्ग वनमांथी इंधण लइने आव्यो त्यारे तेणे माताने जोइ नहीं अने क्षुधा तृषा लागेली तेथी क्रोधे भरायो. एटलामां तेनी माता आवी तेने जोइने ते गुस्साथी बोल्यो–'पापिणी! आटली वार शुं शूलीए चडी हती?' ते सांभळी क्रोधथी चंद्रा बोली के–'आ शींका परथी उतारीने केम खाधुं नहीं? शुं तारा हाथ कपाइ गया हता?' आ प्रमाणे बंनेए दुर्वचनवडे कर्म बांध्युं. पछी आयुष्य पूर्ण थयाथी सर्गनो जीव मृत्यु पामी केटलाक भव भमीने ताम्रलिप्ती नगरीमां अरुणदेव नामे एक श्रेष्ठीनो पुत्र थयो, अने चंद्रानो जीव परिभ्रमण करीने पाटलीपुरमां जसादित्यने घेर देवणी नामे पुत्री थयो. तेना पिताए देवणीने अरुणदेवने आपी. तेमनो विवाह थया पछी अरुणदेव बीजा मित्रोनी साथे वेपार करवा माटे वहाणे चड्यो. दूर जतां प्रतिकूल वायुवडे वहाण भांग्युं. पुण्ययोगे पाटीयुं मेळवी एक मित्रनी साथे कांठे आव्यो. अनुक्रमे फरतो फरतो पाटलीपुर पहोंच्यो. त्यां मित्रे अरुणदेवने कह्युं, 'मित्र! अहीं तारा सासरानुं घर छे, तेथी चाल त्यां जइए.' अरुणदेव बोल्यो के, 'आवी स्थितिमां आपणे त्यां जवुं युक्त नथी.' मित्रे कह्युं के, 'त्यारे तुं अहीं रहे, हुं नगरमां जइ भोजन लइ आवुं.' पछी अरुणदेव कोइ देवालयमां रह्यो. थोडीवारमां श्रांत थयेला अरुणदेवने निद्रा आवी गइ.

आ समये ते वनमां तेनी स्त्री देवणी क्रीडा करवा आवेली तेना बंने हाथ छेदीने कोइ चोर कंकण लइ नाशी गयो. तेणीनो पोकार सांभळी राजाना सेवको तत्काळ त्यां दोडी आव्या अने चोरनी पाछळ दोड्या. पेलो चोर ज्यां अरुणदेव सुतो हतो ते देवालयमां आवी भय पामवाथी कंकण अने खड्ग अरुणदेवनी पासे मूकीने नाशी गयो. तेना गया पछी ज्यारे अरुणदेव जाग्यो त्यारे

ते कंकण अने खड्ग जोइ 'आ कंकण देवीए आप्या' एवुं जाणी हर्षथी लइ लीधा. तेवामां चोर पाछळ दोडता राजाना सेवकोए त्यां आवीने कह्युं के- 'अरे दुष्ट! हवे क्यां जइश?' एम कही अरुणदेवने मारवा मांड्यो, एटले तेना वस्त्रमांथी बे कंकण नीचे पडी गया. तत्काळ तेने बांधीने राजा पासे लइ गया अने राजानी आज्ञाथी तत्काळ तेने शूळीए चडावी दीधो.

ए समये पेलो भोजन लेवा गयेल मित्र त्यां आव्यो. ते अरुणदेवनी आ अवस्था जोइ, 'अरे सुखदुःखमां वत्सल एवा मित्र! तुं क्यां चाल्यो?' एम बोलतो उंचे स्वरे रुदन करवा लाग्यो. प्रेत्तक पुरुषोए तेने पूछ्युं के, 'आ कया श्रेष्ठीनो पुत्र छे?' ते बोल्यो, 'हवे शुं कहेवुं, तेनी कथा तो पूर्ण थइ रही.' पछी तेणे सर्व वृत्तांत जणाव्युं अने शिलावडे आत्महत्या करवा तैयार थयो. लोकोए एकठा मळी तेने निवार्यो. जशादित्य पोतानी पुत्री अने जामातानो सर्व वृत्तांत सांभळीने तथा ते अवस्थामां बंनेने जोइने घणो खेद पाम्यो. पछी जामाता अरुणदेवने शूली उपरथी नीचे उतरावी तेणे राजसेवकोने उपालंभ आप्यो. राजा बोल्यो के, 'हे श्रेष्टी! आ काममां सहसा काम करनार एवा मारोज अपराध छे.'

ए समये चतुर्ज्ञानी अमरेश्वर नामे मुनि महाराज त्यां पधार्या. तेमणे देशना आपी के, "हे भव्यो! मोहनिद्राने छोडी दो, अने त्रिविधे त्रिविधे हिंसा त्यजी दो. वचन अने कायावडे करेली हिंसा तो दुःखदायक छेज, पण मनमां चिंतवेली हिंसा पण प्राणीने नरकमां पाडे छे; ते विषे एक दृष्टांत सांभळो-

वैभारगिरि उपर आवेला एक उद्यानमां अन्यदा केटलाक लोको उजाणी करवा एकठा थया हता. तेमने जोइ कोइ रांक भीख मागवा आव्यो. पण तेना दुष्कर्मोदयथी तेने कोइ ठेकाणेथी पण भिक्षा मळी नहीं, एटले तेणे विचार्युं के, 'अहा, आटलुं बधुं भोजन छतां पण कोइ मने आपतुं नथी. तेथी आ सर्वने मारी नाखुं.' आवुं विचारी कोप करीने ते गिरि उपर चड्यो अने एक मोटी शिला तेमनी उपर दडवी देतां दैवयोगे शिला साथे पोते पण पडी गयो. सर्व लोको दूर खसी गया अने ते भीखारी शिला नीचे चूर्ण थइ मृत्यु पामीने नरके गयो. आ प्रमाणे मनमां चिंतवेली हिंसानुं पण तेने माठुं फळ प्राप्त थयुं.

वळी श्री आउरपच्चक्खाण नामना पयन्नामां कह्युं छे के, "आहारनी अभिलाषाए मत्स्य सातमी नरके जाय छे, तेथी साधुए मनवडे पण सचित्त आहारनी इच्छा न करवी." अहिं मत्स्य एटले तंदुल मत्स्य विगेरे लेवा, ते पण

गर्भज जाणवा. कारण के संमूर्छिम तो असंज्ञीपणाने लीधे पहेली रत्नप्रभा नरक सुधीज जाय छे. तंदुल मत्स्य मोटा मत्स्यना मुखनी पासे आंखनी पांपणमां उत्पन्न थाय छे. तेनुं प्रमाण तंदुल जेटलुं होय छे, ते वज्रऋषभनाराचसंघयणी होय छे अने दुष्ट मननो व्यापार करवाथी सातमी नरके जाय छे. आ प्रमाणे वृद्धो कहे छे. वळी जघन्य अंगुळना असंख्यातमा भागप्रमाण देहवाळा मत्स्य पण सातमी नरके जाय छे, एम श्री भगवती सूत्रमां कह्युं छे. तेथी मन, वचन अने काया, ए त्रिविधे थती हिंसा अनेक भवने आपनारी छे. आ प्रमाणे सांभळी राजा विगेरेए ते समये प्राप्त थयेलुं ते स्त्री पुरुषना दुःखनुं कारण पूछयुं. ज्ञानी मुनिए तेनो पूर्व भव कहेवावडे ते सर्व कही बताव्युं. ते सांभळी देवणी अने अरुणदेवने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी तेमणे तत्काळ अनशन अंगीकार कर्युं. ते जोइ सर्व पर्षदाए संवेग पामी दयाधर्मने स्वीकार्यो, अने ते देवणी अने अरुणदेव मरण पामीने देवलोके गया.

हे भव्यो ! उपर प्रमाणे चंद्रा माता अने सर्ग पुत्रनुं वृत्तांत सांभळीने हास्य, मोह के दुष्ट बुद्धिवडे कदि पण हिंसावचन बोलवुं नहीं, अने हंमेशां मनने दयाळु राखवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
अहिंसात्यागविषये एकोनसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ६९ ॥

व्याख्यान ७० मुं.

केटलाएक कहे छे के, 'आ जीवात्मा अभेद्य, नित्य अने सनातन छे, तो देहरूप पिंडनो नाश थवाथी जीवनो नाश शी रीते थाय ? पृथ्वीथी उत्पन्न थयेलो घडो नाश पामवाथी शुं आकाश नाश पामे छे ?' कदि कहेशो के, घटाकाश तो नाश पामे छे, तो ते पण कल्पित छे. वळी गीतामां कह्युं छे के, 'युद्ध के यज्ञादिकमां जीववध करवानो बाध नथी.' पण ते वाक्य अयुक्त छे. कारण के, निश्चय नयनी अपेक्षाए जीव नित्य अने गति आगतिथी रहित छे, पण व्यवहारनी अपेक्षाए ते नानाप्रकारना देह पिंडात्मक थइ गायपणुं, हाथीपणुं, पुरुषपणुं, स्त्रीपणुं धारण करे छे, तेथी मांकड कीडी विगेरेमां पण उत्पन्न थयेलो प्रत्यक्ष जणाय छे. ते पक्षे दीपकनो नाश थये तेनी प्रभाना नाशनी जेम देहरूप पिंडनो विनाश थतां जीवनो पण विनाश थाय छे. एथीज 'तुं

मरी जा ' एवुं कहेवाथी प्राणीने दुःख थाय छे अनें मारी नाखवाथी तेनुं फळ नरकनी वेदनारूप प्राप्त थाय छे, माटे सर्व धर्ममां दयाधर्मज श्रेष्ठ छे. तेनी स्तुति अमे पण करीए छीए. तेवी जीवदयामां जेमना हृदय तत्पर छे एवा श्री शांतिनाथ अने मुनिसुव्रतप्रभु पूर्वे थया छे, तेमनी कीर्ति अद्यापि पृथ्वीपर प्रवर्ते छे. आ विषे अचिरा माताना पुत्र श्री शांतिनाथप्रभुनो संबंध आ प्रमाणे–

श्री शांतिनाथजीना पूर्वभवनी कथा.

जंबूद्वीपना पूव महाविदेह क्षेत्रनी मंगलावती विजयमां रत्नसंचय नामना नगरने विषे श्री शांतिनाथप्रभुजीनो जीव पूर्वे वज्रायुध नामे राजा हतो. एक वखते एक पारेवुं भय पामी राजा वज्रायुधने शरणे आव्युं. राजाए कह्युं के ' भय पामीश नहीं. ' तेनी पछवाडे तरतज एक सींचाणो पक्षी आव्यो. तेणे कह्युं के ' हे राजन् ! मने घणी क्षुधा लागी छे, तेथी आ पक्षी मने आपो.' राजाए कह्युं ' तेने बदले तुं उत्तम अन्न ले. ' सींचाणे कह्युं के, ' मने तो मांस उपरज रुचि छे. ' राजा बोल्यो, ' त्यारे हुं मारा देहनुं मांस आपुं. ' सींचाणो बोल्यो के–'तो आ पारेवा जेटलुं आपो.' पछी राजाए त्राजवुं मंगावी एक तरफ पोतानी जंघामांथी छेदीने मांसनो पिंड मूक्यो अने बीजी तरफ पारेवाने राख्युं. पारेवामां एटलो भार थयो के छेवटे राजा पोते तुलापर चढी बेठो. आवी वज्रायुध राजानी दया माटे हिंमत जोई, बे देव प्रत्यक्ष थइ बोल्या, ' हे महानुभाव ! इंद्रे सभामां तमारी प्रशंसा करी, ते नहीं मानीने अमे बंने तमारी परीक्षा करवा आवा रूप करी अहीं आव्या हता. ' पछी तेओ राजा उपर पुष्पवृष्टि करी स्वर्गे चाल्या गया. राजा वज्रायुध चारित्र लई नवमा ग्रैवेयकमां एकत्रीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देवता थया.

श्री मुनिसुव्रतप्रभुनी कथा.

भृगुकच्छ (भरुच) नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेणे एक वखते अश्वमेध यज्ञ करवा माटे अग्निमां होमवा एक अश्व तैयार कर्यो. आ खबर ज्ञानथी मुनिसुव्रतस्वामीए जाणया, एटले तत्काळ ते अश्वने बचाववा माटे प्रतिष्ठानपुरथी भरुच एक रात्रिमां साठ योजन आवी पहोंच्या. त्यां एकठा थयेला जनसमूहमां प्रभुए धर्मदेशना आपवा मांडी. ते अश्वे प्रभुने जोई उंचा कान कर्या अने वारंवार प्रभु सामुं जोवाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी तत्काळ प्रभु पासे आवी पृथ्वीपर मस्तक मूकीने पोतानी वाचामां बोल्यो के,

' हे विश्वरक्षक ! दुःखार्त्त एवा मारी रक्षा करो. ' ते जोई राजाए प्रभुने पूछयुं के, ' आ अश्व शुं कहे छे ? ' प्रभु बोल्या–'राजन् ! तेनो पूर्वभव सांभळो—

पद्मिनीपुर नामना नगरमां जिनधर्म नामे एक जैनधर्मी श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेने सागरदत्त नामे एक शैवधर्मी मित्र हतो. ते सागरदत्ते पूर्वे एक शिवालय कराव्युं हतुं. एक वखते ते मित्रनी साथे साधुनी पासे गयो. त्यां जिनमंदिर करावावानुं महत् फळ सांभळ्युं, तेथी तेणे एक जिनबिंब युक्त प्रासाद कराव्यो. ते कार्यथी तेने समकित दर्शन प्राप्त थयुं. एक वखते शैव लोकोए घीवडे शिवलिंग पूर्युं, ते जोवा सागरदत्तने बोलाव्यो. त्यां घणी घीमेलो तथा कीडीओ एकठी थई हती, ते निर्दय शैवलोकोना चरणन्यासथी कचराइने मरी जती हती, ते जोइने सागरदत्त बोल्यो के, 'तमारा पगवडे हजारो जीव मरी जाय छे ते तमने घटतुं नथी. ' त्यारे तेओ क्रोध करीने बोल्या के, ' अरे मुर्ख ! कुलक्रमथी चाल्या आवेला धर्मने छोडी दइ नवो धर्म अंगीकार करतां तुं केम शरमातो नथी ? माटे उठ, तारे घेर चाल्यो जा.' ते सांभळी लज्जाथी ग्लान मुखवाळो थयो सतो पोताने घेर आवीने ते विचारवा लाग्यो के, ' अरे ! में कुलधर्मनो त्याग करी केवुं काम कर्युं ? ' आ प्रमाणेना आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामी घणा भव भमीने हे राजा ! ते सागरदत्तनो जीव आ अश्व थयो छे. ते मारो पूर्व भवनो मित्र होवाथी मने जोइने कहे छे के, ' आ राजा मने आजे यज्ञमां होमी देशे, तेथी मारी रक्षा करो, रक्षा करो. ' हे राजन् ! यज्ञनुं फळ नरकज छे, तेथी ते करवा योग्य नथी." आ प्रमाणे प्रभुनां वचनथी जीतशत्रु राजा प्रतिबोध पाम्यो. तेथी अश्वने निर्भय करी पोताना नगरमां यज्ञो करावानोज अटकाव कर्यो. ते अश्व प्रभु पासे अनशन अंगीकार करी सहस्रार देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी तत्काळ अहीं आवीने ते देवे प्रभुना समवसरणने स्थाने एक जिनप्रासाद रचावी तेमां मुनिसुव्रतस्वामीनी प्रतिमा अने तेनी आगळ अश्वनी मूर्त्ति स्थापन करी; त्यारथी त्यां अश्वावबोध नामे तीर्थ थयुं.

केटलेक काळे तेज वनमां एक वडना वृक्ष उपर शमळी रहेती हती. तेने कोइ म्लेच्छे बाण मारी वींधी नांखी. ते प्रभुना प्रासाद पासे पडी. अंत समये कोइ मुनिए तेने नवकार मंत्र संभळाववाथी ते सिंहलराजानी पुत्री थई. अन्यदा भृगुपुरथी कोइ श्रेष्ठी त्यां गयो, ते छींक आवतां नवकारमंत्रनुं पहेलुं पद बोल्यो. ते सांभळी राजपुत्रीने जातिस्मरण थयुं. पछी मातापिताने पूछी भृगुपुरे आवी तेणे ते चैत्यनो उद्धार कर्यो. त्यारथी ए तीर्थ " शकुनिकाविहार " ए नामथी विख्यात थयुं.

त्यारपछी अनुक्रमे परमार्हत श्रीकुमारपाळराजाना मंत्री उदयनना पुत्र, शत्रुंजय तीर्थनो उद्धार करनार, गिरनार पर्वत उपर सुगम पाज बांधनार अने बीजा पण अनेक पुण्यकार्य करनार श्रीवाग्भट कविना अनुज बांधव अंबड प्रधाने पिताना पुण्यने अर्थे उद्धार कराव्यो. ते समळीकाविहार तीर्थमां तेणे मंगलदीपकना लुंछणा वखते याचकोने बत्रीश लाख सोनैया आप्या हता. एम वृद्धपुरुषो कहे छे. उपर प्रमाणे श्रीशांतिनाथ अने श्रीमुनिसुव्रतस्वामी अश्व अने पारेवानुं रक्षण करवाथी पृथ्वीपर महान् कीर्त्तिना भाजन थया छे. ते बंने प्रभु मने शिवसुखना आपनारा थाओ.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रथस्य वृत्तौ
जीवरक्षा विषये सप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७० ॥

व्याख्यान ७१ मुं.

हवे हिंसानुं कारण प्रमाद छे ते कहे छे.

शरीरी म्रियतां मा वा, ध्रुवं हिंसा प्रमादिनः ।
सा प्राणव्यपरोपेऽपि, प्रमादरहितस्य न ॥ १ ॥

व्याख्या.

"प्राणी मरण पामे अथवा न पामे पण निश्चये प्रमादीने हिंसा लागे छे, अने प्राणनो कदि नाश थाय तो पण प्रमाद रहित एवा पुरुषने हिंसा लागती नथी." जो कोइ साधु प्रमादथी एटले उपयोग वगर चाले तो तेने जीवनो वध न थाय ते छतां पण हिंसा लागे छे, अने जे साधु अप्रमादथी एटले उपयोगथी चाले तो तेनाथी कदि जीववध थइ जाय तो पण तेने भावथी हिंसा लागती नथी. जेम नदी विगेरे उतरतां उपयोगथी चालता साधुने अप्काय जीवनी विराधना तीव्रबंध आपनारी थती नथी तेम.

कोइ घांचीनो जीव कोटी पूर्वना आयुष्यवाळो होय अने ते प्रतिदिन वीश घाणीओवडे तिल पीले, ते आखा जीवितवडे पण तेटला तिल पीलवा समर्थ न थाय के जेटला जीव नदी उतरतां जळना एक बिंदुमां हणाय छे. वळी जो

जळ सेवाळवाळुं होय तो तेमां अनंत जीवनो पण विनाश थाय छे. नदी उतरनार मुनि जो प्रमादी होय तो तेनी हिंसा तेने लागे छे, अन्यथा लागती नथी.

श्री भगवतीसूत्रमां कह्युं छे के, केवलज्ञानीना गमनागमनथी अने नेत्रना चलन विगेरेथी पण घणा जीवनो घात थाय छे, परंतु तेमने मात्र योगवडेज बंध होवाथी ते प्रथम समये बांधे छे, बीजे समये अनुभवे छे (वेदे छे) अने त्रीजे समये निर्जरे छे. तेओ अप्रमादी होवाथी तेमने कर्मनो बंध बहु काळनी स्थितिवाळो थतो नथी.

वळी प्रथमांगमां कह्युं छे के, कोइ मुनिए अकस्मात् काचुं लुण वहोर्युं होय, ते जो लुण वहोरावनार ग्रहस्थ पाछुं न ले तो मुनिए तेने जळमां घोळीने पी जवुं. तेम करवाथी तेणे श्रीजिनेश्वरनी आज्ञा पाळेली होवाथी तेमने पृथ्वीकाय जीवनी हिंसा न लागे. तेज प्रमाणे ग्रहस्थने पण जिनपूजा विगेरेमां हृदयनी अंदर दयाभाव होवाथी हिंसा लागती नथी.

प्राचीन पूज्यपुरुषोए हिंसाना त्रण प्रकार कहेला छे–स्वरूपहिंसा, हेतुहिंसा अने अनुबंधहिंसा. अंतःकरणमां दयाना परिणाम वर्तता छतां बाह्य क्रिया करतां जे हिंसा थाय ते स्वरूपहिंसा कहेवाय छे. कृषि विगेरेना हेतु माटे जे हिंसा थाय छे ते हेतुहिंसा कहेवाय छे. अने अंतःकरणमां कलुषित परिणाम वर्ततां निर्दयपणे जे हिंसा कराय छे ते अनुबंधहिंसा कहेवाय छे. राजा यशोधरे माताना वचनथी पिष्टमय कुकडानी पण हिंसा करी तो तेथी ते दुरंत दुःखपरंपराने पाम्यो हतो, अने ब्रह्मदत्त चक्री विगेरेने बाह्यपणे स्वरूपहिंसानो अभाव छतां पण अनुबंध हिंसाना ध्यानथी नरकनी प्राप्ति थइ हती. तेनो संबंध नीचे प्रमाणे छे.

श्री ब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा.

कांपिल्यपुर नगरमां ब्रह्म नामना राजाने चार मित्रो हता. काशीदेशनो राजा कंटक, हस्तिनापुरनो अधिपति करेणु, कोशलदेशनो स्वामी दीर्घ अने चंपानगरीनो नृपति पुष्पचूल. आ चारे राजाओ परस्पर स्नेहथी एक बीजाना राज्यमां एकेक वर्ष आवीने रहेता हता. एक वखते बीजा त्रणे ब्रह्मराजाने त्यां आवेला हता; तेवामां अकस्मात् ब्रह्मराजाने मस्तकनी वेदना उत्पन्न थइ. एटले ब्रह्मराजा तेओना उत्संगमां ब्रह्मदत्त नामना पोताना बाळ वयना पुत्रने मूकीने 'तमारे आ राज्यनी व्यवस्था करवी' एम कही मृत्यु पाम्यो. पछी तेओ पोतामांथी दीर्घराजाने त्यां मूकी पोतपोताना राज्यमां चाल्या गया.

दीर्घराजा त्यां रह्यो सतो ब्रह्मराजानी स्त्री चूलणीनी साथे आसक्त थयो. ते खबर जाणी धेनु नामना मंत्रीए पोताना पुत्र वरधनुने जणाव्युं के, 'आ वृत्तांत तुं एकांतमां जइने चूलणीना पुत्र ब्रह्मदत्तने जणावजे.' तेणे ब्रह्मदत्तने जणाव्युं, एटले ते चतुर कुमार कोकिला अने कागडाने लइने अंतःपुरमां गयो. त्यां ते बन्नेनो संबंध करावी कागडाने मारी नाखीने ते बोल्यो के, 'बीजो पण जे कोइ आवुं करशे तेने आवी रीते मारी नाखीश.' आ हकीकतनो सार समजीने दीर्घे चूलणीने कह्युं के, 'हुं काग अने तुं कोकिला छुं.' राणी बोली के–'एवी शंका करो नहीं. आ बालक ते आपणो संबंध शुं जाणे ?' फरी वळी एकवार ब्रह्मदत्ते पाडानो अने हाथिणीनो संबंध करावी पूर्वोक्त वाक्य कहीने पाडाने मारी नाख्यो. तेथी दीर्घराजाए 'आ मारुं वृत्तांत जाणे छे अने अन्योक्तिवडे मने शिक्षा आपे छे' एवुं समजी राणीने ते वात जणावी. एटले राणी बोली के–'त्यारे आपणे पुत्रने मारी नाखीए. जो आपणे कुशळ हशुं तो घणा पुत्रो थशे.' दीर्घराजाए ते स्वीकार्युं. पछी दीर्घराजाए ब्रह्मदत्तने कोइएक सामंतनी पुत्री परणावी, अने तेमने सुवाने माटे एक लाखनुं गृह कराव्युं. आ खबर जाणीने वरधेनु मंत्रीए गुप्त रीते ते घरनी नीचेथी नगर बहार उद्यान सुधी एक सुरंग करावी. शुभ दिवसे वरवधू अने धेनुकुमारे ते घरमां प्रवेश कर्यो, एटले रात्रिना बे पहोर जतां ते गृहने चूलणीए अग्नि लगाड्यो. मंत्रीपुत्र वरधेनु प्रथमथीज आ जाणतो हतो, तेथी सुरंगने रस्ते ब्रह्मदत्तने उद्यानमां लइ गयो अने त्यां सुरंगना द्वार उपर बे अश्व तैयार राखेला हता, तेनी उपर बेसी बन्ने मित्र देशाटन करवा नीकळी पड्या.

भाग्यवान् ब्रह्मदत्ते पृथ्वीपर भमतां सार्वभौमपदनी संपत्ति प्राप्त करी, अने वरधेनुने सेनापतिनी पदवी आपीने दीर्घराजानी उपर मोकल्यो. तेनी पछवाडे पोते आवीने चक्रवडे दीर्घराजानुं मस्तक छेदी नाख्युं. पछी तेणे पोताना नगरमां प्रवेश कर्यो. अनुक्रमे ब्रह्मदत्त चक्रीए षट्खंड भरतने साध्य कर्यो.

पूर्वे ज्यारे ब्रह्मदत्त एकाकीपणे भमतो हतो त्यारे एक ब्राह्मणे तेने जळ पायुं हतुं. ते ब्राह्मण ब्रह्मदत्तने चक्रवर्तीपद प्राप्त थयेलुं सांभळी त्यां आव्यो. तेणे विचार्युं के, 'आटला बधा सैन्य वच्चे ते मने केम ओळखशे ?' तेथी तेणे एक जीर्ण वस्त्रनो ध्वज करी जीर्ण सूपडुं विगेरे लटकावी जूदुंज रूप बताव्युं. तेवी विलक्षणता जोइ राजाए सेवक मोकलीने तेने बोलाव्यो. पछी तेने ओळखी

तेनापर संतुष्ट थइने वरदान मागवा कह्युं, एटले अल्प बुद्धिवाळा ब्राह्मणे स्त्रीना वचनथी दररोज अनुक्रमे एकेक गृहे भोजन अने बे सोनामहोरनी दक्षिणा तेने मळे एवी मागणी करी. राजाए तरतज तेवी गोठवण करावी आपी. एक वखते ते लुब्ध ब्राह्मणे चक्रीने कह्युं के, ' हे राजन् ! एकवार तमारा घरनुं भोजन मने करावो. ' चक्रीए कह्युं के, ' मारुं भोजन तो मनेज जरे तेवुं होय छे. ' ब्राह्मणे गुस्साथी कह्युं के, ' अरे राजा ! शुं तुं कृपण छे के जेथी मने तारुं भोजन पण आपी शकतो नथी ? ' पछी चक्रीए ते ब्राह्मणने कुटुंब सहित पोताने घेर जमाड्यो, जेथी ते अति कामातुर थइ गयो. तेथी तेणे ते रात्रे पोतानी माता बहेन विगेरेनी साथे पण पशुवत् आचरण कर्युं. ज्यारे चक्रीना अन्नमो मद उतरी गयो त्यारे ते लज्जा पामी गयो. पछी तेणे विचार्युं के ' आवुं अपकृत्य चक्रीए जाणी बुजीनेज कर्युं जणाय छे, माटे तेने शिक्षा करवी. ' आवा क्रोधथी एक वखते ते वनमां फरतो हतो, तेवामां कोइ गोवाळ गलोलना प्रयोगथी पिपळाना पानने काणा करतो तेना जोवामां आव्यो. एटले तेने भळी कांइ द्रव्य आपी तेनी पासे चक्रवर्त्तीना बन्ने नेत्र फोडी नंखाव्या. राजसेवकोए ते गोवाळने पकड्यो अने कह्युं के, ' अरे दुष्ट ! आ तें शुं कर्युं ? ' एटले तेणे पेला ब्राह्मणने बताव्यो, तेथी ते ब्राह्मणने कुटुंब सहित मारी नाख्यो. त्यारथी चक्रीने ब्राह्मण जाति उपर रोष चढ्यो. तेथी तेणे मंत्रीने आज्ञा करी के, ' प्रतिदिन अनेक ब्राह्मणोना नेत्रो काढी मारी पासे लाववा. ' एटले मंत्री तेम करवा लाग्यो. चक्री ते नेत्रोने मर्दन करी खुशी थवा लाग्यो. आ प्रमाणे हमेशां करतां घणा जीवनो वध थतो जोइ मंत्री बीज वगरना वडगुंदानो थाळ भरीने राजा पासे मूकवा लाग्यो. अंध चक्री तेने पोताना शत्रुओना नेत्र जाणी क्रोधबुद्धिथी चोळी नाखवा लाग्यो. आ प्रमाणे सोळ वर्ष सुधी करी रौद्रध्यानवडे मृत्यु पामीने ते सातमी नरके गयो. कह्युं छे के–" वडगुंदाने ब्राह्मणना नेत्रनी बुद्धिए चोळतो छेल्लो ब्रह्मदत्त नामनो चक्रवर्त्ती अनुबंध हिंसाना योगथी सातमी नरके गयो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
हिंसाविषये एकसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७१ ॥

व्याख्यान ७२ मुं.

हवे केटलाएक माणसो बीजा जीवोनी हिंसा करनारा हिंसक जीवोने मारी नाखवामां धर्म माने छे तेओने माटे शिक्षा कहे छे.—

केचिद्वदंति हंतव्याः, प्राणिनः प्राणिघातिनः ।
हिंस्रस्यैकस्य घाते स्याद्रक्षणं भूयसां किल ॥ १ ॥

व्याख्या.

'केटलाएक कहे छे के, जे बीजा प्राणीओनी हिंसा करनारा प्राणीओ होय, तेमने मारी नाखवा; कारण के तेवा एक हिंसक प्राणीना घातथी बीजा अनेक जीवोनुं रक्षण थाय छे. अर्थात् जे सर्प मार्जार विगेरे हिंसक प्राणीओ छे तेमने मारवामां दोष नथी.' पण आ तेमनो विचार अयुक्त छे, कारण के तेवो विचार करशुं तो आ आर्यक्षेत्रमां पण अहिंसक प्राणीओ घणा थोडा मळी शकशे, तेथी तेवा निध्वंस परिणामनो त्याग करवो.

वळी कोइ कहे छे के, "निर्वाहने माटे मत्स्य तथा धान्य विगेरेना घणा जीवोने शा माटे हणवा ? एक मोटा हाथीने मारवो के जेथी घणा काळ सुधी निर्वाह चाले." आ प्रमाणे माननाराने आर्द्रकुमारना प्रबंधद्वारा शिखामण दे छे.

आर्द्रकुमारनी कथा.

मगधदेशमां श्रेणिक नामे राजा हतो. तेमणे एक वखते पूर्वजनी प्रीति वधारवा माटे पोताना मंत्रीनी साथे आर्द्रकराजाने केटलीक भेट मोकली. मंत्रीए आर्द्रदेशमां जइ त्यांना राजानी आगळ भेट मूकी. पछी परस्पर कुशलवार्त्ता पूछी. ते वखते आर्द्रकराजाना पुत्र आर्द्रकुमारे श्रेणिकराजाना मंत्रीने पूछयुं के, 'तमारा राजाना कुमारनुं नाम शुं छे ?' मंत्रीए कह्युं के, 'तेमनुं नाम अभयकुमार छे. ते महा धर्मज्ञ छे, अने पांचसो मंत्रीओनो अधिपति छे. शुं तेमनुं नाम तमारा सांभळवामां पण नथी आव्युं ?' मंत्रीनां आ प्रमाणेनां वचनो सांभळी आर्द्रकुमारे अभयकुमारने माटे मोती विगेरे भेट मोकलाव्या. अनुक्रमे मंत्री राज्यगृही नगरीमां आव्यो, अने त्यांथी आपेली भेट श्रेणिकराजाने अने

अभयकुमारने आपी. पछी अभयकुमारने कह्युं के, 'आर्द्रकुमार तमारी साथे मैत्री करवा इच्छे छे.' ते सांभळी अभयकुमारे विचार्युं के, 'ए कोइ भव्य जीव व्रतनी विराधना करवाथी अनार्य देशमां जन्मेलो लागे छे, कारण के अभव्य के दूरभव्य तो मारी साथे मैत्री करवाने इच्छताज नथी. "प्रायः समान धर्मीओनेज परस्पर प्रीति थाय छे." हवे हुं तेनी उपर आर्हत् बिंब मोकलावुं के जेने जोइने ते जरूर प्रतिबोध पामशे.' आवुं विचारी अभयकुमारे एक पेटीमां रत्नमय आर्हत् प्रतिमा मूकीने ते तेने भेट तरीके मोकलावी. मंत्रीए ते पेटी लइ जइ आर्द्रकुमारने एकांते आपी अने प्रणाम करीने स्वस्थाने गयो. आर्द्रकुमारे पेटी उघाडी एटले तेनी अंदर प्रतिमा जोइ विचारमां पड्यो के, 'आ ते आभूषण हशे ? आ आभूषण कंठे, मस्तके के हृदयमां क्यां पहेरातुं हशे ? अथवा में पूर्वे आवुं कांइक जोयेलुं छे.' एवो विचार करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी तेणे जाण्युं के 'अहो ! आ भवथी त्रीजे भवे हुं सामायिक नामे कौटुंबीक हतो. मारे बंधुमति नामे स्त्री हती. में वैराग्य पामी प्रिया सहित दीक्षा लीधी हती. एक वखते साध्वीओना समूहमां मारी स्वरूपवती स्त्रीने जोइने पूर्वना अनुरागथी हुं तेनो अभिलाषी थयो. में तेनी आगळ मारो अभिप्राय जणाव्यो. ते साध्वीए जाण्युं के, आ साधु जरूर तेना तथा मारा व्रतनो भंग करशे, तेथी ते अनशन लइ मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ. पछवाडे हुं पण तेना दुःखथी अनशन करी मृत्यु पामी देवता थयो. देवलोकनुं सुख भोगवी त्यांथी च्यवीने व्रतनी विराधनाथी अहिं अनार्यदेशमां उत्पन्न थयो छुं. मारा धर्मगुरु अभयकुमारने धन्य छे, के जेणे दूर रहीने पण मने प्रतिबोध कर्यो.'

पछी आर्द्रकुमारे अभयकुमारना दर्शन करवाने उत्सुक थइ पोताना पिताने कह्युं के, 'पिताजी ! राजगृहनगर जोवानी मारी इच्छा छे.' ते सांभळी आर्द्रकराजाए तेने ना पाडीने अटकाव्यो अने ते नासी न जाय ते माटे तेनी संभाळ राखवा पांचसो सुभटोने तेनी पासे राख्या. तथापि छेवटे आर्द्रकुमार सर्व सुभटोने छेतरी वहाणमां बेसी आर्यदेशमां आवतो रह्यो, अने ते प्रत्येकबुद्ध आर्द्रकुमारे आवेलुं आर्हत् बिंब अभयकुमार उपर मोकली आप्युं. पछी 'हजु तारे भोग्यकर्म बाकी छे.' एम कहीने देवताए तेने अटकाव्यो, तथापि तेणे साहसथी व्रत ग्रहण कर्युं. (दीक्षा लीधी.)

अन्यदा विहार करतां करतां आर्द्रमुनि वसंतपुर नगरना उद्यानमां आवेला कोइ देवालयमां कायोत्सर्ग करीने रह्या. ए अरसामां बंधुमतीनो जीव ते नगर-

वासी कोइ श्रेष्ठीने घेर श्रीमती नामे पुत्रीपणे उत्पन्न थयो हतो. ते सखीओ साथे एज उद्यानमां रमवाने आवी चडी. सर्व बालिकाओ परस्पर उपहास्यमां कहेवा लागी के, ' सखीओ ! मनगमता वरने वरो.' एटले बधी इच्छा प्रमाणे वर धारवा लागी. ते वखते श्रीमती बोली के, ' हुं तो आ मुनिने वरीश.' ते वखते आकाशवाणी थइ के, ' मुग्धे ! तुं योग्य वरने वरी छुं.' एम कहेवा साथे देवताए दुंदुभिना नादपूर्वक त्यां रत्नोनी वृष्टि करी. ते वखते दुंदुभिनी गर्जनाथी भय पामी श्रीमती मुनिने पगे वळगी पडी. आर्द्रमुनि अनुकूळ उपसर्गनो संभव जाणी त्यांथी चाल्या गया. पछी राजाना पुरुषो ते वृष्टिनुं द्रव्य लेवाने आव्या. तेमने अटकावीने देवताए कह्युं के, ' ए द्रव्य तमारुं नथी, पण ए तो श्रीमतीना विवाहने माटे आप्युं छे.' पछी तेना पिताए ते ग्रहण कर्युं. श्रीमतीए ते मुनिनेज वरवानो पोतानो विचार जणाव्यो. पिताए पुत्रीने कह्युं के, ' वत्से ! भ्रमरनी जेम भमता ए मुनि तने शी रीते मळशे ? अने कदि मळशे तो पण घणा मुनिओमां आ तेज छे एम ताराथी केम ओळखाशे ? माटे हवे बीजा वरने वरवुं कबुल कर.' श्रीमती बोली–' पिताजी ! आम बोलवुं युक्त नथी. नीतिमां कह्युं छे के,

सकृज्जल्पंति भूपालाः, सकृद्वदंति सज्जनाः ।
सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रीण्येतानि सकृत्सकृत् ॥

" राजाओ एकवारज बोले, सज्जनो एकवारज वदे अने कन्या एकवारज अपाय–आ त्रण वानां एकवारज थाय छे " वळी आपे केम ओळखीश ? एम कह्युं, पण हुं तेना चरणना चिन्ह उपरथी ओळखी काढीश.'

पछी पितानी आज्ञाथी श्रीमतीए त्यारथी नित्य मुनिओने दान आपवा मांड्युं. बार वर्ष वित्या पछी ते मुनि फरीने अकस्मात् त्यां आवी चड्या. चरणना चिन्ह उपरथी तेमने ओळखी श्रीमती बोली के, ' हे स्वामिन् ! ते वखते तो मने क्रूरनी जेम छोडीने नासी गया हता, पण हवे क्यां जशो ? ' पछी आर्द्रमुनि पेली आकाशवाणी संभारी श्रीमतीने परण्या. अनुक्रमे तेमने एक पुत्र थयो, ते मोटो थयो एटले आर्द्रकुमारे श्रीमतीने कह्युं के, ' हे भद्रे ! तमारो पुत्र मोटो थयो छे, माटे हवे हुं दीक्षा लइश.' ते सांभळी श्रीमती रेंटीआनी त्राक लइने रु कांतवा बेठी. मोटा थयेला पुत्रे माताने पूछ्युं के, ' माता ! तमे रेंटीआनी त्राक केम लीधी ? ' श्रीमती बोली, ' पुत्र ! ज्यारे तारा पिता तपस्या

करवा जशे, अर्थात् दीक्षा लेशे तो पछी मारे त्राकनुंज शरण छे, एटले के रेंटीओ कांतीनेज पेट भरवुं पडशे.' पुत्र बोल्यो–' माता! हुं मारा पिताने बांधी राखीश, जवा नहीं दउं.' पछी पुत्रे त्राकना सूत्रथी पोताना पिताना पगने वींटवा मांड्या अने कह्युं, ' पिताजी! में तमने बांधी लीधा, हवे क्यां जशो?' आवुं पुत्रनुं आचरण जोइ आर्द्रकुमारे पोताना पगने वींटेला सूत्रना तंतुनी संख्या करी, त्यारे ते बार आंटा थया. ते प्रमाणे पोते बार वर्ष सुधी घेर रह्या. ज्यारे अवधि पूर्ण थयो एटले ते दीक्षा लइ पवननी जेम अप्रतिबद्धपणे पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या.

आ [illegible] तेना पिताए रक्षाने माटे मूकेला सुभटो कुमारने शोधता हता, तेओ चोरी करीने पोतानी आजीविका चलावता हता, दैवयोगे मार्गमां आर्द्रमुनि तेमने मळ्या, तेमने धर्मोपदेश कर्यो, एटले प्रतिबोध पामी ते सर्वेए दीक्षा लीधी. तेमने साथे लइ आर्द्रकुमारमुनि श्रीवीरप्रभुने वांदवा चाल्या. मार्गमां गोशाळो मळ्यो. ते बोल्यो के–' हे मुनि! तमे वृथा तप करी कष्ट सहन करो छो, शुभ अशुभनुं कारण तो दैवज छे, ते सर्वत्र प्रमाण छे. कह्युं छे के,

उपक्रमशतैः प्राणी, यन्न साधयितुं क्षमः ।
दृश्यते जायमानं तल्लीलया नीयतेर्बला ॥

" सेंकडो यत्न करवाथी पण प्राणी जे साध्य करवा समर्थ थतो नथी, ते दैवना बळथी एक रमत मात्रमां साध्य थइ जाय छे." आर्द्रकुमार मुनि बोल्या के, ' आ कहेवुं घटतुं नथी. प्रारब्ध (कर्म) अने उद्योग बंनेना मळवाथीज कार्यसिद्धि थाय छे. जेम कर्म–प्रारब्धथी थाळीमां भोजन प्राप्त थयुं होय पण ज्यांसुधी हाथ मुख तरफ लइ जाय नहीं त्यांसुधी ते मुखमां पेसे नहीं.' इत्यादि अनेक दृष्टांतो आपी गोशाळाने निरुत्तर करी दीधो.

त्यांथी आगळ चालतां आर्द्रमुनि हस्तितापसोने आश्रमे आव्या. ते तापसो कायम हाथीने मारीने तेनुं मांसज खाता हता. तेओ एम मानता हता के,' अनाज विगेरेथी निर्वाह करतां अग्निकाय, वनस्पतिकाय विगेरे घणा जीवोने मारवा पडे छे, तेथी घणुं पाप लागे, माटे एक मोटो जीव मारवाथी घणा वखत सुधी निर्वाह चाले ने पाप थोडुं लागे.' ज्यारे आर्द्रमुनि त्यां आव्या त्यारे तेमणे एक हाथीने पकडीने बांधेलो हतो. आ मुनिने जोइ ते हाथी लघुकर्मी होवाथी खीलाने उखेडी मुनिना चरण पासे आव्यो अने मुनिने भक्तिथी प्रणाम कर्यो.

मुनिना अतिशय जोइ अने देशना सांभळीने ते तापसो प्रतिबोध पाम्या अने तेमणे जैनवाणीनो स्वीकार कर्यो. पछी आर्द्रमुनिए तेमने दीक्षा आपी. त्यांथी सर्व परिवार सहित ते वीरप्रभुनी पासे आव्या. ते वखते अभयकुमार सहित श्रेणिकराजा पण समवसरणमां आव्या. तेमणे आर्द्रकुमार मुनिने हस्ति छोडाववानो वृत्तांत पूछ्यो, त्यारे मुनि बोल्या के, 'हे राजन्! हाथीने बंधनथी छोडाववो ते कांइ दुष्कर नथी, पण सूत्रतंतुना पासमांथी छुटा थवुं ते दुष्कर छे.' श्रेणिके सूत्रतंतु विषे वधारे हकीकत पूछी एटले आर्द्रकुमारे पोतानी बधी वार्त्ता कही संभळावी अने अभयकुमारनी प्रशंसा करीने तेने धर्माशीष आपी. पछी आर्द्रमुनि सर्व पापने आळोइ, पडिक्कमी, केवळज्ञान पामीने मोक्षने प्राप्त थया.

उपर प्रमाणे आर्द्रकुमार मुनिनां वचनथी जेम हस्तितापसोए हिंसा छोडी दीधी, तेम तेमनुं चरित्र सांभळीने प्राज्ञ पुरुषोए पण हमेशां दयाधर्मनो पक्ष करवो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ अहिंसात्यागविषये द्विसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७२ ॥

व्याख्यान ७३ मुं.

हवे मुनि तथा गृहस्थोने जे हिंसाना स्थान वर्जवा योग्य छे ते कहे छे.

मुखरंध्रमनाच्छाद्य, भणनीयं न कर्हिचित् ।
निमित्तं च त्रिकालानां, न वाच्यं कस्यचित्पुरः ॥१॥
उच्चैः स्वरैः निशिथेन, पाठो वर्ज्यं सुबुद्धिभिः ।
हिंसास्थानान्यनेकानि, इत्थं ज्ञात्वा त्यजेद् बुधः ॥२॥

व्याख्या.

"मुखनुं छिद्र ढांक्या वगर क्यारे पण भणवुं नहीं अने कोइनी आगळ अनागत (भविष्यना) फळादेश कहेवा नहीं. वळी बुद्धिमाने पाछली रात्रे उंचे स्वरे भणवुं नहीं. आ प्रमाणे अनेक हिंसाना

स्थानो छे, तेने जाणीने प्राज्ञ पुरुषे त्यजी देवा." प्रथम कह्युं के, मुखछिद्रने वस्त्रादिकथी आच्छादन कर्या सिवाय भणवुं नहीं, तेनुं कारण ए छे के, तेम भणवाथी वायुकाय जीवोनी हिंसा थाय छे. महाभारतमां कह्युं छे के, "मुखवस्त्रिका छे ते मुखना निःश्वासने रोकनारी छे, ते जीवोनी दयाने माटे रखाय छे." ते विषे अन्य मतमां कहे छे के, "हे ब्रह्मन्! अणुमात्र पण अक्षर बोलतां नासिका विगेरेमांथी नीकळता एक श्वासवडे सैकडो सूक्ष्म जंतुओ हणाय छे." ते विषे पूर्वाचार्यो कहे छे के, "चार स्पर्शवाळा भाषा वर्गणाना पुद्गलो श्वासोश्वासना आठ स्पर्शवाळा पुद्गळोमां भळी जवाथी आठ स्पर्शवाळा वायुकाय जीवोने हणे छे." वळी कोइनी आगळ ज्योतिष विगेरे उपरथी भविष्य कहेवुं नहीं. ते विषे कह्युं छे के, "जे मुनिओ ज्योतिष निमित्तादिवडे भविष्यना अक्षरो कहे, अथवा कौतुक इंद्रजाल विगेरे चमत्कार बतावे, वळी भूतिकर्म विगेरे करे, तेम करवाने प्रेरे अथवा तेम करनारनी अनुमोदना करे तो ते मुनिना तपनो क्षय थाय छे." ते विषे एक क्षत्रियनो प्रबंध छे.

क्षत्रिय प्रबंध.

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां एक प्रोषितभर्तृका* क्षत्रियाणी हती. तेने घेर एक मुनि कोइ कोइ वखत आहार लेवाने आवता हता. एक वखते ते क्षत्रियाणीए मुनिने पूछयुं के, 'मुनिराज! मारो स्वामी क्यारे आवशे?' मुनि बोल्या नहीं. पण तेणीए घणो आग्रह कर्यो, त्यारे मुनिए विचार्या वगर कही दीधुं के, 'आजथी पांचमे दिवसे आवशे.' दैवयोगे पांचमे दिवसे ते क्षत्रिय आव्यो, एटले मुनिनुं वचन सत्य थयुं. ते दिवसे मुनि आहार लेवाने तेने घेर आव्या. एटले पेली क्षत्रियाणीने अने मुनिने साम सामुं हास्य आव्युं. ते जोइ क्षत्रियने शंका आवी, तेथी हाथमां खड्ग लइने उभो थयो अने मुनिने हास्य थवानुं कारण पूछयुं. त्यारे मुनिए जे यथार्थ हतुं ते कही आप्युं. एटले क्षत्रीए परीक्षा करवा माटे मुनिने पूछयुं के, 'आ घोडी सगर्भा छे तेने शुं अवतरशे?' मुनिए कह्युं-'वछेरी आवशे.' तेथी तत्काळ ते क्षत्रीए खड्गथी ते घोडीनुं उदर विदार्युं, तेमां वछेरी जोइने ते शंका रहित थयो. आ हिंसाकृत्य जोइ मुनिए तत्काळ अनशन कर्युं. पेला क्षत्रीए मुनिने खमाव्या. मुनि काळ करीने स्वर्गे गया. इति क्षत्रिय प्रबंध.

वळी रात्रे मोटे स्वरे पाठ करवो नहीं. जो कदि कांइ काम पडे तो मंद-

---

* जेनो स्वामी परदेश गयलो छे एवी.

स्वरथीज बोलवुं. खुंखारो के होंकारो पण रात्रे करवो नहीं. जो रात्रे तेम करे तो घरमां रहेला घरोळी विगेरे हिंसक जीवो जाग्रत थइ मक्षिका विगेरेना भक्षणनो आरंभ करे अने पडखे पाडोशीओ होय ते जागी पोतपोताना आरंभ करवामां प्रवर्त्ते. तेमज रसोइ करनारा, धोबी अने मच्छीमार विगेरे पण परंपराए पोतपोताना कुव्यापारमां प्रवर्त्ते. ते विषे श्रीवीर भगवंते जयंतीना प्रश्नोत्तरमां कह्युं छे के, 'अधर्मी पुरुषो सुता भला अने धर्मी पुरुषो जागता भला.' आ विषे नीचे प्रमाणे एक प्रबंध वृद्धोना मुखथी सांभळेलो छे.

मच्छीमार चोरनी कथा.

कोइ साधु रात्रे पोताना शिष्योने पूर्वगत[१] वाचना आपता हता. ते प्रसंगमां एक वखते तेमणे पोताना शिष्यने 'अमुक चूर्ण औषधि विगेरेना प्रयोगथी समुर्च्छिम मत्स्यादिक जीवोनी उत्पत्ति थाय छे' एम कह्युं. ते वात त्यांथी चाल्या जता एक चोरी करवा नीकळेला मच्छीमारे सांभळी, अने ते चूर्णनो प्रयोग मनमां धारी लइने ते घेर गयो. पछी तेणे ते प्रमाणे कर्युं, एटले घणां मत्स्योनी उत्पत्ति थइ, तेथी हर्ष पामीने ते माछी नित्य तेज प्रयोगथी पोताना कुटुंबनुं पोषण करवा लाग्यो. एवी रीते करतां घणो काळ चाल्यो गयो. एक वखते ते विद्याचोर माछी ते मुनिनी पासे आव्यो, अने मुनिने नमस्कार करीने बोल्यो के–' हे स्वामी ! तमारा प्रसादथी हुं सहकुटुंब सुखे जीवुं छुं अने ते रीते दुकाळ विगेरे संकटना वखतमां अनेक जीवोनो उपकार थशे.' मुनि बोल्या–' केवी रीते ?' चोरे कह्युं के–' पूर्वे तमे रात्रे शिष्योनी आगळ चूर्णप्रयोगथी जीवोत्पत्ति कही हती, ते मारा सांभळवामां आवी हती. त्यारथी ते प्रयोगवडे हुं सुखे जीवुं छुं.' ते सांभळी मुनि मनमां पोताना प्रमाददोषनी निंदा करता सता परंपराए अत्यंत पापनी वृद्धि थवानो निश्चय जणावाथी ते मच्छीमार प्रत्ये बोल्या–' हुं तने बीजो तेथी पण श्रेष्ठ उपाय बतावुं ते सांभळ–अमुक अमुक द्रव्यनो योग मेळवी, एकांते ओरडामां बेसी, तेना कमाड बंध करी, मध्य भागे राखेला जळ विगेरेमां ते चूर्ण नाखवुं, एटले सुवर्ण सरखा वर्णवाळा मत्स्यो उत्पन्न थशे. तेनुं भक्षण करवाथी तारुं शरीर पण पुष्ट थशे.' ते सांभळी ते माछी पोताने घेर गयो अने गुरुना कहेवा प्रमाणे चूर्ण तैयार करी ओरडामां पेठो. पछी तेनो प्रयोग करतां तेमांथी एक व्याघ्र उत्पन्न थयो. ते तेनुं भक्षण

---

१ चौद पूर्वोमां रहेली.

करी गयो, जेथी ते पापी मृत्यु पामीने नरके गयो, अने मुनि ते पापनी आलोचना करी स्वर्गे गया. माटे रात्रे उंचा स्वरथी पठनपाठन न करवुं ए आ उपदेशनो सार छे.

आ विषे बीजुं पण एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

कोइएक श्रावक रात्रिने छेल्ले पोहोरे उंचे स्वरे आवश्यक (प्रतिक्रमण) भणवा लाग्यो. ते नजीक रहेला पाडोशीनी स्त्रीए सांभळ्युं, तेथी थोडी रात्रि शेष हशे एवुं जाणी ते उठी अने अनाज दळवानो समय जाणी दळवा बेठी. तेवामां घंटीना गाळामां रहेलो एक सर्प कचराइ गयो. तेनुं विष सर्व लोटमां प्रसरी गयुं. ते लोटना रोटला खावाथी तना सर्व स्वजन मृत्यु पामी गया. पेला श्रावके ज्ञानी पासेथी ते पापनी शुद्धि जाणी ते प्रमाणे आलोचना करी अने मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो.

आ प्रमाणे हिंसा थवाना अनेक प्रकारो छे ते जिनेंद्रकथित शास्त्रोथी तथा पोतानी बुद्धिथी जाणीने जे सुज्ञ पुरुषो तेनो त्याग करे छे ते शाश्वत सुखवाळी मोक्षलक्ष्मीने पामे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ जीवदयाविषये त्रिसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७३ ॥

व्याख्यान ७४ मुं.

हवे हिंसा अने अहिंसानुं फळ दर्शावे छे.

हिंसा निरंतरं दुःख—महिंसा तु परं सुखम् ।
जाता ददात्यहो सूरचंद्रयोरिव तद्यथा ॥ १ ॥

" हिंसा हमेशां दुःख आपे छे अने अहिंसा परम सुख आपे छे, ते विषे सूर चंद्रनुं दृष्टांत छे. " ते आ प्रमाणेः—

सूर अने चंद्रकुमारनी कथा.

जयपुर नामना नगरने विषे शत्रुंजय नामे राजा हतो. तेने सूर अने चंद्र नामे बे पुत्रो हतो. पिताए ज्येष्ट कुमार सूरने युवराजपद आप्युं, तेथी पोताने अपमान थयुं जाणी चंद्रकुमार नगर बहार नीकळी विदेशमां फरवा लाग्यो. एक वखते तेणे कोइ मुनिना मुखथी नीचेना बे श्लोक सांभळ्या—

अपराधा इति प्रायो, गेहिभिः पुण्यदेहिभिः ।
न हंतव्यास्त्रसास्तावत्किंपुनस्ते निरागसः ॥ १ ॥
मीनानां वधप्रारंभे. छेदः स्वांगुलिनोऽभवत् ।
त्यक्त्वा शस्त्रेण हिंसां च, जातो धीवरधीधनः ॥२॥

भावार्थः–"पवित्र देहवाळा गृहस्थे अपराधी एवा पण त्रस जीवोने हणवा नहीं, तो निरपराधी जीवोने तो केमज हणवा ? कोइ बुद्धिमान् ढीमरे मत्स्यनो वध करतां पोतानी अंगुलीनो छेद थयो, ते उपरथी शस्त्रवडे हिंसा करवीज तेणे छोडी दीधी." ते कथा आ प्रमाणे छेः—

"पृथ्वीपुर नगरमां एक ढीमर रहेतो हतो, ते मत्स्य मारवाने इच्छतो नहोतो, तथापि तेना स्वजनवर्गे तेने जाल विगेरे आपीने मत्स्य मारवा बळात्कारे मोकल्यो. ते जालमां मत्स्यो लइने आव्यो. स्वजनोए तेने मत्स्य चीरवाने तीक्ष्ण शस्त्र आप्युं. ते शस्त्रथी मत्स्योनो वध करतां तेनी आंगळी कपाइ गइ. तेनी वेदनाथी पराभव पामतां तेणे चिंतव्युं के, "हिंसाप्रिय जीवोने धिक्कार छे. कोइने 'मरी जा' एवुं कहेतां पण दुःख लागे छे तो हिंसा करतां केम न लागे ?"

ए वखते कोइ गुरु शिष्य नगरमांथी बहार ठल्ले जतां ते स्थानेथी निकळ्या. तेमणे हाथमां शस्त्रवाळा पेला माछीने जोयो. ते जोइ शिष्ये गुरुने कह्युं के, 'हे भगवन्! आवा पापी जीवो तो कोइ रीते पण तरे एम लागतुं नथी.' गुरु बोल्या–'वत्स ! जिनेंद्रशासनमां एवो एकांत कदाग्रह नथी; कारण के अनेक भवोमां संचय करेला कर्मोने सद्भाव अने अध्यात्मज्ञान सहित शुभ परिणामवडे प्राणी क्षणवारमां नाश पमाडे छे. ते विषे कह्युं छे के,—

जं जं समयं जीवो आवस्सइ जेण जेण भावेण ॥
सो तंमि तंमि समये, सुरासुहं बंधए कम्मं ॥

भावार्थः–" जे जे समये जीव जे जे भावमां प्रवर्ते छे, ते ते समये तेवां तेवां शुभाशुभ कर्म बांधे छे." आ प्रमाणे कही शिष्यने निरूत्तर करीने गुरुए ऊंचे स्वरे आ प्रमाणे एक पद कह्युं के–'जीववहो महापावो." आ प्रमाणे कही गुरु आगळ गया. ते सांभळी ढीमरे ते पद याद करीने चिंतव्युं के, "आजथी मारे कोइ जीवनो वध करवो नहीं." आवुं ध्यान करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी पोते पूर्वे चारित्रनी विराधना करेली तेनुं फळ आ नीच कुळमां जन्म विगेरे मानी ते दीक्षा लेवामां उत्सुक थयो अने अंते शुक्लध्यानथी

तत्काळ केवळज्ञान पाम्यो. सानिध्यमां रहेला देवताओए तेनो महोत्सव कर्यो. देवदुंदुभिनो शब्द सांभळी पेला शिष्ये गुरुने पूछयुं के, 'आ शेनो शब्द छे?' गुरु बोल्या–"वत्स! जो, ते ढीमरने महाज्ञान उत्पन्न थयुं, तेनो देवो महोत्सव करे छे, ते संबंधी दुंदुभीनो नाद छे. हवे तुं त्यां जइ तेमने मारा भव विषे पूछ." पछी शिष्य शंका अने विस्मय धरतो सतो त्यां गयो. त्यारे ज्ञानी बोल्या के–"अरे मुनि! शुं विचारो छो, हुं तेज ढीमर छुं, अने द्रव्य भाव हिंसाना त्यागथी मने आ फळ प्राप्त थयुं छे. हवे तमे जे पूछवा आव्या छो तेनो उत्तर सांभळो–तमारा गुरु जे वृक्ष* नीचे उभा छे तेना पत्र जेटला तमारा गुरुना भव छे, अने तमे आ भवमांज सिद्धिने पामनार छो." ते सांभळी शिष्ये गुरुनी पासे जइने ते वात कही, ते सांभळी गुरु नृत्य करी हर्ष पामता सता बोल्या के, 'अहो! आटला गणत्री थइ शके तेटला भवेज मने सिद्धि प्राप्त थशे! खरेखर हुं धन्य छुं अने ते ज्ञानीनुं वाक्य सत्य छे.' आ प्रमाणे कही तेमणे त्यांथी आगळ विहार कर्यो. पूर्वोक्त माछी हिंसाने छोडी क्षणमां परमज्ञानने प्राप्त थयो; तेथीज सर्व व्रतमां अहिंसाव्रतने मुख्य कहेलुं छे ते सत्यज छे. तेना गुण वचनद्वारा कही शकाय तेम नथी." आ प्रमाणे गुरुए कहेली देशना सांभळी चंद्रकुमारे अपराधी जीवोनी हिंसानो पण त्याग कर्यो. मात्र तेनो राजाना आदेशथी भंग न थाय एटली छुट राखी. आ प्रमाणे व्रत ग्रहण करी तेणे ते नगरना राजानी सेवा करवा मांडी. एक वखते वनमां राजाना सुभटोए कोइ चोरने पकड्यो. राजाए चंद्रकुमारने कह्युं के, 'हे चंद्रकुमार! तुं आ उग्र चोरने मारी नाख.' ते वखते चंद्रे पोताने युद्ध शिवाय कोइ पण प्राणीने न मारवानो नियम जणाव्यो. तेथी हर्ष पामी राजाए तेने पोतानो अंगरक्षक (हजुरी) कर्यो अने अनुक्रमे एक देशनो स्वामी बनाव्यो.

अहीं चंद्रकुमारना मोटा भाइ सूरकुमारे युवराज पदवीथी पण असंतुष्ट थई, पराङ्मुख थइने सुतेला पितानी उपर रात्रे शस्त्रनो प्रहार कर्यो. राजानो घात करीने भागतां तेने राणीए जोयो, तेथी 'आ राजघातक चाल्यो जाय छे माटे तेने पकडो." एवो त्यां कोलाहल थइ पड्यो. घायल थयेलो राजा पोताना पुत्रने ओळखीने विचार करवा लाग्यो केः—

सौरभ्याय भवंत्येके, चंदना इव नंदनाः ।
कुलोच्छेदे भवंत्यन्ये, बालका इव वालकाः ॥ १ ॥

---

* ते वृक्ष आंबलीनुं हतुं.

भावार्थ—" केटलाएक पुत्रो चंदनना वृत्तनी जेम सुगंधने माटे थाय छे अने केटलाएक पुत्रो वाळानी जेम कुलना उच्छेदने माटे थाय छे. "

आ प्रमाणे विचारीने राजाए सूरकुमारने देशपार कर्यो अने चंद्रकुमारने बोलावी राज्यउपर बेसार्यो.

शस्त्रना घानी पीडाथी सूरकुमार उपर रौद्र ध्यान करतां राजा मृत्यु पामीने चित्तो थयो. सूरकुमार फरतो फरतो ते वनमां आव्यो. पूर्वना वैरथी चित्ताए तेने मारी नाख्यो; पछी ते भिल्ल थयो. तेज वनमां शीकार करतां ते भिल्लने चित्ताए पुनः मारी नाख्यो. तेना सगासंबंधीओए मळीने चित्ताने पण मारी नाख्यो. पछी बंने डुक्कर थया. परस्पर वैर राखतां ते बंनेने पारधीए हणी नाख्या. मरीने बंने गजेंद्र थया. कोईए तेओने पकडीने चंद्रराजाने अर्पण कर्या. चंद्रराजानी आगळ पण ते बंने युद्ध करवा लाग्या. राजाए सुदर्शन केवळीने तेमना वैरनुं कारण पूछयुं. एटले केवळी भगवंते तेमने वैर थवानुं पूर्वोक्त कारण कह्युं. ते सांभळी चंद्रराजाए चिंतव्युं के, 'अहो ! विचित्र कर्मरूप नटे भजवेलुं आ भवनाटक केवुं छे, जेमां रंक राजा थाय, अने राजा रंक थाय. अढार सागरोपमना आयुष्यवाळो देवता[1] पण क्षणमां खर के श्वान बने छे. महामोहरूप निद्रावाळा प्राणीओ जेनो आश्रय करवाथी संसाररूप कुवामां पडे छे अने सद्गतिना मार्गने जोता नथी, तेनुं कारण मिथ्यात्वरुप गाढ अंधकारज छे.' आवा प्रकारना उत्तम चिंतवनथी वैराग्य पामी पोताना पुत्रने राज्य उपर बेसाडी चंद्रराजाए चारित्र ग्रहण कर्युं. निरतिचार चारित्र पाळी ते राजर्षि एकावतारी देवपणाने पाम्या. पेला बंने हाथी मरीने पहेली नरके गया.

" जेमणे गृहस्थपणामां देशथी पण आद्य व्रत उत्कृष्ट परिणामे अंगीकार करीने पाळ्युं तेवा सर्व जीवनी दयामां तत्पर चंद्रकुमार नामे राजर्षि अनुक्रमे मोक्षपदने पाम्या छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ जीवदयाविषये चतुःसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७४ ॥

---

१ आठमा देवलोक सुधीना देवता त्यांथी च्यवीने तिर्यंच पण थाय छे.

स्थंभ ६ ठ्ठो.

व्याख्यान ७५ मुं.

हवे मृषावाद नामे बीजुं व्रत कहे छे.

सूक्ष्मबादरभेदाभ्यां, मृषावादं द्विधा स्मृतम् ।
तीव्रसंकल्पजं स्थूलं, सूक्ष्मं हास्यादिसंभवम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

मृषावाद नामे बीजुं व्रत सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेदवाळुं छे. तेमां जे तीव्र संकल्पथी थाय ते स्थूल (बादर) अने हास्य विगेरेथी थाय ते सूक्ष्म तेमां श्रावके सूक्ष्म मृषावादने विषे यतना करवी अने स्थूलनो तो अवश्य करीने त्यागज करवो. कारण के ते लोकमां पण अपकीर्ति विगेरेना हेतुभूत छे. स्थूल मृषावाद कन्या विगेरे संबंधी असत्यने कहे छे. बीजुं जे अणुव्रत छे तेमां क्यारे पण असत्य बोलवुं नहीं. तेमां पण विशेषे करीने पृथ्वी, कन्या, गाय, धननी थापण अने साक्षीमां तो असत्य बोलवुंज नहीं. ते विषे कह्युं छे के– " कन्या, गाय, ने भूमिसंबंधी असत्य, कोइनी थापण ओळववी ते, अने खोटी साक्षी पूरवी ते–ए पांच स्थूल असत्य कहेवाय छे. " तेमां कन्या संबंधी असत्य आ प्रकारे छे. जे विषकन्या न होय तेने द्वेषने लीधे आ विषकन्या छे एम कहेवुं, वळी दुःशीला होय तेने रागवडे सुशीला कहेवी. इत्यादि कन्या-संबंधी अलिक–असत्य कहेवाय छे. तेमां उपलक्षणथी दासदासी विगेरे सर्व द्वीपद संबंधी असत्यनो समावेश करवो. हवे गायसंबंधी असत्य आ रीते छे. अल्प दुधवाळीने घणा दुधवाळी कहेवी, घणा दुधवाळीने अल्प दुधवाळी कहेवी ते. आ उपरथी बीजा सर्व चतुष्पद विषे जाणी लेवुं. भूमि संबंधी असत्य आ रीते छे. पारकी भूमिने पोतानी कहेवी, उखर (खारवाळुं) क्षेत्र होय तेने उखर वगरनुं कहेवुं. ए भूमिसंबंधी असत्य. तेमां सर्व घर, हाट, मकान विगेरे अपद पदार्थोनुं ग्रहण करवुं. अहिं शिष्य शंका करे छे के, उपलक्षणथी आप बीजा द्वीपद, चतुष्पद ने अपद पदार्थोनुं ग्रहण करवानुं कहो छो तो मुख्य वृत्तिएज ते त्रण विषय असत्यना केम न गणाव्या ? गुरु उत्तर आपे छे के–

कन्या विगेरे असत्य लोकमां पण विशेषे निंदनीक छे. वळी कन्यादि असत्यथी भोगांतराय, द्वेषवृद्धि विगेरे दोषो स्फुट रीते जणाय छे.

वळी कोइए सुवर्ण विगेरेनी थापण मूकेली होय ते ओळववाथी महापाप लागे छे. जो के, थापण ओळववानो अदत्तादानमां समावेश थाय छे पण तेमां 'तें मुकीज नथी' एम ना पाडवी पडे छे, तेथी वचननी प्राधान्यता छे, माटे तेने मृषावादमां गणेल छे.

पांचमो भेद जे कूट साक्षी छे ते लेणदेण विगेरेमां जे खरो साक्षी होय ते लांच के द्वेषभावथी खोटी साक्षी पूरे तेने घणुं पाप लागे छे, अने तेथी वसुराजानी पेठे बंने भवमां अनर्थनी प्राप्ति थाय छे. जेम वसुराजाने मात्र अज शब्दना अर्थनी साक्षीमां कूटसाक्षी दोष लाग्यो हतो, ते कथा आ प्रमाणेः—

वसुराजानी कथा.

शुक्तिमती नगरीमां क्षीरकदंबक नामे एक उपाध्याय रहेता हता. तेनी पासे ते उपाध्यायनो पुत्र पर्वत, राजानो पुत्र वसु अने एक ब्राह्मणनो पुत्र नारद, ए त्रण जण साथे भणता हता. एक वखते तेओ घरनी अगाशी उपर भणतां भणतां थाकी जइने सुइ गया हता, तेवामां कोई बे चारणमुनि आकाशे जतां तेमने देखीने बोल्या के, 'आ त्रण विद्यार्थीओमां एक स्वर्गगामी छे अने बे नरकगामी छे.' आ वचन उपाध्यायना सांभळवामां आव्युं, तेथी पाठके तेमनी परीक्षाने माटे प्रातःकाळे एक एक पिष्टनो कुकडो ते त्रणेने आपीने कह्युं के, 'हे वत्सो! ज्यां कोइ जुए नहीं त्यां जइने आ कुकडाने मारी नाखजो.' आ प्रमाणे सांभळी वसु अने पर्वत तो कोइ शून्य स्थाने जइ तेने हणीने पाछा आव्या, पण ब्राह्मणपुत्र नारद हतो तेणे एकांते जइने विचार कर्यो के, "गुरुए कह्युं छे के, ज्यां कोइ जुवे नहीं त्यां जइने हणजो, तो तेवुं स्थान तो त्रणे जगतमां नथी; केमके सर्वज्ञ अने सिद्धपुरुषोने शुं अगम्य छे! ज्ञानीने अगोचर कोइ वस्तु नथी. वळी आ कुकडो मने जुए छे अने हुं तेने जोउं छुं, तेथी गुरुए जरूर अमारी परीक्षा करवाने माटेज आ बताव्युं लागे छे." आ प्रमाणे विचारी ते कुकडाने हण्या वगर अक्षत लइने घेर पाछो आव्यो. गुरुए कह्युं के, 'वत्स! तें मारी आज्ञा प्रमाणे केम न कर्युं?' ते बोल्यो—'भगवन्! हृदयमां विचारो. में आपनां वचन प्रमाणेज कर्युं छे.' आम कहीने पछी पोतानो अभिप्राय बधो जणाव्यो. ते सांभळी गुरुए निश्चय कर्यो के, 'आ नारद दयाने लीधे स्वर्गे जवानो अने पेला बे नरकगामी थवाना.' तो हवे

जेओ नरकमां जवाना तेमने भणावीने शुं करवुं ? इत्यादि वैराग्य धारण करीने उपाध्याये गुरु पासे दीक्षा लीधी. पछी लोकोए उपाध्यायने स्थाने तेना पुत्र पर्वतने स्थापित कर्यो अने अभिचंद्र राजाना पद उपर वसुकुमार राजा थयो.

एक वखते कोई पारधिए मृग उपर बाण नाख्युं. ते बाण वचमां स्खलित थइ गयुं. तेथी पारधीए पासे आवी हस्तस्पर्श कर्यो, एटले त्यां स्फटिकनी एक शिला जोवामां आवी. पछी तेणे राजानी पासे ते वात कही. राजाए ते शिला मंगावीने पोताना सिंहासन नीचे मूकी, जेथी तेनुं सिंहासन जमीनथी अधर रह्युं होय तेम जणाव्या लाग्युं. ते जोई लोकोए जाण्युं के, 'आ राजा सत्यवादी छे, तेथी तेनुं आसन अधर रहे छे.' अनुक्रमे तेवी प्रसिद्धि लोकमां पण सर्वत्र प्रसार पामी.

एकदा नारद पर्वतने मळवा आव्यो, ते वखते पर्वत विद्यार्थीने भणावतो हतो. तेमां एम आव्युं के, "अजवडे यज्ञ करवो." तेनो अर्थ पर्वते एवो कह्यो के, 'अज एटले बकरो, तेनावडे होम करवो.' ते सांभळी नारदे कह्युं के, 'रे पर्वत ! तुं ए पदनो अर्थ खोटो करे छे, तेनो खरो अर्थ एवो छे के, अज एटले त्रण वर्षनी डांगर के जे उगे नहि, तेवडे होम करवो. गुरुए पण आपणने एमज शीखव्युं छे. माटे अरे बांधव ! तुं केम भूली गयो ?' ते सांभळी पर्वते गर्वथी कह्युं के, 'हुं कहुं छुं तेज खरुं छे, तेथी जेनुं खोटुं पडे तेनी जिव्हा छेदी नाखवी.' एवी परस्पर प्रतिज्ञा करी, अने ते विषे वसुराजाने पूछवुं, ने जे वसुराजा कहे ते सत्य मानी लेवुं एम ठराव्युं. आ खबर पर्वतनी माताने पडी, एटले ते पुत्रना मृत्युथी कंपती वसुराजा पासे गइ अने सर्व वृत्तांत जणावीने बोली के, 'महाराजा ! मने पुत्रदान आपो.' वसुराजाए कह्युं के, 'माता ! सुखे जाओ. हुं तमारा पुत्रनो पक्ष करीश.' बीजे दिवसे पर्वत अने नारद वसुराजानी पासे परिवार साथे आव्या. राजाए पर्वतनी तरफमां कूटसाक्षी पूरी, एटले समिप रहेला देवताए अधर देखातुं सिंहासन चूर्ण करी नाख्युं. वसुराजाने भूमिपर पाडी नाख्यो. तत्काळ मृत्यु पामीने ते नरके गयो. नारदनी देवताओए स्तुति करी अने अनुक्रमे ते सत्यथी स्वर्गे गयो.

उपरनी कथा सांभळीने प्राज्ञ पुरुषोए सत्यव्रतने विषे हमेशां आदर राखवो. वसुराजाना आठ पुत्रो हता तेमने पण देवताओए मारी नाख्या.' पर्वतने नगरजनोए धिःकारीने काढी मूक्यो. तेने महाकाळ नामना असुरे ग्रहण कर्यो. ते महाकाळनो संबंध आ प्रमाणे छे.

अयोधन नामना राजाए पोतानी पुत्रीनो स्वयंवर रच्यो हतो. ते वखते माताए गुप्त रीते कन्याने कह्युं के, 'तारे मारा भाइना पुत्र मधुपिंगने वरवो.' आ खबर त्यां रहेली दूतीनी मारफते सर्व राजाओमां मुख्य एवा सगर राजाना जाणवामां आवी. तेथी तेणे पोताना पुरोहितने ते कन्या वरवानो उपाय पूछ्यो. कवि अने चतुर एवा पुरोहिते कपट भरेली राजलक्षणना विवेचनवाळी एक नवीन संहिता बनावी अने ते वांचवा माटे सभा भरी. तेमां तेणे लक्षणोवडे सगरने सर्वथी उत्कृष्ट अने मधुपिंगने सर्वथी नीचो जणाव्यो. एटले सर्व राजा विगेरे मधुपिंगनुं उपहास्य करवा लाग्या, तेथी मधुपिंग लज्जा पामीने त्यांथी चाल्यो गयो. पछी पेली कन्या सगरराजाने वरी. आथी क्रोध पामेलो मधुपिंग कष्टकारी तप करी महाकाल नामे असुर थयो. ते असुर पर्वतने मळ्यो. ते बंनेने पिप्पलाद नामना एक त्रीजा पुरुषनो मेळाप थयो. ए पिप्पलाद कोण हतो तेनुं वृत्तांत आ प्रमाणेः—

सुलसा अने सुभद्रा नामे बे तापसीओ लोकमां विदुषी तरीके विख्यात थइ हती. तेमां सुलसा विशेष पंडिता हती. एकदा याज्ञवल्क्य नामना कोई तापसे एवो पडह वगडाव्यो के, 'जे मने वादमां जीते तेनो हुं शिष्य थइने रहुं.' आ सांभळी सुलसाए वाद करी याज्ञवल्क्यने जीती लीधो अने तेने पोतानो शिष्य बनाव्यो. पछी ते बंनेने घणो परिचय थवाथी सुलसा सगर्भा थइ. आ खबर सुभद्राने पडी एटले तेणे आवीने तेओने बहु उपालंभ आप्यो अने ते वात सगरराजाने जणावी. राजाना भयथी सुलसा गुप्तपणे पुत्रने जन्म आपी एक पिप्पल (पिपळा) ना वृक्ष नीचे तेने छोडी दइ याज्ञवल्क्यनी साथे नाशी गइ. प्रातःकाले सुभद्रा त्यां आवी, तेणे पिपळा नीचे पुत्रने जोयो. ते पुत्र क्षुधातुर थइ पिपळानुं फळ स्वयमेव मुखमां पडेलुं तेनुं आस्वादन करतो हतो. ते जोइ सुभद्राए तेनुं पिप्पलाद एवुं नाम पाड्युं, अने तेने सारी रीते भणाव्यो. सुभद्रा पासेथी पोताना जन्मनी वार्ता सांभळी ते अनार्य पिप्पलादे अनार्य वेद रच्या. तेमां एवी प्ररुपणा करी के, 'राजाओए अरिष्टनी शांतिने माटे तेमज स्वर्गनी प्राप्तिने माटे पशु, अश्व, हाथी अने मनुष्य विगेरेने होमी यज्ञ करवो.' आ वार्ताने महाकाल असुरे टेको आप्यो. तेणे एवुं विचार्युं के, 'आ पर्वत अने पिप्पलादनां वचनथी राजाओ यज्ञमां हिंसा करशे, एटले तेओ नरके जइ महा-वेदना भोगवशे. आ प्रमाणे मारा वैरी सगर विगेरे राजा पण करशे, एथी मारा वैरनो बदलो वळी जशे.' आवुं विचारी तेणे ते बंनेने कह्युं के, 'तमे

तेवा यज्ञो प्रवर्त्तावो, हुं तेमां सानिध्य रहीश.' आथी ज्यां ज्यां तेओ यज्ञ करावे त्यां त्यां महाकाल असुर आवी रोग विगेरेनी शांति करे अने पशु विगेरेने साक्षात् विमानमां रहेला बतावे. आ प्रमाणे नजरे जोवाथी घणा राजाओ विगेरे यज्ञ करवामां आदरवाळा थया. छेवटे तेओए निःशूक थइ मनुष्यनी हिंसा पण प्रवर्तावी. एक वखते महाकाले मायाथी मोह पमाडी सगरराजाने स्त्रीसहित यज्ञमां होमी दीधो. पिप्पलादे पितृमेध करी पोताना मातापिताने यज्ञमां होमी दीधा. एवी रीते लोकोमां अनार्य वेद प्रवर्त्त्या अने आर्यवेद के जे माणवक नामना निधानमांथी उद्धरीने प्रतिदिन जमाडाता श्रावकोने भणवा माटे भरतचक्रीए पूर्वे बनाव्या हता, जेमां बार व्रतनां अंगीकाररूप बार अंग उपर बार तिलक अने त्रण रत्नने सूचवनार यज्ञोपवितना त्रण सूत्र अने तीर्थंकरनी स्तुति विगेरे प्रतिपादन करेल छे ते वेदनी प्रवृत्ति बंध पडी.

उपर कह्या प्रमाणे वसुराजा, पर्वत अने पिप्पलाद विगेरे असत्यवादथी अधम गतिने पाम्या, तेनो दाखलो हृदयमां धारण करीने आत्महितेच्छु प्राणीओए असत्यवादनो त्याग करवो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ मृषावादत्यागविषये पंचःसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७५ ॥

व्याख्यान ७६ मुं.

हवे असत्यना भेद कहे छे.

अभूतोद्भावनं चाद्यं, द्वितीयं भूतनिह्नवम् ।
अर्थांतरं तृतीयं च, गर्हानाम चतुर्थकम् ॥ १ ॥
एतच्चतुर्विधाऽसत्यं, श्वभ्रादिदुःखहेतुकं ।
ज्ञात्वाऽनृतं व्रतं ग्राह्यं, येनातिसौख्यवैभवम् ॥ २ ॥

व्याख्या.

असत्य चार प्रकारनुं छे, तेमां पहेलुं असत्य अभूतोद्भावन नामे छे, एटले आत्मा सर्वगत छे अथवा श्यामाक नामनुं खडधान चोखा जेवुंज छे. आमां जे

कहेवुं ते अभूतोद्भावन असत्य. बीजुं भूतनिह्नव असत्य एटले छती वस्तुने निषेधवी, जेमके आत्मा नथी, पुण्य पाप नथी, एम कहेवुं इत्यादि. त्रीजुं अर्थांतर असत्य एटले जे पदार्थ जेवो होय तेने तेवो न कहेतां बीजो कहेवो. जेम गायने अश्व कहेवो. चोथुं गर्हा असत्य एटले निंदाथी असत्य कहेवुं. ए गर्हा असत्य त्रण प्रकारनुं छे. पहेलुं सावद्य व्यापारमां प्रवर्त्तावvुं, जेमके क्षेत्र खेड, क्षेत्रनी जमीनने बाळी दे विगेरे कहेवुं. बीजुं अप्रिय कारण, एटले काणाने काणो कहेवो ते. त्रीजुं आक्रोशरूप एटले कोईने तिरस्कारथी कहेवुं के, 'अरे निर्मुख! अरे भानवगरना!' इत्यादि. आ प्रमाणेना असत्य बोलवाथी प्राणीने नारकी विगेरेनां दुःखो प्राप्त थाय छे. ते विषे योगशास्त्रमां लखे छे के, "जे प्राणी मृषावाद बोले छे, ते निगोदमां, तिर्यंचमां अने नारकीमां उत्पन्न थाय छे. परस्त्री भोगवनार अने चोरी करनारने पापमुक्त थवानो उपाय छे, पण जे असत्यवादी छे तेने कोई पण उपाय नथी." एथी तेना त्यागरूप बीजुं अणुव्रत ग्रहण करवुं के जेथी सुख संपत्तिनी प्राप्ति थाय. ए विषे श्रीकांत श्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

श्रीकांत श्रेष्ठीनी कथा.

राजग्रही नगरीमां श्रीकांत नामे एक श्रेष्ठी हतो. ते दिवसे व्यापार करे अने रात्रे चोरी करे. एक वखते द्वादशव्रतने धारण करनार जिनदास नामे कोई श्रावक त्यां आव्यो. श्रीकांत शेठे भोजनने माटे तेने आमंत्रण कर्युं. जिनदासे कह्युं के, 'जेनी आजीविकाना प्रकार मारा जाणवामां न होय तेने घेर हुं भोजन करतो नथी.' श्रीकांते कह्युं, 'हुं शुद्ध व्यापार करुं छुं.' जिनदासे कह्युं, 'तमारा घरखरच प्रमाणे तमारो व्यापार जोवामां आवतो नथी, माटे सत्य होय ते कहो.' पछी 'श्रीकांते जिनदास पारकुं गुह्य प्रकट करे तेम नथी' एवी खात्री थवाथी पोताना व्यापारनी अने चोरीनी सत्य वात कही. त्यारे जिनदासे कह्युं, 'हुं तमारे घेर भोजन लइश नहि, कारण मारी बुद्धि पण तमारा आहारथी तमारा जेवी थाय.' श्रीकांते कह्युं, 'चोरीना त्याग विना जे तमे कहो ते हुं धर्म करुं.' जिनदासे कह्युं के, "त्यारे तमे प्रथम असत्य बोलवुं नहि, ते व्रत ग्रहण करो. असत्य विषे कह्युं छे के, 'ताजवामां एक तरफ असत्यनुं पाप राख्युं अने बीजी तरफ बीजा बधां पापो राख्यां, तोपण असत्यनुं पाप अधिक थयुं.' जे कोई शिखाधारी, मुंडी, जटाधारी, दिगंबर, के वल्कलधारी थइ लांबो वखत तपस्या करे ते पण जो मिथ्या बोले तो ते चंडाळथी पण निंदवा

योग्य थाय छे. वळी असत्य अप्रतीतिनुं मूळ कारण छे, अने सत्य विश्वासनुं मूळ कारण छे तथा सत्यनुं अचिंत्य माहात्म्य छे. लोकमां पण कहेवाय छे के, द्रौपदीए सत्य बोलवाथी आम्रवृक्षने नवपल्लवित कर्युं हतुं. ते वार्ता नीचे प्रमाणे छेः—

हस्तिनापुरना राजा युधिष्ठिरना उद्यानमां माघ मासने विषे एकदा अठ्याशी हजार ऋषिओ आव्या. राजाए तेमने भोजनने माटे निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेओ बोल्या के 'हे राजन्! जो तमे आम्ररसथी भोजन करावो तो अमे जमीशुं, नहींतर नहीं जमीए.' ए सांभळी राजा युधिष्ठिर चिंतामां पड्या के, 'आ आम्रनी ऋतु नथी, तो अकाळे आम्रफळ शीरीते मळी शके.' तेवामां अकस्मात् नारदमुनि आवी चडया. तेणे राजानी चिंता जाणीने कह्युं के, 'जो तमारा पटराणी द्रौपदी सभामां आवी पांच सत्य बोले तो अकाळे पण आम्रवृक्ष फळे.' राजाए ते वात अंगीकार करी द्रौपदीने सभामां बोलाव्यां. नारदे सतीने पूछयुं के, 'हे सती! पांच पतिथी संतोष धरावनारां एवां तमे सतीपणुं, संबंध, शुद्धपणुं, पतिमां प्रेम अने मनमां संतोष ए पांच बाबत संबंधी जे सत्य होय ते कहो.' द्रौपदी असत्यथी भय पामीने जे स्त्रीओनुं गुह्य हतुं ते सत्य रीते कहेवा लाग्यां. "हे मुनि! रुपवान्, शूरवीर अने गुणी एवा मारे पांच पतिओ छे, तथापि कोई वार छट्ठामां मन जाय छे. हे नारद! ज्यांसुधी एकांत, योग्य अवसर अने कोई प्रार्थना करनार मळे नहीं त्यां सुधीज स्त्रीओनुं सतीपणुं छे. स्वरूपवान पुरुष पिता, भ्राता के पुत्र होय तोपण तेने जोईने काचा पात्रमांथी जलनी जेम स्त्रीओनी योनि भींजाया करे छे. हे नारद! जेम वर्षाऋतुनो समय कष्टदायक छे, तथापि आजीविकानुं कारण होवाथी सर्वने वहालो लागे छे तेम भर्त्तार भरणपोषण करे छे तेथी स्त्रीने वहालो लागे छे, कांइ प्रेमथी वहालो लागतो नथी. काष्टवडे अग्नि तृप्त थतो नथी, सरिताओथी समुद्र तृप्त थतो नथी अने सर्व प्राणीओथी यमराज तृप्त थतो नथी, तेम पुरुषोथी स्त्री तृप्त थती नथी. हे नारद! स्त्री अग्निना कुंड समान छे, तेथी उत्तम जनोए स्त्रीओनो संसर्ग छोडी देवो." आ प्रमाणे द्रौपदी पांच सत्य बोली, तेमां प्रथम सत्ये आंबाने अंकुर थया, बीजे सत्ये पल्लव थया, त्रीजे सत्ये टीसीओ थइ, चोथे सत्ये मंजरी थइ अने पांचमा सत्ये पाकां मधुर फळ थइ गयां. ते जोइ सर्व सभासदो प्रशंसा करवा लाग्या. पछी ते आम्रना रसवडे युधिष्ठिरे सर्व मुनिओने पारणुं कराव्युं.

आ प्रमाणे सत्य वचननो महिमा लोकमां अने शास्त्रमां वर्णवेलो छे. एथी हे श्रीकांत शेठ ! तमे पण ते सत्य व्रत स्वीकारो." आ प्रमाणे सांभळी श्रीकांते सत्य व्रत स्वीकार्युं. जिनदासे कह्युं 'श्रेष्ठी जीवितनी जेम आ व्रत यावज्जिवित पाळजो.' श्रीकांते कह्युं के, 'राज्य जाओ अने आ नाशवंत प्राण पण जाओ, परंतु मारी वाचा न जाओ. आवुं नीतिनुं वचन छे तेथी में जे व्रत लीधुं छे तेनो हुं कदी पण भंग करीश नहीं.'

हवे श्रीकांत शेठे आ व्रत ग्रहण कर्युं तथापि तेनो चोरीनो स्वभाव तो गयो नहोतो. तेथी एक वखते श्रीकांत शेठ चोरी करवा गयो. त्यां मार्गे नगरचर्चा जोवा नीकळेला श्रेणिक राजा अने अभयकुमार मळ्या. तेमणे श्रीकांतने पूछयुं के, 'तुं कोण छुं ?' तेणे कह्युं, 'हुं पोते छुं.' फरी पूछयुं के, 'तुं क्यां जाय छे ?' श्रीकांते कह्युं के, 'राजाना भंडारमांथी चोरी करवाने जाउं छुं.' पुनः पूछयुं के, 'तुं क्यां वसे छे ?' श्रीकांते कह्युं के, 'अमुक पाडामां.' वळी पूछयुं के, 'तारुं नाम शुं ?' श्रीकांते कह्युं के, 'मारुं नाम श्रीकांत छे.' ते सांभळी बंने आश्चर्य पाम्या के, 'चोर आवी रीते साचुं कहे नहीं, माटे आ चोर जणातो नथी.' पछी तेओ आगळ चाल्या. पाछा वळतां पेलो श्रीकांत राजाना भंडारमांथी पेटी लइने जतो हतो तेने पाछा श्रेणिक अने अभयकुमार मळ्या. तेणे पूछयुं के, 'आ शुं लीधुं छे ?' श्रीकांते कह्युं के, 'राजाना भंडारमांथी आ रत्ननी पेटी लइने घेर जाउं छुं.' आवुं तेनुं वाक्य सांभळी तेओ राजमहेलमां गया. प्रातःकाळे भंडारीए भंडारमां चोरी थयेली जाणी, बीजी पण केटलीक वस्तुओ आघी पाछी करीने पछी पोकार करी कोटवाळने तिरस्कार साथे भंडारमां चोरी थयानुं कह्युं. ते वातनी राजाने खबर थइ एटले तेणे भंडारीने बोलावीने कह्युं के, 'कोशमांथी शुं शुं गयुं छे ?' भंडारीए कह्युं के, 'रत्ननी दश पेटीओ गइ छे.' पछी राजाए मंत्री सामुं जोइ पेला श्रीकांतने बोलाव्यो अने पूछयुं के, 'रात्रे तें शुं चोर्युं छे ?' ते पूछतांज श्रीकांते जणाव्युं के, 'रात्रे जे बे जण मळ्या हता तेज आ छे.' तेथी तेणे कह्युं के, 'स्वामिन् ! तमे शुं भूली गया, तमारा देखतांज हुं मारी आजीविका माटे एक पेटी लइने जतो हतो.' श्रेणिक राजाए पूछयुं के, 'अरे चोर ! तुं मारी पासे पण साचुं बोलतां केम भय पामतो नथी ?' श्रीकांत बोल्यो के—" महाराज ! प्राज्ञ पुरुषोए प्रमादथी पण असत्य न बोलवुं जोइए, केमके असत्य बोलवाथी प्रचंड पवनवडे वृक्षनी जेम कल्याण (सुकृत) नो भंग थइ जाय

छे. वळी तमे क्रोध पामो तो आलोकमां एक भवना सुखनो नाश करो, पण जो सत्य व्रतनो भंग करुं तो अनंत भवमां मने दुःख प्राप्त थाय." आ प्रमाणेनां तेनां वचनो सांभळी राजा श्रेणिके तेने शिक्षा दीधी के, 'जेवुं आ बीजुं व्रत पाळे छे, तेवी रीते बीजां व्रत पण पाळ.' श्रीकांते ते स्वीकार्युं, एटले राजाए ते जुना भंडारीने रजा आपीने ते पदवी उपर श्रीकांतने राख्यो. अनुक्रमे ते त्रिशलानंदन (महावीर स्वामी) ना शासननो श्रावक थयो.

आ प्रमाणे श्रीकांत चोरे जिनदास श्रावकना वाक्यथी दृढतावडे सत्यवचनरूप बीजुं व्रत लीधुं तेवुं पाळ्युं तो तेथी आलोकमांज इष्ट फळ प्राप्त कर्युं, तेथी भव्य प्राणीओए जरूर सत्यव्रत ग्रहण करवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ
सत्यवचनविषये षट्सप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७६ ॥

व्याख्यान ७७ मुं.

हवे ए बीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

एतद्व्रतप्रपन्नस्य, त्याज्यं मिथ्योपदेशनम् ।
अभ्याख्यानमनालोच्य, व्याचख्यं नैव कस्यचित् ॥ १ ॥

व्याख्या.

ए बीजुं व्रत जे असत्य न बोलवुं ते जेणे अंगीकार कर्युं होय तेवा पुरुषे मिथ्या उपदेशनो त्याग करवो, एटले असत् उपदेशने छोडी देवो, अर्थात् कोईने पीडा थाय तेवुं वचन न कहेवुं, एवां वचनने असत्यज समजवुं, जेमके, 'आ गधेडा अने उंट उपर वधारे भार नाखो' 'आ चोरने मारी नाखो' एवां वचनो न कहेवां. सत्य शब्दनो अर्थ व्युत्पत्तिथी एवो थाय छे के 'सद्भ्यो हितं सत्यं' एटले जे उत्तम पुरुषने हितकारी ते सत्य. तेथी बीजानी हिंसा करवारूप वाक्य सत्य होय तोपण ते अहितकारी होवाथी असत्य समजवुं. तेने माटे कह्युं छे के,

न सत्यमपि भाषेत । परपीडाकरं वचः ॥
लोकेपि श्रूयते यस्मात् । कौशिको नरकं गतः ॥

" बीजाने पीडा थाय तेवुं वचन सत्य होय तोपण बोलवुं नहीं. ते विषे लोकमां एम संभळाय छे के, कौशिक नामनो तपास तेवुं वचन बोलवाथी नरके गयो हतो. " तेनी कथा नीचे प्रमाणेः—

कौशिक तापसनी कथा.

कौशिक नामनो एक तापस लोकमां सत्यवादी तरीके प्रख्यात थइ फरतो हतो. एक वखते एवुं बन्युं के केटलाक चोर कोई गामने लुंटी ते तापसनी पासे थइने वनमां नाशी गया. ते चोरोनी पछवाडे रक्षको वगेरे वगेरे त्यां आव्या. तेमणे कौशिक मुनिने जोइने पूछयुं के, 'मुनिराज! तमे सत्यवादी छो, माटे सत्य कहो, चोर कये मार्गे गया ?' तापसे विचार्युं के, "जे साचुं पूछे तेने असत्य कहेवाथी मोटुं पाप लागे छे अने तेवुं पाप एक हरणीए[1] पण माथे लीधुं नहतुं." आवुं विचारी ते तापसे चोर लोकोनुं स्थान बताव्युं. एटले तेओए त्यां जइ चोरोने मारी नाख्या. ते पापथी कौशिक मुनि नरके गयो.

वळी एक एवी वार्त्ता पण छे के, एक ज्ञानी मुनि वनमां तपस्या करता हता. त्यां एक वखते पारधिना त्रासथी मृगला नाशी तेनी पासे थइने वनमां चाल्या गया. पारधिए आवी तेमने पूछयुं के, 'अहिंथी मृग क्यां गया ?' दयाळु मुनिए विचारीने कह्युं के, 'जे जोवे ते बोले नहि, अने जे बोले ते जोवे नहि.' आ प्रमाणे वारंवार बोलतां सांभळी ते पारधि विचारवा लाग्यो के, 'आ तापस तो लोकबहिर्मुख[2] जणाय छे, माटे तेने पूछवाथी शुं वळवानुं छे.' आम कही तेओ त्यांथी चाल्या गया अने मृगला बची गया, तेथी मुनि स्वर्गे गया.

आ प्रमाणे प्रमादवडे परने पीडाकारी वचन बोलवुं ते पहेलो अतिचार छे अथवा युद्धने माटे अनेक प्रकारना प्रपंच शिखडाववा ते पण प्रथम अतिचार कहेवाय छे.

इति प्रथम अतिचार.

हवे बीजो अतिचार कहे छे. विचार्या वगर जूठुं आळ चडाववुं अथवा अछता दोषनुं आरोपवुं. जेम कोइने कहेवुं के, 'तुं चोर छे, तुं व्यभिचारी छे' ते बीजो अतिचार छे. माटे आ प्रमाणे कोइने कहेवुं नहीं. बीजा एम पण कहे छे के, 'तदन खोटुं आळ चडाववुं अथवा कोइनुं एकांत रहस्य जनसमूहमां

१ आ हरणीनी कथा लौकिकपुराणमां छे. २ लोकनी रीतभातने नहिं जाणनार.

उघाडुं करवुं. जेमके, कोइ वृद्ध स्त्रीने कहेवुं के, 'तारो पति अन्य मुग्ध तरुणीमां आसक्त छे' एवुं शिखवी कळह उत्पन्न करवो, अथवा कोइ स्त्री पुरुषनुं रहस्य (एकांते गुप्तपणे थयेल बीना) हास्य रूपेज मात्र प्रगट करवुं, तीव्र संक्लेशपणे नही. ते विषे सूत्रमां पण कह्युं छे के, जे सहसा अभिशाप (आळ) आपवुं ते बीजा व्रतमां निषिद्ध छे. ' आ प्रमाणे जाणतां छतां आचरे तेने व्रत भंग थाय अने जे अजाणे आचरे तेने अतिचार लागे. आ प्रमाणे बीजो अतिचार छे.

इति द्वितीय अतिचार.

शास्त्रमां कह्युं छे के, "कोईने आळ आपवाथी जीव गधेडो थाय छे, निंदा करवाथी श्वान थाय छे, परस्त्री भोगववाथी कृमि थाय छे अने मत्सर (द्वेषभाव) राखवाथी कीडो थाय छे." वळी कह्युं छे के—"जे दूषण तरफ दृष्टिज करे नहीं ते उत्तम, जे सांभळे जाणे पण प्रकाश न करे ते मध्यम, जे दूषण जोइने तेनीज पासे कहे ते अधम अने जे सर्व ठेकाणे प्रकाश कर्या करे ते अधमाधम." हवे विचार्या वगर कोइने आळ चढाववा उपर एक दृष्टांत कहे छे—

कोइ गाममां सुंदर नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते घणो दाता होवाथी लोकप्रिय थइ पड्यो हतो. कह्युं छे के, " जे दातार होय ते प्रजाने प्रिय थाय छे, कांई धनाढ्य प्रिय थतो नथी. लोको वरसादने चाहे छे, कांई समुद्रने चाहता नथी. " आवा दाता शेठनी मात्र एक ब्राह्मणी निंदा करती हती. ते कहेती के, ' जे परदेशीओ आवे छे ते आ शेठने धर्मी जाणी तेने घेर द्रव्यनी थापण मूके छे अने तेओ परदेशमां जइने मृत्यु पामे छे. तेनी दोलत शेठने रहे छे, तेथी शेठ घणो हर्ष पामे छे, माटे एनुं बधुं कपट छे. ' एक वखते कोइ कापडी ते शेठने घेर आव्यो. ते क्षुधावडे बहु पीडित हतो तेथी तेणे खावानुं माग्युं. ते समये शेठना घरमां कांइ भोजन के पेय पदार्थ हता नहीं, तेथी दयाने लीधे शेठे कोइ आहीरनी स्त्रीने घेरथी छाश लावी आपी. ते पीतांज ते कापडी मरण पाम्यो. कारण के ते छाशनी दोणी माथापर राखी ढांक्या विना आहीरनी स्त्री कांइक जती हती, तेवामां एक सर्पने लइ आकाशे समळी उडती हती. ते सर्पना मुखमांथी झेर नीकळीने ते छाशमां पड्युं हतुं. हवे प्रभाते ए कापडीने मरेलो जाणी खुशी थइ सती ते ब्राह्मणी कहेवा लागी के, ' जुवो, आ दातारनुं चरित्र ! तेणे द्रव्यना लोभथी बीचारा कापडीने विष आपीने मारी नाख्यो.' ए समये ते कापडीना मरवाथी जे पापरूप हत्या प्रगट थइ ते स्त्रीरूपे भमती

हती अने विचारती हती के, 'हूं कोने लागु पडुं, आ दाता तो अति शुद्ध मनवाळो छे, तेनो आमां कांई दोष नथी. वळी सर्प तो पराधीन हतो अने तेने लइ जनारी समळी तो सर्पनो आहार करनारीज छे. तेमज आ आहीरनी स्त्री तो तदन अजाणी छे. हवे हुं कोने वळगुं ? आवुं विचारती फरती ते पेली निंदा करनारी ब्राह्मणीने लागु पडी; कारण के शेठने खोटुं आळ देवाथी खरी रीते तेज दोषवान् हती. हत्याना स्पर्शथी ते स्त्री तत्काळ श्याम, कुबडी अने कुष्ट रोगिणी थइ गइ. सर्व तेनी निंदा करवा लाग्या. कह्युं छे के, "माता पोताना वहाला बाळकनी विष्टा फुटेला घडानी ठीबवडे ले छे, पण दुर्जन माणस तो पोताना कंठ, ताळु अने जिव्हावडे लोकोनी निंदा करवाने मिषे तेनी विष्टा ग्रहण करे छे, एथी दुर्जने तो माताने पण हरावी दीधी." उपर कहेला ब्राह्मणीना दृष्टांतथी एटलुं समजवुं के, कोईनो पण अवर्णवाद लोकसमक्ष बोलवो नहीं. तो पछी राजा, अमात्य, देव अने गुरुना अवर्णवाद विषे तो शुं कहेवुं. तेमां पण साधु मुनिराजना अवर्णवाद बोलवाथी भवांतरमां नीच गोत्रनी तथा कलंकनी प्राप्ति थाय छे. कह्युं छे के, "पूर्व भवमां मुनिने आळ आपवाथी प्राणीने सीता सतीनी जेम कलंक प्राप्त थाय छे अने अनंत दुःख पामे छे." तेनी कथा आ प्रमाणे छे—

वेगवतीनी कथा.

आ भरतक्षेत्रने विषे मिणालकुंड नामना नगरमां श्रीभूति नामे पुरोहित रहेतो हतो. तेने सरस्वती नामे स्त्री हती. तेओने वेगवती नामे एक पुत्री थइ हती. एक वखते ते गाममां कोई मुनि आव्या. ते उद्यानमां कायोत्सर्ग करीने रह्या. लोको तेमने वांदवा अने पूजवा जवा लाग्या. ते जोइ खोटी इर्ष्या करनारी पुरोहितनी पुत्री वेगवती लोकोने कहेवा लागी के, 'अरे ! आ मुंडो तो पाखंडी छे, ब्राह्मणोने छोडीने तेने शा माटे पूजो छो ? आ साधु तो कोई रमणीनी साथे क्रीडा करतो मारा जोवामां आव्यो हतो.' आ प्रमाणे तेणे साधुने खोटुं आळ दीधुं. ते सांभळी केटलाएक लोको ते मुनि पासे जतां अटकी गया. आ खबर मुनिने थया, एटले तेमना मनमां घणुं खोटुं लाग्युं. तेमणे चिंतव्युं के, 'मारा निमित्ते जिनशासननी हिलणा थवी न जोईए.' आवुं धारी तेमणे अभिग्रह कर्यो के, 'ज्यांसुधी मारा उपरथी आ कलंक उतरे नहीं त्यांसुधी मारे आहार पाणी लेवां नहीं.' आवी प्रतिज्ञा करीने तेओ कायोत्सर्गमां रह्या. आवी

दृढ प्रतिज्ञाथी शासननी अधिष्ठायिका देवी तेमने सानिध्य थया. तत्काळ तेणे पुरोहितनी पुत्री वेगवतीने शरीरे तीव्र वेदना उत्पन्न करी. आथी वेगवतीने घणो पश्चात्ताप थयो; तेथी तेणे ते मुनिनी पासे जइ सर्व लोकोनी समक्ष क्षमा मागी अने कह्युं के, 'हे भगवन्! में मात्सर्यथी आपनी उपर खोटुं आळ चडाव्युं छे, ते क्षमा करो.' एम कहीने ते चरणमां पडी. तेनो अंतरंग पश्चात्ताप जोइ शासनदेवीए तेने साजी करी. पछी ते धर्मदेशना सांभळी दिक्षा लइने सौधर्म देवलोकमां देवी थइ. त्यांथी च्यवीने ते जनकराजानी पुत्री सीता थइ. सीताना भवमां पूर्वे मुनिने मृषा आळ चडाववाना पापथी तेने कलंक प्राप्त थयुं. पेला मुनि तो कलंकमुक्त थइ लोकोमां अतिशय पूज्य थया.

आ प्रमाणे वेगवतीनी कथा सांभळीने सर्व भव्यप्राणीओए सर्वदा अवर्णवादनो त्याग करवो, अने बीजानो अवर्णवाद कोइ करे तो ते सांभळवो पण नहीं. ए प्रमाणे करवाथी प्राणी सर्व जननी प्रशंसानुं पात्र थइ सम्यक् प्रकारे सद्धर्मने योग्य थाय छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ
परावर्णवादत्यागविषये सप्तसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७७ ॥

व्याख्यान ७८ मुं.

हवे मृषावादना बाकीना अतिचार कहे छे.

विश्वासेन स्थिता ये च, तेषां मंत्रप्रकाशनम् ।
अन्यस्मै भाषणं गुह्यं, कूटलेखश्च पंचमः ॥ १ ॥

व्याख्या.

जे मित्र स्त्री विगेरे पोताना विश्वास उपर रहेला होय तेमना गुप्त विचारने बीजानी पासे प्रगट करवा, जो के ते सत्य कह्या होय छे तेथी अतिचार लागवो जोइए नहीं, तथापि तेमना गुप्त विचार जाहेर करवाथी लज्जाने लीधे तेओनुं मृत्यु विगेरे थवा संभव छे, तेथी ते परमार्थरूपे असत्य (मृषा) कहेवाय छे, माटे ए त्रीजो मृषावादनो अतिचार छे.

इति तृतीय अतिचार.

हवे चोथा अतिचारमां आकृति तथा चेष्टाथी कोइनुं गुह्य जाणी बीजाने कही देवुं. ते सत्य छतां असत्य छे एम जाणवुं. जेमके, 'अमुक माणस भेगा थइने राजानी विरुद्ध विचार करे छे' आवुं कहेवाथी तेमने मोटी हानि थवानो संभव छे. अहिं कोइ शंका करे के, 'त्रीजा अने चोथा अतिचारमां शो भेद छे?' तेना उत्तरमां कहेवानुं के, 'त्रीजामां कोइनो गुप्त विचार के जे विश्वासथी पोताने कहेवामां आव्यो होय तेने जनसमूह आगळ खुल्लो करवो ते अने चोथामां आकृति तथा चेष्टा विगेरेथी कोइनुं गुह्य जाणी लइने तेने खुल्लुं करवुं ते.' आ प्रमाणे त्रीजा अने चोथा अतिचारमां भेद रहेलो छे.

हवे को[इ]नो गुप्त विचार खुल्लो करवाथी जे दोष थाय छे ते कहे छे.

"बुद्धिमान् पुरुषे कोइनुं गुह्य वाक्य प्रगट करवुं नहीं." जेम मर्म कहेवाथी एक वणिकने स्त्रीमरण संबंधी दुःख थयुं हतुं. ते कथा नीचे प्रमाणे छे—

[पु]ण्यसारनी कथा.

वर्णपुर नामना नगरमां पुण्यसार नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. एक वखते ते पोतानी स्त्रीनुं आणुं वाळवा सासराने घेर गयो. ते स्त्री कोइ बीजा पुरुष साथे रागी थयेली हती, तेथी जवाने आनाकानी करती हती. तथापि पुण्यसार शेठे तेने हठ करीने लीधी. मार्गमां ते वणिक तृषार्त्त थवाथी कोइ कुवा उपर पाणी भरवा गयो. ते कुवामांथी जळ खेंचतो हतो एवामां पछवाडे रहेली स्त्रीए तेने कुवामां नाखी दीधो, अने पोते पाछी पिताने घेर आवी. पिताए तरतमांज पाछी आववानुं कारण पूछयुं, एटले तेणीए कह्युं के, "मार्गमां मारा पतिने चोरोए लुंटी लीधा अने तेने मार्या हशे के शुं थयुं हशे तेनी मने खबर नथी. हुं तो नाशीने अहिं आवी छुं." पछी ते स्त्री पितृगृहमां रही सती स्वेच्छाए वर्तवा लागी.

अहिं पुण्यसार कुवामां थोडुं जळ होवाथी उपरज रह्यो. तेने कोइ मुसाफरोए खेंचीने बहार काढयो. ते फरीवार पाछो श्वशुरगृहे गयो. सर्व लोकोए मार्गनी वार्त्ता पूछी; त्यारे तेणे कह्युं के, 'मने चोरोए लुंटी लीधो पण जीवतो मूक्यो अने मारी स्त्री नाशीने अहिं आवती रही ते सारुं थयुं.' आ प्रमाणे तेणे पोतानी स्त्रीनुं गुह्य (मर्म) ढांकीने वार्त्ता कही, तेथी ते स्त्री तेनापर विशेष रागवाळी थइ. पछी तेने लइने ते वणिक घेर आव्यो. गाढ प्रेमी थयेला ते दंपतीने एक पुत्र थयो. अनुक्रमे पुत्र मोटो थयो. एक वखते पुण्यसार शेठ भोजन

करता हता तेवामां प्रचंड पवननो वंटोळीओ आववाथी तेना भाणामां रज पडवा मांडी, त्यारे स्त्रीए आवीने पोताना वस्त्रनो छेडो आडो राख्यो. ते वखते पुण्यसारने तेनुं पूर्व चरित्र याद आव्युं, तेथी कांइक हास्य थयुं. पुत्रे एकांते जइने पिताने हास्यनुं कारण पूछयुं. पुत्रनो घणो आग्रह थवाथी पिताए तेनी पासे तेनी मातानुं पूर्व चरित्र कही दीधुं.

एक वखते पुण्यसारना पुत्रनी स्त्री तेना पति आगळ पोतानी स्त्रीजाति माटे गर्व करती हती, ते वखते पुत्रे पोतानी मातानुं चरित्र तेनी आगळ जणावीने कह्युं के, तमारी स्त्रीजातिने धिःक्कार छे. नीतिमां कह्युं छे के,

नितंबिन्यः पतिं पुत्रं, पितरं भ्रातरं क्षणात्।
आरोपयंत्यकार्येऽपि, दुर्वृत्ताः प्राणसंशये ॥

" दुराचारिणी स्त्रीओ पति, पुत्र, पिता अने भ्राताने पण प्राणसंशयवाळा अकार्यने विषे च ापवारमां नाखी दे छे. " तेवी स्त्रीओमां कयो पुरुष प्रेम बांधे ? ते विषे नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के,

वंचकत्वं नृशंसत्वं, चंचलत्वं कुशीलता ।
एते नैसर्गिका दोषा, यासां तासु रमेत कः ? ॥

" वंचकता, क्रूरता, चंचळता अने कुशीळपणुं एटला तो जे स्त्रीजातिमां स्वाभाविक दोष छे, तेवी स्त्रीओ साथे कोण प्रीति बांधे ? " आ बधुं सांभळी ते स्त्री मौन करीने बेसी रही. अन्यदा सासुवहुने परस्पर कळह थयो. एटले एक बीजाना मर्मनी वातो उघाडी करवा मांडी. ते प्रसंगे वहुए पोताना पति पासेथी सांभळेली वात महेणाना रूपमां कही दीधी. ते सांभळतांज सासुना मनमां विचार आव्यो के, ' अहो ! मारा पतिए आटला वखत सुधी मारी गुह्य वात गुप्त राखी छेवटे आ वहु आगळ प्रगट करी, तेथी मारे हवे जीवीने शुं करवुं ? ' आवुं चिंतवी गळाफांसो बांधी ते मृत्यु पामी. ते जोई पुण्यसार शेठे पण देहत्याग कर्यो. तेवो बनाव जोई श्रेष्ठीपुत्रने वैराग्य थयो, तेथी ते पोतानी स्त्रीने छोडी दइने दीक्षा लइ चाली नीकळ्यो.

उपरनी कथा सांभळी कोइए कोइनी गुप्त वात प्रगट करवी नहीं. जेओ बीजाना गुह्यने ढांके छे तेओ खरेखर धन्य छे. ते उपर कपासना छोडनुं दृष्टांत कहेवाय छे. जेम कपासना छोड जेवा पुत्रने तो कोइ विरल माताज जणे छे के

जेओ पोतानुं अंग (कपास) काढीने गुणवडे बीजाना गुह्यने ढांकी दे छे, एटले सुतरवडे मनुष्य मात्रने वस्त्र पूरां पाडी सर्वना देहने ढांके छे. लौकिक-शास्त्रमां पण कह्युं छे के, " जे नराधमो परस्परना मर्म उघाडा करे छे, तेओ उदरना अने राफडाना सर्पनी जेम मृत्युने पामे छे." तेनी कथा आ प्रमाणे छे—

बे सर्पनी कथा.

पृथ्वीपुर नामना नगरमां सुंदर नामे राजा हतो, तेने एकदा वक्रशिक्षित अश्व कोइ अरण्यमां लइ गयो. ज्यारे अश्व थाकीने उभो रह्यो त्यारे ते राजा अश्व उपरथी उतरी श्रांत थइने एक वृक्ष नीचे सुइ गयो. ते वखते तेना उघाडा रहेला मुखमां एक नानो सर्प पेसी गयो. राजा त्यांथी घेर आव्यो, परंतु उदरमां रहेला सर्पनी पीडाथी ते एटलो बधो कंटाळी गयो के, छेवटे करवत मुकाववाने गंगातीर्थे जवा चाल्यो. तेनी राणी पण साथे चाली. मार्गे जतां श्रमने लीधे राजा एक वडना वृक्ष नीचे सुइ गयो. राणी जागती रही. तेवामां वायुभक्षण करवाने माटे पेलो सर्प उदरमांथी मुखद्वारा जरा बहार नीकळ्यो, तेवामां नजीक एक राफडो हतो तेमां रहेला बीजा सर्पे तेने जोइने कह्युं के, ' अरे पापी ! आ राजाना उदरमांथी बहार नीकळ, नहीं तो हुं तारा नाशनो उपाय जाणुं छुं. ते ए छे के, जो कडवी चीभडीना मूळ कांजीमां वाटीने पीवे तो तारो नाश थइ जाय. पण शुं करुं के अहीं कोइ नथी के जेनी आगळ हुं ते निवेदन करुं ? ' ते सांभळी पेलो उदरनो सर्प बोल्यो–' हुं पण उष्ण करेला तेलने तारा बीलमां रेडवावडे तारा नाशनो अने तारा बीलमां रहेला निधानने मेळववानो उपाय जाणुं छुं, पण कोइ अहीं नथी के जेने ते उपाय कहुं के जे ते उपायथी तने मारीने तारी नीचे रहेलो द्रव्यनो निधि मेळवे. '

आ प्रमाणे ते बंनेना परस्परना मर्मने उघाडनारां वचनो राजानी पासे जाग्रतपणे सुतेली राणीए सांभळी लीधां. पछी ते प्रमाणे उपाय करवाथी राजा निरोगी थयो अने पेला राफडाना सर्पने मारी द्रव्यनिधि पण तेमणे स्वाधीन करी लीधो. आ दृष्टांत जाणीने कोइ पण प्राणीए परस्परना मर्म (गुह्य) प्रकाश करवां नहीं. जे पारका मर्म प्रगट न करे तेनेज खरो व्रतधारी समजवो.

हवे पांचमो अतिचार कहे छेः–बीजानी मुद्रा (सील) वडे अथवा तेनी जेवा अक्षरो काढवावडे खोटो लेख बनाववो ते कूटलेख नामनो पांचमो अतिचार कहेवाय छे. जेम कुणालनी अपर माताए राजाना पत्र (लेख) रूपे

पुत्र उपर कूटलेख लख्यो; अर्थात् पत्रमां एक बिंदु वधारी दीधुं, जेथी कुणालने नेत्रविनाशरूप महान् अनर्थ प्राप्त थयो हतो.

अहीं कोइ शंका करे के, आ कूटलेखरूप अतिचार छे ते तो महा अनर्थकारी होवाथी तेमज प्रगटपणे असत्य रूप होवाथी तेने तो स्थूल मृषावादमां गणवो जोइए, तेने अतिचारमां केम गणाय ? अने ते प्रमाणे करवाथी व्रतभंग थयेलो केम न गणाय ? तेना समाधानमां कहेवानुं के, कोइ मुग्ध माणस असत्य बोलवाना पच्चख्खाण ले अने ते एम समजे के, में तो असत्य बोलवाना पच्चख्खाण लीधा छे, कांई लखवाना लीधा नथी, तो जे कूटलेख लखवो तेमां शो दोष छे ? आवुं धारी ते व्रतनी सापेक्षता जाळवी राखे तेथी बीजा व्रतमां आ कूटलेख अतिचाररूपे कह्यो छे. अथवा अनाभोगथी एटले अजाणपणा विगेरेथी पण ते अतिचार गणाय छे. आ प्रमाणे ते पांचमो अतिचार छे.

इति पंचम अतिचार.

आ पांचे अतिचार निश्चय त्याग करवा योग्य छे, कारण के ते बीजा व्रतमां मलीनताने आपनारा छे. तेथी तेनो त्याग करी जैनधर्मना व्रतधारीओए सत्यतानो गुण विशुद्धपणे ग्रहण करवो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ
मृषावादातिचारविषये अष्टसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ७८ ॥

व्याख्यान ७९ मुं.

हवे सत्यवादीनी स्तुति करे छे.

सर्वेषां धर्मकर्माणा—माद्यं सत्यमुदीरितम् ।
तद्विना गदितो धर्मः, कुतीर्थिकैर्निरर्थकः ॥१॥

व्याख्या.

" सर्व धर्मकार्योमां सत्यगुण मुख्य रहेलो छे. ते सत्य विना कुतीर्थी-(मिथ्यात्वी) ओए धर्म कहेलो होवाथी ते धर्म निरर्थक समजवो. " शास्त्रमां जे धर्मनां कार्य तप, जप, ज्ञान अने दर्शन विगेरे कह्यां छे तेओमां श्रीवीतराग

प्रभुए सत्यने मुख्य कहेल छे. ते उपर एक दृष्टांत कहेवाय छे के, कोइ श्रावकनो पुत्र धर्मरहित हतो. पिताए तेने बळात्कारे गुरुनी पासे लावीने बेसार्यो. धूर्तपणाथी तेणे गुरुए कहेला द्वादश व्रतना नियमो जाणे प्रतिबोध पाम्यो होय तेम आदरथी स्वीकार्या. नियम विषे दृढता थवाने गुरुए तेनी प्रशंसा करी एटले ते बोल्यो–'आ बधा व्रतोमां बीजुं सत्य बोलवारूप जे व्रत छे ते मारे छुटुं छे, कारण के ते मुश्केल होवाथी गृहस्थथी पाळी शकाय नहीं.' आ प्रमाणे बोलवामां तेनो आशय एवो हतो के, 'मैं अत्यार सुधी जे नियम ग्रहण कर्या छे, ते बधुं हुं असत्य बोल्यो छुं.' आवो तेनो आशय जाणी गुरुए अने तेना पिता विगेरेए 'आ धर्मने अयोग्य छे' एम जाणी तेनी उपेक्षा करी.

सत्य विनाज कुतीर्थीओए कहेलो धर्म निरर्थक छे. जेने माटे कह्युं छे के, "चार्वाक, कौलिक, ब्राह्मण, बौद्ध, अने वैष्णवोए असत्यवडेज पराक्रम करी आ जगतने घणी विडंबना करी छे." वळी "अल्प एवा मृषावादथी पण रौरवादि नरकमां पडाय छे तो जैनवाणीने अन्यथा कहेवाथी तो कहो केवी माठी गति थाय ?" परंतु "तेवा पापी नास्तिकोना मुखोदर नगरनी खाळ जेवा छे के जेमांथी कादववाळा दुर्गंधी जळना जेवीज वाणीओ निकळे छे." अने "चारित्रनुं मूळ जे सत्य तेने वदे छे, तेओ पोताना चरणनी रजथी आ पृथ्वीने पवित्र करे छे." आ विषे हंसराजानी कथा छे ते आ प्रमाणे—

हंसराजानी कथा.

राजपुरीमां हंस नामे एक राजा हतो. एक वखते ते उपवननी शोभा जोवाने माटे नगर बहार गयो. त्यां वनमां एक मुनि तेना जोवामां आव्या. राजा तेनी पासे बेठो एटले मुनिए आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी.

सच्चं जसस्स मूलं । सच्चं विसासकारणं परमं ।
सच्चं सग्गद्दारं । सच्चं सिद्धिइसोपाणं ॥

"सत्य यशनुं मूळ छे, सत्य विश्वासनुं कारण छे, सत्य स्वर्गनुं द्वार छे अने सत्य सिद्धिनुं सोपान (पगथियुं) छे." वळी "जेओ असत्य बोले छे तेओ भवांतरे दुर्गंधी मुखवाळा, अनिष्ट वचनना बोलनारा, कठोर भाषी, बोबडा अने मुंगा थाय छे. आ सर्व असत्य वचनना परिणाम छे." आवी धर्मदेशना सांभळी हंसराजाए सत्यव्रत ग्रहण कर्युं.

एक वखते हंसराजा अल्प परीवार लइ रत्नशिखरगिरि उपर चैत्री महो-

त्सवना प्रसंगे श्री आदीश्वर प्रभुने नमवा गयो. अर्ध मार्गे आवतां कोई सेवके त्वराथी आवीने कह्युं के–" हे देव ! तमे यात्रा करवा चाल्या के तरत सीमाडाना राजाए आवी बळात्कारे तमारा नगरने कबजे कर्युं छे, तेथी आपने जेम योग्य लागे तेम करो." पासे रहेला सुभटोए पण राजाने विज्ञप्ति करी के, 'स्वामी ! आपणे पाछा जइए.' राजाए कह्युं के, 'प्राणीने पूर्व कर्मना वशथी संपत्ति अने विपत्तिनी प्राप्ति थयाज करे छे, तेथी जेओ संपत्तिमां हर्ष अने विपत्तिमां खेदने विस्तारे छे तेओ खरेखरा मूढ छे. आ अवसरे सद्‌भाग्यथी प्राप्त थयेला जिनयात्रामहोत्सवने तजी दइने भाग्यथी लभ्य एवा राज्यने माटे दोडवुं ते युक्त नथी.' वळी कह्युं छे के—

धनेन हीनोऽपि धनी मनुष्यो, यस्याऽस्ति सम्यक्तधनं महार्घ्यं ।
धनं भवेदेकभवे सुखार्थं, भवे भवेऽनंतसुखी सुदृष्टि ॥१॥

"जेनी पासे समकितरूप अमूल्य धन छे, तेने धनहीन छतां धनवान् समजवो, केमके धन तो एक भवमांज सुखदायक छे अने समकित तो भवोभवमां अनंत सुखदायक छे." आ प्रमाणे कही राजा पाछो न वळतां आगळ चाल्यो; परंतु शत्रु आव्याना खबर सांभळी एक छत्रधारक सिवाय बीजो सर्व परिवार पोतपोताना घरनी संभाल लेवाने पाछो वळी गयो. राजा पोताना अलंकारोने गोपवीने छत्रधारकना वस्त्रो पहेरी आगल चाल्यो. त्यां कोइ एक मृग राजाना देखतां सत्वर दोडतो लताकुंजमां पेशी गयो. तेनी पछवाडे तरतज धनुष्य उपर बाण चडावेलो कोइ भिल्ल आव्यो. तेणे राजाने पूछयुं, 'अरे ! मृग कइ बाजु गयो ते कहे.' ते सांभळी राजाए मनमां चिंतव्युं के, "जे प्राणीओने अहित होय ते सत्य होय तोपण कहेवुं नहीं अने तेवो प्रसंग आवे तो सुबुद्धि पुरुषोए ते पूछनारने बुद्धिना प्रपंचथी समजाववो." आ प्रमाणे चिंतवी राजा बोल्यो के 'अरे भाइ ! हुं मार्गभ्रष्ट थयो छुं.' किराते फरीवार पूछयुं, त्यारे राजाए कह्युं के, 'हुं हंस छुं.' आ प्रमाणे राजानां वचन सांभळी ते भिल्ल क्रोधथी बोल्यो के, 'अरे विकळ ! आवो विपरीत उत्तर केम आपे छे ?' त्यारे राजाए कह्युं के, 'हवे तमे मने जे मार्ग बतावशो, ते मार्गे हुं जईश.' आ प्रमाणे विरुद्ध वचनो सांभळी ते भिल्ल तेने गांडो मानी निराश थईने पाछो चाल्यो गयो.

त्यांथी राजा आगळ चाल्यो, तेवामां एक साधु तेना जोवामां आव्या. तेने नमस्कार करी आगळ जतां हाथमां शस्त्र धारण करनार बे भिल्ल राजाने सामा मळ्या. तेओए राजाने कह्युं के–" अरे पांथ ! अमारा स्वामी चोरी करवा जतां

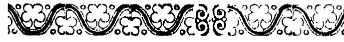
हता, त्यां वचमां एक साधु सामो मळ्यो; तेथी अपशुकन थया जाणी अमारा स्वामी पाछा वळ्या, अने अमने ते मुनिने मारवा माटे मोकल्या छे, तो ते साधु तारा जोवामां आव्यो होय तो बताव." राजा ते वखते असत्य पण सत्य जेवुं छे एम मानीने बोल्यो के–'ते साधु डाबे मार्गे जाय छे पण तमने मळशे नहीं, कारण के ते वायुनी जेम प्रतिबंध रहित छे.' आवो उत्तर सांभळी ते बंने पाछा चाल्या गया. पछी राजा सुकां पांदडां विगेरेनो आहार करीने रात्रे सुवा माटे तैयारी करतो हतो तेवामां कांईक कोळाहळ तेना सांभळवामां आव्यो. तेमां तेणे एवो शब्द सांभळ्यो के, 'आपणे त्रीजे दिवसे संघने लुंटीशुं.' ते सांभळी राजा चिंतातुर थयो. क्षणवार थई तेवामां तो केटलाएक सुभटोए आवीने पूछयुं के, 'अरे! तें क्यांई चोरने जोया? अमे गोधिपूरना राजाना सेवको छीए अने ते राजाए संघनी रक्षा करवाने माटे अमने मोकल्या छे.' ते सांभळी राजाए चिंतव्युं के, 'जो हुं चोरोने बतावीश तो आ राजपुरुषो अवश्य तेओने मारी नाखशे अने नहीं बतावुं तो ते चोर लोको संघने लुंटी लेशे हवे अहिं मारे शुं बोलवुं युक्त छे.' पछी जरा विचारीने राजा बोल्यो के, 'में चोरने जोया नथी पण तमारे कोई ठेकाणे शोधी लेवा, अथवा तेमने शोधवानी शी जरुर छे? तमे संघनी साथे रहीने तेनी रक्षा करो.' आवो उत्तर सांभळी तेओ चाल्या गया. तेमना गया पछी सुभटो साथे थयेली वातने सांभळनारा ते चोरो राजा पासे आवीने कहेवा लाग्या के, 'अरे भद्र! तें अमारा प्राण बचाव्या, तेथी हवे अमे चोरी के हिंसा नहीं करीए. तेनो लाभ तने प्राप्त थाओ.' आ प्रमाणे कही ते चोर पोताने स्थानके चाल्या गया.

त्यांथी राजा आगळ चाल्यो. तेवामां केटलाएक घोडेस्वारोए आवीने पूछयुं के, 'अरे पांथ! अमारा शत्रु हंसराजाने तें कोई ठेकाणे जोयो छे? ए अमारो कट्टो शत्रु छे तेथी अमारे तेनो विनाश करवो छे.' राजा हंस असत्यना भयथी बोल्यो के–'हुं पोतेज हंस छुं.' आ सांभळी तेओए क्रोधथी राजाना मस्तक उपर खड्गनो प्रहार कर्यो, परंतु तेज वखत खड्गना सेंकडो कटका थइ गया अने राजानी उपर पुष्पवृष्टि थई. तत्काळ एक यक्ष प्रत्यक्ष थइने बोल्यो के–'हे सत्यवादी राजा! तमे चिरकाळ जय पामो. हे नृप! तमने आजेज जिनयात्रा करावुं, माटे तमे आ विमानने अलंकृत करो.' यक्षनां आवां वचन सांभळी हंसराजा विमानमां बेठो, अने जिनेश्वरनी यात्रा पूजा करी. यक्षना सानिध्यथी शत्रुने जीती राज्य भोगवी अनुक्रमे दीक्षा लईने स्वर्गे गयो.

"हंस एवा नाम मात्रने धारण करवाथी पक्षी पण जलाशयमां सुखी थाय छे, तो जे हंसराज एवा नामने धारण करे ते खरेखर स्वर्गमां रहेली अप्सराना सुखने पामे तेमां शुं आश्चर्य !"



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ
सत्यविषये एकोनाशीतितमः प्रबंधः ॥ ७९ ॥



व्याख्यान ८० मुं.

हवे त्रीजा व्रतनी व्याख्या करे छे.

तदाद्यं स्वामिनादत्तं, जीवादत्तं तथापरम् ।
तृतीयं तु जिनादत्तं, गुर्वदत्तं तुरीयकम् ॥ १ ॥
सूक्ष्मबादरभेदाभ्या–माद्यादत्तं द्विधा मतम् ।
सूक्ष्मे हि यतना कार्या, श्राद्धं स्थूलं च संत्यजेत् ॥२॥

व्याख्या.

'अदत्तादान (चोरी) चार प्रकारे छे. प्रथम स्वामीनुं अदत्त, बीजुं जीवनुं अदत्त, त्रीजुं श्रीतीर्थंकरनुं अदत्त अने चोथुं गुरुनुं अदत्त. ते चार भेदमां पहेलुं जे स्वामी अदत्त छे ते सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेदवाळुं छे. श्रावके सूक्ष्मादत्त विषे यतना करवी अने स्थूलादत्तनो त्याग करवो.' जे सुवर्ण नाणुं विगेरे तेना स्वामीए न आप्युं होय छतां लेवुं ते पहेलुं स्वामीअदत्त जाणवुं. जे फल, फुल, पत्र विगेरे पोतानी मालेकीनुं छे तेने छेदवुं ते जीवादत्त छे; कारण के ते सचित्त (जीव युक्त) होवाथी तेना जीवोए कांई पोताना प्राण तेने आप्या नथी, माटे ते अदत्त छे. गृहस्थे आप्यो आधाकर्मी आहार जो मुनि ग्रहण करे तो ते तीर्थंकरनी आज्ञा रहित छे तेथी ते त्रीजुं तीर्थंकरादत्त कहेवाय छे. एवी रीते श्रावकने अनंतकाय अभक्ष्यादिक पदार्थो जे छे ते खातां तीर्थंकरअदत्त लागे छे; अने जे सर्व दोषथी रहित होय पण गुरुनी आज्ञा विना लेवाय के वपराय ते चोथुं गुर्वदत्त कहेवाय छे.

अहीं तो प्रथमना स्वाम्यदत्तनो अधिकार छे. तेना सूक्ष्म अने बादर एवा

बे भेद कह्या छे. तेमां सूक्ष्म एटले स्वामीनी आज्ञा वगर जे कांई तृण के इंट जेवी वस्तु ग्रहण करवी ते अने बादर एटले जे लेवाथी लोकमां चोर कहेवाय ते, ते स्थूल पण कहेवाय छे. चोरीनी बुद्धिथी जे क्षेत्र तथा खळा विगेरेमांथी अल्प पण लेवुं, ते पण स्थूल अदत्तमां गणाय छे. ए रीते पहेला स्वामीअदत्तना बे भेद छे. तेमां श्रावकने सूक्ष्ममां यतना करवी अने स्थूलथी तदन निवृत्ति करवी. ए भावार्थ जाणवो.

हवे ते व्रतनुं फळ कहे छे—चोरी करवी ते वध करवाथी पण अधिक छे, कारण के वधवडे तो ते एकज मरे छे अने चोरीवडे धन हरवाथी तो बधुं कुटुंब क्षुधार्त्त थई मरी जाय छे. चोरीना कर्मने छोडनारो रोहिणीयो चोर देवसंपत्तिने पाम्यो हतो, तेथी प्राणांते पण विवेकीए परधन चोरवुं नहीं. आ वार्त्तानो संबंध नीचे प्रमाणे छे—

रोहिणीया चोरनी कथा.

वैभार पर्वतनी गुहामां लोहखुर नामे एक चोर रहेतो हतो. तेणे एक वखते पोताना पुत्र रौहिणेय चोरने शिखामण आपी के, 'तारे कदि पण श्री वीरनी वाणी सांभळवी नहीं.' अन्यदा रोहिणेय राजगृही नगरीमां चोरी करवा गयो. चोरी करीने पोताना स्थान तरफ जतो हतो त्यां मार्गमां श्रीवीरप्रभुनुं समवसरण तेना जोवामां आव्युं. ते वखते 'वीरनी वाणी सांभळवी नहीं' एवी पोताना पितानी आज्ञानो भंग न थाय एटला माटे ते कानमां आंगळी राखीने चाल्यो. तेम चालतां तेने पगमां कांटो वाग्यो. ते कांटो काढ्या सिवाय चाली शकाय तेम न होवाथी तेणे कांटो काढवा एक हाथ नीचे कर्यो, ते वखते भगवंतनी आ प्रमाणेनी वाणी तेना सांभळवामां आवी.

अनिमिसनयणा मणकज्जसाहणा पुप्फदामअमिलाणा ।
चउरंगुलेण भूमि न छिविंति सुरा जिणा बिंति ॥

"जेना नेत्रमां निमेष (मटका) थाय नहीं, जे मननी इच्छा प्रमाणे करी शके, जेनी पुष्पमाळा करमाय नहीं, अने जे पृथ्वीथी चार आंगुळ उंचा रहे, ते देवता कहेवाय—एम श्री जिनेश्वर कहे छे." आ प्रमाणे सांभळी तेणे चिंतव्युं के, 'अरे धिक्कार, में आ वीरनी वाणी सांभळी!' एम चिंतवतो ते आगळ चाल्यो. तेवामां चोतरफ फरता राजपुरुषो ते रौहिणेयने पकडीने राजा पासे लइ गया. राजाए तेनो वध करवानी आज्ञा करी, एटले अभयकुमार मंत्री

बोल्या–' स्वामिन् ! एने बधी हकीकत पूछया सिवाय, मुद्दा माल विना, तेमज तेनी कबुलत विना तेने केम मारी शकाय ?' राजाए कह्युं के, 'त्यारे तेने पूछो.' एटले रोहिणीओ बोल्यो के–" हुं शालिपुरनो निवासी दुर्गचंद्र नामे कुटुंबी (कणबी) छुं. आजे कार्यप्रसंगे राजगृहीमां आव्यो हतो. बहार नीकळती वखते दरवाजा बंध हता तेथी भय पामी कील्लो उल्लंघीने हुं मारे गामे जतो हतो, तेवामां पूररक्षकोए मने पकड्यो छे, माटे हु चोर नथी." आ प्रमाणे तेणे कह्युं, तथापि तेने कारागृहमां पूर्यो अने तेनी तपास करवाने शाळीगामे माणस मोकल्युं. त्यां रोहिणीआए प्रथमथी गोठवण करी राखेली होवाथी ते गामना माणसोए रोहिणीआना कहेवा प्रमाणेज कह्युं. पछी तेनी मुखजुबान कबुलात करावया माटे अभयकुमार तेने मदिरापान करावी बेशुद्ध करीने पोताना महेलमां लइ गया. त्यां दोगंदुक देवनी जेम अप्सरा जेवी रमणीओथी वींटायला पलंगमां तेने शयन कराव्युं अने चीनाइ वस्त्रोनो पोशाक पहेराव्यो. पछी ज्यारे तेनो केफ ऊतरी गयो त्यारे चारेतरफ दिव्यसमृद्धि जोइने ते विस्मय पामी गयो. ते समये अभयनी आज्ञाथी त्यां रहेला पुरुषो 'जय पामो, आनंद पामो' एवा मांगल्य वचन उच्चारवा लाग्या, अने कहेवा लाग्या के, 'हे देव ! तमे आ विमानमां स्वामीपणे ऊत्पन्न थया छो, अमे तमारा सेवको छीए, आ अप्सराओ तमारी पत्नीओ छे; तेमनी साथे आनंदथी क्रीडा करो अने तमारा पुण्ययोगे मळेली आ सर्व संपत्ति भोगवो.' आ प्रमाणे कहीने तेओ तेनी आगळ संगीत करवा लाग्या. तेवामां एक सुवर्णनी छडीवाळा द्वारपाळे आवीने कह्युं के, 'हे देव ! तमारे प्रथम अहीं स्वर्गनी स्थिति विषे सर्व माहिती मेळववी. प्रथम तो जे अहिं देव नवो उत्पन्न थाय छे ते पोताना पूर्व भवना करेला पुण्य पापने जणावे छे, माटे ते आप जणावो.' छडीदारनां आवां वचन सांभळी तेणे विचार्युं के, 'हुं लोहखुरनो पुत्र रोहिणेय छुं, हुं मृत्यु पाम्यो नथी, आ सर्व कपटजाळ रचेल जणाय छे.' आ प्रमाणे विचारी प्रथम सांभळेली वीर भगवंते कहेली गाथानो अर्थ चिंतव्यो के, 'जेना चरण पृथ्वी उपर अडता होय, जेना शरीर पर पसीनो तथा मेल थतो होय, अने जेनां नेत्र देवातां उघडतां होय ते देवता होय नहीं; माटे जरूर आ कोई देव नथी अने हुं पण देव नथी.' आ प्रमाणे खात्री करीने ते बोल्यो के, 'मैं पूर्व जन्ममां सात क्षेत्रोमां धन वापर्युं हतुं, कोइवार चोरी विगेरे अपकृत्यो कर्या नहोता, अने दानादि धर्म आचर्यो हतो, तेथी मने आवुं स्वर्गसुख प्राप्त थयुं छे.' आ प्रमाणेनो उत्तर सांभळी

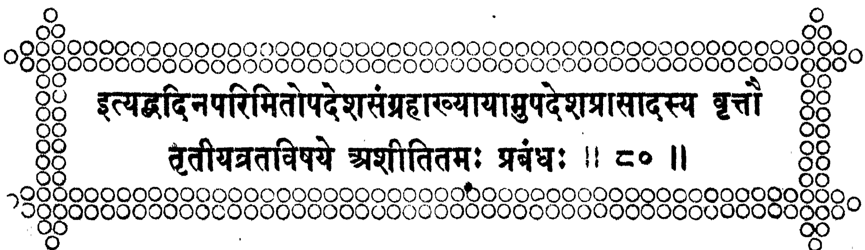
अभयकुमारे विचार्युं के, 'जे आवा दंभथी पण वंचित थयो नहीं ते छोडी मूकवाने योग्य छे.' पछी तेणे राजानी आज्ञावडे तेने छोडी मूक्यो.

पछी रौहिणेय चोरे चिंतव्युं के, 'मने धिक्कार छे, के जे हुं पितानी मिथ्या आज्ञाथी आटला वखत सुधी ठगायो. में इच्छावगर पण श्रीवीरप्रभुनुं एक वाक्य सांभळ्युं हतुं तो तेथी मने आज भवमां प्रत्यक्ष गुण थयो अने एवोज परभवे पण थशे. माटे हवे तो प्रभुए कहेला धर्मने सारी रीते सांभळी हुं मारा जन्मने सफळ करूं.' कह्युं छे के,

> न देवं नादेवं न गुरुमकलंकं न कुगुरुं।
> न धर्मं नाधर्मं न गुणपरिणद्धं न विगुणं॥
> न कृत्यं नाकृत्यं न हितमहितं नापि निपुणं।
> विलोकंते लोका जिनवचनचक्षुर्विरहिताः॥ १॥

'जे लोको श्रीजिनवचनरूप नेत्रथी रहित छे, तेओ देव के कुदेव, गुरु के कुगुरु, धर्म के अधर्म, गुणी के अगुणी, कार्य के अकार्य, अने हित के अहित निपुणपणे जोइ शकता नथी.' आ प्रमाणे चिंतवी श्रीवीरप्रभुनी पासे जइने तेणे आ प्रमाणे देशना सांभळी के-"जे पुरुष चोरी करे ते आ लोकमां विविध प्रकारनी यातना (पीडा), परलोकमां नरकगति, अने त्यारपछी पण दुर्भाग्य अने दरिद्रपणाने पामे छे." आ प्रमाणे जिनवाणी सांभळी ते रौहिणेये श्रावकना बार व्रत स्वीकार्यां. पछी श्रेणिक राजानी पासे जइ, पोतानी जाति, कुळ अने नाम तथा कर्म जणावी, पर्वतनी गुहामां चोरीवडे एकठुं करेलुं सर्व धन नगरजनोने पाछुं सोंपी दइ, दीक्षा लइने स्वर्गे गयो.

आ प्रमाणे रौहिणेय चोर खोटा दंभथी जोयेली देवतानी समृद्धि उपरथी तेवी सत्य समृद्धि मेळववा माटे श्रीवीरवचने चोरीनो नियम धारण करी दंभ रहित (साची) एवी देवसमृद्धिने प्राप्त थयो.


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
तृतीयव्रतविषये अशीतितमः प्रबंधः॥ ८०॥

व्याख्यान ८१ मुं.

पुनः ते त्रीजा व्रत संबंधीज कहे छे.

आहृतं स्थापितं नष्टं, विस्मृतं पतितं स्थितम् ।
नाददीता स्वकीयं स्व–मित्यस्तेयमणुव्रतम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

"कोइनुं हरण करी लावेलुं, मूकेलुं, खोवायेलुं, विस्मृत थयेलुं, पडी गयेलुं के रहेलुं कोइ बीजानुं धन ग्रहण करवुं नहीं, ते अदत्तादानत्याग नामे त्रीजुं अणुव्रत छे." तेनो एवो भावार्थ छे के, लावेलुं एटले कोइए कोइनुं हरण करीने राखवा आपेलुं, मूकेलुं एटले थापणरूपे पोतानी पासे के भूमिमां मूकेलुं, नष्ट एटले कोइ ठेकाणे खोइ नाखेलुं के जेनी तेना धणीने पण खबर न होय, विस्मृत थयेलुं एटले कोइ ठेकाणे एवी रीते मूकायुं होय के जे तेना स्वामीने पण स्मरणमां न आवे तेवुं, पडी गयेलुं एटले चालता के वाहन उपरथी पडी गयेलुं, अने रहेलुं एटले तेना स्वामीए पोतानी पासे राखेलुं–आवी जातनुं पारकुं धन लेवुं नहीं. कदि द्रव्य क्षेत्रादि आपत्ति आवे तो पण प्राज्ञ पुरुषे ते ग्रहण करवुं नहीं. ते विषे कह्युं छे के, " कुलीन पुरुष प्राणांत थाय तोपण आ बे काम करे नहीं. एक परद्रव्यनुं हरण अने बीजुं परस्त्रीनुं आलिंगन." ते विषे नीतिमां पण लखे छे के, " सुवर्ण विगेरे बीजानुं द्रव्य पोतानी आगळ पडेलुं जुए तोपण जेओनी बुद्धि तेमां पाषाणनी जेवी रहे छे, तेवा संतोषामृतना रसवडे तृप्त पुरुषो गृहस्थपणामां पण स्वर्गना सुखने मेळवे छे." आ प्रमाणे त्रीजुं अदत्तादान विरमण अणुव्रत जाणवुं. ते उपर परमार्हत कुमारपाळ राजानो प्रबंध कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—

परमार्हत राजा कुमारपाळनी कथा.

एक वखते अणहिलपुर पाटणमां कुमारपाळनी आगळ श्रीहेमचंद्रसूरि अदत्तादान विरमणरुप त्रीजा व्रतनुं व्याख्यान करता हवा के, " हे राजन् ! जेणे पारकुं द्रव्य चोर्युं, तेना आलोक, परलोक, धर्म, वीर्य, धीरज अने बुद्धि ए सर्व चोराया समजवा." सूरिए आ प्रमाणे कह्युं, एटले राजाए कह्युं, "अहो ! प्रजामां जे जे पुरुष अपुत्र मरण पामे ते ते पुरुषना धननी आशाथी राजा तेना पुत्रपणाने पामे छे; अर्थात् तेवानुं धन राजा लइ ले छे. पण आजथी हुं तेवुं

धन अने अदत्त धन लेवुं छोडी दउं छुं, आजथी मारे त्रीजा व्रतनो अंगीकार छे." आ प्रमाणे व्रत उच्चरी राजाए ते खाताना नीमेला पंचने बोलाव्या अने पूछ्युं के, 'प्रतिवर्ष अपुत्रीयाना द्रव्य संबंधी राज्यने केटली आवक छे?' तेमणे बोंतेर लाखनी आवक जणावी, एटले राजाए कह्युं के, 'एवा अपुत्रीयानी रुदन करती स्त्रीनुं धन शा माटे लेवुं?' एम कही ते संबंधी पट्टानो धारालेख फाडी नाख्यो. अने पछी आखा राज्यमां चोरीनुं अने मरी गयेलानुं धन छोडी देवानो पडह वगडाव्यो.

एक वखते राजानी सभामां चार महाजनना मुख्य पुरुषो आव्या. राजाने नमी विलखा थइने बेठा. एटले राजाए पूछयुं के-"आजे सभामां आववानुं शुं कारण छे? अने तमे केम आम विलखा थइ गया छो? शुं कोइनी तरफथी तमारो पराभव तो नथी थयो?" महाजन बोल्या के, "हे राजेंद्र! आपना जेवा प्रजावत्सल अने दयाळु राजा पृथ्वीपर राज्य करता सता अमने पराभव के दुःख शेनुं होय? पण एक हकीकत निवेदन करवानी छे ते माटे अमे आवेला छीए. ते हकीकत ए छे के-आपणा गुर्जरदेशनो निवासी कुबेरदत्त नामे एक मुख्य श्रेष्ठी समुद्रमार्गे व्यापारार्थे गयेलो, ते पाछो आवतां मार्गमां मृत्यु पामी गयो छे. तेथी तेनो परिवार ते श्रेष्ठीने पुत्र न होवाथी रूदन करतो अमारी पासे आव्यो अने कहेवा लाग्यो के जो तेना घरनुं द्रव्य राजा संभाळी लइने पोताने स्वाधीन करे तो पछी अमे तेनी मरणोत्तर क्रिया करीए. हे राजन्! तेनुं धन अगणित छे." गुर्जरपति बोल्या के, 'महाजनो! में तो अपुत्र मरेलानुं धन लेवानो त्याग कर्यो छे; परंतु चालो, तेना घरनो सार तो जोइए.' एम कही राजा कुमारपाळ महाजन वर्गने साथे लइ तेने घरे गया. ते कुबेरश्रेष्ठीनुं घर के जेना शिखर उपर सुवर्णकळशनी श्रेणी हती, शब्द करती घुघरीओना नादथी दिग्मंडलने वाचाळ करती कोटीध्वजपणानी निशानीरूप ध्वजाओ फरकती हती, एक तरफ हस्तिशाळा अने अश्वशाळा शोभी रही हती. आवुं राज्यद्वार जेवुं कुबेरदत्तनुं घर जोइ गुर्जरपति विस्मय पाम्या. पछी तेनी अंदर आवेला उज्वळ स्फाटिक मणिथी रचेला चैत्यगृहमां गया. तेमां मरकतमणिमय श्रीनेमिनाथनी मूर्त्ति बिराजती हती, तेने नमस्कार कर्यो. तेनी आगळ रत्न तथा सुवर्णना कलश, थाळ, आरती अने मंगलदीप विगेरे पूजानी सामग्री जोवामां आवी. पछी त्यांथी बहार नीकळी तेनी व्रतोनी टीप वांचवा लाग्या. तेमां परिग्रह परिमाणव्रत विषे जोतां आ प्रमाणे लख्युं हतुं-" छ कोटी सुवर्ण, आठ कोटी रौप्य द्रव्य, मोटा महामूल्यवान् दश मणि, घृतना बे हजार

कुंभ, धान्यना बे हजार मोटां माप, पचास हजार घोडा, एक हजार हाथी, एंसी हजार गायो, पांचसो हळ, पांचसो दुकानो, पांचसो घर, पांचसो वहाण अने पांचसो गाडां—आटली समृद्धि मारे घेर वडिलोपार्जित छे ते रहेवा देवी अने हवे जे लक्ष्मी हुं मारे हाथे उपार्जन करीश ते बधी हुं पुण्यधर्ममांज वापरीश." आ प्रमाणे समृद्धिपत्र वांची राजा हर्ष अने विस्मय पामी जेवामां तेना घरना द्वार पासे आव्या तेवामां कुबेरदत्तनी माता गुणश्री आ प्रमाणे रुदन करती बोली के, "हे पुत्र ! तुं समुद्रमार्गे गयो छुं, ते पाछो क्यारे आवी उत्तर आपीश. तुं आवीने तो जो, तारा वगर आ बधी लक्ष्मी राज्यदरबारे जाय छे." ते सांभळी राजाए चिंतव्युं के, "उत्तम पुरुषो कहे छे के, राज्यने अंते नरक छे ते सत्य छे; अने ते आवी रुदन करती स्त्रीओना द्रव्य लेवाना पापथीज छे." पछी राजाए कुबेरदत्तशेठनी माता अने स्त्री विगेरेना आक्रंद सांभळी तेने कह्युं के, "हे माता ! तमे शामाटे शोक करो छो ? इंद्रथी मांडीने कीडी सुधीना प्राणीओनुं मरण तो अवश्य थवानुं छे. संबंधीओनो संबंध एक वृक्ष उपर रहेता पक्षीओना संगम जेवो छे अने मृत्यु पामेलानुं पाछुं आववुं ते पाषाण उपर वावेला बीजने अंकुरा थवानी इच्छा करवा जेवुं छे, तेथी जे शोकथी आत्माने वृथा क्लेश करावे छे ते अज्ञानी छे." आवो उपदेश आपी राजाए कह्युं के, 'हे माता ! आ तमारा पुत्रना मृत्युनी खबर कोण लाव्युं ?' गुणश्री बोली—'वामदेव नामे एक तेना मित्रे आ खबर आप्या.' राजाए तेने बोलावीने पूछ्युं, एटले ते बोल्यो. "राजेंद्र ! अहींथी कुबेरदत्त भृगुपुर (भरुच) गया. त्यांथी पांचसो पांचसो पुरुषोथी भरपूर एवा पांचसो वहाण लइ दूरना बंदरोए व्यापार करवा गया. त्यां व्यापार करतां चौद कोटी सुवर्ण द्रव्यनो तेने लाभ थयो. त्यांथी पाछा फरतां प्रतिकूळ पवनने लीधे ते पांचसें वहाणो विषम गिरिना वमळमां आवी पड्या. त्यां पूर्वे कोइ बीजाना पण ५०० वहाणो फसी रहेला हता ते पण त्यांथी नीकळी शकता न हता, त्यां आ वहाणो पण आवी भराया, तेथी शेठ घणो खेद पाम्या. तेवामां कोइ वहाण उपर बेसीने एक खलासी आव्यो. तेणे कह्युं के—'अरे मुसाफरो ! तमारे नीकळवानो एक उपाय हुं कहुं ते सांभळो. अहींथी नजीक पंचशृंग नामे एक द्वीप छे. त्यां सत्यसागर नामे राजा छे, ते एक वखते मृगया रमवा गयो हतो. तेमां तेणे एक सगर्भा मृगलीने मारी. तेने मरती जोइ तेना दुःखथी तेनो पति मृग पण मरण पाम्यो. ते जोइने सत्यसागर राजाने घणी दया उपजी, तेथी तेणे सर्वत्र अमारीघोषणा

करावी छे. आजे प्रथम तेमणे मोकलेला एक शुकपक्षीना मुखथी तमारी उपर पडेली आपत्ति जाणीने तेमणे मने अहीं मोकल्यो छे. आ पर्वतनी कढणमां एक द्वार छे, तेमां पेसीने गिरिनी पेली पार जवाय छे, त्यां एक उज्जड नगर छे, तेमां एक जिनचैत्य छे, त्यां जइने ते चैत्यनी अंदर रहेलो पडह वगाडवो, तेना नादथी त्रास पामीने त्यां रहेला भारंड पक्षीओ उडशे, एटले तेओनी पांखना प्रचंड वायुथी प्रेरायेला आ वहाण मार्गे चडी जशे. तमारे बचवानो मात्र आ एकज मार्ग छे, तेथी त्यां एकज माणसने मोकलो. पण ते माणस पाछो आवी शकशे नहीं. ' तेणे आ प्रमाणे कह्युं, पण त्यां जवाने कोइनी हाम चाली नहि; तेथी दयाळु एवा कुबेरदत्त श्रेष्ठी पोतेज एकला त्यां गया अने पेला खलासीना कहेवा प्रमाणे कर्युं, जेथी तेना ने आगळना सर्वे वहाणो वमळमांथी नीकळी गया अने भृगुपुर क्षेमकुशळताथी आवी पहोंच्या; परंतु पछवाडे ते पर्वतपर रहेला कुबेरदत्तनुं शुं थयुं ते हुं जाणतो नथी. तेथी हे राजेंद्र ! तेनुं वीश कोटी सुवर्ण, आठ कोटी रौप्य द्रव्य, अने हजार तुला प्रमाण रत्नो तमे ग्रहण करो." गुर्जरपति ते द्रव्यने तृणवत् गणी, नहीं ग्रहण करतो सतो बोल्यो के, ' हे माता ! तमारो पुत्र थोडा काळमां आवशे. माटे जे आ द्रव्य छे, ते धर्ममां के तमारी इच्छा आवे तेमां वापरो. '

आ प्रमाणे आश्वासन आपी राजा स्वस्थानके जता हता, तेवामां तो कुबेरदत्त एक स्त्री साथे विमानमां बेसी आकाशमार्गे त्यां उतर्यो. ते जोइ माताने अत्यंत हर्ष साथे आश्चर्य उत्पन्न थयुं. श्रेष्ठी राजाने अने माताने नमीने उभो रह्यो. राजाए पूछयुं, 'अहो साहसिक शिरोमणि ! ज्यां तमे गया हता, ते शून्य नगरमां शुं थयुं ? '

श्रेष्ठी बोल्यो–" हे स्वामिन् ! ते नगरमां एक महेलमां कोइ कन्या मारा जोवामां आवी. तेणे मने कह्युं के, ' हुं पाताळकेतु विद्याधरनी पुत्री छुं, हजु कुमारी छुं. मारा पिताए मांसनी लोलुपताथी एकदा एक मार्जारीनुं भक्षण कर्युं; तेथी मांसभक्षणनुं व्यसन थतां ते राक्षस थयो. तेणे घणा लोकोने भक्षण कर्या, तेथी आ नगर उज्जड थइ गयुं छे. हाल ते आहारने माटे बहार गयेल छे. ' कन्या आ प्रमाणे वात करे छे तेवामां तेनो पिता अने माता बंने त्यां आव्या. तेओए मने ते कन्या आपी. पाणिग्रहण समये में एवुं माग्युं के, ' तमे मांस खावानो नियम ल्यो. ' पछी तेने प्रतिबोध पमाड्यो, एटले तेणे ते नियमनो स्वीकार कर्यो. ते विद्याधर मने स्त्रीसहित विमानमां बेसारी अहीं मूकीने हमणाज पाछो

पोताने स्थानके गयो." आ प्रमाणे तेनी हकीकत सांभळी कुमारपाळ राजा विस्मय पामीने बोल्या के, 'धन्य छे तमने! के एवा संकटमां पण तमे पोताना नियमने छोडी दीधो नहीं.' आ प्रमाणे तेनी प्रशंसा करता गुर्जरपति त्यांथी गुरुने वंदन करवा गया. गुरुए कह्युं के, 'हे राजन्! जे अपुत्रियानुं धन ग्रहण करे छे ते तेमनो बधानो पुत्र थाय छे अने तमे ते द्रव्य संतोषथी छोडी दीधुं, तेथी तमे खरेखर सर्व राजाओना पण पितामह थया छो.'

आ प्रमाणे राजर्षि, परमार्हत, नीतिराघव अने चौलुक्यसिंह इत्यादि बीरुदोने धारण करनार अने जैन आगमना अर्थने जाणनार श्रीकुमारपाळ राजा परद्रव्यने ग्रहण करवामां विमुख थइ विजयवंत थया.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ
तृतीयव्रतविषये एकाशीतितमः प्रबंधः ॥ ८१ ॥

व्याख्यान ८२ मुं.

हवे ते त्रीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

स्तेनानुज्ञा तदानीता—दानं वैरुद्धगामुकम् ।
प्रतिरूपक्रियामाना—न्यत्वं वा स्तेयसंश्रिता ॥ १ ॥

व्याख्या.

"चोरने आज्ञा करवी, चोरीनुं द्रव्य लेवुं, राजाए निषेध करेल व्यापारादि आचरवुं, वस्तुमां तद्रूप हलकी चीजनी सेळभेळ करवी अने कूडा तोल माप राखवा. ए अदत्तादान विरमणव्रतना पांच अतिचार छे." चोरने आज्ञा करवी एटले चोरीना काममां तेमने प्रेरणा करवी. जेम के, 'केम हमणा व्यापार रहित बेसी रह्या छो, जो तमारी पासे भातुं विगेरे कांइ न होय तो हुं आपीश, अथवा तमारी लावेली वस्तुओनो जो कोइ खरीद करनार नहीं मळे तो हुं खरीद करीश.' एवां वचनथी तेमने उत्साहित करवा अथवा चोरीना साधन जेवा के कोश, गणेशीओ विगेरे आपवा. इत्यादि प्रकारे तेने चोरीमां सहाय करवी ते. आवी रीते वर्तनार माणसने पण नीतिमां चोर गण्यो छे. कह्युं छे के,

चोरश्चौरापको मंत्री, भेदज्ञो काणक्रयी ।
अन्नदस्थानदश्चेति, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥

"चोर, चोरने साधनो आपनार, चोर साथे विचार गोठवनार, चोरनो भेद जाणनार, चोरेली वस्तु खरीदनार, चोरने अन्न आपनार अने चोरने स्थान आपनार ए साते प्रकारना चोर कहेवाय छे." एमां पण व्रती एवी शंका करे के, मारे चोरी करवानो त्याग छे, कांइ चोरने अन्नादि आपवानो त्याग नथी, तेथी ते करवामां शो दोष छे? एवी शंकाने लीधे व्रतभंगमां सापेक्ष निरपेक्षपणुं होवाथी ए प्रथम अतिचार कहेवाय छे. इति प्रथम अतिचार.

हवे बीजा अतिचारमां चोरी लावेला कुंकुमादि वस्तुनुं मूल्य आपी ग्रहण करवुं ते. ते पण लोभना दोषथी ग्रहण करतां अनुक्रमे तेना व्रतनो भंग थाय. तेमां व्रतधारी एवुं धारे के, चोरी करवाथी व्रतनो भंग छे, पण हुं तो व्यापार करुं छुं, कांइ चोरी करतो नथी, तो तेमां शो दोष छे? एवा परिणामे व्रतनी निरपेक्षताना अभावे व्रतनो भंग थतो नथी, तेथी ए बीजो अतिचार कहेवाय छे. इति द्वितीय अतिचार.

त्रीजा अतिचारमां राजानी आज्ञाविरुद्ध वर्तवुं. जेम के, पोताना राजानी मनाइ छतां व्यापारने माटे तेना शत्रुराजाना राज्यमां जवुं ते. उपलक्षणथी राजाए निषिद्ध कर्या छतां गुप्त रीते दांत, लोहखंड, पाषाण विगेरे वस्तुओ लाववी ते. जो के मूळ चार प्रकारना अदत्तादानमां स्वामीनी आज्ञा वगर लेवुं ते स्वाम्यदत्त कहेलुं छे, अने ते आमां आवी जाय छे, वळी ते चौर्य दंडने योग्य पण थाय छे, तेथी तेना व्रतनो भंग थाय छे. पण राज्यविरुद्ध वर्त्तनार व्रती एम धारे के, में वेपार कर्यो छे. कांइ चोरी करी नथी. तेथी मने लोको 'आ चोर छे' एम कही शकशे नहीं. एथी व्रतनुं सापेक्षपणुं होवाने लीधे ते त्रीजो अतिचार छे. इति तृतीय अतीचार.

हवे चोथा अतिचारमां प्रतिरूप वस्तु साथे सेळभेळ करवी ते. जेम डांगरमां पलंजी भेळवे, घीमां चरबी अथवा तेल, केशरमां कसुंबो इत्यादि ते चोथो अतिचार गणाय छे. इति चतुर्थ अतिचार.

हवे पांचमा अतिचारमां कूट तोल मान आवे छे. एटले शेर, मण, खांडी विगेरे तोल अने माणु, पाली, हाथ, गज विगेरे माप–तेमां न्यूनाधिक तोल मान माप राखी न्यून मापे आपे अने अधिक माप ले, ते पांचमो अतिचार छे. आ चोथा अने पांचमा अतिचारमां परने छेतरी परद्रव्यनुं ग्रहण करवाथी

व्रतनो भंग थाय छे, तथापि व्रती एम धारे के खातर पाडीने चोरी करवी ते चोरी कहेवाय, आ तो वणिक कुलनी आजीविकानो व्यापार छे. एवी रीते व्रतनी सापेक्षता रहे छे, तेथी ए पांचमो अतिचार छे. एवी रीते त्रीजा व्रतना पांच अतिचार श्रावके त्यजी देवा जोइए.

अहीं जे कूट मान कह्युं, तेमां तो प्रगट रीते चोरी रहेली छे. ते विषे नीतिकार लखे छे के, " थोडुं लालनपालनथी, थोडुं कळाथी, थोडुं मापथी, थोडुं तोलथी अने थोडुं चोरीथी–ए प्रमाणे ग्रहण करता एवा धूर्त्त वणिको प्रत्यक्ष चोरज छे. " एथी आ कृत्य श्रावकने करवुं उचित नथी. आ व्रत पाळवाथी व्यवहारनी पण शुद्धि थाय छे. कह्युं छे के, " जेओने शुद्ध अंतःकरणथी परद्रव्य लेवानो नियम छे तेओनी पासे समृद्धि स्वयंवरा थइ सामी आवे छे. " गृहस्थे मेळवेलुं अन्यायोपार्जित द्रव्य, एक वर्षने अंते राजा, चोर, अग्नि के जळ विगेरेथी जरूर नाश पामे छे, चिरकाळ रहेतुं नथी. तेमज ते पुण्यकार्यमां वपरातुं पण नथी. कह्युं छे के,

अन्यायोपार्जितं वित्तं, दश वर्षाणि तिष्ठति ।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे, समूलं च विनश्यति ॥ १ ॥

' अन्यायथी उपार्जन करेलुं द्रव्य दश वर्ष सुधी रहे छे, ज्यारे अग्यारमुं वर्ष प्राप्त थाय छे त्यारे समूलगुं विनाश पामे छे. ' ते उपर वंचकश्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे. ते आ प्रमाणे—

वंचकश्रेष्ठीनी कथा.

कोइ नगरमां हेलाक नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने हेली नामे स्त्री अने चालक नामे पुत्र हतो. ते श्रेष्ठी मधुर भाषण, खोटा तोल मापनी रचना, नवी जुनी वस्तुओ एकठी करवी. रसपदार्थोमां सेलभेल करवी, चोरीथी लावेल चीज वेचाण लेवी विगेरे पापव्यवहारना प्रकारोथी गामना मुग्ध लोकोने छेतरी धनोपार्जन करतो हतो. जो के ते बीजानी वंचना करतो हतो, तथापि परमार्थथी तो ते पोताना आत्मानेज वंचतो हतो. कपटी–पापी जनो मायानी रचनाथी जगतने वंचे छे, पण तेओ खरी रीते पोतानेज वंचे छे.

आ प्रमाणे हेलाकशेठे घणुं द्रव्य मेळव्युं, पण दरेक वर्षने अंते अन्यायोपार्जित होवाने लीधे चोर, अग्नि अने राजा विगेरेथी हराइ जवा लाग्युं. अनुक्रमे तेनो पुत्र यौवन वयने प्राप्त थयो, एटले कोइ परगामना शुद्ध श्रावक श्रेष्ठीनी

पुत्री साथे तेने परणाव्यो. पुत्रवधू शुद्ध श्राविका अने धर्मनी ज्ञाता हती ते शेठने घेर आवी. हेलाकशेठनी दुकान तेना घरनी नजीक हती. ज्यारे कोइ ग्राहक आवे त्यारे तेने आपवा तथा लेवामां पूर्वे संकेत करी राखेला नामथी पुत्रनी पासे तोलनां काटलां मंगावे. ज्यारे लेवुं होय त्यारे ते पांच पोष्कर मागे, एटले पुत्र सवा शेरी आपे अने आपवुं होय त्यारे त्रिपोष्कर मागे एटले पोणो शेर आपे. आ संकेतनी वात धीमे धीमे लोकोमां जाहेर थवाथी लोकोए हेलाकश्रेष्ठीनुं नाम वंचकश्रेष्ठी एवुं पाडयुं.

एक वखते धर्मज्ञ पुत्रवधूए पोताना स्वामीने पूछयुं के, 'तमारा पिता तमने बीजा नामथी केम बोलावे छे ?' श्रेष्ठीपुत्रे तेना उत्तरमां व्यापार संबंधी सर्व हकीकत पोतानी स्त्रीने निवेदन करी. ते सांभळी धर्मार्थी वधूए पोताना स्वसुर हेलाकश्रेष्ठीने विज्ञप्ति करी के. 'हे तात ! आवा पापव्यापारथी उपार्जन करेलुं द्रव्य धर्मकार्यमां अने शारीरिक उपभोगमां वपराशे नहीं, तेमज ते घरमां पण रहेशे नहीं, तेथी न्यायमार्गे द्रव्य उपार्जन करवुं उत्तम छे.' श्रेष्ठीए कह्युं के, 'जो साचा व्यवहारथी चालीए तो घरनो निर्वाह केम चाले? कोई विश्वास करीने पेदा करवा आपे नहीं.' वधूए कह्युं के, "न्यायथी मेळवेलुं धन अल्प होय तो पण ते व्यवहारशुद्ध होवाथी तेनावडे बीजुं घणुं मळे अने ते घरमां पण रहे. जेम सारा क्षेत्रमां वावेलुं बीज. घणां फळवाळुं होइ निःशंकपणे भोगादिकनी प्राप्तिने माटे थाय. कह्युं छे के, कूट माप तोल विगेरेथी जे धन उपार्जन कराय छे ते तपावेला पात्र परना जळबिंदुनी जेम नाश पामतुं जोवामां आवे नहि, परंतु नाश पामेज छे. वळी अन्यायवडे मेळवेलुं द्रव्य अशुद्ध, तेनाथी लावेलुं अन्नादि अशुद्ध, ते अन्ननो आहार अशुद्ध. तेवडे शरीर अशुद्ध अने तेवा शरीरवडे करेलुं कृत्य पण उखर भूमिमां वावेला बीजनी जेम सफळ थतुं नथी. जो आ विषे प्रतीति न आवती होय तो छ मास सुधी कूट वेपारनी वृत्ति छोडी न्यायवृत्तिथी व्यापार करो, एटले खबर पडशे." वधूनां आवां वचनथी श्रेष्ठीए तेम कर्युं, तो छ मासमां तेणे पांच शेर सुवर्ण उपार्जन कर्युं.

सत्य व्यवहारथी लोको तेनोज विश्वास करीने तेने त्यांथीज लेवा देवा लाग्या अने सर्वत्र तेनी कीर्ति प्रसार पामी. शेठे ते सुवर्ण लावी वधूने अर्पण कर्युं. वधूए न्यायोपार्जित द्रव्यनी परीक्षा करवाने माटे ते सुवर्णनी एक पांचशेरी करावी. पछी तेनी उपर चामडुं मढावी पोताना सासराना नामनी महोर करी बे त्रण दिवस सुधी चौटामां रखडती मूकी, पण कोइए ते लीधी

नहीं. एक दिवस तेने उपाडीने एक जळाशयमां नाखी दीधी. त्यां एक मत्स्य तेने गळी गयो. ते मत्स्य भारे थइ जवाथी कोइ ढीमरनी जाळमां आव्यो. तेने चीरतां पांचशेरी नीकळी. तेने अमुक तोलुं जाणी ते माछी एज श्रेष्ठीनी दुकाने वेचवा लाव्यो. श्रेष्ठीए तेनापर पोतानुं नाम होवाथी थोडुं द्रव्य आपी तेनी पासेथी वेचाती लीधी. पछी तेना परथी चामडुं काढीने जोतां पोताना सोनानी पांचशेरी जाणी तेने वधूनां वचन उपर घणी प्रतीति आवी. पछी शुद्ध व्यवहारवडे तेणे घणुं द्रव्य उपार्जन कर्युं, अने साते क्षेत्रमां अनेक प्रकारे वापर्युं. अनुक्रमे तेनो यश घणी प्रौढताने प्राप्त थयो. त्यारपछी सर्वे लोको ते हेलाक शेठना द्रव्यने शुद्ध मानी व्यापार माटे तेनुंज द्रव्य लेवा लाग्या. वहाणोमां पण निर्विघ्नताने माटे तेनुं द्रव्य लइनेज मुसाफरी करवा लाग्या. आथी तेना द्रव्यनी घणी वृद्धि थइ अने तेनुं नाम पण मंगळिक गणावा लाग्युं. अद्यापि वहाण चलावती वखते खलासी लोको 'हेलासा, हेलासा' एम कहे छे. ए प्रमाणे ते हेलाक शेठनुं पवित्र नाम अद्यापि जगत्प्रसिद्ध छे.

आ प्रमाणे शुद्ध व्यवहार आ लोकमां प्रतिष्टानो हेतु छे अने परलोकमां पण महा सुखकारी थाय छे. एवी रीते परमार्थपणे न्यायज द्रव्योपार्जनना उपायभूत छे एम जाणवुं. शुद्धाशुद्ध व्यवहारना फळने बतावनार आ हेलाक श्रेष्ठीनुं दृष्टांत सर्व भव्य प्राणीओए मनन करवा योग्य छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ
तृतीयव्रतांतर्गतशुद्धव्यवहारविषये द्व्यशीतितमः प्रबंधः ॥८२॥

व्याख्यान ८३ मुं.

हवे उपर कहेलुं व्रत न पाळवाथी शुं फळ प्राप्त थाय ते कहे छे.

परस्वं तस्करो गृह्णन्, वधबंधादि नेक्षते ।
लगुडं दुग्धपायीव, बिडाल उपरिस्थितम् ॥ १ ॥
व्याधर्धीवरमार्जारा–दिभ्यश्चौरोऽतिरिच्यते ।
निगृह्यते नृपतिभि–र्यदसौ नेतरे पुनः ॥ २ ॥

व्याख्या.

"परद्रव्यने ग्रहण करवा इच्छतो चोर, चोरीवडे प्राप्त थनारा वध बंध-

नादि देखतो नथी. जेम दुध पीवाने इच्छतो मार्जार पोतानी उपर उगामी रहेली लाकडीने जोतो नथी तेम. पारधि, ढीमर अने मार्जार विगेरेथी पण चोरी करनार अधिक अपराधी छे, कारण के चोरनो राजा निग्रह करे छे अने पारधि विगेरेनो निग्रह करतो नथी." आ उपर एक नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे—

श्रेणिकना पिता प्रसेनजित राजाना राज्यमां राजगृही नगरीने विषे लोहखुर नामे एक चोर रहेतो हतो. एक वखते तेणे द्युतक्रीडामां जीतेलुं द्रव्य याचकोने आपी दीधुं. पछी त्यांथी जतां मार्गे क्षुधातुर थयो, एटले पोताने घेर भोजन करवा माटे जवानी इच्छा करी; तेवामां राजाना महेलमांथी सरस रसोइनी सुगंध आवी; एटले तत्काळ तेने विचार थयो के, 'मारी पासे अंजनविद्या छे, तेथी मारे शुं अशक्य छे? माटे अंजनविद्याथी राजगृहमां जइने राजभोजन करुं.' आवुं विचारी ते अदृश्य विद्याथी राजमहेलमां गयो अने राजानी साथे एक थाळमां बेसी तेमांथी भोजन जमीने पोताने घेर गयो. पछी तो रसगृद्धि थवाथी एवी रीते प्रतिदिन करवा लाग्यो. शास्त्रमां कह्युं छे के, "सर्व इंद्रियोमां जिव्हा इंद्रिय दुर्जय छे, कर्ममां मोहनी कर्म दुर्जय छे, व्रतमां ब्रह्मचर्य व्रत दुष्कर छे अने त्रण गुप्तिओमां मनोगुप्ति पाळवी मुश्केल छे." घणा दिवस सुधी तेम चालवाथी ओछो आहार थवाने लीधे राजानुं अंग कृश थइ गयुं. एक वखते मंत्रीए राजाने पूछयुं के, "हे स्वामिन्! तमारुं शरीर ग्लान केम छे? शुं तमने अन्न उपर अरुचि थइ छे? कारण के अन्न वगर शरीर, नेत्र वगर मुख, न्याय वगर राज्य, लवण विना भोजन, धर्म विना जीवितव्य अने चंद्र विना निशा ए शोभतां नथी. अथवा तमने कांइ चिंता तो नथी? कारण के शरीरमां रहेली चिंता शरीरने बाळे छे, अने दुष्ट पिशाचीनी जेम नित्य रुधिर अने मांसने बाळी नाखे छे." राजा बोल्यो के, "हे मंत्री! मने मोटुं आश्चर्य ए थाय छे के हुं हमेशां बमणुं त्रगणुं जमुं छुं, पण कोइ अंजनसिद्ध पुरुष मारी साथे जमी जाय छे, तेथी नारकीना जीवोनी जेम मारो उदराग्नि शांत थतो नथी." आ प्रमाणे सांभळी मंत्रीए रसोडाना स्थानमां चोतरफ आकडानां सुकां पुष्पो वेर्यां. भोजन समये पेला चोरना पगना आघातथी तेने खडखडता जोइ ते विषे निश्चय थयो. पछी बीजे दिवसे ते चंपाता पुष्पनो ध्वनि सांभळी, चोरने अंदर आवेलो जाणी, तत्काळ ते स्थानना द्वारने दृढ अर्गला आपी वासी दीधां अने अंदर प्रथमथी गुप्त राखेलो तीव्र धूमाडो कर्यो. धूम्रथी व्याकुळ थयेला चोरना नेत्रमांथी अश्रु-

धारा चाली, तेथी तेणे करेलुं सिद्धांजन धोवाइ गयुं, एटले सर्वेए तेने प्रत्यक्ष जोयो. पछी तत्काळ तेने बांधीने राजा पासे लइ गया. ते वखते चोरे चिंतव्युं के, "अहो! दैवयोगे मारुं तो भोजन अने घर बंने नष्ट पाम्युं. कहेवाय छे के कोइ गजेंद्र ग्रीष्मऋतुमां घामार्त अने तृषातुर थयो. तेथी एक पूर्ण सरोवरने जोइ त्वराथी ते तरफ चाल्यो. परंतु तट उपर थयेला कादवमां ते खुंची गयो, एटले दैवयोगे ते नीर अने तीर बंनेथी भ्रष्ट थयो. वळी कह्युं छे के, सर्पना डशेला पुरुषो मणि मंत्र अने औषधवडे स्वस्थ थयेला जोवामां आव्या छे, पण दृष्टिविषसर्प जेवा दृष्टिमां विषवाळा एटले करडी नजरवाळा राजाओए डशेला पुरुषो फरीवार उठेला जोवामां आव्या नथी."

पछी राजानी आज्ञाथी सुभटोए ते चोरने नगरना जाहेर भागोमां फेरवी शूलीए चडाव्यो. त्यारपछी राजाना सुभटो गुप्त रीते संताइ रहीने जोवा लाग्या के, हवे जे पुरुष आ चोरनी साथे वातचित करे तेनी पासे सर्व नगरजननुं चोरेलुं द्रव्य छे एम जाणीने तेने त्यां शोधवुं. तेवामां जिनदत्त नामे एक श्रेष्ठी ते मार्गे नीकळ्यो. तेणे चोरनुं आक्रंदन सांभळी चोर प्रत्ये कह्युं के, 'अरे चोर! पापरूपी वृक्षनुं आ भवमां आ वध बंधन विगेरे फळ तने प्राप्त थयुं छे अने परलोकमां नरकगतिनी वेदनारूप फळ प्राप्त थशे, केमके प्राणीए उपार्जन करेलुं कर्म अन्यथा थतुं नथी; परंतु हवे अंतकाळे पण तुं अदत्तादान (चोरी)-ना त्यागरूप व्रत अंगीकार कर.' ते सांभळी चोरे कह्युं, 'अरे शेठ! मारा पग शीयाल खाइ गया छे कागडाओए मस्तकने ठोली नाख्युं छे. आ प्रमाणे मने पूर्व कर्मनुं फळ उदयमां आव्युं छे, हवे हुं शुं करूं? परंतु मने तृषा घणी लागी छे, तेथी कृपा करीने मने पाणी लावी आपो.' श्रेष्ठी ते वात राजविरुद्ध जाणी मौन रह्यो. पुनः चोरे दीन आलापोवडे तेवीज रीते पाणीनी मागणी करी. जेथी श्रेष्ठीए हिंमत लावीने कह्युं के, 'हे भद्र! तुं तारा आखा भवमां करेला पापनी आलोचना कर.' शेठना कहेवाथी चोरे पोताना आखा भवमां करेला पाप जणाव्या, एटले जिनदत्ते चोरी प्रमुखना पच्चक्खाण कराव्या, अने कह्युं के, "हे भद्र! एकत्व अने अन्यत्व भावना भाववाथी प्राणीना सर्व पाप क्षणार्धमां पण लय पामी जाय छे; तेथी तुं हवे ते भावना भाव, सर्व जीवोने मैत्रीभावे जो अने सर्व प्रकारनी आपत्तिमांथी उद्धार करनार नमस्कार महामंत्रनुं स्मरण कर. हुं जळ लेवाने जाउं छुं." चोरे पूछयुं के, 'कृपानिधि! आ पच्चक्खाणथी अने नमस्कारथी मारां महापाप जशे?' श्रेष्ठी बोल्या के—

कृत्वा पाप सहस्त्राणि, हत्वा जंतुशतानि च ।
अमुं मंत्रं जपित्वा च, तिर्यंचोपि दिवं गताः ॥ १ ॥

" हजारो पाप करी अने सेंकडो जीवोनी हत्या करी, नवकार मंत्रने जपनारा तिर्यंचो पण स्वर्गे गया छे. "

आ प्रमाणे तेने उपदेश करी जिनदत्त श्रेष्ठी जळ लेवाने गयो. पछवाडे ते चोर समाधिथी मृत्यु पामी अंत समयेज आयुष्य बांधी सौधर्म देवलोकमां देवता थयो. " अहो, सत्संगतिनुं फळ केवुं छे ! " कह्युं छे के,—

महानुभावसंसर्गः, कस्य नोन्नतिकारकः ।
गंगाप्रविष्टरथ्यांबुः, त्रिदशैरपि वंद्यते ॥ १ ॥

" महानुभाव पुरुषनो संसर्ग कोनी उन्नति करतो नथी ? गंगामां मळेलुं शेरीओनुं जळ देवताओथी पण वंदाय छे. " जिनदत्त श्रेष्ठी जळ लइने आव्या, त्यां तो तेने मृत्यु पामेलो जोयो. परंतु पोते राजविरुद्ध कर्युं छे एवुं जाणी ते शक्रावतार चैत्यमां जइने कायोत्सर्गे रह्या. सुभटोए सर्व वृत्तांत राजाने जणाव्युं; एटले राजाए आज्ञा करी के, ' हे सुभटो ! ए मूर्ख गाय जेवा पण कृत्ये वाघ जेवा श्रेष्ठीने चोरनी जेम विडंबना करीने मारी नाखो. ' सुभटोए तत्काळ श्रेष्ठीने राजानी आज्ञा जणावी, तथापि ते ध्यानथी चलित थया नहीं. पछी तेओ तेने अनेक प्रकारनी विडंबना करवा लाग्या. ते वखते पेलो 'लोहखुरदेव' भवप्रत्यय अवधिज्ञानवडे पोताना धर्मगुरुनी एवी अवस्था जोइने विचार करवा लाग्यो के,—

अक्षरस्यापि चैकस्य, पदार्थस्य पदस्य च ।
दातारं विस्मरन् पापी, किं पुनर्धर्मदेशिनं ॥ १ ॥

" एक अक्षर, अर्ध पद के पद मात्रने भणावनारा गुरुने जे भूली जाय ते पापी कहेवाय छे, तो धर्मने बतावनारा गुरुने भूली जनार पापी कहेवाय तेमां तो शी नवाइ ? " आवुं विचारी प्रतिहारनो वेष लइ तरत ते त्यां आव्यो अने दंडाघातवडे सुभटोने मूर्छित करी नाख्या. ते हकीकत सांभळी राजा चतुरंग सेना लइने त्यां आव्यो. देवे तेने कह्युं के, ' तमे घणा छो तेथी शुं थइ गयुं ? कह्युं छे के, घणा गजेंद्रो होय पण ते दुबला सिंहनी बराबर पण थइ शकता नथी. कारण के सत्व प्रधान छे, कांइ मांसनो राशि प्रधान नथी. वनमां रहेला

अनेक गजेंद्रो पण शुं एक सिंहना नादवडे मदने तजी देता नथी ? तजी दे छे. " आम कहीने एक राजा सिवाय बीजा बधाने तेणे पृथ्वी उपर पाडी नाख्या. पछी आखा नगर उपर आकाशमां शिला विकुर्वीने ते उपद्रव करवा लाग्यो. एटले राजा अने मंत्रीओ अंजळि जोडीने बोल्या के, 'हे देव ! अमारो अपराध क्षमा करो.' देव बोल्यो–' मारा धर्मगुरु श्रीजिनदत्त श्रेष्ठीने तेना अपराध विना तमे शा माटे पीडा करो छो ? ते महाशयना महिमाथी मने आ देवसमृद्धि प्राप्त थइ छे.' एम कहीने तेणे बधो पोतानो वृत्तांत कही संभळाव्यो. राजाए कह्युं के 'साहित्यशास्त्रमां नारीएलना वृक्षो माटे कह्युं छे के, 'ते पोताने प्रथम पायेला थोडा जळने याद करीने पोताना मस्तक उपर भार वहन करता सता पोताना जीवित पर्यंत माणसने अमृत जेवुं जळ आपे छे; तेज प्रमाणे साधु पुरुषो करेला उपकारने जीवित सुधी भूली जता नथी.' पछी प्रसन्न थयेला देवे कह्युं के, 'तमे सर्वे मारा गुरुना चरणमां प्रणाम करो, अने तेमना मुखथी नवकार मंत्र सांभळी चोरी विगेरेना त्यागरूप व्रतने ग्रहण करो.' सर्वेए तेम कर्युं, अने जिनदत्त श्रेष्ठी मोटा उत्सववडे पोताने घेर आव्या. लोको पण प्रत्यक्ष जैनधर्मनी प्रशंसा करवा लाग्या.

उपर प्रमाणे लोहखुर चोर लोढानी शूलीए परोवायो हतो, छतां अल्प काळना पण नियमने धारण करी जिनदत्त श्रावकनी सहायथी आद्य विमानने विषे देवसमृद्धिने प्राप्त थयो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
चौर्यव्रतविषये त्र्यशीतितमः प्रबंधः ॥ ८३ ॥

व्याख्यान ८४ मुं.

हवे ए त्रीजा व्रतनीज प्रशंसा करे छे.

अदत्तादाननैयम्य–ग्रहणैकरता नरः ।
लक्ष्मीपुंज इवाप्नोति । भवद्वये महत्पदम् ॥ १ ॥

व्याख्य.

"अदत्तादानना नियमने ग्रहण करवामां तत्पर एवो पुरुष लक्ष्मीपुंजनी

जेम बन्ने भवने विषे महत्पदने पामे छे." अदत्तादान सामान्यपणे बे प्रकारनुं छे. सचित्त अने अचित्त. सचित्त एटले मनुष्य, पशु विगेरे अने अचित्त एटले आभूषणादि. ते बन्नेना ग्रहणनो नियम एटले विरति-विराम पामवुं ते. आ विषे लक्ष्मीपुंजनो प्रबंध छे, ते आ प्रमाणे.

लक्ष्मीपुंजनी कथा.

हस्तिनापुरने विषे सुधर्मा नामे वणिक अने धन्या नामे तेनी स्त्री, बन्ने दारिद्र्यपणाना दुःखथी काळ निर्गमन करता हता. एकदा रात्रीए स्वप्नमां धन्याए पद्महृदमां कमळने विषे रहेला लक्ष्मीदेवीने जोया. प्रातःकाले ते हकीकत तेणे पोताना पतिने निवेदन करी. ते घणो खुशी थयो. तेणे कह्युं के, 'हवे आपणुं दारिद्र दूर थशे.' ते समये कोइ देव स्वर्गमांथी चवी धन्यानी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते तेना पूर्वभवना मित्रदेवोए तेना घरमां सुवर्ण विगेरेनी वृद्धि करी. पूर्ण मासे पुत्रनो प्रसव थयो. स्वजनोए मळी तेनुं लक्ष्मीपुंज एवुं यथार्थ नाम पाड्युं. ते बाळक शुक्लपक्षना चंद्रनी ज्योत्स्नानी जेम वृद्धि पाम्यो. अनुक्रमे ते स्वयंवरमां मोटा धनाढ्यनी आठ कन्याओ परण्यो. ते रमणीओनी साथे स्वगृहमां सुखानुभव करतां एक दिवस त्यां कोइ देवे प्रगट थइने तेने कह्युं के, "हे मित्र! तारा पूर्व भवनो वृत्तांत सांभळः—

पूर्वे मणिपुरमां गुणधर नामे तुं सार्थवाह हतो. एक वखते गुणधरे आ प्रमाणे एक मुनिनी वाणी सांभळी के, "प्राणीओने द्रव्यनुं हरण मरणथी पण विशेष दुःखदायक थाय छे, तेथी सुकृति पुरुषोए चौर्यत्यागनुं व्रत अवश्य अंगीकार करवुं." वळी लौकिक शास्त्रमां पण कहेल छे के, "कूडी साक्षी पूरनार, मित्रनो द्रोह करनार, कृतघ्नी अने चोरी करनार, ए चार कर्मचांडाळ कहेवाय छे, अने पांचमो जाति चांडाल छे." भानुए जमीनपर जळ छांटती कोई चंडाळणीने पूछ्युं के, "मदिरा मांसनी भक्षण करनारी हे चंडाळणी! तारा एक हाथमां तो मनुष्यनी खोपरी छे, ते छतां जमणा हाथवडे जमीनपर जळ केम छांटे छे?" चंडाळणी उत्तर आपे छेः—

मित्रद्रोही कृतघ्नी च । स्तेयी विश्वासघातकी ।
कदाचिच्चलितो मार्गे । तेनेयं क्षिप्यते छटा ॥ १ ॥

"मित्रनो द्रोह करनार, कृतघ्नी, चोरी करनार अने विश्वासघाती कदि आ मार्गे चाल्यो होय तेवुं धारीने (तेथी अपवित्र थयेली जमीनने पवित्र करवा माटे) आ जळनो छंटकाव करुं छुं." वळी—

कूटसाक्षी मृषावादी । पक्षपाती झगट्टके ।
कदाचिच्चलितो मार्गे । तेनेयं क्षिप्यते छटा ॥ २ ॥

" खोटी साक्षी पूरनार, असत्य बोलनार अने झगडामां पक्षपात करनार आ मार्गे चाल्यो होय तेवुं धारी जळनो छंटकाव करुं छुं." "अग्निनी शिखानो स्पर्श करवो सारो, सर्पना मुखनुं चुंबन करवुं सारुं अने हळाहळ झेरने चाटवुं सारुं, पण परद्रव्यने हरण करवुं ते सारुं नहीं." आ प्रमाणेनी देशना सांभळी गुणधर अदत्तादानथी विराम पाम्यो.

एकदा विशेष धनना लाभने अर्थे ते गुणधर सार्थवाह घणो सार्थ लइ देशांतरे चाल्यो. मार्गमां वेगवाळा घोडाने लीधे ते सार्थभ्रष्ट थइ महा अरण्यमां नीकळी गयो. एकाकी अश्व पर बेसीने चाल्या जतां लक्ष मूल्यवाळी एक सुवर्णमाळा पृथ्वीपर पडेली तेना जोवामां आवी; परंतु ते लेवाथी अंगीकार करेला त्रीजा व्रतनो भंग थशे एवा भयथी तेणे ते लीधी नहीं. त्यांथी आगळ चालतां अश्वनी खरीओथी उखडी गयेली भूमिमां द्रव्यथी पूर्ण एवो एक ताम्रकुंभ जोवामां आव्यो. तेने पण कांकरा तूल्य मानी ते आगळ चाल्यो. त्यां अकस्मात् अश्व मूर्छा खाइने भूमिपर पड्यो. ते जोइने तेणे मनमां विचार्युं के, 'जो कोइ आ अश्वने सज्ज करे तो हुं तेने मारुं सर्व द्रव्य आपुं.' आवुं चिंतवी पोते तृषातुर थवाथी जळ शोधवाने आगळ चाल्यो. तेवामां एक वृक्ष साथे बांधेलो पाणीनो पोटलीओ अने पासे पांजरामां रहेलो पोपट तेना जोवामां आव्यो. पांजरामां रहेला शुकपक्षीए तेने कह्युं के, 'हे सुभग! तुं आ पोटलीआमांथी जळ पी, हुं तेना स्वामीने कहीश नहीं.' सार्थपति बोल्यो के, "कदि तृषाने लीधे प्राण चाल्या जशे तो ते अनेक भवने विषे पाछा प्राप्त थशे, पण हुं परनुं अदत्त तो ग्रहण करीश नहीं. कह्युं छे के, 'हास्यथी, रोषथी के छळथी पण जे प्राणी अदत्त ग्रहण करे ते तेनुं अनिष्ट फळ प्राप्त करे छे.' जेम कृष्ण वासुदेवनी स्त्री रुक्मिणीए वनमां मोरना इंडाने लइने हाथमां गोपवी राख्युं हतुं, तेने शोधवाने मयूरी सर्वत्र भमती जोइ सोळ घडी सुधी राखीने पछी तेणे पाछुं मूक्युं, पण ते इंडुं हाथमां लागेला अलताना रंगथी रातुं थयेलुं जोइ मयूरीए घणीवार सुधी सेव्युं नहीं. तेवामां वर्षाद आव्यो अने तेना जळथी ज्यारे ते धोवाइ गयुं त्यारे तेने सेव्युं. आ कर्मथी रुक्मिणीने सोळ वर्ष सुधी पुत्रनो वियोग थयो. आ प्रमाणे हास्यथी पण अदत्तादान लेवावडे तेनुं कष्टकारी फळ प्राप्त थयुं. आ दृष्टांत हास्य उपर छे अने रोषथी अदत्तादान लेवाना

संबंधमां देवानंदा अने त्रिशलानुं दृष्टांत छे, तेथी हे शुक ! हुं स्वाम्यदत्तने ग्रहण करतो नथी. "

आवी व्रत पाळवाने विषे तेनी दृढता जोइने शुकपक्षी तुष्टमान थयो, अने तत्काळ पोतानुं स्वरूप फेरवी दिव्य रूप करीने बोल्यो के-' हुं सूर्य नामे विद्याधर छुं, तमे गुरु पासे त्रीजुं व्रत लीधुं तेथी विस्मय पामी द्रव्यनिधि देखाडवा विगेरेथी में तमारी परीक्षा करी, पण तमे तमारा लीधेला व्रतमां दृढ रह्या. ' आ प्रमाणे कही तेणे तेनी पासे घणुं धन मूक्युं. सार्थपति बोल्यो के-' जे द्रव्य में शुद्ध व्यवहारवडे उपार्जन कर्युं होय तेज मारा सुखने अर्थे थाय, आ तमारुं धन मारे शा कामनुं ? ते हुं लेवानो नथी. परंतु मारुं सर्व धन तमे ग्रहण करो, कारण के प्रथम में धारणा करी हती के-जे मारा अश्वने जीवाडशे तेने हुं मारुं धन आपीश. तेथी आ मारुं धन ते तमारुंज छे.' विद्याधर बोल्यो के, ' में आ बधुं मायाथी बताव्युं हतुं, तो तमे जे देवाने माटे धार्युं ते धन माराथी केम लेवाय, माटे हे सार्थवाह ! आपण बन्नेनुं द्रव्य कोइ शुभ स्थाने वापरी नाखवुं. ' सार्थेशे कह्युं के, ' तेवुं स्थान तो धर्मज छे, तेथी आपणे जीर्णोद्धारादि कार्यमां वापरीने आ द्रव्यने कृतार्थ करीए. ' पछी ते बन्ने जणाए तेम कर्युं. सार्थवाह सार्थनी साथे पोताने घेर आव्यो. अनुक्रमे मुनिधर्मने स्वीकारी आयुष्य पूर्ण थतां मृत्यु पामीने तुं लक्ष्मीपुंज थयो छुं, अने सूर्य विद्याधर ते हुं व्यंतर देव थयो छुं. तारा महिमाथी अने भाग्यथी प्रेरायेलो हुं तारा गर्भ दिवसथी मांडीने आज दिन सुधी रत्नादिकनी वृद्धि करुं छुं.

आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळतांज लक्ष्मीपुंजने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. अनुक्रमे तेणे दीक्षा ग्रहण करी, अने मृत्यु पामीने अच्युत देवलोकमां गयो. त्यांथी च्यवी मनुष्यपणुं प्राप्त करी शिवसुखने संपादन करतो हवो.

उपरनुं दृष्टांत सांभळी जे प्राणी स्थिरपणाथी अदत्तादाननो नियम ग्रहण करे छे तेने धन तथा सुवर्णनी उत्तम समृद्धि प्राप्त थाय छे. ते सार्थवाह पण परधननो त्याग करवाना नियमथी देवताओने पूजवा योग्य थयो हतो. तेथी हे भव्यो ! आ व्रत ग्रहण करवाने प्रयत्न करो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ तृतीयव्रतविषये चतुरशीतितमः प्रबंधः ॥ ८४ ॥

व्याख्यान ८५ मुं.

हवे स्वदारसंतोष नामे चोथुं अणुव्रत कहे छे.

संतोषः स्वेषु दारेषु, त्यागश्चापरयोषिताम् ।
गृहस्थानां प्रथयति, चतुर्थं तदणुव्रतम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" पोतानी विवाहित स्त्रीमां संतोष अने परस्त्रीनो त्याग ए गृहस्थने चोथुं अणुव्रत कहेवाय छे. " गृहस्थोए पोतानी विवाहित स्त्रीमांज संतोष राखवो. बीजानी एटले पोताथी जुदा जे मनुष्य, देव अने तिर्यंच तेनी स्त्रीओनो तेमज अन्यपरिणीत, संग्रहित अने विधवा स्त्रीओनो पण त्याग करवो. जो के अपरिगृहित देवीओ अने तिर्यंचनी स्त्रीओ कोइए ग्रहण करेली नथी, तेमज विवाहित नथी, तथापि तेओ वेश्यातुल्य तेमज परजातिने भोग्य होवाथी परस्त्री कहेवाय छे, तेथी तेनो त्याग करवो तेज योग्य छे. जे स्वदारसंतोषी छे तेने तो बधी परस्त्रीओज छे. दारशब्दथी उपलक्षणवडे स्त्रीओए पण पोताना पति सिवाय बीजा सर्व पुरुषोने तजी देवा ए भावार्थ जाणवो. गृहस्थोने माटे आ चोथुं अणुव्रत श्री जिनेश्वर भगवंते कहेलुं छे.

मैथुन बे प्रकारनुं छे. सूक्ष्म अने स्थूल. कामना उदयथी जे इंद्रियोनो जरा विकार ते सूक्ष्म अने मन, वचन, कायाथी औदारिक देहधारी स्त्री साथे जे संभोग करवो ते स्थूल. अथवा मैथुनत्यागरूप ब्रह्मचर्य बे प्रकारनुं छे. सर्वथी अने देशथी. तेमां सर्वथी विरति स्वीकारवाने अशक्त एवा उपासके (श्रावके) देशथी आ व्रत ग्रहण करवुं. आ व्रत विषे नागिलनो प्रबंध छे. अहो ! ब्रह्मचर्यव्रत केवुं उत्तम छे के जे मुक्तिनुं कारण कहेवाय छे. वळी ते नागिलने विपत्तिनुं विनाशक पण थयुं हतुं. ते नागिलनी कथा आ प्रमाणे—

नागिलनी कथा.

भोजपुर नामना नगरमां सर्वज्ञ धर्ममां तत्पर लक्षण नामे एक वणिक रहेतो हतो. तेने नवतत्त्वने जाणनारी नंदा नामे पुत्री हती. एक वखते वरने माटे शोध करतां पिताने तेणीए आ प्रमाणे जणाव्युं के " हे पिताजी ! जे पुरुष काजल वगरनो, वाटथी रहित, तेलना व्यय विनानो अने चंचळपणा रहित दीवाने धारण करे ते मारो पति थाओ. " पुत्रीनुं आ वचन सांभळी तेनो

दुष्कर अभिग्रह जाणीने चिंतातुर थयेला लक्ष्मणशेठे ते वार्त्ता नगरमां उद्घोषणाथी जाहेर करी. आ खबर नागिल नामना एक द्युतकारे सांभळी, एटले कोइ यत्ननी सहायथी तेणे तेवो दीपक कराव्यो. ते नजरे जोइ श्रेष्ठी हर्ष पाम्यो अने पोतानी पुत्री नंदा ते नागिलने परणावी. नंदा पोताना पतिने व्यसनासक्त जाणी घणी कचवावा लागी, तथापि नागिले ते व्यसन छोड्युं नहि. तेथी हमेशां द्रव्यनो व्यय थवा लाग्यो. लक्ष्मणशेठ पुत्रीना स्नेहथी तेने द्रव्य पूरतो हतो अने नंदा पतिनी साथे मन विना पण निरंतर परिचय राखती हती. एक वखते नागिलना मनमां एवो विचार थयो के, 'अहो! आ स्त्रीनुं केवुं गांभीर्य छे के जे हुं मोटो अपराधी छतां मारी उपर कोप करती नथी.'

अन्यदा नागिले कोइ ज्ञानी मुनिने भक्तिपूर्वक पूछ्युं के, 'हे महामुनि! आ मारी प्रिया शुद्ध आशयवाळी छतां पण मारी उपर मन धरती नथी, तेनुं शुं कारण?' मुनिए ते नागिलने योग्य जाणी तेनी पासे अंतरंग दीपकनुं स्वरूप आ प्रमाणे कह्युं-'तारी स्त्रीनी एवी इच्छा हती के "जे पुरुषना अंतःकरणमां मायारूप काजल न होय, जेमां नवतत्त्व विषे अस्थिरतारूप वाट न होय, जेमां स्नेहना भंगरूप तेलनो व्यय न होय अने जेमां समकितना खंडनरूप कंप (चंचळता) न होय तेवा विवेकरूपी दीपकने जे धारण करतो होय ते मारो पति थाओ." आ प्रमाणे दीपना मिषथी ते स्त्रीए जे अर्थ धार्यो हतो, ते कोइ जाणी शक्युं नहीं अने तें तो धूर्त्तपणाथी यत्नने आराधीने कृत्रिम बाह्य दीपक बताव्यो, एटले श्रेष्ठीए पोतानी पुत्री तने आपी. हवे तुं के जे महा व्यसननी छे तेनी उपर शीलादिगुणे युक्त एवी ए तारी स्त्रीनुं मन लागतुं नथी; तेथी जो तुं व्रतने अंगीकार करीश तो तारुं इच्छित पूर्ण थशे.'

नागिले पूछ्युं, 'भगवान्! सर्व धर्ममां कयो धर्म श्रेष्ठ छे?' मुनि बोल्या-"हे भद्र! श्रीजिनेंद्रप्रभुए पोताना सुगंधवडे त्रण भुवनने सुगंधमय करनार समकितपूर्वक शीळधर्मने सर्व धर्ममां श्रेष्ठ कहेलो छे. ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, 'जे पुरुषे पोताना शीलरूप कपूरना सुगंधवडे समस्त भुवनने सुगंधी करेलुं छे तेवा पुरुषने वारंवार नमीए छीए.' वळी कह्युं छे के, 'क्षणवार क्षणवार भावना भाववी, अमुक वखत दान देवुं अने अमुक तपस्या करवी ते स्वल्पकालीन होवाथी सुकर छे, पण यावज्जीवित शील पाळवुं ते दुष्कर छे.' नारद सर्व ठेकाणे क्लेश करावनार, सर्व जननो विध्वंस करनार अने सावद्य योगमां तत्पर एवा छतां जे सिद्धिने पामे छे ते निश्चे करीने शीलनुंज माहात्म्य छे. इत्यादि

गुरुवाक्य सांभळी नागिल प्रतिबोध पाम्यो. अने तत्काल समकित, शील अने विवेकरूप दीपकने स्वीकारी ते दिवसथी ते श्रावकधर्मने आचरवा लाग्यो.

एक वखते नंदाए कह्युं के, "हे स्वामी ! तमे बहु सारुं कर्युं के आत्माने विवेक प्रत्ये पमाड्यो. शास्त्रमां कहेल छे के, जिनेश्वरनी पूजा, मुनिने दान, साधर्मीनुं वात्सल्य, शीलपालन अने परोपकार ते विवेकरूपी वृक्षना पल्लवो छे." नागिल बोल्यो—"प्रिया ! सर्वने आत्माना हितने अर्थे विवेकवडे धर्म करवानो छे. विवेकरूप अंकुश विनानो मनुष्य सर्वदा दुःखी होय छे. तेवो मूर्ख बकराना युथना स्वामी (भरवाड) नी जेम हमेशां हसतो होय तो पण तेनुं हसवापणुं कांइ कामनुं नथी."

आ प्रमाणे सांभळी नंदा घणो हर्ष पामी अने भावथी तेनी सेवा करवा लागी. अन्यदा ते पिताने घेर गइ हती अने नागिल एकलो चंद्रनी ज्योत्स्नामां सुतो हतो, तेवामां कोइ पतिवियोगी विद्याधरनी पुत्रीए तेने जोयो. तेथी तत्काळ कामातुर थइ त्यां आवीने तेणे कह्युं के, "हे महापुरुष ! जो मने स्त्रीपणे स्वीकारशो तो हुं तमने बे अपूर्व विद्या आपीश. आ मारुं लावण्य जुवो, मारा वचनने अन्यथा करशो नहीं." आ प्रमाणे कही , शरीरे ध्रुजती ते बाळा नागिलना चरणमां पडी, एटले नागिले जाणे अग्निथी बळ्या होय तेम पोताना पगने संकोची दीधा. एटले ते बाळा एक लोढानो अग्निमय रक्त गोळो विकुर्वीने बोली के, 'अरे अधम ! मने भज, नहीं तो हुं तने भस्मीभूत करी नाखीश.' ते सांभळी नागिल निर्भयपणे विचारवा लाग्यो के "दश अवस्थारूप होवाथी दश मस्तकवाळा रावणनी जेवो कामदेवरूप राक्षस के जे देवदानवोथी पण दुर्जय छे ते पण शीलरूप अस्त्रथी साध्य थाय छे." आम विचार करे छे तेवामां सुत्कार शब्द करती ते बाळाए जाज्वल्यमान लोढानो गोळो तेना उपर नाख्यो. ते वखते नागिले नमस्कार मंत्रनुं स्मरण कर्युं, एटले ते गोळो खंड खंड चूर्ण थइ गयो. ते बाळा लज्जाथी अदृश्य थइ क्षणवारमां नंदानुं रुप लइने एक दासीए उघाडेला द्वारमांथी त्यां आवी अने मधुर वाणीवडे बोली के—'हे स्वामी ! मने तमारा विना पिताने घेर गम्युं नहीं, तेथी रात्री छतां अहीं आवती रही.' तेने जोइ नागिल विचारमां पड्यो के, 'नंदा विषयभोग संबंधी स्वपतिना संबंधमां पण संतोषवाळी छे, तेथी तेनी आवी चेष्टा होय नहीं. आनुं रूप तो तेना जेवुं छे पण परिणाम तेवा जणाता नथी, तेथी एनी परीक्षा कर्या विना विश्वास करवो योग्य नथी.' आम विचारी नागिले कह्युं के, 'हे प्रिये !

जो तुं खरेखरी नंदा होय तो मारी समीप अस्खलितपणे चाली आव.' ते सांभळी ते खेचरी जेवी तेनी सामे चाली तेवीज मार्गमां स्खलित थइ गइ. धर्मना महिमार्थी नागिले तेनुं सर्व कपट जाणी लीधुं. पछी विचार्युं के, 'कदि बीजाना कपटथी आवी रीते शीलनो भंग पण थाय, माटे सर्वविरतिपणुं अंगीकार करवुं तेज योग्य छे.' आवुं धारी तेणे तत्काळ केशनो लोच कर्यो अने पेला यक्षदीपने कह्युं के, 'तुं हवे तारे स्थाने जा.' यक्षे कह्युं के, 'हुं यावज्जीवित तमारी सेवा करीश. मारा तेजथी तमने उजेही नहीं पडे.' पछी सूर्यनो उदय थतां नागिले नंदानी साथे गुरु पासे जइ व्रत ग्रहण कर्युं अने यक्षदीपनी साथे आश्चर्य सहित पृथ्वीपर विहार करी, संयम पाळी ते दंपती मृत्यु पामीने हरिवर्ष क्षेत्रने विषे युगलिआ थया. त्यांथी देवता थइ पुनः नरभव पामी मोक्षने प्राप्त थया.

"आ नागिले द्रव्यदीपथी शुभ एवा भावदीपने चिंतव्यो अने स्वदारासंतोष व्रतमां दृढ प्रतिज्ञा राखी तो ते विद्याधरीथी पण कंपायमान थयो नहीं." माटे सर्व प्राणीए स्वदारासंतोष व्रत दृढपणे धारण करवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ
चतुर्थव्रतविषये पंचाशीतितमः प्रबंधः ॥८५॥

व्याख्यान ८६ मुं.

पुनः ए व्रतनीज प्रशंसा करे छे.

यः स्वदारेषु संतुष्टः, परदारपराङ्मुखः ।
स गृही ब्रह्मचारित्वाद्यतिकल्पः प्रकल्पते ॥१॥

व्याख्या.

"जे मनुष्य पोतानी विवाहित स्त्रीमां संतुष्ट थइ परस्त्रीथी विमुख रहे छे, ते गृहस्थ छतां पण ब्रह्मचारीपणाथी यति समान कहेवाय छे." आ विषे नीचे प्रमाणे प्रबंध छे. श्रीपुर नगरमां कुमार अने देवचंद्र नामे बे राजकुमार बंधु हता. एक वखते तेओ धर्मगुरुनी वाणी सांभळवाने उद्यानमां गया. त्यां

१ मुनिने दीपकनी उजेही पडे ते स्थान वर्ज्य छे, तेथी यक्षे आ प्रमाणे कह्युं छे.

गुरुए देशनामां कह्युं के, "कोइ मनुष्य कोटी सोनैयानुं दान दे अथवा श्रीवीतरागनो कंचनमय प्रासाद रचावे तेने तेटलुं पुन्य न थाय के, जेटलुं ब्रह्मचर्यधारी पुरुषने थाय छे." केटलाएक प्राणी शीलवतीनी जेम दुःखमां पण पोतानुं शीलव्रत छोडता नथी. ते कथा आ प्रमाणे छेः—

शीलवतीनी कथा.

लक्ष्मीपुर नगरमां समुद्रदत्त नामे श्रेष्ठी हतो. ते पोतानी शीलवती नामनी प्रियाने घेर मूकी सोमभूति नामना एक ब्राह्मणनी साथे परदेशमां गयो. विप्र तो केटलाएक दिवस रही श्रेष्ठीनो संदेशपत्र लइ पोताने घेर पाछो आव्यो. आ खबर थतां शीलवती पोताना पतिए मोकलेल संदेशपत्र लेवाने सोमभूतिने घेर गइ. विप्र ते सुंदर स्त्रीने जोइने कामातुर थयो, तेथी बोल्यो के, 'हे कृशोदरी! प्रथम मारी साथे क्रीडा कर, तो पछी तारा पतिनो संदेशपत्र आपुं.' ते चतुर स्त्री विचारीने बोली के, 'हे भद्र! रात्रीना पहेला पहोरे तमारे मारे घेर आववुं.' आ प्रमाणे कहीने ते सेनापति पासे आवी अने कह्युं के, 'हे देव! सोमभूति मारा पतिनो संदेशपत्र लाव्यो छे, पण मने आपतो नथी.' ते सांभळी अने तेनुं स्वरूप जोतां मोह पामी ते बोल्यो के, 'हे सुंदरी! प्रथम हुं कहुं ते कबुल कर तो पछी तने ते पत्र अपावुं.' व्रतभंगना भयथी तेने बीजे पहोरे पोताने घेर आववानुं कही ते मंत्री पासे गइ. तेनी पासे फरियाद करतां तेणे पण मोह पामी उपर प्रमाणे मागणी करी, एटले तेने त्रीजे पहोरे घेर आववानुं कही ते राजा पासे गइ. राजाए पण तेवीज प्रार्थना करी, एटले तेने चोथा पहोरे आववानुं कह्युं. पछी घेर आवी पोतानी सासुनी साथे संकेत कर्यो के, 'तमारे मने चोथे पहोरे बोलाववी.' आ प्रमाणे संकेत करी ते पोताना एकांतवासमां तैयार थइने रही. पहेले पहोरे पेलो ब्राह्मण आव्यो. तेनी साथे स्नानपान विगेरेमांज पहेलो प्रहर निर्गमन कर्यो, तेवामां करेला संकेत प्रमाणे सेनापति आव्यो. तेनो शब्द सांभळतांज ब्राह्मण भयथी कंपवा लाग्यो. एटले तेने एक मोटी पेटीना खानामां नाख्यो. एवी रीते सेनापति, मंत्री अने राजाने पण पेटीना जुदा जुदा खानामां पूर्या. आ प्रमाणे चारेने पूरी प्रातःकाळे रुदन करवा लागी. एटले तेना कुटुंबीओए आवीने पूछ्युं के, 'भद्रे! केम रुदन करे छे?' ते बोली के, 'मारा स्वामीनी दुःखवार्त्ता सांभळीने रुदन करुं छुं.' ते सांभळी तेना संबंधीओ आ शेठ अपुत्र मरण पामेलो होवाथी तेना खबर आपवा माटे राजा, मंत्री अने सेनापतिनी पासे गया, पण तेओ तो

तेमने स्थाने मळ्या नहीं; एटले तेओए राजपुत्र पासे जइने विज्ञप्ति करी के, 'हे कुमार ! समुद्रदत्त श्रेष्ठी परदेशमां अपुत्र मृत्यु पाम्या छे, माटे तेनी समृद्धि आप ग्रहण करो.' कुमार तेने घेर गयो, तो घरमां बीजुं तो कांइ जोयुं नहीं, मात्र एक मोटी पेटी तेना जोवामां आवी. एटले ते राजभुवनमां लइ जइ उघडावी तो तेमांथी विप्र विगेरे चार जणा लज्जा पामता सता बहार नीकळ्या. राजाए ब्राह्मण, सेनापति अने मंत्री त्रणेने देशपार कर्या अने शीलवतीनो सारी रीते सत्कार करी तेनी घणी प्रशंसा करी.

आ प्रमाणे गुरु पासे धर्म सांभळीने कुमारे स्वदारासंतोष व्रत ग्रहण कर्युं. देवचंद्रे दीक्षा ग्रहण करी. शुद्ध आहारने ग्रहण करता सता ते महा तपस्वी थया.

एक वखते देवचंद्र मुनि विहार करतां करतां श्रीपुरनी नजीकना एक देवालयमां आवीने रह्या. ते सांभळी कुमारचंद्र राजा तेमने वांदवा गयो अने वांदीने पाछो आव्यो. ते खबर जाणी राणीए एवो अभिग्रह कर्यो के, "काले सवारे देवचंद्र यतिने वांद्या पछी भोजन करीश." प्रभाते मुनिने वंदन करवा नीकळी त्यां वचमां नदीए पूर आवेलुं हतुं अने उपर जळवृष्टि पण थती हती. तेथी राणी स्खालित थइने नदीने कांठेज उभी रही. एटले राजाए तेने बोलावीने कह्युं के, 'हे प्रिया ! तमे नदीने एम कहो के, 'हे नदी देवी ! जे दिवसे मारा दीयरे व्रत लीधुं छे ते दिवसथी मांडीने जो मारा पति खरेखरी रीते ब्रह्मचर्य व्रतने धारण करी रह्या होय तो मने मार्ग आपो.' ते सांभळी राणीए चिंतव्युं के, 'मारा पति आम कहे छे, पण तेना ब्रह्मचर्यनी वात हुं शुं नथी जाणती ! तोपण ठीक छे, जे हशे ते त्यां जणाशे, माटे हमणां तो पतिनुं वाक्य स्वीकारूं; केमके जो पतिना वाक्यमां शंका लावुं तो मारुं पतिव्रत खंडित थाय.' ते विषे कह्युं छे के—

सती पत्युः प्रभोः पत्ती, गुरो शिष्यः पितुः सुतः ।
आदेशे संशयं कुर्वन्, खंडयत्यात्मनो व्रतं ॥ १ ॥

"जो सती स्त्री पतिना वाक्यमां, सेवक राजाना वाक्यमां, शिष्य गुरुना वाक्यमां अने पुत्र पिताना वाक्यमां शंका लावे तो तेओ पोताना व्रतने खंडित करे छे." आवुं चिंतवीने ते नदीनी पासे गइ अने विनयथी पोताना पतिनुं वाक्य कह्युं, एटले तत्काळ नदीए मार्ग आप्यो. ते मार्गे नदी उतरी सामे कांठे देवालयमां जइ पोताना दीयर मुनि पासेथी धर्म सांभळ्यो. मुनिए पूछ्युं, 'तमने नदीए शी रीते मार्ग आप्यो ?' देवीए जे बन्युं हतुं ते यथार्थ कही संभळाव्युं.

एटले मुनि बोल्या के, 'भद्रे ! सांभळो, मारा सहोदर बंधु पण मारी साथेज व्रत लेवाने इच्छता हता पण लोकोना अनुग्रहने माटे तेमणे राज्यनो स्वीकार कर्यो छे. तेओ व्यवहारथी जो के राज्यनो अने इंद्रियोना भोगनो अनुभव करे छे, तथापि ते निश्चयथी ब्रह्मचारीज छे. कादवमां कमळनी जेम गृहवासमां रहेता एवा पण ते राजानुं मन निर्लेप होवाथी तेने विषे ब्रह्मचारीपणुं घटे छे.' पछी ते राणीए अभिग्रह पूरो थवाथी वनना एक भागमां जइ साथे लावेला शुद्ध आहारवडे पोताना दीयरने प्रतिलाभित कर्या अने पोते पण भोजन कर्युं. पछी ज्यारे तेनी जवानी इच्छा थइ, एटले चालती वखते राणीए मुनिने पूछयुं के, 'मारे नदी शी रीते उतरवी ?' मुनिए कह्युं के, "तमे नदीनी आ प्रमाणे प्रार्थना करो के, 'हे नदीदेवी ! जो आ मुनि व्रत ग्रहण कर्युं त्यारथी सदा उपवासी रहीने विचरता होय तो मने मार्ग आपो.'" आथी विस्मय पामी राणी नदीने तीरे गइ, अने मुनिनुं वाक्य संभळावतांज नदीए मार्ग दीधो. ते मार्गे नदी उतरीने ते पोताने घेर आवी. विस्मय पामेली राणीए राजाने ए वृत्तांत जणावी पूछयुं के, 'हे स्वामिन् ! आजेज में तमारा बंधु मुनिने पारणुं कराव्युं हतुं, ते छतां तेओ उपवासी केम कहेवाय ?' राजा बोल्या—'देवी ! सांभळो, ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, "साधु निरवद्य आहार करता होवाथी नित्य उपवासी छे, मात्र उत्तरगुणनी वृद्धि करवाने माटे तेओ शुद्ध आहार ले छे, तथापि ते उपवासीज छे." वळी बीजे पण कह्युं छे केः—

अकृताकारितं शुद्ध—माहारं धर्महेतवे ।
अश्नतोऽपि मुनेर्नित्यो—पवासफलमुच्यते ॥ १ ॥

"नहीं करेलो अने नहीं करावेलो एवो शुद्ध आहार मुनि, चारित्र धर्मना प्रतिपालनने माटे वापरे छे, तेथी तेने नित्य उपवासनुं फळ प्राप्त थाय छे."

इत्यादि वचनोथी पोताना भर्त्ता अने दीयरनुं माहात्म्य जाणी राणीए मन वचन कायावडे शीलादि धर्म स्वीकार्यो.

उपर प्रमाणे शीलव्रतना माहात्म्यथी जेम नदीए राजानी प्रियाने मार्ग आप्यो, तेम जे प्राणी ते व्रतने मनमां धारण करे छे तेने कर्मरूप समुद्र अचर एवा शिवमार्गने आपे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ
चतुर्थव्रतविषये षडशीतितमः प्रबंधः ॥ ८६ ॥

व्याख्यान ८७ मुं.

आ चोथा व्रतमां पण जे वर्जवा योग्य पांच अतिचार छे ते कहे छे.

इत्वरात्तागमोऽनात्तागतिः परविवाहनम् ।
मदनात्याग्रहोऽनंगक्रीडा च ब्रह्मणि स्मृता ॥ १ ॥

व्याख्या.

" थोडा काळ माटे कोइए राखेली वेश्यानो संगम, कोइए नहीं ग्रहण करेली एवी वेश्या स्त्रीनो संगम, पारका विवाहनुं कराववुं, कामभोगमां तीव्र अनुराग अने अनंगक्रीडा-ए पांच ब्रह्मचर्य व्रतमां अतिचार छे तेने त्यजी देवा."

इत्वरा एटले प्रत्येक पुरुष पासे जनारी वेश्याने कोइए अमुक काळ माटे पोतानी करी राखी होय तेनुं ग्रहण अथवा कांइ मूल्य ठरावी अमुक काळ सुधी पोते स्त्री तरीके स्वीकारवी ते. ए प्रमाणे कोइए पोतानी करी राखेली वेश्यानुं सेवन करनार पुरुष पोतानी बुद्धिकल्पनाथी तेने पोतानी स्त्री समान गणी मनमां व्रतनी सापेक्ष वृत्ति धरावे के ' मारे तो परस्त्रीनो मात्र त्याग छे अने आ तो आटलो काळ मारी स्त्री थएली छे, तेथी मारा व्रतनो भंग थतो नथी. ' पण ते थोडा काळ सुधी बीजानी परिग्रहभूत थयेली होवाथी वस्तुताए तेने बीजानी स्त्रीज जाणवी जोइए. तेथी ए अतिचार छे. इति प्रथम अतिचार.

बीजा अतिचारमां अनात्ता एटले कोइए नहीं ग्रहण करेली वेश्या अथवा व्यभिचारिणी स्त्री के जेनो पति विदेशे गयेलो होय, तेवी स्त्रीनुं आसेवन करवुं, अने तेमां एवी बुद्धि करवी के, ' आ स्त्री कांइ परस्त्री न गणाय. ' पण ते धारणामां अज्ञानता होवाथी अतिचार लागे छे. इति द्वितीय अतिचार.

आ बे मात्र परस्त्रीत्यागरूप व्रतवाळाने अतिचार छे, पण जेने स्वदारासंतोष व्रत होय तेने तो अनाचारज छे, अर्थात् तेम करवाथी तेना व्रतनो भंग थाय छे.

त्रीजा अतिचारमां बीजानी संततिनो कन्यादानना फळनी इच्छाथी अथवा संबंध विगेरे कारणथी जे विवाह करावी आपवो ते अतिचार जाणवो. श्रावके तो पोतानी संततिने विषे पण संख्या परिमाण करवा रूप अभिग्रह करवो. एम संभळाय छे के, ' कृष्ण अने चेटकराजाने पोतानी संततिनो पण विवाहसंबंध

करवानो नियम हतो.' आ पण अंतरसद्भावपणुं होवाथी अतिचार छे. इति तृतीय अतिचार.

कामभोगने विषे जे तीव्र अनुराग ते चोथो अतिचार छे. इति चतुर्थ अतिचार.

पांचमो अतिचार अनंगक्रीडा-कामप्रधान क्रीडा. ते परस्त्रीने अधरचुंबन, आलिंगन विगेरे करवुं ते; अथवा स्वस्त्रीना संबंधमां वात्स्यायनमुनिए रचेला कामशास्त्रमां बतावेला चोराशी आसन विगेरेने सेववा ते. इति पंचम अतिचार.

आ प्रमाणे चोथा ब्रह्मचर्य व्रतमां ए पांच अतिचार त्याग करवा योग्य छे. आ व्रतने विषे रोहिणीनुं उदाहरण छे ते आ प्रमाणेः—

रोहिणीनी कथा.

पाटलीपुरमां नंदराजा राज्य करता हता, ते वखते ते नगरमां धनावह नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने रोहिणी नामे शीलवती प्रिया हती. अन्यदा धनावह श्रेष्ठी समुद्रयात्रा करवा गयो हतो अने घेर रोहिणी एकली हती. तेवामां एक वखते एवुं बन्युं के राजाए रोहिणीने तेना गोखमां बेठेली जोइ. तेने जोइ राजा कामातुर थयो; तेथी तत्काळ दासीने रोहिणीनी पासे मोकली. दासीए त्यां जइने कह्युं के, 'हे रोहिणी! तमारुं पुण्य मोटुं लागे छे के जेथी नंदराजा तमारुं आलिंगन करवाना अभिलाषी थया छे.' आ सांभळी रोहिणीए चिंतव्युं के, "अहो! मूढ लोको पोताना कुळधर्मने पण त्यजी देतां शरमाता नथी. तेथी आ राजा उन्मत्त हस्तीनी जेम मारा शीलरूप वृक्षने उखेडी नाखशे, माटे कोइ उपायथी तेने समजाववो योग्य छे." आम विचारी तेणीए दासीने कह्युं के, 'हे भद्रे! आज रात्रे तुं राजाने मारे त्यां मोकलजे.' दासीनां वचनथी राजा हर्ष पामीने रात्रे तेने घेर आव्यो. रोहिणीए भूमि तरफ दृष्टि राखी तेनो योग्य सत्कार कर्यो. पछी भोजनने माटे पोताना गृहमांथी जुदा जुदा वेष धरनारी स्त्रीओ पासे सुवर्णना, रूपाना अने कांसा विगेरेना नवी नवी जातना पात्रो मूकाव्या, अने तेमां ते दासीओए खावामां एकज रस आपे एवा पण जुदा जुदा वर्णना भोज्य पदार्थो जुदा जुदा अनेक ओरडामांथी लावी लावीने मूक्या. राजाए जुदा जुदा पात्रोमांथी रसनो स्वाद लेवा मांड्यो. तथापि बधा पात्रमांथी एकज स्वादवाळो रस आववाथी ते विस्मय पामी गयो. जेथी तेणे रोहीणीने पूछयुं के, 'मुग्धे! आ जुदा जुदा पात्र छतां अने तेमां जुदा जुदा वर्णवाळी वस्तु छतां तेनो रस एकज प्रकारनो आवे छे, तेनुं शुं कारण?'

रोहिणी बोली के, "राजेंद्र! जे विवेकी होय ते तो एकज पात्रमांथी स्वाद ले, कारण के सर्वनो स्वाद एकज छे. जेम एमां स्थान ने वर्णनो भेद छतां रसनुं विशेषपणुं जणातुं नथी, तेमज एकज स्त्रीजातिमां रूप के वेषादिना भेदथी शो फेर पडे छे? जेम कोइ माणस भ्रांतिथी आकाशमां अनेक चंद्र जुए, पण वस्तुताए चंद्र एकज छे, तेम कामी कामभ्रमथी भ्रांत थइ एकज स्त्री-जातिने अनेकपणे जुए छे.

हे राजन्! लौकिक शास्त्रमां पण लिंगपुराणने विषे अब्रह्म विषे लखे छे के, 'एक मास सुधी निराहार रहेतो अने पारणाने दिवसे कंदमूळ खातो एवो तापस पण मनमां तापसीने इच्छवाथी कमाडमां मुख नाखीने मृत्यु पाम्यो हतो.' ए कथा एवी छे के, सेलकपुरना उद्यानमां एक मठने विषे मासोपवासी तापस रहेतो हतो. एकदा त्यां कोइ तापसी आवी चडी. तापसे तेणीने रात्रिवास करवा आग्रह कर्यो, पण पोताना शीलभंगना भयथी तेणे सूचव्युं के, 'भो तापसी! रात्रे तमारे मजबूत रीते कमाड वासीने शयन करवुं. कारण के अहिं एक राक्षस आवे छे ते कदि मारा जेवा स्वरथी तमने बोलावे अने एंधाणी पण आपे, तथापि तमारे कमाड उघाडवा नहीं, जो उघाडशो तो ते राक्षस तमारा देहने गळी जशे.' आ प्रमाणे कही तापस मठनी बहार सुतो. अर्धरात्रे कामविकार उत्पन्न थवाथी तेणे अनेक रीते आलाप करी तापसीने बोलावी. पण पूर्वशिक्षित तापसीए द्वार उघाड्युं नहीं. छेवटे अंदर पेसवाने छिद्र पाडी तेमां मुख नाख्युं, परंतु ते दबावाथी तापस त्यांज मृत्यु पामी गयो. परंतु तेना शीलनुं खंडन नहीं थयेल होवाथी ते देवता थयो. प्रातःकाळे सर्वनी समीप प्रगट थइ ते देवे पोतानुं स्वरूप कही बतावीने मैथुननो निषेध कर्यो. वळी विष्णुपुराणमां पण लखे छे के, "वाराणसीमां गंगाना तीर उपर नंद नामना तापसे घणां वर्ष सुधी तपस्या करी हती. एक वखते गंगामां स्नान करती कोइ स्त्रीने जोइने ते मोह पामी गयो. तेनी पाछळ पाछळ तेने घेर जइ तेनी प्रार्थना करी. त्यारे ते स्त्री बोली के, 'हे तपस्वी! हुं चांडाली छुं, अने तमे तपस्वी छो; तो मारा जेवी नीच साथे तमारे व्रत खंडन करवुं योग्य नथी.' तेना ए वचनने नहीं गणकारीने ते कामार्त्त तापसे तेनी साथे रतिक्रीडा करी. पछी आंखो उघडी[1], एटले तेने घणो पश्चात्ताप थयो. तेथी कामने धिक्कार करतो पोतानुं मस्तक शिला उपर पटकीने ते मृत्यु पाम्यो. ते वखते ते आ प्रमाणे बोल्यो हतो—

१ कामांधपणे नेत्र बिंचायेल हता, ते सद्विचार आववाथी उघड्या एम समजवुं.

श्री रामराम धिग्धिग् मे, जन्मनो जीवितस्य च ।
याश्चरं दुश्चरं तप्त्वा, चांडालीसंगमं गतः ॥ १ ॥

' अरे राम, राम, मारा जन्मने अने जीवितने धिक्कार छे, के जे हुं दुश्चर तपस्या तपी प्रांते चांडालीना संगमने प्राप्त थयो. '

श्रीवीतरागना शासनमां पण कह्युं छे के, " जेम किंपाकना फळ खाती वखते सारां अने मीठां लागे छे, पण परिणामे मृत्यु आपे छे; तेम विषयभोग पण भोगवती वखते सारां लागे छे, पण परिणामे अनेक भवमां मृत्यु आपे छे." आवां ते रोहिणीनां वचनो सांभळी नंदराजाए अन्यायरूप व्रणने रुझवनारी एवी ते रोहिणीने खमावीने कह्युं के—

संति विश्वे दुराचारो–पदेष्टारः पदे पदे ।
हितार्थमुपदीकर्त्तुं, विरला एव केचन ॥ १ ॥

" आ विश्वमां दुराचारनो उपदेश करनारा तो स्थाने स्थाने छे, पण हितार्थनो उपदेश करनारा कोइ विरलाज होय छे." एम कही स्वदारासंतोष व्रत ग्रहण करी नंदराजा पोताने घेर आव्यो.

हवे धनावह शेठ परदेशथी घणुं धन कमाइ घेर आव्यो. घेर आव्या पछी एक वखते दासी पासेथी राजाना आववाना खबर सांभळी तेणे चिंतव्युं के, "जरुर मारी स्त्रीए पोताना शीलने खंडित कर्युं हशे. अहीं बीजा मनुष्य विनाना स्थानमां आवेलो राजा आवी सुंदर स्त्रीने केम छोडी दे?" आखी रात आवा संकल्प विकल्प करतो राजा रोहिणीनी उपर निःस्नेह थयो. ते अरसामां पुण्योदयथी एवुं बन्युं के, वर्षादने लीधे नदीमां मोटुं पूर आव्युं अने तेथी सर्व नगर रुंधाइ गयुं. ते वखते रोहिणी सर्व लोकोनी समक्ष गोपूर (दरवाजा) उपर चडी हाथमां जळ लइने बोली के, 'हे सरिता! गंगाना जळनी जेम जो मारुं शील निर्मळ होय तो तुं आ नगर पासेथी पाछी ओसर.' तत्काळ नदीनुं पूर उतरी गयुं अने सर्व जनोए तेना शीलनी मोटी प्रशंसा करी. धनावह श्रेष्ठीए स्नेह सहित थइ तेना शीलधर्मने प्रणाम कर्यो.

उपर प्रमाणे महासती रोहिणीए शीलव्रतनी दृढतावडे जैनधर्मनी प्रभावना करीने अने पोताना मनुष्य जन्मने कृतार्थ करीने सुकृतनी मोटी प्रतिष्ठाने प्राप्त करी.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ चतुर्थव्रतातिचारविषये सप्ताशीतितमः प्रबंधः ॥ ८७ ॥

व्याख्यान ८८ मुं.

हवे ब्रह्मचर्यव्रत- रक्षण करवाथी शो गुण थाय ते कहे छे.

ज्ञानादिसर्वधर्माणां, जीवितं शीलमेव ये ।
रक्षन्ति प्राणिनस्तेषां, कीर्त्तिर्माति न विष्टपे ॥ १ ॥

व्याख्या.

" ज्ञानादि सर्व धर्मनुं जीवित शील छे. जे प्राणीओ ते शीलनी रक्षा करे छे तेओनी कीर्ति आ जगतने विषे माती नथी. " ज्ञानादि ए वाक्यमां आदि शब्दवडे दर्शन, चारित्र विगेरे ग्रहण करवा. तेना प्राणरूप ब्रह्मचर्य (शील) छे, अर्थात् ते विना सर्व धर्म व्यर्थ छे. ते विषे अन्य दर्शनीना शास्त्रमां पण कह्युं छे के, " हे युधिष्टिर ! जे एक रात्रि पण ब्रह्मचारी रह्यो होय, तेने जे गति मळे, ते गति हजारो यज्ञोथी पण मेळवी शकाती नथी. "

जिनागममां तो ब्रह्मचारीने स्त्रीना विकारी अंग सामुं जोवा विगेरेनो पण निषेध करेलो छे. कह्युं छे के, " स्त्रीना गुप्त अंग रागोत्पादक होवाथी ब्रह्मचारीए जोवा नहीं, तेम स्पर्शवा नहीं. कदि ते जोवाइ जाय के स्पर्शाइ जाय तो तेमां रागबुद्धि न करवी. कह्युं छे के, ' स्त्रीनुं रूप नजरे पडी जाय तो जोया वगर रहेवाय नहीं, पण डाह्या माणसे तेमां राग के द्वेष करवानुं छोडी देवुं. ' वळी गायनी योनिनुं मर्दन करीने गोमुत्र लेवुं नहीं, पण ज्यारे ते स्वेच्छाए मूत्रोत्सर्ग करे त्यारे लेवुं. कदि खास काम होय तो तेमां चित्तनी एकाग्रता न करवी. जो कदि स्वप्नमां स्त्रीनो भोग थाय तो तत्काळ उठी इर्यापथि प्रतिक्रमणपूर्वक एकसो आठ श्वासोच्छ्वासनो[1] काउस्सग्ग करवो. वळी स्त्रीओनी इंद्रियो जोवामां अने तेमनी साथे भाषण करवा विगेरेमां सर्वत्र यतनापूर्वक निवृत्ति करवी. आ प्रमाणे जे प्राणीओ ब्रह्मव्रतने पाळे छे तेओनी कीर्त्ति आ विश्वमां माती नथी. " आ विषयमां जिनपाळनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणेः—

जिनपाळनी कथा.

चंपानगरीमां माकंद नामे एक वणिक रहेतो हतो. तेने भद्रा नामे स्त्री

---

१ चार लोगस्सनो, सागरवरगंभीरा

हती, अने जिनपाळ अने जिनरक्षक नामे बे पुत्र हता. तेमणे अग्यार वखत समुद्रमां सफर करीने निर्विघ्ने पुष्कळ द्रव्य उपार्जन कर्युं हतुं. अन्यदा आग्रह करीने बारमी वखत मुसाफरीए जवाने तैयार थया. मातापितानी आज्ञा लइ वहाण भरीने चाल्या. मार्गमां प्रतिकूळ पवनवडे वहाण शिला साथे अथडाइ भांगी गयुं. बंने एक पाटीयुं मळवाथी तरीने रत्नद्वीपे पहोंच्या. त्यां एक वनमां क्रीडावापीनी अंदर तेओ जळक्रीडा करवा लाग्या. तेवामां ते रत्नद्वीपवासी देवीए प्रत्यक्ष थइने कह्युं के, 'तमे बंने मारी साथे भोग भोगवो, नहींतर आ खड्गथी तमारो शिरच्छेद करीश.' बंनेए भयथी ते स्वीकार्युं. पछी तेना शरीरमां शुभ पुद्गलो संक्रमावी अशुभ पुद्गलोने दूर करीने ते तेमनी साथे भोग भोगववा लागी. एक वखते ते रत्नद्वीपनी देवीने सौधर्मइंद्रे आदेश कर्यो के, 'एकवीश वार काष्ट विगेरे काढीने लवणसमुद्रने निर्मळ करो.' आवो आदेश आवतां ते देवीए बंनेने शिखामण आपी के, 'तमारे बंनेए दक्षिण बाजुना वनमां जवुं नहीं, कारण के त्यां दृष्टिविष सर्प छे, तेथी अहींज रहेवुं. कदि जवुं होय तो बीजी त्रण बाजुना वनमां जवुं.' आ प्रमाणे कहीने देवी पोताने कामे गइ.

पछवाडे बंने जणे विचार्युं के, 'आपणने देवीए दक्षिण बाजुना वनमां जवाने शामाटे अटकाव्या हशे, माटे ते बाजु जवुं तो खरुं.' आम विचारी तत्काळ तेओ कौतुकथी तेज वनमां गया. तो त्यां अस्थिनो मोटो समूह जोवामां आव्यो. आगळ जतां एक पुरुषने शूलीए चढावेलो जोयो. बंनेए तेने पूछ्युं के, 'तुं कोण छे?' ते बोल्यो के, 'हुं वणिक छुं, वहाण भांगवाथी अहिं आवी चड्यो हतो. आ द्वीपनी अधिष्टायिका देवीनी साथे में भोग भोगव्या हता, पण ज्यारे तमे आव्या त्यारे ते देवीए मने थोडा अपराधमां आवी दशाए पहोंचाड्यो छे.' आ प्रमाणे सांभळी तेओ भय पामीने विचारवा लाग्या के, 'जेवी आनी गति थइ तेवी गति आपणी पण थवानी.' पछी पुनः पूछ्युं के, 'अमारो छुटको अहींथी शीरीते थाय?' ते बोल्यो के, "अहिंथी पश्चिम दिशामां एक शैलक यक्ष छे, ते पर्वतिथिए मोटा शब्दथी बोले छे के, हुं कोने तारुं अने कोनुं पालन करुं? तमारे तेनी पासे जइ तेनी पूजा करवी अने जे समये ते बोले ते वखते कहेवुं के, हे यक्षराज! अमने तारो ने अमारुं पालन करो." आ प्रमाणे सांभळी तेओए ते यक्ष पासे जइ ते प्रमाणे कह्युं, एटले ते यक्ष बोल्यो के, "हे भद्रो! ते व्यंतरी महा दुष्टा छे, परंतु तमारे तेनाथी भय पामवुं नहीं. में विकुर्वेला आ अश्वनी पृष्ट उपर तमे बेसो. ते देवी

तमारी पासे आवीने सराग अने मधुर वाणीथी तमने क्षोभ पमाडशे, तथापि तमारे चलित थवुं नहीं. तेम करतां जेनुं मन तेनी वाणीथी क्षोभ पामशे तेने हुं समुद्रमां पाडी नाखीश." यक्षनो आ ठराव तेमणे कबुल कर्यो. पछी यक्ष अश्वरूपे थइ पोतानी पीठ उपर तेमने बेसारीने चाल्यो.

अहिं रत्नद्वीपनी देवी इंद्रनी आज्ञा प्रमाणे काम करी पोताना वासगृहमां आवी. त्यां तेओने जोया नहीं एटले ते तेनी पछवाडे दोडी अने समुद्रमार्गे तेओ यक्षरुपीनी पीठपर बेसीने जता हता, त्यां आवी राग भरेली मधुर वाणीवडे बोली के–' अरे प्राणवल्लभो ! मने अबळाने तजी दइने तमारे चाल्युं जवुं घटित नथी, मारा अपराधने क्षमा करो.' इत्यादि अनेक आलापथी तेने पूर्ण रागी जाणी जिनरक्षित क्षोभ पामी गयो. यक्षे अवधिज्ञानवडे जिनरक्षितना चित्तने विषयासक्त जाण्युं, एटले तत्काळ पोतानी पीठ उपरथी तेने पाडी नाख्यो. एटले रत्नदेवीए खड्गथी तेना कटके कटका करी नाख्या. जिनपाले दृढ प्रतिज्ञाथी तेनी सन्मुख पण जोयुं नहीं, तेथी तेने क्षेमकुशळ चंपानगरीमां पहोंचाडी यक्ष पोताने स्थानके गयो.

जिनपाले सर्व वृत्तांत पोताना मातापिताने जणाव्यो. पछी वैराग्य पामी श्री वीरप्रभु पासे दीक्षा लइने ते सौधर्म देवलोकमां देवता थयो. त्यां बे सागरोपमनुं अयुष्य भोगवी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामशे.

उपरना दृष्टांतमां तत्त्वरूप जे उपनय छे ते छठ्ठा अंगमां विस्तारथी कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–जेओ आ संसारमां रह्या सता निरंतर विषयभोगनी आकांक्षा राखे छे, तेओ घोर संसारसागरमां पडे छे, अने जेओ भोगनी अपेक्षा राखता नथी तेओ संसार अटवीनो पार पामे छे. आ संसारमां दुःखी जीवने श्रीजिनाज्ञाना वचन ते सेलक यक्षना पृष्ट समान छे, जे समुद्र ते संसार छे, अने जे पोताने घेर पहोंचवानुं ते सिद्धिगमन तूल्य छे. जे देवी ते मोहिनीरूप छे, तेमां जे लुब्ध थइ क्षोभ पामे ते जिनरक्षितनी जेम संसारसमुद्रमां पडे छे अने विषयमोहवडे अनंत जन्ममरणना दुःखने पामे छेः अने जे प्राणी मोहिनीथी क्षोभ पामता नथी ते जिनपालनी जेम संसारसागरमां नहीं पडतां ते जेम पोताने घरे पहोंच्यो तेम प्रधान सुख–सिद्धिसुखने प्राप्त करे छे. आ प्रमाणे ते कथानो उपनय छे.

उपरनी कथा उपरथी समजवानुं ए छे के, रत्नद्वीपनी देवीमां दृढ कामनाने राखनार अने भोगस्पृहा करनार जिनरक्षित द्रव्य भाव बंने प्रकारना

समुद्रमां पड्यो अने विषयमां निरपेक्ष रहेनार जिनपाल श्री परमात्मानी सभामां यशनुं पात्र थयो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ चतुर्थव्रतविषये अष्टाशीतितमः प्रबंधः ॥ ८८ ॥

व्याख्यान ८९ मुं.

चोथा व्रतनो भंग थवाथी बीजा बधा व्रतोनो भंग थाय छे ते कहे छे.

व्रतानामपि शेषाणां, चतुर्थव्रतभंगके ।
शीलया भेदतामाहुः, तस्माद्दुःशीलतां त्यज ॥ १ ॥

व्याख्य.

" चोथा व्रतनो भंग थवाथी बाकीना बधा व्रतनो सहेज भंग थइ जाय छे तेथी हे जीव! तुं दुःशीलपणानो त्याग कर." चोथा व्रतनो भंग थतां बाकीना प्राणातिपात विरमण विगेरे चार व्रतोनो पण अवश्य भंग थाय छे ते विषे श्रीजिनेश्वर भगवंत कहे छे के—

स्त्रीनी योनिमां एक बे त्रण लाखथी मांडी उत्कृष्टा लक्ष पृथक्त्व बेइंद्रिय जीव उत्पन्न थाय छे. पुरुषनी साथे संयोग थतां जेम वांसनी भुंगळी रुथी भरी होय तेमां लोढानी तपावेली सळी नाखतां रु बळी जाय, तेम ते जीवोनी हिंसा थाय छे. वळी पंचेंद्रिय मनुष्य एवा एक पुरुषे भोगवेली स्त्रीना गर्भमां एक साथे उत्कृष्टा नव लाख गर्भज जीवो उत्पन्न थाय छे. ते नव लाख जीवमां जे विशेष आयुवाळा होय छे ते जीवे छे, बाकीना त्यांज विलय पामे छे. आवां ज्ञानीनां वचन उपरथी शीलव्रतनो भंग थतां प्राणातिपात विरमण नामे पहेलुं व्रत भंग थाय छे. तेम बीजुं मृषावादना त्यागरूप व्रत पण नाश पामे छे, कारण के कामीजन सत्यवादी होता नथी. ते विषे नीतिमां लखे छे के, ' वणिक, वेश्या, चोर, द्यूतकार, व्यभिचारी, द्वारपाळ अने कौल (नास्तिक) ए सात मृषावादना मंदिररूप छे. ' तेम त्रीजा व्रतनो भंग पण थाय छे. अहीं कोइ शंका करे के, ' पिता विगेरेनी आज्ञाथी परणेली स्त्रीनुं सेवन करतां त्रीजुं व्रत जे

अदत्तादानना त्यागरूप छे, तेनो भंग केम कहेवाय ?' तेना उत्तरमां कहे छे के, 'अब्रह्म (दुःशील) सेवन करवाथी तीर्थंकर अदत्त लागे छे, कारण के तीर्थंकरोए मुमुक्षु पुरुषोने सर्वथा अब्रह्म सेववानो निषेध कर्यो छे. वळी स्वामी जे मंडलाधिपति तेनुं पण अदत्त लागे छे. बाकीना बे प्रकारना अदत्त पोतानी मेळे तर्कथी जाणी लेवा.' ए प्रकारे त्रीजा व्रतनो पण भंग थाय छे. चोथा व्रतनो भंग तो खुल्लोज छे. पांचमुं जे परिग्रहना त्यागरूप व्रत तेनो भंग कर्या सिवाय स्त्रीनो संबंध थवोज संभवतो नथी. दंडकाचार ग्रंथमां लखे छे के, 'जे पोताना आत्माने स्त्रीना संगमां स्थापे छे, तेणे नव वाडने भांगी नाखी अने दर्शन गुणनो घात कर्यो समजवो. वळी तेनाथी बीजा सर्व व्रतोनो पण भंग थाय छे.'

आ प्रमाणे घणां दोषथी दूषित एवुं अब्रह्म (दुःशील) छे, एम जाणीने हे जीव ! तुं दुःशीलताने छोडी दे. हवे कोइ गृहस्थ छतां पण प्रथम वयथी ते यावज्जीवित ब्रह्मव्रतने पाळे छे ते विषे कहे छे के, "कोइ उत्तम पुरुष बाळवयथी मांडीने ते व्रतने आदरे छे. जेम एक दंपतीए शुक्लपक्ष अने कृष्णपक्षना नियमथी ब्रह्मचर्य पाळ्युं हतुं." तेनी कथा नीचे प्रमाणे छेः—

विजयशेठ ने विजयाराणीनी कथा.

कच्छदेशमां एक नगरने विषे अर्हद्दास नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने अर्हद्दासी नामे पत्नी हती. तेमने विजय नामे एक पुत्र हतो. ते गुरुनी पासे भणतो हतो. एक वखते ते विजये कोइ मुनिना मुखथी आ प्रमाणे शीलनुं माहात्म्य सांभळ्युं केः—

अमराः किंकरायंते, सिद्धयः सहसंगताः ।
समिपस्थायिनी संपत्, शीलालंकारशालिनां ॥ १ ॥

"जेओए शीलरूप अलंकारने धारण करेलो छे तेओने देवताओ सेवक थइने रहे छे, सिद्धिओ साथे आवी मळे छे अने संपत्ति तो समीपेज हाजर रहे छे." आवी देशना सांभळी विजये स्वदारासंतोष व्रत ग्रहण कर्युं, अने तेमां पण शुक्लपक्षमां तेनुं पण सेवन करवुं नहीं एवो नियम लीधो.

तेज नगरमां बीजो धनावह नामे श्रेष्ठी रहे छे. तेने धनश्री नामे स्त्री छे. तेनी पुत्री विजयाए एक वखते शीलनुं वर्णन सांभळी एवुं व्रत लीधुं के, 'कृष्णपक्षमां पोताना पतिने पण सेववो नहीं.' घुणाक्षर न्यायथी एवुं बन्युं के, तुल्य रूपवाळा ते विजय अने विजयानोज परस्पर संबंध थइ विवाह थयो.

विजया सोळ शृंगार सजी, नवीन भव्य वस्त्रो धारण करी हर्ष पामती एकांते पोताना पति पासे आवी. एटले विजये पोतानी ते सुलोचना प्रियाने कह्युं के, " अरे प्रिया ! तुं मारुं हृदय छे, तेमज मारो तुं जीव, श्वास अने प्राण छे; आ संसारमां प्राणीओने प्रियजन तेज संसारसुखनुं सर्वस्व छे. हे चकोराक्षी ! जो तारा जेवी प्रिया होय तो पछी स्वर्गसुखनुं शुं काम छे ? अने जो तारा जेवी प्रिया न होय तो स्वर्गनुं सुख पण शा कामनुं छे ? पण हे शुभे ! में पूर्वे एवो नियम लीधो छे के, शुक्लपक्षमां मन, वचन, कायाथी शील पाळवुं. तेना हवे मात्र त्रण दिवस बाकी छे, ते व्यतित थया पछी कृष्णपक्षमां आपणे रति-सुखने अनुभवशुं. " आ प्रमाणेनां पोतानां पतिनां वचनो सांभळी विजया अत्यंत ग्लानि पामी गइ. विजये ग्लानि थवानुं कारण पूछयुं, एटले ते बोली के, ' हे स्वामिन् ! मारे कृष्णपक्षमां शील पाळवानो नियम छे. ' ते सांभळतां विजयने घणो खेद थयो. त्यारे विजयाए कह्युं के, ' हे स्वामीनाथ ! तमे बीजी स्त्री परणीने तेनी साथे सुखभोग भोगवो, खेद करशो नहीं. पुरुषोने तो व्रधारे स्त्रीओ होय छे. वसुदवने बोंतेर हजार स्त्रीओ हती अने चक्रवर्त्तीने एक लाख ने बाणु हजार स्त्रीओ होय छे. ' ते सांभळी विजय बोल्यो के, " हे सुशीले ! मने आ वातमां कांइपण खेद थतो नथी; कारण के मारा मातापिताए मने दीक्षा लेतां लेतां बळात्कारे परणाव्यो हतो. वळी विषय सेववाथी कांइ आयुष्यनी वृद्धि थती नथी, तेमज तेथी जगतमां महत्व के सर्व जीवोमां आधिक्य प्राप्त थतुं नथी. केवळ ते मननी उत्सुकता मात्र छे, ते विषे श्रीविशेषावश्यक वृत्तिमां लखे छे के, ' प्रेतनी जेम स्त्रीने वळगी सर्व अंगने महान् प्रयास आपी प्राणी जे क्रीडा करे छे तेनाथी तेने सुखी केम कहेवाय ? ' वळी पशु पक्षीओ पण विषयने तो सेवे छे तो तेमां शुं तत्त्व छे ? हे सुंदरी ! आ जीवे देवताना भवमां असंख्याता वर्ष सुधी अगणित विषयो भोगव्या छे. ते विषे लोकप्रकाशमां कह्युं छे के, ' कल्पवासी देवताओने एकवार भोग भोगवतां बे हजार वर्ष वही जाय छे. तेवी रीते बीजा देवताओने पांचसो पांचसो वर्ष अनुक्रमे ओछा करवा, एटले पंनरसो वर्ष ज्योतिषीने, एक हजार वर्ष व्यंतरने अने पांचसो वर्ष भवनपतिने एकवार भोग भोगवतां वही जाय छे. ' हे कमळाक्षी ! आ संसारमां जे पुष्पमाळा, चंदन तथा स्त्री विगेरेनुं पुद्गलजनित सुख छे ते नाशवंत छे, अने बीजाना संयोगथी थयेलुं जे सुख ते वस्तुताए दुःखरूपज छे. कारण के ते मनना संकल्पथी अने उपचारथीज उत्पन्न थयेलुं छे. ते

श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कहे छे के, ' जेम आफरो चडे तथा संनिपात रोग थाय त्यारे क्वाथ विगेरे असत्य उपचार करे ते दुःखरूप थाय छे, तेम विषय-सुख ते प्रमाणे असत्य उपचार मात्र होवाथी दुःखरूपज छे. ' अर्थात् विषय-सुख ते क्वाथ, तथा डांभ देवानी चिकित्सानी जेम उपचारपणे सुखरूप लागे छे, पण ते दुःखरूप छे. पारमार्थिक सुख तो श्रीसिद्धपरमात्मानेज थाय छे. आत्मिक आनंदनो रोध करनार साता असाता वेदनीकर्मथी उपजेला संयोग वियोग स्वभाववाळा सुखने सुख कोण कहे ? ते विषे कह्युं छे के, साता अने असाता ए बंने सोनानी ने लोढानी बेडी पहेर्या तुल्य छे. खरुं सुख तो ते बंनेना विरहथीज प्राप्त थाय छे. लौकिक सुख देह ने इंद्रियनी अनुकूळतावडे गणाय छे, पण वास्तविक सुख देहना अभावथीज छे. माटे हे मृगाक्षी ! दुःखदायक विषयमां मारुं मन रुचि करतुं नथी. ते विषय उपर कह्युं छे के,—

विषस्य विषयाणां च, पश्यतां महदंतरं ।
उपभुक्तं विषं हंति, विषयाः स्मरणादपि ॥ १ ॥

" विष अने विषय ए बे वच्चे मोटुं अंतर छे, विष तो खावाथी मारे छे पण विषयो तो स्मरण मात्रथी मारे छे. " तेथी हे सुंदरी ! हवे गंगाना जळ जेवुं निर्मळ शीळ मारे त्रिविधे जन्मपर्यंत रहो. पण आपणे आ वृत्तांत आपणा माता पिताने जणाववो नहीं, छतां तेमांथी ज्यारे कोइ आ वृत्तांत जाणे तो पछी आपणे अवश्य दीक्षा लइशुं. " आवो निश्चय करी ते दंपती पोताना जीवितनी जेम शीलनुं रक्षण करवा लाग्या. बंने जणा रात्रे एक शय्यामां सुवे छे, तथापि तेओमांथी कोइने कामोद्दीपन थतुं नथी. हमेशां एकांतमां पण तेओ शीळगुणनुंज वर्णन कर्या करे छे. आ प्रमाणे भावचारित्र पाळतां तेमने घणो समय व्यतित थयो.

अन्यदा विमळ नामे कोइ केवळीमुनि चंपानगरीमां समवसर्या. तेमनी देशना सांभळीने जिनदास श्रेष्ठीए पूछ्युं के, ' भगवन् ! में एवो अभिग्रह लीधो छे के, मारे चोराशी हजार साधुओने पारणुं कराववुं. आ मारो मनोरथ क्यारे सफळ थशे ? ' केवळी बोल्या के, " एवा मुमुक्षु साधुओनो एक साथे योग शी रीते थाय ? कदि दैवयोगे तेटला साधुओ मळी जाय तोपण आकाशपुष्पनी जेम तेटला शुद्ध अन्नपाननी सामग्री मळवी ते दुर्लभ छे. तेथी हे श्राद्ध ! तुं कच्छ देशमां जा अने त्यां रहेला विजया अने विजय दंपतीनी भातपाणी विगेरेथी भक्ति कर, तेथी तने तेटलुं पुण्य थशे. कह्युं छे के, चोराशी हजार

साधुओने पारणुं करावतां जेटलुं पुण्य थाय तेटलुं पुण्य शुक्ल अने कृष्ण पक्षना शीलव्रतधारी एवा दंपतीने भोजन कराववाथी थाय छे." आ प्रमाणे सांभळी जिनदासे ते दंपतीनो वृत्तांत पूछयो, एटले केवळीए तेने सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. ते सांभळी जिनदास श्रेष्ठी भक्तिथी भरपूर हृदये कच्छ देशमां आव्यो, अने ते दंपतीनी अनिर्वाच्य भक्ति करी. तेमज नगरजनोनी आगळ तेमनुं दुश्चर चरित्र प्रगट कर्युं. ते वखते तेमना मातापिताए पण ते वात जाणी. श्रावक जिनदास धारेलो मनोरथ पूर्ण करी पोताने घेर गयो अने ते दंपती पण प्रतिज्ञा पूर्ण थवाथी दीक्षा लइ मुक्तिने प्राप्त थया.

आ प्रमाणे शीलना प्रभावथी ते दंपती, मुनिथी पण विशेष प्रशंसाने पात्र थया. तेथी सर्व भव्य प्राणीओए सौभाग्यनां हेतुभूत अने संसारदुःखनुं निवारण करनार शीलव्रतने सर्वदा पाळवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ चतुर्थव्रतविषये एकोननवतितमः प्रबंधः ॥ ८९ ॥

व्याख्यान ९० मुं.

हवे स्त्रीओमां अनेक दोष छे एम जाणीने आ चतुर्थ व्रत ग्रहण करवुं ते विषे कहे छे.

स्त्रीषु कापट्यमूलेषु, नरो धीमान् न विश्वसेत् ॥
वदंत्यन्यं गृहंत्यन्यं, तृप्तिर्न विषये कदा ॥ १ ॥

व्याख्या.

"कपटनुं मूळ एवी स्त्रीओनो बुद्धिमान् पुरुषे कदि विश्वास करवो नहीं. स्त्रीओ बीजाने बोलावे छे अने बीजाने स्वीकारे छे, तेने कदिपण विषयथी तृप्ति थती नथी." स्त्रीओने विषयमां कदिपण तृप्ति थती नथी ते उपर नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, "स्त्रीओने पुरुषथी बमणो आहार होय छे, चार गणी लज्जा होय छे, छ गणो व्यवसाय होय छे अने आठ गणो काम होय छे" आ श्लोकना भावार्थ उपर भर्तृहरि राजानुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

भर्तृहरिराजानी कथा.

अवंती नगरीमां भर्तृहरि नामे राजा हतो. तेना राज्यमां मुकुंद नामे एक निर्धन ब्राह्मण रहेतो हतो. तेणे लक्ष्मी मेळववाने माटे हरसिद्धि देवीनी आराधना करवा मांडी. देवीए संतुष्ट थइ तेने अल्प पुण्यवान् जाणीने अमर फळ आप्युं अने कह्युं के, 'तारा भाग्यमां अल्प पुण्यने लीधे द्रव्य नथी, माटे आ अमर फळ ले. आ फळनुं भक्षण करवाथी तुं घणुं जीवीश अने शरीरे निरोगी रहीश.' मुकुंद ते फळ लइने घेर आव्यो. पछी फळ खावानी इच्छा करतां तेने विचार थयो के, 'आ फळ मारे खाइने शुं करवुं, मारे तो वधारे जीववाथी उलटी हानि छे, तेथी जे जगतना आधारभूत होय तेने आपुं तो तेनी कृतार्थता थाय.' आ प्रमाणे विचारी तेणे अवंतीपति भर्त्तृहरिने ते फळ आप्युं. राजाए पोतानी पट्टराणी पिंगला उपर घणी प्रीति होवाथी तेने ते फळ आप्युं, अने तेनो समग्र प्रभाव जणाव्यो. राणीए पोतानो जारपति जे हाथीनो महावत हतो तेने तेनो प्रभाव जणावीने ते फळ आप्युं. महावते विचार्युं के 'मारे वधारे जीवीने शुं करवुं छे? माटे मारी प्राणप्रिया जे वेश्या छे तेने आपुं के जेथी ते मारी उपर प्रसन्न रहे.' आम विचारी तेणे वेश्याने आप्युं. वेश्याए चिंतव्युं के, 'मारे आ फळ खाइने शुं करवुं छे, माटे आ फळ सर्व प्रजाना नाथ भर्त्तृहरिने आपुं.' आम विचारी तेणीए ते फळ राजाने आप्युं. राजा भर्त्तृहरिए ते फळ ओळखी वेश्याने पूछयुं के, 'आ फळ तने क्यांथी मळ्युं?' राजदंडना भयथी वेश्याए यथार्थ हकीकत जणावी; एटले राजाए हाथीना महावतने बोलावीने पूछयुं. ताडनादिकना भयथी तेणे राणीनुं नाम आप्युं, एटले राणीने पूछयुं, परंतु तत्काळ भयथी विह्वळ बनेली राणी कांइ पण उत्तर आपी शकी नहीं. राजा स्त्रीने अवध्य जाणी संसारनी असारता विषे विचार करी आ प्रमाणे बोल्यो के—

यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता,
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोन्यसक्तः ॥
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या,
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च ॥१॥

"जे स्त्रीने माटे हुं हंमेशां चिंतवन करूं छुं ते स्त्री मारामां विरक्त छे अने ते बीजा पुरुषने इच्छे छे, ते पुरुष बीजी स्त्रीमां आसक्त छे अने ते स्त्री वळी मारे

माटे संतुष्ट थाय छे. माटे ते राणीने, ते जारने, कामदेवने, आ वेश्याने अने मने धिक्कार छे."

संमोहयंति मदयंति विडंबयंति,
निर्भर्त्सयंति रमयंति विषादयंति ॥
एता प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां,
किं नाम वामनयना न समाचरंति ॥२॥

"स्त्रीओ मोह उत्पन्न करे छे, मद चडावे छे, विडंबना करे छे, तरछोडी नांखे छे, रमाडे छे अने खेद करावे छे. अहो! सुंदर नेत्रोवाळी स्त्रीओ पुरुषोना दयाळु हृदयमां पेशीने शुं शुं नथी करती? सर्व करे छे." आ प्रमाणे विचारी राजा भर्तृहरिए माळवानुं राज्य तृणवत् छोडी दइ व्रत ग्रहण कर्युं अने योगी संन्यासीनो वेष लइ पृथ्वी उपर फरवा लाग्यो.

एक वखते पृथ्वीपर फरतां फरतां ते राजा कोइ वनमां रहेता तापसना आश्रममां गयो. तापसने नमी आगळ बेठो. तापसे राजा छतां तेनो अनादर कर्यो, एटले राजाए विचार्युं के, 'जरूर आ कोइ मायावी लागे छे, तेथी छुपी रीते आनी मायानुं अवलोकन करूं.' आवुं धारी राजा एकांते छुपो रह्यो. रात्रि पडतां ते तापसे पोतानी जटामांथी एक डाबली काढी. ते उघाडीने तेमां जलनी अंजळी छांटी एटले एक सुंदर स्त्री उत्पन्न थइ. तेनी साथे कामसेवन करी ते तापस सुइ गयो. पछी थोडीवारे ते स्त्रीए पोतानी वेणीमांथी एक डाबली काढी अने तेने जळनी अंजळी छांटी एटले तेमांथी देवकुमार जेवो एक पुरुष उत्पन्न थयो. तेनी साथे भोगविलास करी पाछी ते डाबली तेणे पोतानी वेणीमां गोपवी दीधी. पछी तापसे जागीने पण ते स्त्रीने डाबलीमां गोपवी दीधी. आ प्रमाणे तेनुं चरित्र प्रत्यक्ष जोइ राजाए चिंतव्युं के—

मत्तेभकुंभदलने भुवि संति शूराः,
केचित् प्रचंडमृगराजवधेपि दक्षाः ॥
किंतु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य,
कंदर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥३॥

"अहो! आ पृथ्वी उपर उन्मत्त हाथीओना कुंभस्थळने तोडी पाडनार शूरवीरो छे अने प्रचंड केशरीसिंहनो वध करनारा वीरो पण छे, परंतु मारे

तेवा बळवंतोनी आगळ आग्रहथी कहेवुं जोइए के, कामदेवना गर्वने तोडनारा तो विरला मनुष्योज छे." आ प्रमाणे विचारी राजा भर्तृहरि श्रीपुरनगरना उद्यानमां जइ कोइ वृक्षनी नीचे सुइ गयो.

आ अरसामां एवुं बन्युं के ते नगरनो राजा अपुत्र मृत्यु पामेलो होवाथी तेना मंत्रीओए पांच दिव्य प्रगट कर्या. ते अहीं सुतेला राजानी पासे आवीने उभा रह्या. मंत्रीओए नगरजन साथे त्यां आवी राजाने जगाड्यो अने राज्य लेवाने कह्युं. राजाए जणाव्युं के, 'मारे राज्यनुं कांइ पण प्रयोजन नथी.' नगरजनोए विनंतिपूर्वक कह्युं के, 'हे महाराज! आप आ राज्य स्वीकारो अने अमोने कृपा करीने जीवितदान आपो.' एटले राजाए दयार्थी ते राज्य स्वीकार्युं अने न्यायपूर्वक राज्य चलाववा लाग्यो. पछी सर्वजनोए बळात्कारे प्रथमना राजानी एक पुत्री हती ते तेने परणावी. ते नवयौवना राणी एक वखते राजमहेलना गोखमां बेठी हती, त्यां कोइ श्रेष्ठीनो सुंदर पुत्र तेना जोवामां आव्यो. तेने जोइ ते बाळाए कटाक्ष बाणवडे तेनुं हृदय घायल कर्युं. श्रेष्ठीकुमार पण ते राणीने मळवा उत्सुक थयो; तेथी ते इच्छा पूर्ण करवाने माटे एक पुरुषना प्रमाणनी अने सहस्र दीवाओनी श्रेणीवाळी पोली दीवी तेणे करावी, तेमां पोते पेठो अने संकेत करी राखेला पुरुषोए ते दीवी राजाने भेट करी. राजाए ते अंतःपुरमां मूकावी. पछी ज्यारे समय आव्यो त्यारे ते तेमांथी नीकळ्यो अने राणीनी साथे विषयभोग भोगवी पाछो तेमां पेशी गयो. एवी रीते हमेशां करवा लाग्यो. एक समये तेना वस्त्रनो दोरो दीवीना काष्टना सांधानी बहार रही गयेलो ते राजाना जोवामां आव्यो. तेने खेंचतां ते लांबो लाग्यो, एथी तेने तेमां कोइ जारपुरुष छे एवो निश्चय थयो. पण ते वखते ते कांइ बोल्यो नहीं.

पछी एक दिवसे पातानी पटराणीने हाथे रसवती करावी पेला योगीने भोजन करवाने निमंत्रण कर्युं. ते भोजन करवा आव्यो एटले तेनी आगळ छ पत्रावळी मांडी. तापस भोजन करवा बेठो, एटले राजाए कह्युं के, 'महाराज! तमारी जटामां रहेली स्त्रीने बहार काढो.' तापसे भयथी तेम कर्युं. पछी ते स्त्रीने राजाए कह्युं के, 'तुं पण तारी डाबलीमांथी पुरुषने काढ." स्त्रीए पण तेम कर्युं. पछी पोतानी राणीने कह्युं, 'तुं पण आ दीवीमांथी तारा पतिने बहार लाव, शामाटे तेने कारागृहमां राख्यो छे? तेनी साथे भोजन कर.' राणीए पण भयथी तेम कर्युं. पछी ते सर्वने भोजनादिवडे संतुष्ट करी अंतरमां उग्र वैराग्यने धारण करता राजा भर्तृहरिए सर्व मंत्री अने नगरजनोने बोला-

वीने जणाव्युं के, 'आवा विषयने धिक्कार छे.' पछी तेवी आघोषणा आखा नगरमां करावी. भर्त्तृहरिराजाए बीजीवार राज्य छोडी दइ निश्चळ शील व्रत ग्रहण कर्युं अने ते एकज व्रतना आराधनथी देवपणाने प्राप्त थयो. ए महाराजा भर्त्तृहरिनो रचेलो वैराग्यशतक ग्रंथ अद्यापि लोकमां विख्यात छे.

"मृगना जेवा लोचनवाळी स्त्रीओना चरित्र जोइने कयो पुरुष तेनाथी विरक्त न थाय? जुओ! राजा भर्त्तृहरिए पण पोताना अमरफळने जोइने योग धारण कर्यो हतो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ चतुर्थव्रतविषये नवतितमः प्रबंधः ॥ ९० ॥

"श्री चिंतामणि पार्श्वनाथना महिमावडे अने श्रीविजयसौभाग्यसूरिना प्रसादवडे पोताना गुरुभाइ प्रेमविजयने अर्थे श्री विजयलक्ष्मीसूरिए आ उद्यम कर्यो छे. तेनो छठ्ठो स्थंभ सोळ अधिकारवडे पूर्ण थयो."

"वर्षना दिवस जेटला अधिकारवाळा आ ग्रंथने रचतां जे पुण्यनी प्राप्ति थइ होय ते पुण्य–कर्त्ता कहे छे के–मारा कर्मना क्षयमाटे अने महोदयनी प्राप्तिमाटे थाओ."

इति षष्ठः स्तंभः समाप्तः ।



॥ सप्तमः स्तंभः ॥



व्याख्यान ६१ मुं.

हवे कामदेवथी अतृप्त एवी स्त्रीनो त्याग करनार पुरुष श्रेष्ठ छे ते कहे छे.

स्त्रीणां कामस्य वांछासु, संतोषो जायते नहि ।
तस्मात्तासु विरक्तत्वं, भजेत्स पुरुषोत्तमः ॥ १ ॥

व्याख्या.

"स्त्रीओने कामनी इच्छाओमां संतोष थतो नथी, तेथी स्त्रीओमां जे विरक्तपणुं राखे ते पुरुष उत्तम कहेवाय छे."

आ संबंधने विषे एक भिल्लनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे--

भिल्लनी कथा.

एक समये श्रीवीरप्रभु कौशांबी नगरीना उद्यानमां समवसर्या. ते खबर सांभळी चंडप्रद्योतन राजा अने शतानिक राजानी पत्नी मृगावती प्रभुनी देशना सांभळवा आव्या. भगवंत देशना आपवा लाग्या, तेवामां कोइ भिल्ल आवीने प्रभुने पूछयुं के, 'या सा?' अर्थात् 'जे हुं धारूं छुं ते ते?' प्रभु बोल्या. 'सा सा' एटले 'जे तुं धारे छे ते तेज छे.' आवो जवाब सांभळी गौतम गणधरे प्रभुने पूछयुं के, 'हे भगवंत! आ भिल्ले आपने शुं पूछयुं अने आपे शुं जवाब दीधो ते अमे कांइ समज्या नहीं.' प्रभु बोल्या-"हे गौतम! सांभळ. आ भरतक्षेत्रमां चंपा नामे नगरी छे. ते नगरीमां अनंग नामे एक सोनी रहेतो हतो. ते अत्यंत कामगृद्ध होवाथी जे जे रूपवती कन्या देखे तेने घणुं द्रव्य खर्चीने पण परणतो हतो. एम करतां तेने घेर पांचसो स्त्रीओ एकठी थइ. ते सर्वने तेणे सरखा आभूषणो कराव्या हता, परंतु जे दिवसे जेनो वारो होय ते दिवसे ते स्त्री सुंदर वेष पहेरी तेनीपासे आवती अने तेनी साथे ते सोनी क्रीडा करतो. बीजी स्त्रीओ तेनी आज्ञा प्रमाणे साधारण वेष धरीने रहेती हती. आ प्रमाणे तेमनो काळ निर्गमन थतो हतो. तेम करतां करतां अनुक्रमे एवुं थयुं के ज्यारे ते सोनी आडो अवळो जाय त्यारे बीजी स्त्रीओ हर्षथी शृंगार धारण करवा लागी, पण तेवा वखतमां कदापि जो ते आवी चडतो तो ते तेमने ताडन करतो

हतो. आवी रीते इर्ष्याना भरपूरपणावडे करीने ते स्त्रीओ उपर एवो अविश्वासी थयो के तेमांनी कोइ स्त्रीने कोइने घेर भोजन करवा पण मोकलतो नहीं. छेवटे तेमने माटे एकस्तंभवाळो आवास करावी तेमां तेमने राखी अने जेम भूत पीपळाना स्थानने छोडे नहीं तेम ते गृहद्वारने नहीं छोडतां त्यांज बेसी रहेवा लाग्यो. हत्याथी दग्ध थयेलानी जेम ते कोइने घेर जमवा जतो नहीं अने कोइने पोताने घेर जमवा लावतो पण नहीं.

एक वखते कोइ मित्र तेने आग्रह करी बळात्कारे भोजन करवा पोताने घेर तेडी गयो. त्यां ते पोताने शत्रुए कारागृहमां नाख्यो होय तेम मानवा लाग्यो. आ समयनो लाग जोइ तेनी स्त्रीओ हर्ष पामी अने तत्काळ तेमणे स्नान विलेपन करी सर्व अंगे वस्त्राभूषणो धारण कर्यां. पछी प्रीतिपूर्वक जेवी ते दर्पणमां पोताना रूपने जोती हती तेवामां ते पिशाचना जेवो क्रूर गृहपति सोनी आवी चड्यो. पोताना घरना द्वार पासे आवतांज स्त्रीओनी तेवी चेष्टा जोइने ते तेमनी उपर घणो गुस्से थयो; एटले तेमांथी एक स्त्रीने तेणे एवी मारी के ते तत्काळ यमराजना गृहनी अतिथि थइ गइ. ते देखाव जोइने सर्व स्त्रीओने एक साथे भय उत्पन्न थयो, तेथी तत्काळ तेमणे चिंतव्युं के, 'आ पापी आपणने पण आ स्त्रीनी जेम मारी नाखशे, माटे आपणे एकत्र थइने तेनेज मारीए.' आवो विचार करीने ते सर्व स्त्रीओए पोताना हाथमां रहेला दर्पण दूरथी तेनापर फेंक्या. समकाळे चारसो ने नवाणु दर्पणोना प्रहारथी ते सोनी मृत्यु पाम्यो. पछी सर्व स्त्रीओ पश्चात्ताप करी घर बाळी ते सोनीनी साथेज बळी मुइ.

ते चारसो ने नवाणु स्त्रीओ पश्चात्ताप अने अकामनिर्जराथी मृत्यु पामी कोइ अरण्यमां चोरकुळमां पुत्रपणे उत्पन्न थइ. अनुक्रमे ते सर्व लोकोने लुंटनारा महातस्कर थया. जे स्त्री पहेलां मरण पामी हती, ते कोइ गाममां दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे प्रगट थइ. अनुक्रमे ते पुत्र पांच वर्षनो थयो. पांच वर्ष सुधी पेला सोनीनो जीव तिर्यंच योनिमां भमी तेज दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. मातापिताए पेला पुत्रने आ बालिकानो पालक कर्यो. ते बालिका हंमेशां बहु रोती हती, थोडीवार पण रुदन करवाथी विराम पामती नहीं. एक वखते तेना बंधुए तेना उदर उपर हाथ फेरववा मांड्यो. एम करतां तेना गुह्यभागपर स्पर्श थइ जवाथी तत्काळ ते रोती बंध पडी अने हसवा लागी. आथी तेना बंधुए तेना रुदनने शांत करवानो उपाय मेळव्यो. त्यारथी ज्यारे ते बाळा रुवे के ते तेनी योनि उपर पोतानो हाथ अडाडतो, एटले तरतज ते शांत

थती. एक वखते आवो उपाय करतां ते पुत्रने तेना मातापिताए जोयो. तेथी तरतज तेने मारीने घर बहार काढी मूक्यो. त्यांथी वनमां जतां ते पुत्र पेला चारसो ने नवाणु चोरने मळ्यो, त्यारथी तेओ बराबर पांचसो थया.

पेली बाळा बाल्यवयथीज कुलटा थइ. एक वखते ते बाळा कोइ गामे गइ हती. ते दिवसे पेला चोरोए ते ग्राम लुंट्युं अने ते बाळाने पकडीने लइ गया, पछी सर्वेए मळीने तेने पोतानी स्त्री करी. ते एकली सर्वनी साथे भोग भोगववा लागी. अन्यदा केटलाएक चोरोए तेनापर दया आववाथी विचार्युं के, 'आ बाळा एकली जो सर्वेनी साथे निरंतर भोग भोगवशे तो जरूर ते मृत्यु पामी जशे; तेथी तेनी प्रीतिने माटे कोइ बीजी स्त्री हरी लावीए तो ठीक.' आवो विचार करी ते चोरो एक बीजी स्त्रीने हरी लाव्या. पछी सर्व चोरो ते बंने स्त्रीओनी साथे भोगसुख अनुभवता काळ निर्गमन करवा लाग्या. केटलाएक दिवसो गया पछी प्रथमनी स्त्री के जे घणी कामी हती तेणे पापबुद्धिथी विचार्युं के, "आ बीजी स्त्री मारा कामविलासमां विघ्न करनारी सपत्नी थइ छे, तो कोइ उपायवडे हुं तेने मारी नाखुं तो सारुं." आवो विचार करीने ते तेना छिद्र जोवा लागी. एक दिवसे एवुं बन्युं के, बधा चोरो धाड पाडवा गया, तेथी घर निर्जन थयुं, एटले ते इर्षाळु अने क्रोधीष्ट पापी स्त्रीए पेली सरळ स्त्रीने छेतरीने कोइ उंडा कुवामां नाखी दीधी. थोडीवारे पेला चोरो चोरी करीने आव्या अने पूछ्युं के, 'तारी सपत्नी बेन क्यां गइ छे?' ते बोली–'क्यां गइ ते हुं जाणती नथी.' चोरोए चिंतव्युं के, 'जरूर ते बिचारी मुग्धाने आ पापणिए मारी नाखी हशे.' ते समये पेला विप्रचोरे विचार्युं के, 'आ दुर्मति स्त्री मारी बेन तो नहीं होय? पण ते शी रीते जणाय? जो कोइ ज्ञानी आवे तो पूछी जोउं.' आ प्रमाणे ते चिंतवतो हतो तेवामां (श्रीवीरप्रभु कहे छे के) तेणे अमारुं आगमन लोको पासेथी सांभळ्युं, एटले तत्काळ ते अहिं आव्यो अने पोतानी बेन संबंधी प्रश्न करवामां लज्जा आवी, तेथी तेणे गूढ रीते पूछयुं, एटले तेनो उत्तर पण अमे गूढ रीते आप्यो.

आ प्रमाणे तेनुं वृत्तांत संभळावीने प्रभुए कह्युं के, 'हे भव्य प्राणीओ! आ संसारमां पांच इंद्रियो तेने वश थयेला प्राणीओने घणी विडंबना करे छे अने भवोभव संसारमां रखडावे छे.'

आवा वीरप्रभुनां वाक्य सांभळी ते विप्रे संवेग पामी प्रभुनी पासे चारित्र लीधुं. पछी ते चोरनी पल्लीमां गयो. त्यां ते विप्रमुनिए प्रतिबोध पमाडेला बीजा ४९९ चोरोए पण तेनी पासे व्रत ग्रहण कर्युं.

अहीं वीरप्रभुनी तथाप्रकारनी वाणी सांभळी मृगावती बोली के, 'हे स्वामी! चंडप्रद्योतन राजानी आज्ञाथी हुं पण दीक्षा लइश.' पछी तेणे चंडप्रद्योतन राजाने कह्युं के, 'हे राजेंद्र! जो मने आज्ञा आपो तो हुं श्रीवीरप्रभुनी पासे व्रत धारण करूं?' प्रभुना प्रभावथी वेर रहित थयेला चंडप्रद्योतने आज्ञा आपी, एटले मृगावतीए पोताना पुत्रने चंडप्रद्योतन राजाना उत्संगमां बेसारी श्रीवीरप्रभुनी पासे दीक्षा लीधी. ते समये चंडप्रद्योतन राजानी अंगारवती विगेरे आठ स्त्रीओए पण मृगावतीनी साथे दीक्षा लीधी. चंडप्रद्योतन राजाए मृगावतीना पुत्र उदयनने कौशांबीना राज्यउपर स्थापित कर्यो अने पोते पोताना अवंतिदेशमां चाल्यो गयो.

पेलो अनंगसेन सोनीनो जीव स्त्रीपणे उत्पन्न थइ कामना परवशपणाथी घणा भवोमां परिभ्रमण करशे.

'या सा' एवा शब्दवडे संदेहने पूछता एवा चोरने प्रभुए 'सा सा' एवो उत्तर आप्यो, तेथी प्रतिबोध पामी तेणे दीक्षा लइ बीजा चोरोने प्रतिबोध पमाड्यो अने तेओए पण व्रत ग्रहण कर्युं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
चतुर्थव्रतविषये एकनवतितमः प्रबंधः ॥ ९१ ॥

व्याख्यान ९२ मुं.

स्त्रीओ स्वभावथीज बहु कामी होय छे, छतां कोइ कोइ स्त्रीओ स्वीकार करेला व्रतने आपत्तिमां पण छोडती नथी.

आपद्रूपे म[illegible]त्यग्नौ । नयंति शीलकांचनं ।
नैर्मल्यं याः स्त्रियः काश्चित्ताः स्युः केषां न चित्रदाः ॥ १ ॥

व्याख्या.

'जे कोइ स्त्रीओ आपत्तिरूप मोटा अग्निमां शीलरूप सुवर्णने निर्मळ करे छे, तेवी स्त्रीओ कोने आश्चर्य न पमाडे?' आ विषे अंजना सतीनो प्रबंध छे, ते आ प्रमाणे—

अंजना सतीनी कथा.

जंबूद्वीपमां आवेला प्रल्हादन नामना नगरने विषे प्रल्हादन नामे राजा अने प्रल्हादनवती नामे राणी हती. तेमने पवनंजय नामे कुमार हतो. ते समये वैताढ्यगिरि उपर अंजनकेतु राजा अने अंजनवती राणीने अंजना नामे पुत्री थइ हती. ते यौवनवती थतां तेनुं पाणिग्रहण करावचाने अंजनकेतु राजा अनेक कुमारोना चित्रो पटउपर आळेखावी मंगावी तेने बतावतो हतो; तथापि कोइ कुमारना रूप उपर तेने प्रीति थती नहोती. एक वखते राजाए भविष्यदत्त अने पवनंजय कुमारना रूप चित्रपट उपर आळेखी मंगावी तेणीने बताव्या. बंने कुमारना कुल, शील, बळ अने रूप सुंदर जोइ ते चित्रो तेणे पोतानी पासे राख्या.

एक वखते राजा अंजनकेतु मंत्रीओनी साथे ते कुमारोना गुण विगेरेनो विचार करवा लाग्यो. तेणे मुख्य मंत्रीने पूछयुं के 'आ कुमारमां विशेष कोण छे?' मंत्रीए कह्युं "महाराज! भविष्यदत्त कुमारमां जो के घणा गुणो छे तथापि श्रीभगवंते कह्युं छे के, ते भविष्यदत्त अढार वर्षनी वये मोक्ष पामशे, तेथी ए आपणी कन्याने योग्य वर नथी; सर्व रीते आ पवनंजय कुमारज योग्य छे." आ प्रमाणे मंत्रीना कहेवाथी राजाए तेनी साथे अंजनाना लग्न निधार्या.

आ खबर पवनंजय कुमारने थतां ते रुपभदत्त नामना पोताना मित्रने साथे लइ अंजनानुं लावण्य तथा तेनो प्रेम जोवा माटे त्यां आव्यो. बंने नील वस्त्र धारण करी रात्रे गुप्त रीते श्वसुरगृहना अंतःपुरमां दाखल थया. त्यां मधुर आलाप थतो सांभळवामां आव्यो. कोइ सखी अंजनाने कहेवा लागी—'स्वामिनी! तमे छेवटे जे बे कुमारोना चित्र जोया हता, तेमां जे भविष्यदत्त छे ते गुणोथी अधिक अने धर्मज्ञ छे, पण ते अल्प आयुष्यवाळो छे एवुं जाणी तेने छोडी दीधो छे; अने बीजा पवनंजय दीर्घायु होवाथी तेनी साथे आपनो संबंध थयो छे.' ते सांभळी अंजना बोली, "सखी! अमृतना छांटा थोडा पण मीठा अने दुर्लभ होय छे, अने विष हजार भार होय तोपण ते कशा कामनुं होतुं नथी." ते सांभळी पवनंजय कुमार तेना उपर क्रोधायमान थइ खड्ग खेंचीने तेने मारवा तैयार थयो. तेने मित्रे वार्यो अने कह्युं, 'मित्र! आ वखते रात्री छे, आपणे पारके घेर आव्या छीए, वळी आ कुमारी कन्या छे, ज्यांसुधी तेने तमे परणी नथी त्यांसुधी ते परकीया छे, तेथी तेने हणवी योग्य नथी.' पछी बंने त्यांथी पोताने स्थानके चाल्या गया. त्यारथी पवनंजय तेनी उपर अत्यंत खेद वहन करवा लाग्यो.

पछी तेनी साथे पाणीग्रहण करवाने ते इच्छतो नहीं हतो, तथापि तेना पिता विगेरेए तेने मांडमांड समजावीने तेने परणाव्यो. परंतु चोरीमंडपमां पवनंजय कुमारे रागथी तेना मुख सामुं पण जोयुं नहीं अने परण्या पछी पण तेणीने तेणे बोलावी नहीं. आथी ते निरंतर दुःखी स्थितिने अनुभववा लागी. घणा उपाये पण तेने भर्त्तारनुं सुख प्राप्त थयुं नहीं. एवी रीते बार वर्ष वीती गया.

ए अवसरे प्रतिवासुदेव रावण वरुण विद्याधरने साधवा गयो हतो. त्यांथी तेनो एक दूत प्रह्लादन राजाने बोलाववा माटे आव्यो. प्रह्लादन राजाने त्यां जवा तैयार थता जोइ पवनंजय तेमनुं निवारण करी, तेमनी आशीष लइ, दृष्टिमार्गे रहेली अंजनानी सामुं पण जोया वगर त्यांथी चाली नीकळ्यो. प्रयाण करतां मार्गे मानससरोवर आव्युं, त्यां तेणे पडाव कर्यो. त्यां कमलवनने विकास पामेलुं जोइ ते आनंद पाम्यो. रात्रिए चक्रवाक पक्षीनी स्त्रीने करुण स्वरे विलाप करती तेणे सांभळी. ते आ प्रमाणेः—

आयाति याति पुनरेति पुनः प्रयाति ।
पद्मांकुराणि वितनोति धुनोति पक्षौ ॥
उन्मादति भ्रमति कुंजति मंदमंदं ।
कांतावियोगविधुरा निशि चक्रवाकी ॥ १ ॥

ते सूचवती हती के, "पतिना वियोगथी आतुर एवी आ चक्रवाकी रात्रीने विषे आवे छे, जाय छे, फरीवार आवे छे, कमलना अंकुरने ताणे छे, पांखो फफडावे छे, उन्माद करे छे, भमे छे अने मंदमंद बोले छे." आ प्रमाणे सांभळी तेणे पोताना मित्र ऋषभदत्तने तेनुं कारण पूछयुं, एटले ते बोल्यो के– 'मित्र ! दैवयोगे आ पक्षीओने रात्रे वियोगज थाय छे. आ पक्षिणी आम पोकार करती करती मृतप्राय थइ जशे अने प्रातःकाळ पडशे एटले तेनो पति ज्यारे तेने मळशे त्यारे पाछी ते नवीन देहवाळी थशे.'

आ वखते अंजनानुं पूर्वे बांधेलुं भोगांतराय कर्म क्षीण थइ गयुं, तेथी पवनंजयना मनमां तत्काळ एवो विचार आव्यो के, 'अरे ! मारी पत्नी अंजनाने छोड्या मने बार वर्ष वीती गया छे, तो ते वीचारीना ते वर्षो शी रीते व्यतीत थया हशे ? माटे चाल, अहींथी एकवार पाछो घेर जइ तेने मळी आवुं.' आम विचारी कुमार रात्रे गुप्त रीते पाछो घेर आव्यो; अने ते दिवसेज ऋतुस्नाता थयेली अंजनाने प्रेमपूर्वक भोगवी. पछी पोताना नामथी अंकित मुद्रिका तेने

निशानी माटे आपी ते पाछो पोताना कटकमां आव्यो. तेना गया पछी अनुक्रमे अंजनाने उदरवृद्धि थतां तेनी सासुए तेनापर कलंक आप्युं. तेणीए पोताना पतिना नामथी अंकित मुद्रिका बतावी. तथापि ते कलंक उतर्युं नहीं; अने तेने एक दासीनी साथे तेणे गृहनी बहार काढी मूकी. त्यांथी नीकळीने ते पोताना पिताने घेर आवी, परंतु त्यां पण कलंकनी वार्त्ता जाणीने तेणे तेने राखी नहीं; एटले तेणीए मात्र एक दासी साथे वनमां भटकवा मांड्युं. पूर्ण मास थतां तेणे एक पुत्रने जन्म आप्यो, अने मृगबालनी जेम ते तेनुं पालन करवा लागी.

एक वखते दासी जल लेवा गइ हती. त्यां तेणे मार्गमां एक मुनिने कायोत्सर्गे रहेला जोया. तेणे अंजनाने ते वात करी; एटले अंजना तेनी पासे जइ नमस्कार करीने बेठी. मुनिए कायोत्सर्ग पारी धर्मदेशना आपी ते सांभळी अंजनाए पोताने पडेला दुःखनुं कारण पूछयुं. मुनिए अवधिज्ञानथी तेनो पूर्वभव जणाव्यो के, “ हे अंजना ! कोइ गाममां एक धनवान् श्रेष्ठीनी तुं मिथ्यात्वी स्त्री हती. तारे एक बीजी सपत्नी हती. ते परम श्राविका हती. ते प्रतिदिन जिनप्रतिमानी पूजा करीने पछी भोजन लेती हती. तुं तेनी उपर द्वेष धारण करती सती हमेशां तेना अपवाद दर्शावती अने तेना मर्मनुं ऊद्घाटन करती हती. एक वखते तें तेनी जिनप्रतिमाने कचरामां संताडी दीधी; तेथी जिनपूजा कर्या वगर तेणीए मुखमां जळ पण नाख्युं नहीं, पण ते घणी आकुळव्याकुळ थइ गइ. एटले तेणे जेने तेने प्रतिमा विषे पूछवा मांड्युं तेवामां कोइए कचरामां रहेली प्रतिमा बताववा मांडी, पण तें बताववा न देतां तेनी उपर धुळ नाखी. एवी रीते बार मुहूर्त्त सुधी राखतां ज्यारे ते घणी दुःखी थइ, त्यारे तें दया लावी तेने प्रतिमा लावी आपी. ते पापथी तारे तारा पति साथे बार वर्षनो वियोग थयो हतो. हवे ते कर्म क्षीण थवाथी तारो मामो अहीं आवी तने पोताने घेर लइ जशे. त्यां तारो स्वामी पण तने मळशे. ” आ प्रमाणे मुनि कहेता हता तेवामां एक विद्याधर उपर थइने जतो हतो तेनुं विमान त्यां स्खलित थयुं. विद्याधरे तेनुं कारण जाणवा नीचे जोयुं, त्यां पोतानी भाणेज अंजनाने तेणे ओळखी; एटले तत्काळ नीचे उतरी दासी अने पुत्र सहित तेने पोताना विमानमां बेसाडी आकाशमार्गे चाल्यो.

अंजनानो बाळक घणो चपळ अने उग्र पराक्रमी हतो. तेथी चालता विमाननी घुघरीओनो नाद सांभळी ते बाळकने घुघरी लेवानुं कौतुक थयुं, तेथी तेणे घुघरी लेवा चपळताथी आगळ आगळ हाथ लंबाववा मांड्यो. एम करतां

अकस्मात् विमानमांथी ते नीचे पडी गयो. आ जोइ अंजनाने महा दुःख उत्पन्न थयुं. तेणे आक्रंद स्वरे रुदन करवा मांडयुं के, " अरे प्रभु ! आ शो गजब ! अरे हृदय ! शुं तुं वज्रथी घडायेलुं छे अथवा वज्रना जेवुं छे के पतिना वियोगे पण तुं खंडे खंड थइ गयुं नहीं; अने अत्यारे पुत्रवियोगे पण खंडित थतुं नथी ? आटले उंचेथी पडेलो पुत्र शुं बचवानो छे ? " आ सांभळी तेनी पछवाडे तेनो मामो भूमिपर उतर्यो. तेणे शिलाना चूर्ण (रेती) उपर पडेला बाळकने जेवो ने तेवो उपाडी लइ तेनी माताने आप्यो. पछी ते विद्याधरे पोताने घेर पहोंची अंजनाने बाळक सहित घेर मूकी पोतानुं कोइ कार्य करवा माटे अन्य स्थानके गयो.

अहीं पवनंजय वरुण विद्याधरने साधी घेर आव्यो. माता पिताने प्रणाम करी पोतानी पत्नीना वासगृहमां गयो. तो त्यां स्त्रीने जोइ नहीं. तत्काळ माता पिताने पूछयुं, त्यारे तेमणे कलंक लागवाथी काढी मूक्या संबंधी वार्त्ता कही. ते सांभळी पवनंजय विरहव्याकुळ थइ मरणने माटे चंदननी चिता रची बळवा तैयार थयो. ते समये तेना मित्र ऋषभदत्ते कह्युं, ' सखे ! जो त्रण दिवसमां अंजनाने न लावुं तो पछी तारे अवश्य चितामां बळवुं. ' आ प्रमाणे कही तेनुं निवारण करी ऋषभदत्त विमानमां बेसी आकाशमार्गे परिभ्रमण करतां त्रीजे दिवस सूर्यपुरे आवी पहोंच्यो. त्यां उपवनमां स्त्रीओनी तथा बाळकोनी गोष्टी थती तेणे सांभळी. ते वखते कोइ बाळके कह्युं, ' मित्रो ! अहीं अंजना नामे कोइ सुंदरी पुत्र सहित आवेली छे, ते आपणा राजा सूर्यकेतुनी सभामां दररोज आवे छे. ' आवा शब्दो अकस्मात् सांभळी ऋषभदत्त हर्ष पाम्यो अने तत्काळ तेने आवीने मळ्यो. अंजना तेने जोइ लज्जाथी नम्र मुख करीने पोताना मामानी पाछळ उभी रही. ऋषभदत्त पासेथी पतिना दिग्विजयनी तेमज तेना विरह-व्याकुळपणानी वार्त्ता सांभळी त्यां जवाने उत्सुक थइ. पछी तेणे मामानी आज्ञा लीधी. तेणे पण पुत्र सहित ऋषभदत्तने सोंपी, एटले ऋषभदत्त तेने लइ वेगथी पवनंजयना नगरमां आव्यो. तेना आव्याना खबर सांभळी पवनंजय घणो हर्ष पाम्यो, अने मोटा उत्सवथी तेणे स्त्री पुत्रने नगरप्रवेश कराव्यो. सर्व लोको पण परम आनंद पाम्या.

पवनंजय अने अंजना बन्ने दंपतीने प्रतिदिन प्रीतिमां वृद्धि थवा लागी. ते पुत्रनुं नाम तेमणे हनुमान् पाड्युं. ते अतुल बळवान् थयो. एक वखते वीशमा तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थना कोइ मुनिओ त्यां पधार्या. तेमनी देशना सांभळी पवनंजय अने अंजनाए वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पछी

महावीर हनुमान राजा थयो. ते अति हठीलो अने वाचाळ हतो, तेथी ते श्री-रामचंद्रनी सेनानो अध्यक्ष थयो, तथा महाबळवान् थयो. पवनंजय मुनि अने सती अंजना साध्वी निरतिचार व्रतने पाली स्वर्गे गया.

" आ प्रमाणे सती अंजनानुं सुंदर चरित्र सांभळी तेने हृदयमां धारण करीने भव्य प्राणीओए शीलना सुगंधथी हृदयने सुगंधी करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ शीलविषये द्वीनवतितमः प्रबंधः ॥ ९२ ॥

व्याख्यान ९३ मुं.

हवे स्त्रीओना अंग जोइने मोह पामे छे तेओने शिक्षा आपे छे,

वामांगीनां मुखादीनि, किं वीक्ष्य वीक्ष्य हृष्यसि ।
क्षणं हर्षमिषाद्दत्ते, श्वभ्रादिषु [1]रुजं पराम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" अरे मूर्ख ! सुंदर स्त्रीओना मुख विगेरे जोइने तुं शुं हर्ष पामे छे ? ते क्षणवार हर्ष आपवाना मिषथी नरकादिकमां महा मोटी पीडाने आपे छे. " आ विषे एवी भावना करवी के कवि स्त्रीना मुखने चंद्रनी उपमा आपे छे, पण ते श्लेष्म अने थुंक विगेरे निंद्य वस्तुओथी भरपूर छे. अने ते मुख रत्नप्रभादि नारकीना प्रयाणनुं मुख छे. स्त्रीना काळा केशनी वेणी मोक्षमार्गे जतां आडी सर्पिणीरूप छे. तेनो सुंदर सीमंत (सेंथो) सीमंत नामना नरकावासने आपनार छे. तेनी नासिका स्वर्गनी नाशिका (नाशकरनारी) छे. स्त्रीना बिंबाधरनुं पान करनार पोताने सर्वस्व मळेलुं माने छे, पण ते मिषे यमराज तेनुं आयुष्य पीवे छे ते जाणतो नथी. मूढ कामी तेना कुचकुंभने आलिंगन करी सुवे छे, पण ते तेनाथी थनारी कुंभीपाकनी वेदनाने भूली जाय छे. अज्ञ माणस स्त्रीने भुजानुं आलिंगन दइने सुवे छे अने तेमां बहु सुख माने छे, पण गर्भनी वेदना अने योनिमांथी नीकळतां थयेलां दुःखनुं तेने विस्मरण थइ जाय छे. आ सर्वनो विचार करीने जे वामांगीनो त्याग करे छे तेने खरेखरो विवेकी समजवो. कह्युं छे के,—

---

१ रुदं महत्—इत्यपि पाठः—तेनो अर्थ—महा रुदन करावे छे.

दर्शनात् स्पर्शनात् श्लेषात्, या हंति समजीवितं ।
हेयोग्रविषनागीव, वनिता सा विवेकीभिः ॥ १ ॥

"जे स्त्री दर्शनथी, स्पर्शथी अने आलिंगनथी समतारूप जीवितने हणे छे, ते सर्पिणी जेवी स्त्री विवेकी पुरुषोए तजी देवा योग्य छे." स्त्रीओना संसर्गथी थतुं दुःख तो सिंहादिकना संबंधथी थता दुःखथी पण अधिक छे. कह्युं छे के,—

निरंकुशा नरे नारी, तत्करोत्यसमंजसा ॥
यत्क्रुद्धा सिंहशार्दुलाः, व्याला अपि न कुर्वते ॥१॥

" निरंकुश थयेली स्त्री पोताना पुरुषउपर जे अघटित आचरे छे तेवुं क्रोधी थयेला सिंह, शार्दुल के सर्पो पण आचरता नथी." आ विषे सुकुमालिकानो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

सुकुमालिकानी कथा.

चंपापुरीमां जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने यथार्थ नामवाळी सुकुमालिका नामे राणी हती. राजा जितशत्रु तेनापर एटलो बधो आसक्त हतो के, ते राज्यादिकनी पण चिंता करतो नहीं. आवी राजानी वर्त्तणुकथी प्रधानवर्गे राजाने स्त्री सहित मदिरापान करावी अरण्यमां तजी दीधो अने तेना पुत्रने राज्य उपर बेसाड्यो. ज्यारे मद्यनो नीसो उतरी गयो त्यारे ते बंने राजा राणी विचार करवा लाग्या, 'अरे ! आपणे अहीं क्यांथी ? आपणी महा कोमळ शय्या क्यां गइ ? आपणा राजवैभवनुं शुं थयुं ?' आम विचारतां बंने त्यांथी आगळ चाल्या. थोडे दूर जतां सुकुमालिकाने तृषा लागी. तेना कंठ अने तालु सुकाइ गया. तेणे राजाने कह्युं, 'स्वामी ! मारा जीवितने बचाववा जळ लावी आपो.' राजा जळ लाववाने गयो, पण कोइ ठेकाणे जळ जोवामां आव्युं नहीं. पछी खाखराना पत्रनो पडीओ करी तेमां पोताना बाहुनी नसमांथी रुधिर काढी ते पडीओ पूर्ण भर्यो. ते लावी राणीने कह्युं के, 'प्रिये ! आ खाबोचीआनुं जळ अती मलीन छे, तेथी नेत्र मींचीने पी जा.' राणीए तेम करीने पान कर्युं. पछी जणवारे ते बोली—'स्वामी ! मने क्षुधा बहु लागी छे.' तेथी राजाए दूर जइ छरीवडे पोताना साथळनुं मांस छेदी तेने अग्निमां पकावी राणीनी पासे मूक्युं अने पक्षीनुं मांस कही तेणीने खवराव्युं. अनुक्रमे त्यांथी कोइ देशमां आवी पोताना आभूषणो वेची कांइक व्यापार करीने राजा तेनुं पोषण करवा लाग्यो.

एक वखते राणीए कह्युं, ' स्वामी ! ज्यारे तमे व्यापार करवा बहार जाओ छो त्यारे हुं एकली घरमां रही शकती नथी. ' आवां वचन सांभळी राजाए एक पांगला माणसने चोकीदार तरीके घरपासे राख्यो. ते पांगला माणसनो कंठ घणो मधुर हतो, तेथी राणी मोह पामी, अने तेने स्वामी तरीके स्विकार्यो. त्यारथी सुकुमालिका पोताना पतिने मारवाना छिद्रो जोवा लागी. एक वखते राजा राणीने लइने वसंतऋतुमां जलक्रीडा करवा माटे गंगातटे गयो. राजाए मधुपान कर्युं. ज्यारे राजा बेभान थयो, त्यारे राणीए तेने गंगाना प्रवाहमां वहेतो मूकी दीधो. पछी राणी सुकुमालिका पेला पांगलाने स्वेच्छाथी गायन करावती कांधउपर बेसाडी भीख मागती भमवा लागी. ते जोइ लोको तेने पूछवा लाग्या के, ' आ कोण छे ? ' त्यारे ते कहेती के, ' मारा मातापिताए आवो पति जोयो छे, एथी तेने स्कंध उपर वहन करुं छुं. '

अहिं जितशत्रु राजाने गंगामां तणातां एक काष्ट प्राप्त थयुं. तेना योगे ते तरीने बहार नीकल्यो. अने नदी कीनारे कोइ एक वृक्षनी तळे सुइ गयो. ते समये समीपे आवेला कोइ नगरनो राजा गुजरी गयो, तेथी तेना मंत्रीओए पंचदिव्य कर्यां, ते त्यां आवीने उभा रह्या. एटले राजाने जागृत करी मंत्रीओए राज्य उपर बेसार्यो. दैवयोगे पेली सुकुमालिका पंगुने लइने तेज नगरमां आवी चडी. ते बंने सतीपणाथी अने गीतमाधुर्यथी ते नगरमां विख्यात थया. तेनी विख्याति सांभळी राजाए तेमने पोतानी पासे बोलाव्या. तेने जोतांज राजाए ओळखी लीधा. तेथी ते बोल्यो के, ' हे बाइ ! आवा बिभत्स पांगळाने उपाडीने तुं केम फरे छे ? ' ते बोली ' मातापिताए जेवो पति आप्यो होय तेने सतीओए इंद्रना जेवो मानवो. ' ते सांभळी राजा बोल्यो–' हे पतिव्रता ! तने धन्य छे. पतिना बाहुनुं रुधिर पीधुं अने साथळनुं मांस खाधुं, तोपण छेवटे गंगाना प्रवाहमां नाखी दीधो. अहो ! केवुं तारुं सतीपणुं ! ' आ प्रमाणे कही ते न्यायी राजाए स्त्रीने अवध्य जाणी पोताना देशनी हदपार करी, अने आवुं प्रत्यक्ष स्त्रीचरित्र जोइ तेणे सर्व स्त्रीओनो त्याग करवारूप महाव्रत लीधुं.

" सुकुमालिकानुं चरित्र जोइ जितशत्रु राजा विषयसुखथी विरक्त थयो अने कामक्रोधादि शत्रुओनो जय करी तेणे पोतानुं जितशत्रु नाम सार्थक कर्युं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ
स्त्रीत्यागविषये त्रिनवतितमः प्रबंधः ॥ ९३ ॥

व्याख्यान ९४ मुं.

स्त्रीजाति अनेक गुणनी हानि करे छे ते कहे छे.

गुणिनां गुणतो भ्रंशं, कर्तुं कूटं रचेद्बहुं ।
या सा परिहर्त्तव्या, विघ्नकर्त्री शुभे पथि ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जे स्त्री गुणी पुरुषोने गुणमांथी भ्रष्ट करवा बहु कपट रचे छे तेवी स्त्रीने शुभ मार्गमां विघ्न करनारी जाणी दूरथी छोडी देवी. " लौकिकमां गुणी पुरुषो शंकर विगेरे कहेवाय छे. तेने तेमनी स्त्रीए भीलडीने रुपे मोहित कर्या हता. ते स्त्रीनां वचनथी नृत्य करता शंकर देवताने हास्य करवा योग्य बन्या हता. सेवाळ अने जळमात्रना आधारवडे निर्वाह करनारा तापसो पण स्त्रीओना विलासथी भ्रांत थइ शीलभ्रष्ट थयेला छे. ते विषे तेमना शास्त्रमां कहेल छे के—

सुगुप्तानामपि प्राय, इंद्रियाणां न विश्वसेत् ॥
विश्वामित्रोपि सोत्कंठः, कंठे जग्राह मेनका ॥ १ ॥

" इंद्रियो भले प्रकारे गोपवेली होय तोपण तेनो विश्वास करवो नहीं. कारणके विश्वामित्र जेवाए पण उत्कंठित थइने मेनकाने ग्रहण करी हती. " ते विषे नीचे प्रमाणे कथा अन्य शास्त्रमां छेः —

महाशय विश्वामित्र शूष्क फळ अने जळनो आहार करी सूर्य सामे नेत्र राखी तपस्या करता हता, तेथी तेमनामां नवुं स्वर्ग वसाववानी शक्ति उत्पन्न थइ हती. आ खबर इंद्रने थवाथी तेणे तेमने तपथी भ्रष्ट करवा मेनकाने त्यां मोकली. मेनकाना विविध विलासथी मुनि ध्यानभ्रष्ट थया अने तीव्र अनुरागवडे तेने भोगवी. चिरकाळ ध्यानभंग स्थितिमां रहेतां पाछुं चैतन्य प्राप्त थवाथी जागृत थयेला मुनिए मेनकाने पूछ्युं के, 'तमे मारुं ध्यान भंग कर्युं तेने केटलो समय व्यतीत थयो ? ' मेनका बोली—' नवसो अने सात वर्ष नव मास अने त्रण दिवस वीती गया. ' आवी रीते वारंवार अप्सराओ मोकलीने इंद्रे तेमना तपनो भंग कर्यो हतो. जेथी ते शक्तिहीन थइ गया हता. ते विषे विस्तारथी वृत्तांत महाभारतमांथी जाणी लेवो.

वळी लोकोत्तर (जैन) शास्त्रमां पण आषाढभूति, आर्द्रकुमार अने अरणिक विगेरे गुणवान् मुनिओ स्त्रीओनी रचेली कपटजाळमां पडेलानां दृष्टांतो

छे, तेथी तेवी स्त्रीओ त्याग करवा योग्यज छे. वली वल्कलचीरीए पण स्त्रीसंगमां घणा दोषो जाणी तेनो त्याग कर्यो हतो. तेनो प्रबंध आ प्रमाणे—

श्री वल्कलचीरी मुनिनो प्रबंध.

पोतनपुरनामना नगरमां सोमचंद्र नामे राजा हतो, तेने धारिणी नामे पत्नी हती. एक वखते धारिणी पोताना पति सोमचंद्रना माथाना केश कांचकीथी ओळती हती, ते वखते मस्तकपर श्वेत केश जोइ बोली के—'हे स्वामी! आ जरावस्थानो दूत आव्यो.' राजा पोताने आवेला धोळा केशने जोइने विचारवा लाग्यो के, 'मारा वृद्ध वडिलोए तो यौवन वयमां व्रत ग्रहण करेलुं छे, मने धिक्कार छे के हुं अद्यापि माथे पळी आव्या तोपण धर्म आचरतो नथी.' ते सांभळी राणी बोली-'हे स्वामी! हजुपण धर्मकार्यमां विलंब करो नहीं.' ते सांभळी राजा सोमचंद्रे पोताना पुत्र प्रसन्नचंद्रने राज्य उपर बेसाडी तत्काळ तापसव्रत धारण कर्युं. धारिणी राणी गर्भवती हती, तथापि एक धात्रीने साथे लइ पति साथे चाली नीकळी. समय पूर्ण थतां अनुक्रमे धारिणीने पुत्र थयो, परंतु प्रसवनी उग्र पीडामां ते मृत्यु पामी; एटले सोमचंद्र तापसने चिंता थइ पडी के हवे आ माता वगरनो पुत्र शी रीते उछरशे? स्वर्गमां गयेली देवी धारिणी अवधिज्ञाने पोताना तापसपतिनी चिंता जाणी भेंशनुं रुप लइ त्यां आवी अने पोताना बाळकने धवराव्यो. एवी रीते देवमाता अने धात्रीए पालन करेलो ते बाळक मोटो थयो. तेना तापसपिताए ते बाळकने वल्कल[1] वस्त्रोमां वींटाळी तेनुं वल्कलचीरी एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे त्रण वर्षनो थयो त्यारे भेंशरूपे आवेली पूर्व भवनी माता देवलोकमां चाली गइ. पछी तापसे वनफळ तथा धान्यथी पोषण करेलो ते बाळक अनुक्रमे सोळ वर्षनो थयो. ते पुत्र मात्र 'तात, तात' एटलुंज बोलतो अने तेना पिताने नमस्कार करतो हतो. तेमज वनफळ लावी पितानुं पोषण करतां शीख्यो हतो.

एक वखते प्रसन्नचंद्र राजा कोइ भिल्लना मुखथी पोताना सहोदरनो प्रबंध सांभळी तेने मळवाने उत्सुक थयो; तेथी तेणे वेश्याओने बोलावीने कह्युं के, 'तमे कोइपण उपाये लोभावी मारा बंधुने अहीं लावी आपो. पण तमारे तेने दूरथी जोवो, नहीं तो सोमचंद्र तापस तमने शापथी भस्म करशे.' आवां तेनां वचनथी ते वेश्याओ तापसोनो वेष लइ सोमचंद्र तापसना आश्रम पासे आवी. वल्कल-

१ झाडनी छालना बनावेला वस्त्रो

चीरीए तेमने दूरथी आवती जोइ एटले तेणीओ तापसरूपे होवाथी तेमने तापस जाणी तेणे नमस्कार कर्यो. पछी वनमांथी लावेला फळ तेमना आहारने माटे आगळ धर्यां. ते फळोने जोइने कपटमुनिओ बोल्या, ' महाराज ! आवां निरस फळोने अमे शुं करीए ? अमारे तो पोतनपुरनां फळो जोइए. हे मुनि ! तमे अमारा आश्रमना फळनी वानकी जुवो. ' एम कही ते कपटी वेश्याओए तेने एकांतमां बेसाडी खांड, साकर अने द्राक्ष विगेरे मधुर मेवा विगेरेनो आग्रहथी आहार कराव्यो. ते मधुर फळना स्वादथी हर्ष पामी ते मुनि बीला, आंमली अने कोठांनां फळो जे पोते खातो हतो तेना स्वादमां उद्वेग पाम्यो. जेम जेम ते मुनि लोभायो तेम तेम तेओ विशेष स्वादवाळी वस्तुओ तेने खावा आपवा लागी. पछी ते मुनिना हाथने पोताना स्तन अने कोमळ गाल विगेरे उपर मूक्यो. तेथी ते तापस बोल्यो के ' महाशय ! तमारुं शरिर आवुं कोमळ केम छे ? अने आ तमारा हृदय उपर बे वेदिका शेनी छे ? ' ते बोली–' अमारा पोतन आश्रमना फळोनुं आस्वादन करवाथी आवां अंग थाय छे; तेथी तमे पण आ आश्रमने छोडी पोतनाश्रममां आवो. ' पछी वल्कलचीरी तेमनी साथे त्यां जवानो संकेत करी पोताना पात्रो एकांते गोपवीने फरीवार तेमनी पासे आव्यो. कह्युं छे केः––

तावन्मौनी यति र्ज्ञानी, सुतपस्वी जितेंद्रियः ।
यावन्न योषितां दृष्टि–गोचरे यांति पुरुषः ॥

" ज्यांसुधी पुरुष सुंदर स्त्रीओने दृष्टिगोचर थयो नथी त्यांसुधी ज ते मुनि, यति, ज्ञानी, तपस्वी अने जितेंद्रिय रहे छे. " आ समये सोमचंद्रऋषि आम तेम फरतां त्यां आवता हता, तेमने दूरथी आवता जोइ अगाउथी संकेत करी वृक्ष उपर राखेला पुरुषोए ते स्त्रीओने तेवा खबर आप्या, एटले तत्काळ तेओ शापना भयथी नाशी गइ अने राजानी आगळ आवीने ते वृत्तांत जणाव्यो. ते सांभळी राजाए " अहो ! मारो बंधु बंनेथी भ्रष्ट थयो, तेथी तेना शा हाल थशे ? " आवुं चिंतवी तेनी दिलगीरीमां आखा नगरमां गीत नृत्यादिकनो प्रतिषेध कर्यो.

हवे अहिं वल्कलचीरी वनमां भमतो हतो, त्यां कोइ रथवाळाए तेने दीठो, एटले तेणे पूछयुं के–' मुनि ! तमे क्यां जाओ छो?' ते बोल्यो, ' हुं पोतनाश्रममां जवा इच्छुं छुं. ' एटले रथवाळाए कह्युं के–' हुं पण त्यांज जउं छुं. '

वल्कलचीरी रथनी पछवाडे पछवाडे चाल्यो. ते रथमां रथवाळानी स्त्री

बेठी हती तेने मुनि ' हे तात ' ' हे तात ' एम कहेवा लाग्यो. त्यारे ते स्त्रीए तेना पतिने कह्युं के, ' आ मुनि स्त्री पुरुषनो भेद पण जाणतो नथी. ' पछी रथिके तेने मुग्ध जाणी मोदक खावा आप्या. तेनो स्वाद लइ मुनि बोल्या ' अहो जाणवामां आव्युं, आ फळ पूर्वे मने पेला महाशयोए आप्या हता तेज छे. ' पछी आगळ जतां रथिके एक चोरने युद्ध करी जीती लीधो. चोरे रथिकने घणुं धन आप्युं. ते लइ रथिक पोतनपुरमां आव्यो. त्यां रथीए मुनिने कह्युं के, ' हे बाळमुनि ! आ धन ल्यो. धन वगर अहींआ स्थान भोजन मळशे नहीं. ' पछी तेने केटलुंक धन आपी " आ पोतनाश्रम छे " एम कही ते रथिक त्यांथी चाल्यो गयो.

हवे बालमुनि नगरमां चाल्यो. त्यां दुकानोनी श्रेणी अने हवेलीओ जोइ विचार करवा लाग्यो के 'हुं क्यां आव्यो? आ आवुं शुं हशे ?' वळी मार्गे कोइ नर के नारी मळे तो ते तेने ' तात ! वंदन करुं छुं. ' एम कहेवा लाग्यो. लोको तेने तेम करतां जोइने हसवा लाग्या. आम करतां कोइ वेश्या तेना जोवामां आवी, एटले तेने मुनि जाणी मूल्य आपीने निवास तथा फळादिकनी तेणे याचना करी. तेणीए तेने पोताना घरमां बोलावीने अभ्यंग स्नान कराव्युं. मुनिए उपसर्गनी जेम ते सहन कर्युं. पछी तेणीए तेनी साथे पोतानी पुत्रीनुं पाणिग्रहण कराव्युं. सोमचंद्रना पुत्र बालमुनि वेश्याना गीत नृत्य सांभळी अने जोइ चिंतवन करवा लाग्या के, ' आ बधा शुं भणे छे ? तेओ मने फळ केम आपता नथी ? ' आ वखते राजाए ते वेश्याने घेर थतो मृदंग ध्वनि सांभळ्यो, तेथी तत्काळ तेने बोलावी राजाए पूछयुं के–' मारे घेर शोक छतां तुं वाद्य केम वगाडे छे ? ' वेश्या बोली–' दैवज्ञ (जोषी) ना वचनथी में एक तापसकुमारने कन्या आपी छे, तेना हर्षमां मारे त्यां वाद्य वागे छे. ' आ वार्त्ता सांभळी तेज वखत राजानुं दक्षिण अंग फरक्युं, तेथी तेने निश्चय थयो के, ' जरुर मारो बंधुज त्यां आव्यो हशे. ' आथी राजा तरत ते वेश्याने घेर गयो. त्यां पोताना अनुज बंधुने जोइ राजाए प्रेमथी तेनुं विवाहमंगळ कर्युं अने पोताना बंधुने ते स्त्री सहित दरबारमां लाव्यो. अनुक्रमे ते सर्व कळामां कुशळ थयो. पछी राजाए आ वृत्तांत पोताना पिता सोमचंद्रने जणाव्यो, तेथी ते शोक रहित थयो.

हवे राज्यमां रहेतां अने स्त्री साथे विषयसुख भोगवतां वल्कलचीरीने बार वर्ष वीती गया. एकदा अर्धरात्रे जागृत थतां वल्कलचीरीने विचार आव्यो के, 'अहो! मारा अकृतज्ञपणाने धिकार छे अने मारा अजितेंद्रियपणाने पण धिकार

छे, के जेथी हुं मारा पिताने भूली जइने अहीं पड्यो रह्यो छुं.' आ प्रमाणे विचारीने ते पोताना पिताने जोवा अति उत्सुक थयो. तेथी प्रातःकाळे भाइनी आज्ञा लइने पिता पासे जवा चाल्यो. वडील भाइ पण लघु बंधुनी साथे जवाने तैयार थयो. बंने भाइए वनमां जइ पिताने प्रणाम कर्यो. सोमचंद्रमुनिए पोताना लघु पुत्रने उत्संगमां बेसाडी तेना सर्व समाचार सांभळ्या. ते वखते हर्षनां अश्रु आवतां तेमना नेत्रना पडळ उतरी गया. पछी वल्कलचीरी पूर्वे गोपवी राखेला तापसपणाना उपकरणो काढी तेने उत्तरीयवस्त्रना छेडाथी संमार्जन करतां विचारमां पड्या के, 'अहो ! में पूर्वे आवुं जोयु छे.' ए प्रमाणे उहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेणे पोतानो पूर्व भव दीठो, एटले तेणे जाण्युं के–'अहो ! गत भवमांज मूकेलुं साधुपणुं पण मारा जाणवामां आव्युं नहीं, माटे स्त्रीविषयना लंपटपणाने धिक्कार छे.' आ प्रमाणे शुभ ध्यान ध्यातां तेने त्यांज केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. तेनी देशनाथी तेना पिताए पण दीक्षा लीधी, अने प्रसन्नचंद्र ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करी घेर गया.

प्रत्येकबुद्ध वल्कलचीरी मुनि श्री वीरप्रभुनी पासे गया अने अनुक्रमे कर्म खपावीने मोक्षे गया. एवी रीते वल्कलचीरी मुनि पोताना आत्मप्रदेशने लागेली कर्मनी वर्गणानुं तापसपणाना वल्कलादि उपकरणोनी रजनी साथे मार्जन करी द्रव्य अने भावथी रजपणाने दूर करता सता कामदेवने जीतनारा अने प्रत्येकबुद्ध थया.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
स्त्रीसंगत्यागविषये चतुर्नवतितमः प्रबंधः ॥ ९४ ॥

व्याख्यान ९५ मुं.

मातरं स्वसुतां जामिं, रागांधो नैव पश्यति ।
पशुवद्रमते तत्र, रामापि स्वसुतादिषु ॥ १ ॥

व्याख्या.

"कामरागथी अंध थयेलो पुरुष माता, पुत्री के बेनने पण जोतो नथी, तेनी साथे पशुनी जेम रमे छे; जेम पशु पोतानी माता विगेरेनी साथे अवि-

वेकीपणाने लीधे स्वेच्छाए क्रीडा करे छे, तेवी रीते कामांध एवो पुरुष के स्त्री पण अविवेकीपणे पुत्रपुत्र्यादिमां प्रवर्त्ते छे." आ विषे अढार नातरानो प्रबंध कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे—

अढार नातरानो प्रबंध.

मथुरापुरीमां कामदेवनी सेना जेवी कुबेरसेना नामे एक वेश्या हती. ते प्रथम गर्भना भारथी खेदित थइ त्यारे तेणे पोतानी माताने ते दुःख जणाव्युं. माताए कह्युं, 'वत्से! तारो गर्भ पाडी नाखुं जेथी तने खेद दूर थाय.' वेश्या बोली के, 'तेम करवुं तो अयुक्त छे.' पछी समय आवतां तेणीए एक पुत्र अने पुत्रीने जन्म आप्यो. ते वखते तेनी माता बोली के, "वत्से! आपणो उद्यम मात्र यौवन उपर छे, अने आ बे स्तनपान करनारां बाळको तारा यौवनने हरी लेशे. कह्युं छे के–'वेश्या जाति यौवन उपर जीवनारी छे, तेथी तेणे जीवनी पेठे यौवननी रक्षा करवी.' माटे आ जोडलाने विष्टानी जेम बहार त्यजी दे." वेश्याए ते स्वीकार्युं. पछी दश दिवस सुधी तेनुं पालन करी, कुबेरदत्त अने कुबेरदत्ता एवा बे नामथी अंकित बे मुद्रिका करावी तेमनी आंगळीमां पहेरावी, अने तेमने एक पेटीमां पूरी ते पेटी यमुनानदीना प्रवाहमां वहेती मूकी दीधी.

जळना तरंगोना प्रवाह साथे तणाती तणाती ते पेटी सौर्यपुर समिपे आवी. त्यां कोइ बे गृहस्थ श्रेष्ठीओए ते पेटी ग्रहण करी अने ते बाळकोने बंने श्रेष्ठीए पुत्र पुत्रीपणे राखीने मोटा कर्यां. अनुक्रमे ज्यारे तेओ यौवनवयने प्राप्त थया त्यारे ते बंनेने परस्पर योग्य जाणी तेमनो मोटा उत्सवथी विवाह कर्यो. ए दंपती परस्पर अति स्नेहथी रहेवा लाग्या.

एक वखते तेओ सोगठाबाजी रमता हता तेवामां कुबेरदत्तना करमांथी नीकळीने पेली नामांकित मुद्रिका कुबेरदत्ताना उत्संगमां पडी. ते लइने जोतां कुबेरदत्ता विचारमां पडी अने बोली के, 'आ बंने मुद्रिका आकृति विगेरेथी तुल्य छे तेथी एम जणाय छे के आपण बंने सहोदर युगलीआ हइशुं, परंतु दैवयोगे आपणो विवाह थइ गयो छे.' पछी ते बंनेए जइने पोतपोतानी माताने पूछ्युं त्यारे माताए तेमनो पूर्व वृत्तांत जणाव्यो. ते सांभळी बंने बोल्या के, 'हे माता! तमे आवुं अकृत्य केम कर्युं?' माता बोली–'वत्सो! हजु तमारुं मात्र पाणिग्रहणज थयुं छे, बीजुं कांइ पाप थयुं नथी, तेथी ए संबंध त्यजी द्यो.' कुबेरदत्तने कह्युं के, 'तुं व्यापार करवा माटे परदेश जवा इच्छे छे तो हाल

परदेश जा. त्यांथी कुशळक्षेम पाछो आव्या पछी तारो बीजी स्त्रीनी साथे विवाह करशुं.' ते सांभळी कुबेरदत्ताने पोतानी बेन गणी, वेचवा माटे अनेक प्रकारना करियाणा लइने कुबेरदत्त मथुरापुरीए गयो. अनुक्रमे केटलेक दिवसे त्यां पेली कुबेरसेना वेश्यानी साथेज तेने संबंध थयो. तेनी साथे सुखभोग भोगवतां तेनाथी एक पुत्र उत्पन्न थयो.

अहीं कुबेरदत्ताए विषयविरक्त थइने दीक्षा लीधी. उग्र तपस्या करतां तेने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं, तेथी तेणे कुबेरदत्तने मातानी साथे विलास करतो जोयो. तेने प्रतिबोध करवा माटे ते साध्वी मथुरापुरी आव्या अने तेना घरनी नजीक आवेला एक उपाश्रयमां निवास कर्यो. त्यां रहीने तेणीए धर्मदेशना आपी. एक वखते ते वेश्यानो पुत्र पारणामां सुतो सुतो रोतो हतो, तेने साध्वी आ प्रमाणे हुलरावती सती हालरडां गावा लागी. ते विषे श्री परिशिष्टपर्वमां लख्युं छे के:—

" हे वत्से ! रो नहीं, तुं मारो भाइ थाय छे, पुत्र थाय छे, दीयर थाय छे, भत्रीजो थाय छे, काको थाय छे, अने पुत्रनो पुत्र थाय छे. हे बाळक! जे तारो पिता छे ते मारो सहोदर बंधु थाय छे, पिता थाय छे, पितामह थाय छे, स्वामी थाय छे, पुत्र थाय छे, अने सासरो थाय छे. हे बाळक ! जे तारी माता छे ते मारी माता थाय छे, मारा पितानी माता थाय छे, भोजाइ थाय छे, वहु थाय छे, सासु थाय छे अने सपत्नी थाय छे."

ते सांभळी कुबेरदत्त बोल्यो के, 'हे साध्वी ! आवुं अघटित केम बोलो छो ?' साध्वीए कह्युं के. " सांभळो, आ बाळक मारो सहोदर बंधु थाय छे, कारण के अमे बे एक उदरथी उत्पन्न थया छीए, वळी आ बाळक मारा पतिनो पुत्र होवाथी मारो पण पुत्र थाय छे, तेमज मारा पतिनो अनुजबंधु होवाथी मारो दीयर पण थाय छे, वळी ते मारा भाइनो पुत्र छे तेथी मारो भत्रीजो पण थाय छे, तथा ते मारी माताना पतिनो (पितानो) भाइ छे तेथी मारो काको पण थाय छे, अने मारी सपत्नी जे कुबेरसेना तेनो पुत्र जे कुबेरदत्त तेनो आ पुत्र छे तेथी ते मारा पुत्रनो पुत्र पण कहेवाय छे.

हवे तेना पितानी साथे जे मारे छ संबंध छे ते आ प्रमाणे–आ बाळकनो जे पिता ते मारो भाइ थाय, कारणके तेनी अने मारी माता एक छे. तथा आ बालकनो जे पिता ते मारो पिता थाय कारण के ते मारी मातानो स्वामी छे. वळी जे आ बाळकनो पिता ते मारो पितामह थाय, कारणके मारी माता कुबेर-

सेना तेनो पति कुबेरदत्त तेनो आ बाळक अनुज बंधु छे तेथी काको अने तेनो पिता कुबेरदत्त तेथी ते वृद्ध पिता थाय, तथा जे आ बाळकनो पिता ते मारो स्वामी थाय, कारण के तेनी साथे मारो विवाह थयेलो छे. वळी ए मारी शोक्यनो पुत्र छे तेथी मारो पुत्र पण थाय, तथा जे आ बाळकनो पिता ते मारो सासरो पण थाय, कारण के ते मारा दीयरनो पिता छे.

वळी मारे आ बाळकनी माता साथे छ संबंध छे ते आ प्रमाणे--जे आ बाळकनी माता ते मारी पण माता थाय, कारण के तेणीथी मारो जन्म थयेलो छे. तथा जे आ बाळकनी माता ते मारी पितामही थाय, कारण के ते मारा काकानी माता छे. तथा जे आ बाळकनी माता ते मारी भोजाइ थाय, कारण के मारा भाइनी स्त्री थाय छे. तथा जे आ बाळकनी माता ते मारी पुत्रवधू पण थाय, कारण के मारी शोक्यना पुत्र कुबेरदत्त तेनी ते स्त्री थाय छे. तथा जे आ बाळकनी माता ते मारी सासु पण थाय, कारण के मारा पतिनी माता थाय छे. तथा एनी माता मारी शोक्य पण थाय, कारण के मारा पतिनीज ते बीजी स्त्री थाय छे.

आ प्रमाणे सांभळी कुबेरदत्ते तेनो सर्व वृत्तांत पूछ्यो. साध्वीए ते कही बताव्यो, ते सांभळी वैराग्य पामीने तेणे दीक्षा लीधी, अने कुबेरसेनाए पण श्राविकापणुं स्वीकार्युं.

आ प्रमाणे जे विवेकी पुरुष विषयना दोषने चित्तमां धारी रागांधपणाने मूकी दे अने शुभ शीलनुं आचरण करे ते कुबेरदत्तानी जेम जगतमां उत्तम संपत्तिने पामे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्य
वृत्तौ विषयत्यागे पंचनवतितमः प्रबंधः ॥ ९५ ॥

व्याख्यान ९६ मुं.

हवे विषयमां सुख अल्प छे अने विडंबना घणी छे ते बतावे छे.

सुखं विषयसेवाया-मत्यल्पं सर्षपादपि ।
दुःखं नाल्पतरं क्षौद्र-बिंद्वास्वादकमर्त्यवत् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" विषयसेवामां सर्षपना दाणाथी पण घणुं थोडुं सुख छे अने दुःख घणुं छे. जेम मधुना टीपाना आस्वादन करनारने थयुं हतुं तेम. " विषयसेवामां अल्प सुख छे, ते विषे आगममां पण कहुं छे के, " जेमां सुख क्षणवार छे अने दुःख बहुकाळ पर्यंत छे, दुःख अत्यंत मळे छे अने सुख दूर रहे छे, एवुं अनर्थनी खाणरूप कामभोगजन्य संसारसुख मोक्षनुं प्रतिपक्षी छे. " वळी कह्युं छे के, " कंप, खेद, श्रम, मूर्छा, फेर, ग्लानि, बळनो क्षय अने राजयक्ष्मा (क्षय) विगेरे रोग मैथुनसेवाथी उत्पन्न थाय छे. " वळी उपदेशमालामां कह्युं छे के, " जेम पामा (खस) रोगवाळा मनुष्यने मीठी खुजळी आवे ते वखते खंजवाळवाथी परिणामे दुःख थाय छे छतां ते वखत सुख माने छे तेम मोहातुर पुरुष विषयसुखने परिणामे दुःखरूप छतां सुखरूप माने छे. " पामाने खुजली करनार जेम ते वखत सुख माने छे पण ते दुःखरूप छे, तेम पुरुषने विषयसेवानुं सुख पण दुःखरूप जाणवुं. वळी कह्युं छे के " हे गौतम ! देवद्रव्यनुं भक्षण करवाथी अने परस्त्रीनी सेवाथी प्राणी सात वार सातमी नारकीए जाय छे. " वळी कह्युं छे के " कोइपण पुरुष परस्त्रीनी साथे जेटला आंखोना मीचकारा करे तेटला हजार कल्पसुधी ते नरकाग्निवडे पचाय छे. " आ प्रमाणे विषयजन्यसुख मधुबिंदुने आस्वादन करनार पुरुषनी जेम दुःखरूप छतां सुखरूप लागे छे. ते मधुबिंदुनुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे—

मधुबिंदुनुं दृष्टांत.

कोइ पुरुष सार्थथी भूलो पडी मोटा अरण्यमां पेठो. त्यां जाणे साक्षात् यमराज होय तेवा कोइ हस्तीए तेने अवलोकन कर्यो. ते उन्मत्त हाथी ते पुरुषनी सामे दोड्यो. तेना भयथी दडानी जेम उछळतो ने पडतो ते पुरुष नाठो. थोडे जतां आगळ एक कुवो जोवामां आव्यो. तेथी तेणे विचार्युं के, ' आ हाथी जरूर मारा प्राण लेशे, तेथी आ कुवामां झंपापात करवो सारो. ' आवुं धारी ते कुवामां पड्यो. ते कुवाना कांठा उपर एक वडनुं वृक्ष उग्युं हतुं. तेनी वडवाइओ कुवामां लटकी रही हती, तेथी पडतो एवो ते पुरुष ते वडनी वडवाइ साथे वचमां लटकी रह्यो. तेणे नीचे दृष्टि नांखीने जोयुं तो कुवानी अंदर जाणे बीजो कुवो होय तेवो एक अजगर मुख फाडीने जोवामां आव्यो. वळी ते कुवाना चारे खुणामां धमणनी जेम फुंफाडा मारता चार सर्पो जोवामां आव्या. उपर नजर करतां तेणे आलंबन करेला वडनी शाखाने छेदवाने माटे काळा अने

धोळो एवा बे उंदर पोताना करवतना जेवा दांतथी प्रयत्न करता नजरे पड्या. तेमज उन्मत्त गजेंद्र पण तेने मारवाने माटे वडनी शाखाने सुंढवडे वारंवार हलाववा लाग्यो. तेथी ते वृक्षनी शाखा उपर रहेला एक मधपुडामांथी उडीने केटलीक मक्षिकाओ पेला पुरुषने दंश करवा लागी. आ प्रमाणेनी पीडाथी दुःखी थता ते पुरुषे कुवामांथी नीकळवाने माटे उंचुं मुख कर्युं. तेवामां पेला मधपुडामांथी मधना बिंदु टपकवा लाग्या. ते पेला पुरुषना ललाट उपर पडीने मुखमां आव्या, तेनो स्वाद पामीने ते सुख मानवा लाग्यो. ते वखते कोइ विद्याधर तेने आपत्तिमांथी मुक्त करवाने माटे विमान सहित त्यां आवी कृपाथी बोल्यो के, ' हे मनुष्य ! चाल, आ विमानमां बेसीने सुखी था. ' तेणे कह्युं के, ' हे देव ! क्षणवार राह जुओ, जेटलामां हुं आ मधुना बिंदु चाटी लउं. ' पछी विद्याधरे फरीवार पूछ्युं, तथापि तेणे तेवोज जवाब आप्यो. छेवटे विद्याधर कंटाळी पोताने स्थानके चाल्यो गयो.

उपरना दृष्टांत विषे एवो उपनय छे के, जे उन्मत्त हाथी ते मृत्यु समजवुं. ते सर्व जीवोनी पछवाडे भम्या करे छे. ते विषे श्रीवस्तुपाळ चरित्रमां कह्युं छे के,

लोकः पृच्छति मे वार्त्ता, शरीरे कुशलं तव ॥
कुतः कुशलमस्माकं, आयुर्याति दिने दिने ॥ १ ॥

" कोइ प्रसंगे नगरजनोए मंत्री वस्तुपालने कुशळता पूछी, त्यारे मंत्री बोल्या के, लोको मने शरीरनी कुशळता पूछे छे, पण मारी कुशळता शी रीते कहेवाय ? कारणके आयुष्य तो दिवसे दिवसे चाल्युं जाय छे. " वळी अन्यत्र कह्युं छे के-" आ विश्व शरण वगरनुं, राजा वगरनुं अने नायक विनानुं छे के जेथी कोइपण उपाय न चाले तेम यमराजरूप राक्षसथी तेनो ग्रास थया करे छे " " वळी जुओ के जे श्रेणिकराजाने इंद्र स्नेहथी आलिंगन करीने पोताना अर्धासन उपर बेसाडतो हतो, तेवो श्रेणिकराजा पण अशरण थइ अश्रोतव्य-दशा (मरण दशा) ने पामी गयो. " " वळी जेम पशुओ मृत्युनो उपाय जाणता नथी, तेम विद्वानो पण तेनो उपाय जाणता नथी. आवी उपाय जाणवानी मूढताने धिक्कार छे. "

हवे जे कुवो कह्यो ते संसार जाणवो, ते गमनागमनरूप जलथी भरेलो छे. जे अजगर ते भयंकर नरकभूमि समजवी. चार खुणे जे चार सर्पो हता, ते

क्रोधादि चार कषायो जाणवा. जे वडवृक्ष ते मनुष्यनुं आयुष्य समजवुं. जे काळो अने धोळो बे उंदर कह्या ते मनुष्यना आयुष्यने छेदन करनारा शुक्लपक्ष अने कृष्णपक्ष समजवा. जे मक्षिकाओ ते ज्वर, अतिसार, वायु विगेरे व्याधिओ समजवा, अने जे मधुबिंदु ते विषयराग समजवो, के जे मात्र क्षणवार सुख आपनार छे.

अहिं कोइ शंका करे के, " जे देवताने सुख मळे छे ते अल्प नथी, पण घणुं छे; केमके ते घणा काळ रहे छे. " देवताने एक भवमां अनेक स्त्री साथे संभोग प्राप्त थाय छे. ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, " इंद्रना एक अवतारमां बे कोडाकोडी, पंचाशी लाख क्रोड, एकोतेर हजार क्रोड, चारसो क्रोड, एकवीश क्रोड, सत्तावन लाख, चार हजार, बसो अने पचास देवीओ थाय छे. एथी देवताने विषयनुं सुख मधुबिंदुना सुखनी जेम अल्प केम कहेवाय ? " ए सत्य छे, पण हे वत्स ! अनादिकाळ पर्यंत भोगवेलां निगोदादि दुःखने आश्रीने देवनुं सुख पण तेना जेवुंज अल्प छे. वळी देवतामांथी च्यवेलो प्राणी तिर्यंचादि गतिमां अनंतकाळ सुधी वारंवार भम्या करे छे, एथी ते अपेक्षाए पण तेनुं सुख मधुबिंदुना जेवुं स्वल्पज छे. जेम कोइ पुरुषे कंठ सुधी मिष्टान्न खाधुं होय ते विकार पामी अजीर्णरूप थतां वमन, विरेचन अने लंघन विगेरेनुं घणुं दुःख ते अनुभवे छे. तेम कामभोगादि सुख देवादिकने पण परिणामे महा भयंकर छे, एम जाणी मुनिजनो मनथी पण ते सुखने इच्छता नथी.

"आ प्रमाणे कामभोगसंबंधी सुख किंपाकना फळनी जेम परिणामे दारूण अने मधुबिंदुनी जेवुं अल्प छे; एवुं मनमां विचारी कयो सद्बुद्धिमान् अने शीलदृष्टिवाळो पुरुष तेमां रागने प्राप्त थाय ? "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्यवृत्तौ
मधुबिंदुदृष्टांतेन विषयत्यागविषये षण्णवतितमः प्रबंधः ॥९६॥

व्याख्यान ९७ मुं.

हवे महासतीनुं लक्षण कहे छे.

या शीलभंगसामग्री–संभवे निश्चला मतिः ।
सा सती स्वपतौ रक्ते–तराः संति गृहे गृहे ॥ १ ॥

व्याख्या.

" शीलनो भंग थवानी सामग्रीनो संभव छतां पण जेनी बुद्धि निश्चळ रहे अने जे पोताना पतिमांज रक्त होय ते स्त्री सती कहेवाय, बाकी बीजी (असती) स्त्रीओ तो घेर घेर छे. " आ उपर शीलवतीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

शीलवतीनी कथा.

जंबूद्वीपने विषे नंदन नामना नगरमां रत्नाकर नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने पुत्र नहोतो, तेथी तेणे अजितनाथ भगवंतनी शासनदेवी अजितबलानी आराधना करी, एथी अजितसेन नामे पुत्र थयो. ते मोटो थइ शीलवती नामे स्त्रीनी साथे परण्यो. शीलवती शकुनशास्त्रादि भणेली हती, तेथी शकुनशास्त्रने अनुसारे अनेक वखत द्रव्य बतावी आपवाथी ते घरनी अधिष्टात्री थइ पडी हती. तेनो स्वामी अजितसेन बुद्धिना प्रबळथी राजानो मंत्री थयो हतो. एक वखते राजाए कोइ सीमाडाना राजा उपर चडाइ करवा जतां पोतानी साथे आववा मंत्रीने पण आज्ञा करी. मंत्रीए शीलवतीने पूछयुं के, " प्रिया ! मारे राजानी साथे जवुं पडशे, पाछळ तुं एकाकी घेर शी रीते रहीश ? कारण के स्त्रीओनुं शील तो पुरुष समीपे होवाथीज रहे छे. जे स्त्री प्रोषितभर्तृका (जेनो पति परदेश गयो होय तेवी) होय ते उन्मत्त गजेंद्रनी जेम घणी वार स्वेच्छाथी क्रीडा करे छे. " पतिनां आवां वचनो सांभळी नेत्रमां अश्रु लावीने शीलवतीए शीलनी परीक्षा बतावनारी एक पुष्पनी माळा स्वहस्तवडे गुंथी पतिना कंठमां आरोपण करी अने बोली के, ' हे स्वामी ! ज्यांसुधी आ माळा करमाय नहीं त्यांसुधी मारुं शील अखंड छे एम समजवुं. ' पछी मंत्री निश्चित थइने राजानी साथे बहारगाम गयो.

एक वखते राजा अजितसेन मंत्रीना कंठमां वगर करमायली माळा जोइ विस्मय पाम्यो, अने ते विषे पासेना माणसोने पूछयुं; त्यारे तेणे तेनी स्त्रीनुं सतीपणुं वर्णवी बताव्युं. पछी कौतुकी राजाए सभा वच्चे आवी परस्पर हास्यवार्त्ता करनारा मंत्रीओने कह्युं के, ' आपणा अजितसेन मंत्रीनी स्त्रीनुं सतीपणुं खरेखरुं छे. ' ते सांभळी एक बीजो मंत्री बोली उठ्यो-" महाराज ! तेमने तेमनी स्त्रीए भमाव्या छे. स्त्रीओमां सतीपणुं छेज नहीं. शास्त्रमां कह्युं छे के, ' ज्यांसुधी एकांत के वखत मळे नहीं त्यांसुधीज स्त्रीनुं सतीपणुं छे. ' माटे जो तमारे परीक्षा करवी होय तो मने त्यां मोकलो. " पछी अशोक नामना ते हास्य करनारा मंत्रीने अर्ध लाख द्रव्य आपीने राजाए शीलवती पासे मोकल्यो.

अशोक उज्वल वेश धारण करी नगरमां गयो. त्यां कोइ माळीनी स्त्रीने मळीने कह्युं के, 'तुं शीलवतीनी पासे जइ कहे के, कोइ सौभाग्यवान पुरुष तने मळवाने इच्छे छे.' मालणे कह्युं, 'ते वार्त्तामां द्रव्य घणुं जोइशे, कारण के धन एज मनुष्योनुं उत्तम वशीकरण छे.' अशोके कह्युं के, 'जो ते कार्य सिद्ध थशे तो अर्ध लक्ष द्रव्य आपीश.' आथी मालण संतुष्ट थइ शीलवतीनी पासे गइ अने शीलवतीने बधो वृत्तांत जणाव्यो. शीलवतीए मनमां विचार्युं के, 'परस्त्रीना शीलनुं खंडन करवा इच्छनार आ पुरुष तेना पापनुं फळ भोगवो.' एम विचारी तेणे ते वात कबुल करी, अने मालणनी पासे अर्ध लक्ष द्रव्य मांग्युं. मालणे ते आपवानुं कबुल कर्युं, एटले मळवानो दिवस नक्की कर्यो. पछी शीलवतीए पोतानी बुद्धिथी विचार करी घरना एक ओरडामां कुवा जेवो उंडो खाडो कराव्यो अने तेनी उपर पाटी वगरनो मांचो मूकी तेनी उपर ओछाड पोचो पोचो बांधी राख्यो. मळवानो समय थतां अशोक मंत्री पोताना आत्माने कृतार्थ मानतो अर्ध लक्ष द्रव्य साथे लइ त्यां आव्यो. अगाउथी शिखवी राखेली दासीए कह्युं के, 'लावेलुं द्रव्य मने आपो अने अंदर मांचा उपर जइने बेसो.' अशोक अर्ध लाख द्रव्य तेने आपी उतावळो ते अंधकारवाळा ओरडामां जइ मांचा उपर बेठो, तेवो तरतज संसारमां बहुकर्मी प्राणी पडे तेम ते खाडामां पड्यो. "रावणनी जेम व्यसनीने आपत्तिओ सुलभ छे." खाडामां पडेलो अशोक ज्यारे क्षुधातुर थतो त्यारे उपरथी शीलवती खप्परपात्रमां अन्न आपती हती. एवी रीते बहु दिवस तेमां रहेवाथी 'अ' उडी जवाने लीधे अशोक मंत्री शोकरूप थइ रह्यो.

एक मास वीत्या छतां अशोक मंत्री पाछो न आववाथी कामांकुर नामे बीजो मंत्री तेवीज प्रतिज्ञा लइने आव्यो, शीलवतीए तेनी पासेथी पण अर्ध लक्ष लइने तेज खाडामां तेने नाख्यो. पछी एक मासे ललितांग नामे त्रीजो मंत्री आव्यो, तेने पण अर्ध लाख द्रव्य लइ तेज खाडामां नाखी दीधो. चोथे मासे रतिकेलि नामे मंत्री आव्यो, तेने पण अर्ध लक्ष द्रव्य लइ तेज खाडामां नाख्यो. आ प्रमाणे ते चारे मंत्रीओ चतुर्गतिरूप संसारमां दुःखनो अनुभव करता जीवोनी जेम ते पाताळ जेवा खाडामां दुःखनो अनुभव करवा लाग्या.

अनुक्रमे सिंहराजा शत्रुनो जय करी पाछो आव्यो, अने मोटा उत्सवथी तेणे नगरमां प्रवेश कर्यो. ते समये पेला मंत्रीओए शीलवतीने कह्युं, 'हे स्वामिनी! अमे तमारुं माहात्म्य जोयुं, तेम अमारा कृत्यनुं फल पण भोगव्युं, माटे हवे अमने बहार काढो.' शीलवतीए कह्युं के, "ज्यारे हुं 'भवतु (थाओ)'

एम कहुं त्यारे तमारे बधाए साथे 'भवतु' एम कहेवुं." मंत्रीओए ते कबुल कर्युं. पछी शीलवतीए पोताना पतिने कहीने राजाने भोजननुं आमंत्रण कर्युं. आगले दिवसे सर्व रसवती तैयार करी ते खाडावाळा ओरडामां गुप्त रीते राखी मूकी. भोजन करवा आववाने दिवसे रसोडामां अग्नि पण सळगाव्यो नहीं अने जळने स्थाने जळ पण राख्युं नहीं, तेम कांइ पण भोजननी सामग्री त्यां रसोडामां राखी नहीं. राजा भोजन करवाने आव्यो, पण तेणे भोजननी सामग्री कांइ जोइ नहीं, तेथी चमत्कार पामी भोजन करवा बेठो. पछी शीलवती स्नान करी पेला ओरडामां जइ पुष्पमाला हाथमां राखी धूप दीप करी बेठी अने बोली के-"राजा भोजन करवाने माटे आव्या छे माटे नाना प्रकारना पक्वान्न भवन्तु (थइ जाओ.)" एटले खाडानी अंदरथी ते चारे मंत्रीओए उंचे स्वरे कह्युं के, "भवन्तु." पछी मोदक विगेरे सामग्री ते ओरडामांथी बहार लाववामां आवी. पछी घृत विगेरेने माटे पण उपर प्रमाणे कह्युं, वली विलेपन तथा शाक विगेरेने माटे पण तेमज कह्युं, ते बधी वखते तेओए "भवन्तु" ए शब्द कह्यो. एवी रीते राजानुं भोजन संपूर्ण थयुं. पछी तांबूल विगेरे आपीने मंत्री अजितसेन राजाना चरणमां पड्यो, एटले राजाए पूछ्युं के, 'मंत्री! आ प्रमाणे रसोइ विगेरे शाथी तैयार थइ?' मंत्रीए कह्युं के 'ते ओरडामां मने प्रसन्न थयेला चार यक्षो छे ते जे मागीए ते आपे छे.' राजाए कह्युं के 'ते अमने आपो' कारण के ज्यारे नगरनी बहार जवुं पडे छे, त्यारे त्यां जे भोजन मागीए ते वचन मात्रमांज थइ जाय.' राजाना आग्रहथी मंत्रीए तेमने आपवानुं कबुल कर्युं.

पछी गुप्त रीते ते चारेने खाडामांथी काढी सारा मोटा कंडीआमां तेमने नाख्या, अने सारा वस्त्रथी तेने ढांकी 'आ यक्षोनुं स्वरूप कोइने बताववुं नहीं,' एम कही राजाने अर्पण कर्या. राजा ते कंडीआने रथमां मूकी पोते आगळ पेदल चाली रस्ते पवित्र जळ छंटावतो दरबारमां लाव्यो. अंतःपुरनी स्त्रीओ पाछळ पाछळ चालती ते यक्षोना गुण गावा लागी. आवी रीते तेमने दरबारमां लावीने एक पवित्र स्थानके राख्या; अने सवारने माटे रसोइ तैयार करवानी रसोइआने ना पाडवामां आवी. प्रभातकाळ थतां भोजन वखते पवित्रपणे तेमनी पूजा करी राजाए विज्ञप्ति करी के, 'स्वामी! पक्वान्न तथा दाळ भात आपो, अने जातजातना शाक अने भोज्य पदार्थ आपो.' एटले ते चारे जणे "भवंतु" एम कह्युं, पण कांइ थयुं नहीं. एटले राजाए कंडीआ उघाड्या. त्यां तो तेमां चार पिशाचना जेवा मनुष्यो जोवामां आव्या. दाढी, मुंछ अने माथाना केश

वध्या हता, डाचां मळी गया हता, क्षुधाथी कृश थइ गया हता अने नेत्र उंडा गया हता. राजाए तेओने ओळख्या, एटले ते हास्यमंत्रीओ कागडानी जेम उपहास्यने पात्र थया. राजाए हकीकत पूछी एटले तेमणे सर्व वृत्तांत जणाव्यो. तेथी राजा आश्चर्य पामी मस्तक धुणावत्रा लाग्यो, अने शीलवतीनुं शील, तेनी बुद्धिनो प्रकाश अने पुष्पमाला ग्लानि न पामी तेनुं कारण राजाना जाणवामां आव्युं. आथी लोकमां शीलवतीनी मोटी प्रतिष्ठा थइ. पछी ते दंपती अनुक्रमे दीक्षा लइ पांचमे देवलोके गया अने अनुक्रमे मोक्षने पण प्राप्त थशे.

" आ प्रमाणे निर्मल शीळने धारण करी ते दंपती चिरकाल चारित्रनी धुरानुं वहन करी पांचमा देवलोकमां गया अने त्यांथी च्यवी मनुष्य थइ केवळज्ञान पामीने मोक्षे जशे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ
शीलविषये सप्तनवतितमः प्रबंधः ॥ ९७ ॥

व्याख्यान ९८ मुं.

शीलव्रतना महिमाथी छेदायला अंगो पण पाछा प्रगट थाय छे ते कहे छे.

छेदात्पुनः प्ररोहंति, ये साधारणशाखीनां ।
तद्वच्छीन्नानि चांगानि, प्रादुर्यांति सुशीलतः ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जेम अनंतकाय वनस्पतिने छेदवाथी ते पाछी फरीने उगे छे, तेम उत्तम शीलथी छेदायेला अंगो पण पाछा उत्पन्न थाय छे." ते उपर कलावतीनो संबंध छे, ते आ प्रमाणे—

कलावतीनी कथा.

शंखपूर नगरमां शंख नामे राजा हतो. ते एक वखते सभा भरीने बेठो हतो, तेवामां दत्त नामे श्रेष्ठी मुसाफरी करीने त्यां आव्यो. राजानी पासे भेट धरी आगळ बेठो. एटले राजाए देशांतरनुं स्वरुप पूछयुं, तेणे देशांतरनुं स्वरूप

कहीने एक चित्रपट बताव्युं. राजा ते जोइने आश्चर्य पाम्यो. पछी पूछ्युं के, ' आ कोनुं चित्र छे ? ' दत्ते कह्युं के, ' स्वामी ! विशाळपुरना स्वामी विजयसेन राजानी पुत्री कलावतीनुं छे. ते बाळाए प्रतिज्ञा करी छे के, जे पुरुष मारा चार प्रश्नोनो उत्तर आपी निर्णय करशे तेने हुं वरीश. ' ते सांभळी राजाए सरस्वती देवीनी आराधना करी अने तेमने प्रसन्न कर्या. शारदा प्रत्यक्ष थइने बोल्या के, ' हे वत्स ! तारा करस्पर्शथी काष्टनी पुतळी पण तने पूछेला प्रश्नोनो निर्णय करशे. ' पछी कृतार्थ थयेलो राजा विशाळपुर नगरे जइ स्वयंवरमंडपमां बेठो; एटले कलावती राजकन्या जाणे लक्ष्मीदेवी होय तेम सखीओथी परवरेली त्यां आवी. पछी कन्यानी आज्ञाथी सर्व राजाओना सांभळतां प्रतिहारीए उंचे स्वरे कह्युं के, " हे राजाओ ! आप सर्वे आ चार प्रश्नोनो उत्तर आपो. ' देव कोण ? गुरु कोण ? तत्त्व शुं ? अने सत्त्व शुं ? ' आ चार प्रश्ननो उत्तर जे स्पष्ट करी बतावशे ते आ कलावतीनी वरमाळाने योग्य थशे. " पछी सर्वे राजाओए पोतपोतानी बुद्धि प्रमाणे उत्तर आप्यो, पण कलावतीए ते मान्य कर्यो नहीं, एटले शंखराजाए मंडपना स्तंभ उपर रहेली एक पुतळीना मुखथी आ प्रमाणे उत्तर अपाव्या.

वितरागः परो देवो, महाव्रतधरो गुरुः ।
तत्त्वं जीवाद्यो ज्ञेयाः सत्त्वमिंद्रियनिग्रहः ॥१॥

" जे वीतराग होय ते परम देव, महाव्रतधारी होय ते गुरु, जीव अजीवादि तत्त्व, अने इंद्रियोनो निग्रह ते सत्त्व. " आवो उत्तर सांभळी वाजित्रोना ध्वनि साथे ' सत्य ' एवो उच्चार करी राजकुमारी कलावतीए तेमना कंठमां स्वयंवरमाळा आरोपण करी; पछी तेनुं पाणिग्रहण करीने शंखराजा कलावती साथे पोताने नगरे आव्यो.

अन्यदा कलावती सगर्भा थइ. ते खबर सांभळी तेना भाइए तेने तेडी लाववा माटे एक सेवकने मोकल्यो अने तेनी साथे बे बाजुबंध मोकलाव्या. ते माणस कलावतीने मळ्यो अने तेना भाइए आपेला बाजुबंध आप्या. कलावती ते बाजुबंध हाथे पेहेरी घणो हर्ष पामी अने ते सेवकने विदाय कर्यो. ते बाजुबंधनी शोभा जोइ तेणे पोतानी सखीने कह्युं के, " जेणे आ बाजुबंध मने मोकलाव्या छे तेनी उपर मारो घणो स्नेह छे, ते दीर्घायु थाओ. " कलावतीनुं आ वाक्य राजाए गुप्त रहीने सांभळ्युं. तेथी राजाना मनमां ' अन्य पुरुष साथे तेनो स्नेह छे ' एवी शंका आवी, एटले तेनो क्रोध प्रदिप्त थयो. तेणे विचार्युं के,

अंतर्विषमया ह्येतत्, बहिरेव मनोहरा ।
गुंजाफलसमाकारा, योषितः केन निर्मिता? ॥ १ ॥

" अहो ! स्त्रीओ अंदर विषमय छे अने बहारथी मनोहर लागे छे. आवी चनोठीना फळ जेवी स्त्रीओ कोणे बनावी हशे ? " आवी कुळवान उत्तम जणाती स्त्री पण कुलटा छे. परंतु शास्त्रमां कह्युं छे ते सत्य छे के, " जळमां जेम माछलाना पगलां अने आकाशमां पक्षीओना पगलां जोवामां आवता नथी, तेम स्त्रीओना चरित्रनो ब्रह्मा पण पार पामी शकता नथी. " आ प्रमाणे चिंतवी राजा शंखे बे चंडाळणीने आज्ञा करी के, ' तमारे कलावतीने हुं वनमां मोकलावुं त्यां जइने तेनी बाजुबंध सहित बंने भुजा छेदीने मारी पासे लाववी.' पछी राजानी आज्ञाथी शय्यापालक कळावतीने रथमां बेसाडी कोइ वनमां मूकी आव्यो; एटले पेली बे चंडाळणीओए आवी तेना बे हाथ छेदी नाख्या, अने राजानी पासे लावी हाजर कर्या.

कलावतीए हाथनी पीडाथी तत्काळ एक पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते तेने पवित्र करवाने हाथ न होवाथी पगे पगे समिप रहेली नदीने कांठे लइ गइ, तेवामां ते नदीमां पूर आव्युं; तेथी पुत्रनुं रक्षण करवुं मुश्केल थइ पड्युं. आ प्रमाणे सर्व तरफथी आपत्ति आवेली जोइ कलावती नवकार मंत्रनुं स्मरण करीने बोली के, " जो में त्रिकरण शुद्धिए शील पाळ्युं होय तो आ नदीनुं पूर विगेरे आपत्तिओ दूर थइ जाओ. " तत्काळ शासनदेवीए तेना भुज नवपल्लवित कर्या अने नदीनुं पूर शांत करी आकाशमां रहीने पुष्पवृष्टि करी. तेवामां कोइ तापस त्यां आवी कलावतीने पोताना आश्रममां लइ गयो अने पुत्रीनी जेम तेनी रक्षा करी, तेनुं तथा पुत्रनुं लालनपालन करवा लाग्यो.

अहिं राजाए पोताना मित्र श्रेष्ठीपुत्र दत्तने पूछयुं के, ' आजकाल पट्टराणीना पियरथी कोइ आव्युं छे ? ' श्रेष्ठीपुत्रे कह्युं, ' स्वामी ! आजेज एक माणस आवेल छे, तेनी साथे पट्टराणीने माटे तेना भाइ जयसेने बे बाजुबंध मोकलाव्या छे, ते में पट्टराणीनेज पहोंचाड्या छे. ' आ खबर सांभळी शंख राजा मूर्छा खाइने पृथ्वी उपर ढळी पड्यो. तेना मित्रे चंदन विगेरेथी तेने सावधान कर्यो; एटले ते पोतानी मूर्खताने निंदवा लाग्यो. अरे ! मारा जेवा अविचारीने धिक्कार छे ! नीतिमां कह्युं छे केः—

अवि-श्यकृतं न्यस्तं, विश्वस्तं -त्तमाहृतं ।
उक्तं भुक्तं च तत्प्रायो, महा-शयकृन्नृणां ॥ १ ॥

"जे विचार्या वगर करे, स्थापे, विश्वास करे, आपे, आदरे, बोले अने जमे ते प्रायः माणसने पश्चात्ताप करावनार थाय छे." वळी कह्युं छे के, "जे कांइ कार्य गुणवान् के गुण रहित करवामां आवे तेमां पंडित पुरुषे तेनुं परिणाम प्रयत्नपूर्वक प्रथम विचारवुं; कारण के जे कार्य अति साहसथी करवामां आवे छे तेनुं परिणाम एवी विपत्तिमां आवे छे के जेनो विपाक हृदयने दहन करे तेवा शल्यरूप थइ पडे छे." वळी राजा विचारे छे के-'हवे हुं कोइने मुख केम बतावी शकीश ? तेथी चितामां आ देहने दग्ध करी नाखुं.' आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां कोइ मुमुक्षु मुनि उपवनमां आवीने देशना आपे छे तेवा खबर सांभळी शंखराजा ते सांभळवा माटे त्यां गयो.

मुनिए देशनामां कह्युं के, "आ संसाररूप अरण्यमां जीव पूर्व कर्मने वश थइ मृगतृष्णानी जेम भ्रांतिए भरेला थइ मृगनी जेम वृथा भम्या करे छे." आ देशनाने अंते राजाए पोतानी पत्नीने मळवानो उपाय पूछ्यो, अने पोताने आवेला स्वप्ननी वात कही. मुनि बोल्या के, "तने आवेला स्वप्नने अनुसारे ते राणीए एक पुत्रने जन्म आप्यो छे अने ते तने थोडा दिवसमां मळशे." आ प्रमाणे सांभळी राजा प्रसन्न थइने नगरमां आव्यो, अने तत्काळ तेनी शोध करवा जवानी दत्तश्रेष्ठीने आज्ञा करी.

दत्तश्रेष्ठी फरतो फरतो पेला तापसना आश्रममां आव्यो. त्यां कलावती तेनां जोवामां आवी. श्रेष्ठीए कह्युं, 'हे सुशीले ! अग्निमां प्रवेश करता तारा पतिने आवीने बचाव.' तत्काळ कलावती कुळपतिनी रजा लइने पोताना नगरमां आवी. तेने जोइने राजा नीचुं मुख करीने रह्यो, अने पोतानां दुष्ट आचरणनी निंदा करी मिथ्या दुष्कृत आप्युं. कलावती पण ते सघळुं पोतानाज करेला कर्मोनुं फळ मानी सुखे त्यां रही.

एक वखते ते दंपतीए कोइ ज्ञानीने पोताना पूर्व भवनो वृत्तांत पूछ्यो. मुनिए ज्ञानदृष्टिथी जोइने कहेवानो आरंभ कर्यो—"पूर्वे श्रीमहाविदेह क्षेत्रने विषे नरविक्रम नामे राजा हतो, तेने सुलोचना नामे पुत्री हती. तेणीए क्रीडा करवाने माटे एक पोपट पांजरामां राख्यो हतो, अने हमेशां मधुर मधुर फळ खवरावीने तेनुं पोषण करती हती. एक वखते ते सुलोचना पोपटने साथे लइ सीमंधरप्रभुना बिंबने वांदवा माटे गइ. वीतरागना बिंबना दर्शन थतांज शुकने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी पूर्व भवे व्रतनी विराधना करेली तेना जाणवामां आवी. तेने याद आव्युं के, में पूर्वभवे विहरमान एवा श्रीसीमंधरादि प्रभुनी

स्तुति अने वर्णन श्रद्धाथी कर्युं हतुं. ते आ प्रमाणे—" मेरुथी पूर्वे महाविदेह क्षेत्रने विषे पुष्कळावती विजयमां पुंडरीकिणी नामे नगरी छे. त्यां कुंथुनाथ अने अरनाथना आंतरामां श्रीसीमंधरस्वामीनो जन्म थयो. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी अने नमिनाथना आंतरामां राज्य छोडीने तेमणे दीक्षा लीधी. अनागत चोवीशीना उदय अने पेढाळ जिनने आंतरे ते मोक्ष पामशे. विहरमान एवा वीशे तीर्थंकरोने दरेकने सो कोटी साधुओ अने दशलाख केवळज्ञानीनो परिवार छे. सर्व संख्याए बे कोटी केवळज्ञानी ने बे हजार कोटी साधुओ थाय छे. तेओने हुं अहर्निश नमुं छुं." (तेमना श्रावक श्राविकानी संख्या तो सांभळी नथी.) इत्यादि जिनगुणना पठन पाठनमां हुं तत्पर हतो. पण मुनिनी क्रियामां शिथिल हतो, तेथी चारित्रनी आराधना करी शक्यो नहीं. अंते ते पापनी आलोचना कर्या वगर काळ करवाथी हुं पोपट थयो छुं. हुं मारो मनुष्य जन्म अने रत्नत्रय फोगटमां हारी गयो छुं. हवेथी हुं हंमेशा ए प्रभुने नमीने पछी भोजन करीश. आवो तेणे अभिग्रह धारण कर्यो.

सुलोचना ते पोपटने पांजरासहित लइने घेर आवी. बीजे दिवसे भोजन समये ते पक्षी राजकुमारीना करमांथी उडीने सत्वर श्रीतीर्थंकरने नमवा चाल्यो गयो. ते खबर जाणीने राजाए तेने पकडी लाववा सेवकोने आज्ञा करी; एटले पक्षीने पकडनारा पुरुषोए कोइ वृक्ष उपर रहेला ते पोपटने गुप्त रीते पकडी लीधो, अने राजकुमारीने सोंप्यो. सुलोचनाए फरीवार उडी जाय नहीं तेवुं धारीने तेनी बंने पांखो छेदी नाखी. एथी ए पक्षी समाधिथी मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां देवता थयो, अने पूर्वना प्रेमथी ते राजकुमारी पण तेनी देवांगना थइ. त्यांथी च्यवी ते कीरपक्षी शंखराजा थयो अने सुलोचना राजकन्या आ कलावती थइ."

आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव सांभळी जेमने जातिस्मरण थयुं छे एवा ते दंपतीए कर्मना फळनो निश्चय करी घेर जइ राज्यऊपर पुत्रने बेसारी दीक्षा ग्रहण करी. पछी सुशीलपणे घणा काळ सुधी निरतिचार चारित्र पाळी तेओ देवलोके गया. ते धर्मशील दंपती त्यांथी च्यवी कुकर्मना लेशमात्रने क्षीण करी अनुक्रमे मोक्षने प्राप्त थशे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
शीलविषये अष्टनवतितमः प्रबंधः ॥ ९८ ॥

व्याख्यान ९९ मुं.

हवे तत्त्वने जाणनारा दंपती संकटने विषे पण पोतानुं ब्रह्मव्रत छोडता नथी ते विषे कहे छे.

कुत्रचिद्दंपतीयोगः, स्याच्छीलव्रततत्परः ।
तेन सर्वसुखावाप्तिः, प्राप्ते दुःखेऽपि जातुचित् ॥ १ ॥

व्याख्या.

"शीलव्रत पाळवामां तत्पर एवा दंपतीनो पण कोइ ठेकाणे योग थाय छे; तेवा दंपतीने पूर्व कर्मना उदयथी कदि दुःख प्राप्त थाय तोपण पाछी सर्व सुखनी प्राप्ति थाय छे." ते उपर चंदनमलयागिरिनो प्रबंध छे. ते आ प्रमाणे—

चंदन मलयागिरिनी कथा.

कुसुमपुर नामना नगरमां चंदन नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने मलयागिरि नामे शीलवती पत्नी हती. तेमने सायर अने नीर नामे बे पुत्रो थया हता. एक वखते राजा वासगृहमां सुतो हतो तेवामां कुलदेवीए आवीने कह्युं के, "हे राजा ! तारी माठी दशा थशे; माटे सत्वर राज्य छोडीने बीजे चाल्यो जा. कारण के, मनुष्यने सुख के दुःख जे प्राप्त थवानुं होय छे ते अवश्य प्राप्त थाय छे. दैव पण तेनुं उल्लंघन करवाने समर्थ नथी." आ प्रमाणे सांभळी राजाए चिंतव्युं के, "मित्रने के शत्रुने आपत्ति तो अवश्य थवानी, तेथी जे तेनी सामे चाले ते सुभट अने जे नाशी जाय ते हीनसत्त्व कहेवाय." आवुं विचारी बे पुत्र अने स्त्रीने लइ राजा रात्रे चाली नीकळ्यो. फरतो फरतो अनुक्रमे कुशस्थळ नगरे आव्यो. त्यां राजा चंदन देवनो पूजारी थयो अने राणी मलयागिरि वनमांथी काष्ट लावी नगरमां वेचवा लागी. एक वखते काष्ट वेचवा गयेली मलयागिरि कोइ सार्थवाहनी दृष्टिए पडी. सार्थवाह तेना रूप अने स्वरथी मोह पामी गयो, तेथी ते तेना इंधण लइने तेनुं अधिक मूल्य आपवा लाग्यो. एवी रीते तेणे तेना मनमां विश्वास बेसाडी दीधो. एक वखते प्रयाण करवुं हतुं त्यारे तेने मूल्य आपवाना मिषथी आगळ करी प्रपंचथी लोभावीने दूर लइ गयो. पछी बळात्कारे रथमां बेसाडी दइ मार्गे चाल्यो. मलयागिरि पतिवियोगथी निःश्वास नाखवा लागी. त्यारे सार्थवाहे कह्युं के, "हे सुभ्रु ! मारी साथे सुख भोगवो, अने मारा कामसंतापने शांत करो." मलयागिरि बोली—

" अग्नि मध्य बळवो भलो, भलोज विषको पान ।
शील खंडवो नहिं भलो, नहिं कुछ शील समान ॥ १ ॥

माटे हे वीर! तुं मने छोडी दे, शा माटे तुं मारो अंत ले छे? कदि कृत्तांत कोपे तोपण हुं आ भवमां शील खंडन करीश नहीं. "

अहिं राजा चंदने वखतसर न आववाथी मलयागिरिने चारे तरफ शोधी, पण ते मळी नहीं. तेथी ते बे पुत्रनी साथे विलाप करवा लाग्यो–" ज्यारे दैव प्रतिकूळ थाय छे त्यारे अमृत पण झेर थाय छे, रज्जु सर्प थाय छे अने उंदरनुं दर पाताळरूप थाय छे. " पछी राजा तेनी शोधने माटे ते नगर छोडी पुत्र सहित गामेगाम फरवा लाग्यो. मार्गे एक नदी आवी. तेने उतरवा माटे एक पुत्रने आ कांठे वृक्ष साथे बांधी राखी एक पुत्रने स्कंध उपर चडावी नदी उतरी गयो. पछी बीजा पुत्रने लेवा आववा माटे नदीमां पेठो. अंतराळे आवतां नदीमां प्रबळ पूर आव्युं, एटले ते तणायो. ते समये स्त्री अने पुत्रना विरहथी पीडित थइने ते बोल्यो के—

" किहां चंदन मलयागिरि, किहां सायर किहां नीर ।
जो जो पडे विपत्तडी, सो सो सहे शरीर " ॥१॥

आम बोलतो आमतेम फांफां मारवा लाग्यो, तेवामां एक काष्टनो खंड तेना हाथमां आव्यो, तेने आधारे तरी कांठे नीकळी ते विचारवा लाग्यो के, 'अहो! में राज्य भोगव्युं ते पण मने दैवयोगे विपाकने अर्थे थयुं. दैव दुष्कृति प्राणीओने दुःखने माटे जीवित आपे छे, जेम कीरमजनो रंग बनाववा माटे पकडेला मनुष्योनुं पोषण ते दुःख उपजाववा माटेज होय छे. हवे मारे जीवीने शुं करवुं ? " वळी तेणे फरी विचार्युं के, " मृत्यु पामतां पण जीवने कर्म छोडतां नथी. कह्युं छे के, मृत्यु पामतां पण पोतानुं करेलुं पाप तो अवश्य भवांतरे पण भोगववुंज पडे छे, त्यारे ते अहिंज भोगववुं सारुं छे. " आवुं विचारी ते मृत्यु न पामतां आनंदपुर नामना नगरे आव्यो.

आनंदपुरमां कोइना घरे जइ चंदने विश्राम कर्यो, त्यां कोइ एक स्त्री तेने जोइने मोह पामी. ते तेनी सेवा चाकरी करीने बोली के—

दोहा–" तुम परदेशी लोक हो, दुओ न कीसी साथ ।
जमो रहो तव जन्म लगे, हम तुम एकज साथ " ॥१॥

आवां वचन सांभळी पोताना शीलव्रतनो भंग थशे एवी बीकथी तेणे टुंकामांज

तेने उत्तर आप्यो के, "हे सुंदरी ! जेनुं चित्त स्थिर नथी एवा दुःखी नरनी साथे प्रीति करवाथी तने शो लाभ थवानो छे ?" आवो उत्तर आपी ते त्यांथी अन्यत्र जवा चाल्यो. मार्गमां श्रीपुर नगरनी नजीक आवेला कोइ वृक्ष नीचे जइने ते बेठो. क्षणवार बेसीने ते निद्रावश थइ गयो. तेवामां ते नगरनो राजा अपुत्र मृत्यु पामवाथी मंत्रीओए पंचदिव्य कर्या. ते पांच दिव्य आ राजानी उपर थया, तेथी तेने राज्य मळ्युं. चंदन राजा न्यायथी राज्य करवा लाग्यो. एक वखते प्रधानोए तेना चरणमां पडी स्त्री परणवा कह्युं, तथापि तेणे कोइनी साथे पाणिग्रहण कर्युं नहीं.

अहिं सायर अने नीर जे नदीने बे कांठे बे वृक्ष पासे रह्या हता, तेमने कोइ सार्थवाहे जोया. तेथी पोताना पुत्रनी जेम तेमनी सार संभाळ करतो ते तेमने पोताना नगरे लइ गयो. अनुक्रमे सायर अने नीर यौवन वयने प्राप्त थया. त्यारे तेओ सार्थवाहनी आज्ञा लइ श्रीपुर नगरे जइने कोटवाळना ताबामां नोकर रह्या. ए नगरमां तेमना पिता चंदन राज्य करे छे. तेवामां पेलो सार्थवाह के जे मलयागिरि उपर मोह पामीने तेने उपाडी गयो हतो ते फरतो फरतो मलयागिरिने लइने श्रीपुरमां आव्यो. ते केटलीएक भेटो लइ चंदन राजाने मळवा गयो. भेट आगळ धरी एटले राजा खुशी थइने बोल्यो. 'सार्थवाह ! तमारे जे जोइए ते मागी ल्यो.' सार्थवाहे रात्रे पोताना सार्थनी अने सामाननी रक्षा करवाने माटे पहेरेगीरनी मागणी करी. राजाए कोटवाळने आज्ञा करी, एटले तेणे पेला बे भाइ सायर अने नीरने त्यां रक्षा करवाने मोकल्या. ज्यारे रात्रि पडी अने सर्व पहेरेगीरो भेगा थइ पोतपोतानो वृत्तांत कहेवा लाग्या, ते वखते सायर अने नीरे पण पोतानुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं. ते वृत्तांत तंबुमां बेठेली मलयागिरीना सांभळवामां आव्युं, तेथी तत्काळ तेमने पोताना पुत्र जाणी ते बहार आवी अने हर्षथी भेटी पडी. पुत्रोए पण पोतानी माताने नमी तेनुं वृत्तांत सांभळ्युं. अने कह्युं के 'माता ! प्रभातमां सर्व सारुं थशे, चिंता करशो नहिं.' प्रातःकाळ थयो एटले ते माता अने पुत्रो राजानी पासे गया अने पोतानी सर्व हकीकत कही बतावी. राजा चंदने तेमने पोताना परिवारपणे ओळख्या, एटले पेला अन्याय करनारा सार्थवाहने शिक्षा करीने नगर बहार काढी मूक्यो. पछी बार वर्षनो वियोग दूर करी बंने राज्यना सुखने अनुभवतो चंदन राजा आनंदथी रहेवा लाग्यो, छेवटे ते दंपती शीलनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गया.

“मनुष्य पूर्वपुण्यना योगथीज समान धर्मवाळुं दांपत्य पामे छे. तेओ दुःखमां पण जो पोतानुं शील चूकता नथी तो तेमनो यश आखा विश्वमां फेलाय छे.”

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ शीलविषये नवनवतितमः प्रबंधः ॥ ९९ ॥

व्याख्यान १०० मुं.

‘एक रूपवंत स्त्रीने घणा पुरुषो इच्छे छे’ एम मानी जे स्त्रीनो त्याग करे छे तेज ज्ञानी छे. ते विषे कहे छे.

मिथो हिंसां समीहंते, एकस्त्रीस्पृहया नराः ।
ततस्तां परिमुंचंति, त एव विबुधेश्वराः ॥ १ ॥

व्याख्या.

“पुरुषो एक स्त्रीने माटे परस्परने मारी नाखवानी चाहना करे छे, आवुं धारीने जेओ तेवी स्त्रीजातिनोज त्याग करे छे तेज श्रेष्ठ ज्ञानी कहेवाय छे.” ते विषे इलायची कुमारनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

इलायची कुमारनी कथा.

वसंतपुर नगरमां अग्निशर्मा नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने प्रीतिमती नामे एक स्त्री हती. ए दंपतीए धर्मवाणी सांभळीने योग्य अवसरे जिनोक्त व्रतने (चारित्रने) अंगीकार कर्युं. तेओ विविध जातिना थयेला मुनिओने जाणी शौचाचारमां तत्पर रही अंतःकरणमां जातिमद करवा लाग्या. प्रांते ए दुष्कृतनी आलोचना कर्या वगर अनशनवडे मृत्यु पामीने तेओ वैमानिक देवता थया.

अहिं एलावर्धन नगरमां इभ्य नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने धारणी नामे स्त्री हती. तेना उदरमां अग्निशर्मानो जीव पुत्रपणे उत्पन्न थयो. धारणीए शुभ मुहूर्ते पुत्रने जन्म आप्यो. इलादेवीना वरदानथी ते पुत्र थयो हतो, तेथी ते इलापुत्रना नामथी प्रख्यात थयो. अनुक्रमे मातापिताए भणाव्यो अने यौवन वयने प्राप्त थयो. तेना पूर्व भवनी स्त्री स्वर्गथी च्यवीने जातिमद करेल होवाथी नटकुळमां उत्पन्न थइ. ते विलास हास्ययुक्त सारी नर्तकी थइ. एक वखते नृत्य

करती ते मृगाक्षी इलापुत्रना जोवामां आवी. तेणीना सुंदर नेत्र, मुख, स्तन अने हाथ, पग विगेरे जोइ हाथिणीना दर्शनथी हाथीनी जेम ते दुर्मदावस्थाने प्राप्त थयो. "कामी पुरुष कांइपण कृत्याकृत्यने जाणतो नथी." ते विषे कह्युं छे के, "ज्यांसुधी मृगाक्षीना लोचनना कटाक्ष तेना पर पड्या नथी त्यांसुधीज विद्वाननी बुद्धि अने तेनो निर्मळ विवेकरूपी दीपक स्फुरे छे." कामरुप सर्पे डसेला इलापुत्रे जांगुली विद्यानी जेम ते नटीनुंज स्मरण करता सता एवी प्रतिज्ञा करी के, "जो आ विकसित कमळ जेवा लोचनवाळी स्त्री साथे मारो विवाह न थाय तो प्राण उपर पण रोष धारण करीने हुं अग्निमां प्रवेश करीश." आवा माठा संकल्पवडे व्यग्र चित्तवाळो थयो सतो ते घेर आव्यो. तेने चपळ चित्तवाळो जोइ मातापिताए आग्रहथी पूछ्युं. एटले तेणे पोताना हृदयनी वात कही संभळावी. ते सांभळी मातापिता जाणे वज्रथी हणाया होय तेवा थइने बोल्या के, 'पुत्र! तुं हंस जेवो थइ कागडाने योग्य कर्मनी इच्छा करतां केम लाजतो नथी?' ते बोल्यो—"मारुं मानस (मन अथवा सरोवर) ए स्त्री विना आनंद पामतुं नथी, एटलामां जाणी लेजो. ते विषे बहु कहेवाथी सर्युं." आ प्रमाणेनां तेनां वचन सांभळी ते पुत्रने सुधारवानुं अशक्य धारी श्रेष्ठी मौन धारीने रह्यो.

इलाकुमारे तो लज्जा छोडी दइने पोतानी मेळेज नट लोकोने घणुं द्रव्य आपवावडे ते नर्त्तकीनी मागणी करी. नट बोल्यो के—'आ कन्या तो अमारो अक्षय भंडार छे तेने शी रीते आपी शकाय? ते छतां जो तमारी इच्छा एनी उपरज होय तो नट थइने ज्यां ज्यां अमे जइए त्यां त्यां अमारी साथे चालो.' एलापुत्र लज्जा छोडी ते नट लोकोनी साथे चाली नीकळ्यो. थोडा दिवसमां तेमनी पासेथी नृत्यपणुं शीखी गयो. पछी ते नट बोल्यो के, "हे पुरुष! हवे नृत्य करीने धन उपार्जन करी आपो, जेथी अमे तमारो विवाह करीए." एलाकुमार ते वात कबुल करीने तेओनी साथे कमावा नीकळ्यो.

नट फरता फरता बेणातटे पहोंच्या अने ते नगरना राजानी पासे नाटक करवा गया. त्यां तेमणे आकाश सुधी उंचो एक वांस खोड्यो. तेनी उपर मोटुं एक काष्ट मूक्युं. तेमां बे मजबूत खीला रोप्या. पछी इलापुत्र पगमां पादुका पहेरीने ते वांसपर चड्यो अने एक हाथमां तीक्ष्ण खड्ग अने बीजा हाथमां त्रिशूळ लइ ते वांस उपर रमवा लाग्यो. 'तेनुं अद्भुत नृत्य जोइ सर्व लोको बहु खुशी थया, पण राजानी पहेलां कोइए दान आप्युं नहीं. राजानी दृष्टि

पेली नटी उपर पडी; तेथी ते तेना उपर रागथी मोह पामी गयो अने चिंतवन करवा लाग्यो के, 'जो आ नट वांसना अग्र भाग उपरथी पडे तो हुं नटीने स्वाधीन करुं.'

आवी बुद्धिथी नाटक करीने नीचे आवेला इलापुत्रने तेणे कह्युं के, 'अरे नट! तुं फरीथी खेल कर के जेथी हुं सारी रीते जोउं.' तेणे विशेष धन मळवाना लोभथी फरीवार खेल करी बताव्यो. तथापि शठपणाथी राजाए कांइ आप्युं नहीं. एवी रीते इलापुत्रने वांसपरथी पाडवानी इच्छाए राजाए त्रीजी वार पण नृत्य कराव्युं. त्रीजीवार नाटक करीने उतर्या पछी वळी राजाए कह्युं 'हवे चोथी वखत नृत्य कर, हुं तारा दारिद्र्यने दूर करीश.' तेणे लोभथी तेम कर्युं. बीजा लोको राजानो अभिप्राय जाणीने तेनी निंदा करवा लाग्या. इलापुत्रे पण विचार्युं के, "जरुर राजानुं मन आ नटीमां कामार्त्त थयुं छे. आकार अने मनोभावथी ते जणाइ आवे छे. माटे अहो! आ कामावस्थाने, मने अने राजाने धिक्कार छे. अरे! में मारा उत्तम कुळने मलीन कर्युं." आ प्रमाणे तेना मनमां पूर्ण वैराग्य उत्पन्न थयो. तेवामां वांस ऊपर रहेला एलापुत्रे कोइ धनाढ्यने घेर इंद्रियोने जितनारा मुनिने एषणापूर्वक गोचरी करता, सुंदर स्त्रीथी प्रतिलाभित थता अने वंदाता जोया. ते जोइ एलापुत्रे चिंतव्युं के, 'अहो! जीवाजीवादि नवतत्त्वने जाणनारा, स्त्रीसंभोगथी पराङ्मुख रहेनारा, पोताना देहनी पण दरकार नहीं राखनारा अने केवल मोक्षाभिलाषी एवा आ मुनिओने धन्य छे, जेओने आवी सुंदर शरीरवाळी, मारी नटीथी पण असंख्याधिक रूपवाळी स्त्री मोदक विगेरे पदार्थो आपवाने विनंति करे छे, तथापि ते मुनि कागडाना मैथुननी जेम तेनी सामुं पण जोता नथी, अने हुं केवो रागांध छुं, के जे आ नीच कन्या उपर आसक्त थइ पड्यो छुं. अहो! मारा आवा कृत्यने धिक्कार छे, तेमज आ संसारना स्वरूपने पण धिक्कार छे.' आ प्रमाणे विषयमां तदन विरक्त थइ शुभ ध्यान ध्यातां इलापुत्रने सामायिक चारित्र पर्यंत सर्व भाव फरसी गया. तेना प्रभाववडे प्रांते तेना घाटा घाती कर्मनो क्षय थवाथी लोकालोकने प्रकाश करनारुं केवळज्ञान जाणे संकेत करी राखेल होय तेम तेने उत्पन्न थयुं.

पछी वांस उपरथी नीचे आवतां इलापुत्र केवळीने देवताओए साधुनो वेष अर्पण कर्यो. ते धारण करीने इलापुत्रे धर्मदेशना आपी. ते सांभळी राजा प्रमुख सभ्योए तेमने नटी उपर थयेला रागनुं कारण पूछ्युं. केवळीए पोताना पूर्वभवनी वार्त्ता कही संभळावी. तेमां जणाव्युं के, "पूर्वे ब्राह्मणना भवमां में मारी

स्त्री साथे दीक्षा लीधी हती; पण अमे बंनेए जातिमद कर्यो हतो, ते पापनी आलोचना कर्या वगर मृत्यु पामीने हुं वणिक कुळमां जन्म्या छतां नट थयो अने मारी पूर्व भवनी स्त्री जातिमदथी आ नटी थयेली छे. पूर्व भवमां मारो कामराग तेनी उपर गाढ हतो, तेथी आ भवमां पण मने तेनापर अतिराग थयो; कारण के प्राणीओने वैर अने स्नेह भवांतरगामी थाय छे." आ प्रमाणे पोतानो पूर्व भव सांभळी ते नटीने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेणे विचार्युं के, 'मारा रूपने धिक्कार छे! के जेने लीधे आवा धनाढ्यना पुत्रो अने राजा प्रमुख घणा लोको पण दुर्व्यसनमां आवी पडे छे. हवे मारे विषयसुखथी सर्युं.' आवी भावना करतां ते नटीने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते नाटक जोवा बेठेली राजानी राणीए चिंतव्युं के, 'अहो! आ राजा थइने पण महा अधम कुळमां उत्पन्न थयेली नटी ऊपर मोह पाम्या; माटे एवा विषयविलासने धिक्कार छे!' आवी भावना भावतां तेने पण केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. राजाए पण चिंतव्युं के, 'पोताना उत्तम कुळने छोडी आ एलापुत्र नटजातिनी स्त्रीपर मोह पामी धननी इच्छाथी मारी पासे रमवा आव्यो अने में पण तेवी नीच जातिनी स्त्रीनी इच्छा करी, माटे कामदेवने धिक्कार छे!' आवी भावना भावतां ते पण केवळी थया. आ प्रमाणे महाज्ञानी एलापुत्रे घणा जीवोने तार्या.

जे एलापुत्र उत्तम वंशमां उत्पन्न थयेला होवाथी शुभवंश (वांस) नो आश्रय करतां कुवंश (नठारा कुळ) ना आचाररूप संसारनृत्यने छोडी दइ मुनिनुं आचरण जोइ छेवटे चिदात्मरूपे तद्रूप थइ गया. ते एलापुत्रने धन्य छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ एलापुत्रचरिते शततमः प्रबंधः ॥ १०० ॥

व्याख्यान १०१ मुं.

ए शीलव्रतनो श्री जिनेंद्र भगवंते पण आदर करेलो छे, तेथी ते आचरवा योग्य छे ते विषे कहे छे.

येषां मुक्तिर्ध्रुवं भावि, शीलं चरंति तेऽपि हि ।
तदा संसारिजीवानां, कार्योऽजस्रं तदादरः ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जे जिनेंद्रोनी अवश्य तेज भवे मुक्ति थवानी छे, ते जिनेंद्रो पण शीलने आचरे छे, माटे संसारी जीवोए तो शील पाळवामां हमेशां आदर करवो. " आ विषे श्रीमल्लिप्रभुनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

श्री मल्लिनाथनी कथा

अपर विदेहक्षेत्रने विषे सलिलावती विजयमां वीतशोका नगरीने विषे महाबल नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने वैश्रमण, चंद्र, धरण, पूरण, वसु अने अचल नामे छ मित्रो हता. अन्यदा ते बालमित्रोनी साथे तेणे दीक्षा लीधी, अने तेमनी साथे मासक्षपण विगेरे तपस्या करवा लाग्यो; परंतु तेमनाथी तपमां वधवा माटे रोगनुं व्हानुं काढी तपने अंते ते पारणुं करतो नहीं, अने तपोवृद्धि करतो हतो. आवी रीते मायाथी अधिक तप करवावडे पोताना मित्र साधुनी वंचना करवाथी तेणे स्त्रीवेद बांध्यो, अने वीश स्थानकनी आराधना निमित्ते उग्र तप करवाथी तीर्थंकर नामकर्म पण संपादन कर्युं. अंते ते छ मित्रो साथे चारित्र पाळी मृत्यु पामीने जयंत विमानमां देवता थया.

महाबलनो जीव त्यांथी च्यवीने विदेह देशनी मिथिलानगरीमां कुंभराजानी स्त्री प्रभावतीनी कुक्षिमां पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. जन्म्या पछी मातापिताए मल्लि एवुं नाम पाड्युं. बीजा छ मित्रो जुदा जुदा देशमां उत्पन्न थया. मल्लिकुमारी कांइक उणा सो वर्ष थया, एटले अवधिज्ञानथी पोताना पूर्व मित्रोनी स्थिति जाणी तेमने प्रतिबोध करवाने माटे जेनी फरता छ गर्भगृह (अंदर देखी शकाय तेवा ओरडा) छे एवा एक घरमां एक पोतानी सुवर्णनी पोली प्रतिमा करावीने मूकी. ते प्रतिमाना मस्तक उपर छिद्र कराव्युं, अने तेने कमळवडे ढांकी राख्युं. पछी प्रतिदिन एक एक ग्रास[1] मल्लिकुंवरी तेमां नाखवा लाग्या.

अचळ नामना मित्रनो जीव साकेतनगरने विषे प्रतिबुद्धि नामे राजा थयो हतो. एक वखते ते राजा प्रिया साथे नागदेवनी यात्राने अर्थे गयो. त्यां अतिमोटी पुष्पदामना आभूषणथी भूषित पोतानी प्रियाने जोइ विस्मय पामीने राजाए मंत्रीने कह्युं के, ' हे मंत्री ! तमे आवुं पुष्पआभूषण कोइ ठेकाणे जोयुं छे ? ' मंत्री बोल्यो–' हे देव ! तेमां शो आग्रह ! त्रण जगतमां कुंभ राजानी पुत्री मल्लिकुमारीनुं स्वरूप घणुं आश्चर्यकारी छे, अने तेना जेवी पुष्पाभरणनी

---

१ आहारनो कवळ.

शोभा कांइपण जोवामां आवती नथी.' मंत्रीनां आवां वचन सांभळी राजा प्रतिबुद्धिने तेनापर प्रेम उत्पन्न थयो, तेथी मल्लिकुमारीनी मागणी करवा माटे एक दूतने मोकल्यो.

बीजा मित्र धरणनो जीव चंपानगरीमां चंद्रच्छाय नामे राजा थयो हतो. एक वखत अर्हन्नक नामे कोइ वहाणवटी श्रावके आवी राजाने दिव्य कुंडल भेट कर्यां. राजाए पूछ्युं 'पृथ्वीपर फरतां कांइ आश्चर्य तारा जोवामां आव्युं छे?' ते बोल्यो--'स्वामी! हुं समुद्रमां वहाण लइने जतो हतो, त्यां कोइ देवताए आवी मारा वहाणने डोलावीने कह्युं के, 'तुं जैन धर्म छोडीने मारो आश्रय कर तो हुं तारा वहाणने तारुं.' बीजा पण घणा उपसर्ग कर्या तथापि हुं निश्चळ रह्यो. तेथी तेणे प्रसन्न थइ मने चार कुंडल आप्यां. तेमांथी एक कुंडलनी जोडी में कुंभराजाने भेट करी. तेणे पोतानी पुत्री मल्लिकुमारीना हाथमां ते आपी. हे राजा! ए कन्या विश्वने आश्चर्य करनारी मारा जोवामां आवी छे.' ते सांभळी राजा चंद्रच्छाये तेनी मागणीने माटे दूत मोकल्यो.

त्रीजा मित्र पूरणनो जीव श्रावस्तीनगरीमां रुक्मी नामे राजा थयो हतो. एक समये तेणे पोतानी पुत्रीने सुवर्णमंडपमां स्नान करावावानो मोटो महोत्सव कर्यो. ते समये कोइ पुरुष घणा देशमां मुसाफरी करीने त्यां आव्यो हतो, तेने राजाए पूछ्युं के, 'तें कोइ ठेकाणे आवो श्रेष्ठ महोत्सव जोयो छे?' तेणे कह्युं 'हे देव! विदेह राजानी पुत्री मल्लिकुमारीना जन्मोत्सव आगळ लाखमे अंशे पण आ रमणीय नथी.' ते सांभळी राजाए तत्काळ तेने माटे दूत मोकल्यो.

चोथा मित्र वसुनो जीव वाराणसीनगरीमां शंख नामे राजा थयो हतो. अहीं अर्हन्नके आपेला मल्लिकुमारीना देवार्पित कुंडल भांगी गया, तेने समा करवा माटे सुवर्णकारोने बोलावीने आप्या. पण सोनी लोको ते सुधारी शक्या नहीं, तेथी राजाए तेओने नगरनी बहार काढी मूक्या. तेओ शंखराजानी सभामां आव्या. शंखराजाए तेमने क्यांथी आव्यानुं पूछ्युं, एटले तेओए पोताने मिथिला नगरी छोडवी पड्यानुं वृत्तांत सविस्तर कही संभळाव्युं. तेथी आश्चर्य पामी राजाए तेमने पूछ्युं के, 'ते मल्लिकुमारी केवी छे?' एटले तेओए तेनुं अलौकिक स्वरूप वर्णवी बताव्युं. ते सांभळी शंखराजाए तेने माटे दूत मोकल्यो.

पांचमा मित्र वैश्रवणनो जीव हस्तिनापुरमां अदीनशत्रु नामे राजा थयो हतो. अहीं मल्लिकुमारीने मल्लदिन नामे एक अनुज बंधु हतो. ते चित्रकारोनी पासे पोतानो खानगी सभामंडप चित्रावतो हतो. त्यां कोइ चतुर चित्रकार के

जेने देवतानुं वरदान हतुं, तेणे पडदामांथी मल्लिकुमारीनो अंगुठो जोइने तेमनुं बधुं रूप यथार्थ चित्रमां आळेखी लीधुं. तेवामां मल्लदिनकुमार पोतानी स्त्रीनी साथे ते चित्रशाळामां आव्यो. त्यां पोतानी मोटी व्हेन मल्लिकुमारीने प्रत्यक्ष जोइ लज्जाथी पाछो वळ्यो. त्यारे तेनी धात्रीए कह्युं के, 'ते तो चित्र छे.' एटले तत्काळ पेला चित्र करनारने पकडीने तेनो वध करवानी आज्ञा करी. पछी बीजा चित्रकारोए तेनुं कारण समजावीने तेने मांड मांड छोडाव्यो; तथापि कुमारे ते चित्रकारनी आंगळी छेदीने देश बहार काढी मूक्यो. ते त्यांथी नीकळीने हस्तिनापुरमां रहेला अदिनशत्रु राजाने मळ्यो. राजाए तेने मिथिलामांथी नीकळवानुं कारण पूछयुं. त्यारे तेणे पोतानो वृत्तांत कहेतां मल्लिकुमारीना अद्भूत रूपनुं पण वर्णन करी बताव्युं; तेथी मोह पामी राजाए तेने माटे दूत मोकल्यो.

छठा मित्र अभिचंद्रनो जीव कांपिल्य नगरमां अजितशत्रु नामे राजा थयो हतो. अहीं एकदा मल्लिकुमारीए कोइ तापसीने वादमां हरावी, तेथी ते कोप करीने कांपिल्य नगरमां अजितशत्रु राजा पासे आवी, अने मल्लिकुमारीना अनुपम रूपनुं तेनी पासे वर्णन कर्युं. जे सांभळी राजाए तेने माटे दूत मोकल्यो.

आ प्रमाणे ते छए राजाना दूतोए एक साथे आवीने कुंभ राजा पासे मल्लिकुमारीनी मागणी करी. राजाए ते नहीं स्वीकारतां छए दूतोने अपद्वारथी काढी मूक्या. दूतोना अपमानयुक्त वचन सांभळी ते छए राजाओने कोप उत्पन्न थयो; तेथी सर्वेए मिथिला उपर चडाइ करी. कुंभराजाने तेमने जितवानो उपाय सूज्यो नहीं. तेथी चितमां आकुळव्याकुळ थवा लाग्या. पिताने तेवी स्थितिमां जोइ मल्लिकुमारीए आश्वासन आपीने कह्युं के, 'हे पिता ! तमे दूत मोकलीने ते छए राजाओने कहेवरावो के तमने हुं कन्या आपीश; एटले विश्वास पामीने तेओ जुदा जुदा अहीं आवशे; पछी हुं तेमने समजावीश.' कुंभराजाए ते प्रमाणे कहेवरावावा साथे एवी गोठवण करी के जेथी तेमने प्रथम मल्लिकुमारीए पेला गर्भगृहमां जुदा जुदा द्वारथी प्रवेश कराव्यो. तेमां पूर्वे युक्तिथी बनावेली मल्लिकुमारीनी प्रतिमाने जोइ तेओ 'आ मल्लिकुमारीज छे' एम मानता तेना रूपने विषे मोह पामी निर्निमेषपणे ते प्रतिमाने जोइ रह्या. एटलामां मल्लिकुमारीए आवीने तालुस्थाने राखेला ढांकणाने दूर कर्युं, एटले तेमांथी मृत्यु पामेला सर्पादिकना तथा मनुष्यना गंधथी पण महा उत्कट दुर्गंध उछळ्यो; तेथी ते छए राजाओ पोतपोतानी नासिका ढांकवा लाग्या. त्यारे मल्लिकुमारीए कह्युं के,

' अरे राजाओ ! तमे आम पराङ्मुख केम थया ? ' तेओ बोल्या के, ' अमे आ दुर्गंधथी पराभव पामी गया छीए. ' मल्लिकुमारी बोल्या. ' अरे देवानुप्रियो ! हंमेशा उत्तम आहारनो एकेक कोळीओ क्षेपन करवाथी आ सुवर्णनी पुतळीमां पण तेनो पुद्‌गळ परिणाम आवा दुर्गंधरूप थयो, तो आ औदारिक देह के जे मांस रुधिरादि सात धातुओथी बनेला छे तेमां दररोज नखातां अन्नना ३२ कवळथी केवो पुद्‌गळ परिणाम थाय ते विचारो. हे राजाओ ! तमे मारा पर मोह पामो छो पण विचारो के आ स्त्रीदेहमां सारभूत शुं छे ? वळी हे राजाओ ! तमे पूर्वे मोटुं देवसंबंधी आयुष्य भोगव्युं छे तेना सुखना प्रमाणमां आ मनुष्य भवनुं सुख शी गणत्रीमां छे. ' आ प्रमाणे कहीने तेमनो पूर्वभव कही संभळाव्यो. ते सांभळी तेओने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी मल्लिकुमारी बोल्या के, ' अरे भाइओ ! हवे मारे दीक्षा लेवी छे. तमे शुं करशो ? ' तेओ बोल्या के ' अमे पण दीक्षा लइशुं. ' आ प्रमाणे कही संसारमांथी निर्वेद पामी तेओ पोतपोताना राज्यमां गया अने पोतपोताना पुत्रोनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो.

श्री मल्लिप्रभुए सांवत्सरिक महादान आप्या पछी पोष शुक्ल एकादशीने दिवसे अष्टम भक्त करी अश्विनी नक्षत्रनो चंद्र थतां जन्मथी सो वर्षनी वये त्रणसो राजाओ अने त्रणसो स्त्रीओ साथे सिद्ध भगवंतनी साक्षीए महाव्रतने अंगीकार कर्युं. तेज दिवसे तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पेला छ राजाओए पण तेमनी पासे आवीने दीक्षा ग्रहण करी. तेमना शासनमां भिषग् विगेरे अठ्ठावीश गणधर, चालीश हजार साधुओ, पंचावन हजार साध्वीओ, त्रण लाख ने सीत्तेर हजार श्राविका, अने एक लाखने एशींहजार श्रावको थया. पोताना परिवार साथे मल्लिप्रभु विहार करी पंचावन हजार वर्षनुं आयुष्य भोगवी पांचसो साधु अने पांचसो साध्वीओनी साथे फाल्गुन शुक्ल द्वादशीए भरणी नक्षत्रमां श्रीसमेतशिखरगिरि उपर मोक्षने प्राप्त थया.

" आ प्रमाणे अवश्य मोक्षने पामनारा श्रीमल्लिनाथ प्रभुए पण जेम शीलने पालन कर्युं तेम भव्य प्राणीओए अवश्य शीलनुं पालन करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्यवृत्तौ
शीलविषये एकोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०१ ॥

व्याख्यान १०२ मुं.

हवे मैथुन सेववाथी घणा गुणनी हानि थाय छे ते कहे छे.

वाक्यमंत्ररसादीनां, सिद्धिः कीर्त्त्यादयो गुणाः ।
नश्यन्ति तत्क्षणादेव, अब्रह्मसेवनान्नृणाम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" अब्रह्म (मैथुन) सेवन करवाथी मनुष्योना वचनसिद्धि, मंत्रसिद्धि, रसादिकनी सिद्धि अने कीर्त्ति विगेरे गुणो तत्काळ नाश पामी जाय छे. " ते विषे सत्यकि विद्याधरनो संबंध छे, छे आ प्रमाणेः—

सत्यकि विद्याधरनी कथा.

चेटक महाराजानी पुत्री सुज्येष्ठा साध्वी थया हता. तेओ एकदा आतापना करता हता, ते वखते तेनुं सौंदर्य जोइने पेढाळ नामे विद्याधर तेनापर मोह पामी गयो, तेथी तत्काळ धूमाडो विकुर्वी दिग्मूढ करी तेणे भ्रमररूपे तेने सेवी. तेनाथी सत्यकि नामे एक पुत्र थयो. ते अनुक्रमे विद्याग्रहणने योग्य थयो, त्यारे सोनाना पात्रमां वाघणनुं दुध राखवानी जेम विद्याओ आपवासारु पेढाळ विद्याधरे साध्वी पासेथी अपहरीने तेने विद्यामंत्र विगेरे आप्युं. रोहिणी विद्याए सत्यकिना जीवने तेनुं आराधन करतां पांच जन्मसुधी मृत्यु पमाड्यो हतो, छठ्ठे जन्मे छ मास आयुष्य बाकी रह्युं ते वखते प्रसन्न थइ हती पण तेणे आदरी नहोती; ते आ सातमे भवे पूर्व जन्ममां साधेली होवाथी वगर आराध्ये संतुष्ट थइ अने ललाटमां छिद्र करी ते द्वारा हृदयमां जइने रही. दिव्य अनुभावथी ते ललाटनुं छिद्र दिव्य नेत्ररूप थइ गयुं. पछी पोताना पिता पेढाळने साध्वीना शीलनो लोप करनार जाणी सत्यकिए मारी नाख्यो; अने माताना तथा जिनेश्वरना वचनथी तेणे दृढ समकित अंगीकार कर्युं. पछी त्रिकाळ जिनपूजा करवाथी तेणे तीर्थंकरनामकर्म संपादन कर्युं. श्री लोकप्रकाशमां कह्युं छे के " सत्यकि महादेव एवा नामथी विख्यात अग्यारमो रुद्र थयो. ते सत्यकि विद्याधरनो जीव आवती चोवीशीमां सुव्रत नामे अग्यारमा तीर्थंकर थशे. "

सत्यकि अविरतिपणाने लीधे स्त्रीओमां आसक्त थइ अनेक राजादिकनी स्त्रीओने बळात्कारे सेवन करतो हतो. तेथी एकदा उज्जयिनी नगरीना चंडप्रद्योत राजाए एवो पडह वगडाव्यो के, 'सत्यकिने वश करी शके तेवी कोइ स्त्री छे?' ते वखते उमा नामनी वेश्याए कह्युं के, ' हुं ते निशाचरने वश करीश. ' पछी

राजाए तेने तेनी इच्छा प्रमाणे करवानी आज्ञा आपी. एक वखते उमाए चंद्रशाळा (अगाशी) उपर रही तेने पोतानुं सौंदर्य बताव्युं. ते जोतांज सत्यकि सत्वर त्यां आवी तेने सेववा लाग्यो. एक वखते वेश्याए एकांतमां पूछयुं के, 'तमारी पासे कइ कइ विद्याओ छे ?' तेणे कह्युं के," मारी पासे रोहिणी विगेरे विद्याओ छे अने ते सर्वदा मारा अंगमांज रहे छे, पण ज्यारे हुं मैथुन करुं छुं त्यारे ते विद्याओने अने खड्गने दूर मूकुछुं, ते वखते मारामां जरा पण बळ रहेतुं नथी." आ वात वेश्याए राजानी आगल निवेदन करी; अने कह्युं के "जो कोइ शब्दवेधी पुरुष ज्यारे ते मारी साथे मैथुनासक्त होय त्यारे तेने मारे तो ते मरी जाय, अन्यथा मरशे नहीं. पण ते पुरुष एवो चतुर होवो जोइए के, जे मारो बचाव करीने तेने एकलानेज हणी शके. तेवो पुरुष कोइ छे ?" पछी तेवा पुरुषनी शोध करतां राजानी पासे रहेनारा केटलाक शस्त्रकुशल पुरुषोए पोताना चातुर्यनी परीक्षा आपी. ते एवी रीते के, कमलना पत्रो उपराउपर राखीने राजाए कह्युं के, 'उपरना आटला पत्र वींधवा अने नीचेना आटला बचाववा.' एटले तेओए उपरना तेटलाज वींध्या अने नीचेना बचाव्या. पछी राजाए ते कळा वेश्याने बतावीने कह्युं के, 'आ युक्तिथी तारुं रक्षण करशुं.' वेश्या ते वातनो स्वीकार करीने पोताने घेर गइ. पछी ते सुभटोए संकेत प्रमाणे गुप्त रही उमा वेश्या साथे मैथुन करता एवा सत्यकिने जोइ ते युक्तिथी तेने मारी नाख्यो. ते साथे उमाने पण विषकंदळीरूप जाणी मारी नाखी. सत्यकि मृत्यु पामीने नरके गयो.

पछी काळसंदीपक नामे सत्यकिना मित्र विद्याधरे ते वात जाणीने उज्जयिनी आखी नगरी चूर्ण करी नाखवा माटे आखी नगरी उपर शीला रची. एटले राजाए तेने भोगादिक धर्या. ते विद्याधरे आकाशमां रहीने पोताना मित्र सत्यकिनुं महत्व वधारवा माटे सत्यकिना नामथीज कह्युं के 'तमे मने कामभोग करतां मारी नाख्यो छे, तेथी जो मैथुनासक्त अवस्थाने रूपे मारी मूर्त्ति करीने मारी पूजा करो अने शंकर पार्वतीना नामथी अमारा गुण गाओ तो जीवता मूकुं, अन्यथा मूकीश नहीं.' लोकोए ते प्रमाणे करवुं कबुल कर्युं. "मरणना भयथी प्राणी शुं करता नथी ?" अनुक्रमे इश्वरनुं लिंग जळाधारी रूप योनिमां राखीने तेनी पूजा प्रवर्ती. "विषयलंपटपणाने धिक्कार छे के जेनी आसक्तिथी आवो बळवान् सत्यकि पण पोतानी शक्तिने कुंठित करी नाखीने नरके गयो.

॥ इति सत्यकि विद्याधर प्रबंध ॥

हवे सुज्येष्टाए केवी रीते दीक्षा लीधी हती तेनुं वृत्तांत आ प्रमाणे—विशाळा नगरीमां चेटक राजानी एक पुत्री सुज्येष्टा नामे हती. एक वखते तेणीए

मिथ्यात्वने स्थापन करती कोइ एक तापसीने वादमां जिती लीधी. ते तापसीए तेनुं स्वरूप चित्रपट उपर आलेखी श्रेणिक राजाने बताव्युं. ते जोइ श्रेणिक राजा मोह पामी गयो. तेनी प्रेरणाथी तेना मंत्री अभयकुमारे विशाळानगरीमां आवी राजमहेल पासे एक दुकान मांडी. तेमां चित्रपट उपर श्रेणिक राजानुं चित्र आळेखी नित्य तेनी पूजा करवा लाग्यो. एक वखते ते चित्र सुज्येष्टानी दासीओना जोवामां आव्युं. तेमणे ते लइ जइने सुज्येष्टाने बताव्युं. श्रेणिकनुं स्वरूप जोइ सुज्येष्टा मोह पामी गइ; एटले तेणे पोतानो अभिप्राय अभयकुमारने जणाव्यो. पछी अभयकुमारे तेना महेलथी राजगृहीना सीमाडा सुधी एक सुरंगा करावी. श्रेणिक राजाए ते द्वारा त्यां आवी तेने लइ जवानुं जणाव्युं. राजा आव्या. सुज्येष्टा चिल्लणाने लइ तैयार थइने आवती हती तेवामां पोताना आभूषणनो डाबलो भूली गइ, ते लेवाने पाछी गइ. राजा श्रेणिक चेटक राजाना भयथी तत्काळ सुज्येष्टाने बदले चिल्लणाने लइने कागडानी जेम नाशी गयो. सुज्येष्टा संकेतस्थले आवी त्यां तो चेल्लणाने के राजाने जोया नहि, एटले तेणे उंचे स्वरे पोकार कर्यो के 'कोइ चेल्लणाने हरी जाय छे.' ते सांभळी चेटक राजा त्यां दोडी आव्या. तेणे श्रेणिक राजाना अंगरक्षक सुलसाना बत्रीश पुत्रोने एक बाणे मारी नाख्या; कारणके तेओ सर्व साथे जन्मेला अने समुदायी कर्मबंधवाळा हता. पछी चेटक महाराजाए पोताना नगरमां आवीने सुज्येष्टाने माटे विवाहनी सामग्री तैयार करावबा मांडी. त्यारे सुज्येष्टाए पिताने वारीने दीक्षा ग्रहण करी; कारणके ते सती होवाथी वचनसाक्षीए श्रेणिक राजाने वरेली होवाने लीधे बीजा पुरुषने वरी नहीं. पण पेढाल विद्याधरे कपटथी तेने भोगवी, जेथी तेने गर्भ रह्यो. एटले गणधरे तेना सतीत्वने विषे वीरभगवंतने पूछयुं. वीरभगवंते कह्युं के "ते सुज्येष्टानो दोष नथी, ते तो निश्चळ शीलवाळीज रहेली छे. श्रेणिकराजाना संगना अभावथी तेणे मनसाक्षीए सर्वथा शील अंगीकार कर्युं छे." पछी सुज्येष्टा साध्वीए यावज्जीव सुधी मन, वचन, कायाथी शुद्ध एवुं शीलव्रत पाळ्युं. ते विषे कहेवाय छे के "चेटक राजाने सात पुत्रीओ हती, ते सर्वे शीलवती हती, एम तीर्थंकरोए तेमनी श्लाघा करेली छे."

इति सुज्येष्टा प्रबंध.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
शीलविषये द्व्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥१०२॥

व्याख्यान १०३ मुं.

स्त्रीचरित्र जाणवाने कोइपण कुशळ नथी ते विषे कहे छे.

सुश्लिष्टामपिच स्त्रीणा–महो कपटनाटकम् ।
न स्याद्वेधापि मेधावी, तस्य तत्त्वावबोधने ॥ १ ॥

व्याख्या.

"स्त्रीओनुं कपटरूप नाटक एवुं योजायेलुं होय छे के जेनुं तत्त्व समजवाने बुद्धिवान् (ब्रह्मा) नुं डहापण पण काम लागतुं नथी." ते विषे नुपूरपंडितानुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

नुपूरपंडितानी कथा.

राजगृही नगरीमां देवदत्त नामे एक सोनी रहेतो हतो. तेने देवदिन्न नामे एक पुत्र हतो. तेने दुर्गिला नामे स्त्री हती. एक वखते ते झीणा अने आर्द्र वस्त्र पहेरी नदीमां स्नान करती हती. तेवीज स्थितिमां ते कोइ नागरिक पुरुषना जोवामां आवी. तेने जोइ मोह पामीने ते पुरुष आ प्रमाणे बोल्यो–"सुंदरि! आ नदी अने वृक्षो तें सारी रीते स्नान कर्युं? एम पूछे छे अने हुं तो तारा चरणकमलमां पडीने पूछुं छुं." दुर्गिलाए तेने उत्तर आप्यो के–"मने स्नान विषे पूछनारा नदी तथा वृक्षोनुं कल्याण थाओ; अने मने ते विषे पूछनार पुरुषनुं मनइच्छित हुं पूर्ण करीश." आ प्रमाणे सांभळी ते नागरिक तेने मळवाने उत्सुक थयो. पछी ते कोइ तापसीने मळ्यो अने तेने पोतानी इच्छा समजावी दुर्गिलाने घेर मोकली. तेणीए दुर्गिलाने पेला नागरिकना प्रेमनी वात करी एटले दुर्गिला बोली–"अरे पांखंडीनि! तुं आवुं अश्राव्य केम बोले छे, मारा घरमांथी चाली जा." आम कहीने घरमांथी नीकळती ते तापसीना पृष्ठ उपर तेणे कज्जलनो थापो आप्यो. तापसीए नागरिक पासे आवी पोताना अपमाननुं वृत्तांत जणाव्युं; अने पृष्ठ भाग बताव्यो. ते जोइ नागरिक समजी गयो के, ते चतुराए मने कृष्णपक्षनी पंचमीनी रात्रे मळवानो संकेत आप्यो. पण क्या स्थळे मळवुं? ते जणाव्युं नथी. तेथी तणे तापसीने पुनः भिक्षा मागवाने मिषे तेने घेर मोकली. तापसी त्यां जइने बोली के 'हे सुंदरी! ते नागरिकने मळवानुं स्थळ कहे.' एटले दुर्गि-

लाए रोष करी तेने हाथे पकडी पछवाडेना वाडामां आवेला अशोक वृक्ष तळे थइने पाछले द्वारे काढी मूकी. तापसीए ते वात पेला पुरुष आगळ जणावी. एटले तणे जाण्युं के, 'कृष्णपंचमीए वाडामां अशोक वृक्ष तळे तेनुं मळवुं थशे.' ज्यारे संकेतनो दिवस आव्यो त्यारे ते त्यां गयो. बंने त्यां मळ्या अने विनोद करतां तेमना नेत्र मुद्रित थइ गयां. ते वखते तेनो सासरो देवदत्त मूत्रोत्सर्ग करवाने त्यां आव्यो. त्यां पुत्रवधू साथे बीजा पुरुषने जोइ तेना डाबा पगमांथी एक नुपूर काढी लीधुं. तत्काळ दुर्गिलाना जाणवामां ते वात आवी, एटले तेणीए पेला जारने जगाडी शिखडावीने तेने घेर मोकली दीधो. पछी पोताना घरमां जइ पोताना पतिने मधुर वाणीथी कह्युं के, 'प्राणेश ! चालो, आज तो आपणे अशोक वृक्ष नीचे जइने निद्रा लइए.' पतिए कबुल कर्युं, एटले बंने जण त्यां जइने सुता. थोडीवार पछी निद्रा पामेला पतिने जगाडीने स्त्रीए कह्युं के, 'तमारा कुळमां आ केवी रीत कहेवाय के सासरो जाते आवी पुत्रवधूना पगमांथी नुपूर काढी ले.' ते सांभळी तेना पतिने क्रोध चडयो. तेथी प्रातःकाळे तेणे पोताना पिताने कह्युं के, 'अरे पिता ! हुं मारी स्त्री साथे सुतो हतो, ते वखते तमे नुपूर लइ गया ते शुं ? पुत्रवधूनुं गुह्य सासराए जोवुं योग्य नथी.' पिताए कह्युं, 'अरे पुत्र ! कोइ जार तेनी साथे सुतो हतो तेथी में तेम कर्युं हतुं अने पछी तने त्यां लइ जइ सुवारीने तेणे आ कपट करेलुं छे.'

ते सांभळी दुर्गिला बोली के, 'ते वात असत्य छे, हुं मारुं सत्य देवतानी आगळ बतावीश.' एम कही ते सर्वने लइ नगर बहार रहेला कोइ प्रभाविक यक्षनी पासे पोतानुं सत्य बताववा चाली. मार्गमां प्रथमथी संकेत करी राखेलो पेलो जार जुदो वेष लइ गांडो बनीने आव्यो, अने दुर्गिलाने गळे वृक्षने जेम वानर वळगे तेम वळगी पडयो. तेने दूर करी यक्षना मंदिर पासे आवी पवित्र थइ तेने पूजीने बोली के. "हे देव ! आ गांडो पुरुष अने मारो पति ते सिवाय जो कोइ त्रीजो पुरुष मने लग्न थयो होय तो तमे मने योग्य शिक्षा करजो." ते सांभळी यक्ष विचारमां पडयो के 'आनुं सत्य असत्यरूप छे, माटे तेनुं शुं करवुं ?' आम विचारे छे तेवामां तो ते स्त्री तेनी बे जंघा वच्चे थइने नीकळी गइ, एटले लोकोए तेनी प्रशंसा करी अने त्यारथी नुपूरपंडिता एवा नामथी ते ग्रख्यात थइ. आवा तेना चरित्रथी विस्मय पामेला देवदत्त सोनीनी ते दिवसथी निद्रा उडी गइ.

देवदत्तना ते गुणथी राजाए तेने पोताना अंतःपुरनो अधिकारी रक्षक नीम्यो. राजाना अंतःपुरनी मुख्य राणी कोइ हाथीना महावत साथे आसक्त हती. तेना महेलनी पासे हाथी रहेता, तेथी रात्रे ते द्वारा ते महावतने मळती हती. आजे आ नवीन सोनी पहेरेगीर थवाथी अंतःपुरमां जागतो हतो, एटले ते राणी वारंवार तेने जोवा आवती पण तेने जागतो जोइ पाछी फरती हती. पछी राणीनुं वृत्तांत जाणवानी इच्छाथी देवदत्त कपटनिद्राथी सुइ गयो. एटले राणी तेने सुतेलो जोइ महेलना गोख पासे आवी. त्यां पेला जार महावते हाथी उभो करी राखेलो हतो तेणे पोतानी शुंढवडे राणीने नीचे उतारी. एटले महावत तेना वांसामां हाथीनी सांकळ मारीने बोल्यो के ' मोडी केम आवी ?' त्यारे तेणे नवा नीमायेला पहेरेगीरनी वार्त्ता कही. पछी रात्रिना छेल्ला पहोरे पाछी महावते तेवी रीतेज उपर पहोंचाडी दीधी. आ सर्व चरित्र देवदत्तना जोवामां आव्युं. तेथी तेणे विचार्युं के, ' ज्यारे राजानी स्त्रीओनुं आवुं आचरण छे तो पछी बीजा साधारण माणसोनी स्त्रीओ कुशील होय तेमां शुं आश्चर्य ! ' आ प्रमाणे विचारवाथी ते चिंता रहित थइ गयो. तेथी तेने छ मासे तेज रात्रीए पूरी निद्रा आवी गइ. तेनी निद्रानो वृत्तांत जाणी ज्यारे ते जाग्यो त्यारे राजाए तेनुं कारण पूछयुं. तेणे सर्व वृत्तांत स्पष्टपणे कही जणाव्यो. पछी राजाए ते राणीने ओळखी काढवा सारु अंतःपुरनी सर्व स्त्रीओने कह्युं के, ' तमे सौ उघाडे वांसे उभी रहो, अने हुं कमळना दडानो प्रहार करुं ते सहन करो. ' सर्व स्त्रीओए ते स्वीकार्युं. अनुक्रमे ते प्रमाणे करतां ज्यारे पेली कुलटा राणीनो वारो आव्यो, त्यारे कमळपुष्पथी तेनापर प्रहार करतांज ते कपटवडे मूर्छा खाइने पृथ्वीपर पडी गइ. राजा तेना स्त्रीचरित्रने जाणीने बोल्यो के, " अरे स्त्री ! तुं मदोन्मत्त हाथी साथे रमे छे, छतां कृत्रिम हाथिथी बीहे छे, अने लोढानी सांकळनो मार खाइ हर्ष पामे छे छतां आ कमळपत्रना घातथी मूर्छा खाय छे. " आ प्रमाणे कही राजाए क्रोधथी आज्ञा करी के, ' आ हाथी, महावत अने राणीने पर्वतना ऊंचा शिखर उपर चडावीने झंपापात करावो. ' पछी महावत ते राणीने हाथी उपर बेसाडी हाथीने पर्वतना शिखर उपर लइ गयो. त्यां हाथीनो पहेलां एक पग ऊंचो कराव्यो, पछी बे पग ऊंचा कराव्या अने छेवटे त्रण पग उंचा रखावी एक पगे उभो राख्यो. हाथीनी आ कळाथी रंजित थयेला लोकोए राजाने विनंति करी के, ' स्वामी ! आवा गजेंद्ररत्नने मारवो योग्य नथी. ' रा-

जाए तेने अभयदान आप्युं, अने महावतने कह्युं के, ' ते हाथीने गिरिथी नीचे उतारी दे. ' महावते कह्युं के, ' जो अमने अभयदान आपो तो हुं तेने कुशळताथी नीचे उतारुं. ' राजाए तेने पण अभयदान आप्युं. एटले तेणे हाथीने हळवे हळवे क्षेमकुशळ नीचे उतार्यो. पछी राणीने अने महावतने राजाए देशपार कर्या.

राणी अने महावतने त्यांथी नीकळीने आगळ जतां मार्गमां एक देवालय आव्युं, त्यां रात्रि पडवाथी ते बंने सुइ गया. तेवामां कोइ चोर गाममांथी चोरी करीने त्यां आव्यो. कोटवालने तेनी खबर पडतां तेणे आवीने देवालयने घेरी लीधुं. अंदर महावत तो निद्रावश थइ गयो हतो, पण पेला चोरना करस्पर्शथी राणी जाग्रत थइ अने तेने जोइने बोली के, ' तुं मने स्त्री तरीके अंगिकार कर. ' चोरे कह्युं के, ' जो तुं प्रातःकाले कोटवाल पासे मने तारो स्वामी कही मारा जीवनी रक्षा करे तो हुं तारो स्वामी थइ तने स्वीकारुं. तेणीए ते वात कबुल करी. प्रातःकाळे कोटवाले सुभटो साथे अंदर प्रवेश करीने पूछयुं के, ' तमारामां कोण चोर छे ? ' राणीए दृष्टिनी संज्ञा करीने महावतने बताव्यो. एटले तेओए तेने पकडी गुन्हो साबित गणीने शूळीए चडावी दीधो. शूळी उपर रह्या सता तेने तृषा लागी, तेथी मार्गे चाल्या जता कोइ श्रावकने देखीने तेणे तेनी पासे जळ माग्युं. श्रावक तेने नवकार मंत्रनुं पद आपी जळ लेवा गयो. तेना आव्या अगाउ शूळी उपर नवकार मंत्रने स्मरण करतो महावत मृत्यु पामीने व्यंतरनीकायमां देव थयो.

अहिं पेली दुष्ट राणी चोरनी साथे चाली नीकळी. मार्गमां एक नदी आवी. नदीमां पूर जोइ चोरे कह्युं के, ' प्रथम तारा वस्त्रादि मने आप, तेने पेले तीर मूकी आवीने पछी हुं तने सुखेथी लइ जइश. हुं ज्यांसुधी आवुं त्यां सुधी तुं अहिं रहेजे. ' तेणीए तेम कर्युं. चोरे नदीने सामे तीरे जइने विचार्युं के, ' आ स्त्री पोताना पतिनी जेम मने पण दुःखमां पाडशे तेथी एनो संग करवो योग्य नथी. ' आवुं विचारी ते चोर पोतानो स्वार्थ साधी तेने छोडीने परभार्यो चाल्यो गयो.

अहिं राणी नग्नपणे हताशा थइ सती वनमां भमती पोकार करवा लागी. एवामां व्यंतर थयेलो तेनो पति शीयाळनुं रूप लइने तेने प्रतिबोध करवा आव्यो. तेणे मुखमां मांस राख्युं हतुं, ते मांसनी पेशी नदीना तीर उपर मूकी नदीकांठे आवेला मत्स्यने पकडवा दोड्यो. एटले मत्स्य तो नदीना जळमां पेशी

गयो, अने पेलुं मांस हतुं ते समडी उपाडी गइ. ते वखते शीयाळ वीलखो थइ आमतेम जोवा लाग्यो. ते जोइ दुर्गिला बोली के-' अरे मूर्ख ! तुं उभयभ्रष्ट थयो, हवे शुं जुवे छे ! ' शीयाळ बोल्यो-' अरे स्त्री ! तुं तो त्रणथी भ्रष्ट थइ छुं, हवे बीजाना दोष शामाटे जुए छे ?' ए प्रमाणे कहीने तेणे दिव्य रूप प्रगट करी कह्युं के, ' अरे पापिणी ! तें जेने मारी नखाव्यो हतो ते हुं महावत छुं. जैन धर्मना प्रभावथी मने आ उत्तम गति प्राप्त थइ छे, माटे तुं पण ते धर्मने अंगीकार कर. ' राणीए ते वात स्वीकारी. एटले तेणे तेने कोइ साध्वी पासे मूकी. त्यां तेणे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे सद्गतिने पामी.

" आ प्रमाणे ते राणी प्रांते शीलव्रतने पाम्या छतां नुपूरपंडितानी असतीपणानी अपकीर्त्तिनो नाद अद्यापि विराम पामतो नथी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ स्त्रीचरित्रविषये त्र्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०३ ॥

व्याख्यान १०४ मुं.

चोथा व्रतने धारण करनार श्रावक आषाढ चातुर्मास्यना सत्कृत्यो अवश्य करे छे, तेथी हवे चातुर्मास्यना कृत्योनुं वर्णन करे छे.

आषाढाख्यचतुर्मास्यां. विशेषाद्विधिपूर्वकम् ॥
अभिग्रहाः सदा ग्राह्याः, सम्यगर्हा विवेकिभिः ॥ १ ॥

व्याख्या.

" विवेकी पुरुषोए आषाढ चातुर्मासने विषे हंमेशा पोताने योग्य एवा अभिग्रहो विधिपूर्वक विशेषे धारण करवा. " आनो भावार्थ एवो छे के, प्रथम द्वादश व्रतनुं उच्चारण करवा वखते जेणे पांचमुं व्रत आदर्युं होय तेणे अवश्य करीने ते नियमोमां दरेक चातुर्मासे संक्षेप करवो एटले मोकळुं राखेलुं होय तेमांथी ओछुं करी ते नियमो पाळवा. अने जेणे पांचमुं व्रत अंगिकार कर्युं न होय तेणे पण प्रत्येक चातुर्मासे योग्य अभिग्रहो स्वीकारवा. तेमां पण आषाढादि चातुर्मास्यमां तो ते विशेषपणे विधिपूर्वक ग्रहण करवा.

वर्षारुतुमां गाडां हांकवा, रथ जोडवा, हळथी खेड करवी, घोडेस्वार थइ फरवुं विगेरे निषेध करवा योग्य छे, कारणके भूमि साथे मेघना जळनो स्पर्श थवाथी लीला घासना अंकुरो, सूक्ष्म संमूर्छिम देडकीओ, पांचे वर्णनी लीलफुल, अळसीया, शंखजातिना जीवो, ममोला, कात्रा, चुडेलना गुच्छो अने भूमिछत्र (बीलाडीना टोप) विगेरे अनेक जीवोनी उत्पत्ति थवानो संभव छे. तथा चातुर्मास्यमां एवा जीवनी रक्षाने माटे पूर्वोक्त शकटखेटनादिनो अभिग्रह धारण करवो योग्य छे. कदि जो कृषिकर्म विगेरेथीज आजीविका होय तो एक बे विगेरे क्षेत्र खेडवानी छुट राखी तेथी विशेष क्षेत्र खेडवानो त्याग करवो. मुख्य रीते तो वर्षाकाळमां सर्व दिशाओमां गमनागमन करवानो निषेध करवो उचित छे, जेवो नियम कृष्ण वासुदेवे अने कुमारपाळे लीधो हतो. कह्युं छे के, " सर्व जीवोनी दयाने माटे वर्षारुतुमां एक स्थाने वसवुं. " पूर्वे श्री नेमिप्रभुना उपदेशथी श्रीकृष्ण वासुदेवे चातुर्मास सुधी द्वारकानी बहार जवानो नियम लीधो हतो अने कुमारपाळे श्री हेमचंद्रसूरिना वचनथी नियम लीधो हतो के " सर्व चैत्योनुं दर्शन अने गुरुनुं वंदन मूकीने प्रायः नगरने विषे पण भमीश नहीं "

एकवचनीपणामां युधिष्ठिर जेवा कुमारपाळराजाए अंगीकार करेला पूर्वोक्त नियमने मोटुं कार्य पडये छते पण छोडी दीधो नहोतो. शकदेशनो म्लेच्छ राजा कुमारपाळना ए नियमनी वात जाणीने तेना देशनो भंग करवाने माटे आव्यो, छतां अभिग्रहधारी कुमारपाळराजा वर्षारुतुमां तेनी सामे युद्ध करवा गयो नहीं. राजाने धर्ममां स्थिर करवाने माटे हेमचंद्रसूरिए देवशक्तिथी ते म्लेच्छराजाने बांधी अणाव्यो अने पोताना राज्यमां छ मास पर्यंत जीव न हणवानी कबुलत कराव्या पछी तेने छुटो कर्यो.

जो के वर्षारुतुमां सर्व दिशाओमां गमन करवानो निषेध छे; छतां कदि सर्व दिशानो नियम न करी शकाय तो जे दिशामां गया वगर निर्वाह थाय तेम न होय ते शिवाय बीजी दिशाओमां जवानो नियम लेवो. एज प्रमाणे जो सर्व सचित्त वस्तुओनो त्याग थइ शके नहीं तो जेना विना निर्वाह न चाले ते शिवाय बीजी वस्तुओनो त्याग करवो. जेम निर्धनने हाथी घोडा अने मरुदेशमां नागरवेल, तेमज पोतपोताना समय वगर आम्रफळ विगेरे अप्राप्य छे तेनो ते स्थितिमां, ते देशमां, ते काळे पण त्याग थाय तो तेथी विरतिरूप महाफळ प्राप्त थाय छे. अन्यथा ते ते वस्तुनुं ग्रहण करवापणुं प्राप्त नहीं थतां छतांपण पशुनी जेम अविरतिपणुं लागे छे अने ते ते नियमना फलथी वंचित थवाय छे. जेम

एकज वार भोजन कर्या छतां पण पच्चक्खाण कर्या वगर एकासणानुं फळ मळे नहीं तेम समजवुं. अछती वस्तुनो पण नियम लीधो होय तो कदि कोइवार तेनो योग मळी जाय तोपण नियम ग्रहण करेलो होवाथी ते वस्तुनुं ग्रहण थतुं नथी, तेथी तेने नियमनुं फळ स्पष्टरीते थाय छे. जेम वंकचूळ नामना चोरना स्वामीए गुरुपासे अजाण्या फळ न खावा एवो नियम लीधो हतो; ते एकवार अरण्यमां बीजा चोर साथे गयो. त्यां सघळा क्षुधार्त्त थया, त्यारे चोर लोको किंपाक जातिना विषफळ लइ आव्या. ते खावानी बीजाओए घणी प्रेरणा करी, तथापि अजाण्या फळना नियमने लीधे वंकचूले ते खाधां नहीं. अने बीजा साथेना चोरोए खाधां तेथी तेओ मृत्यु पामी गया अने वंकचूल बच्यो. माटे एक पक्षनो, एक मासनो, बे मासनो, त्रण मासनो, वा एक, बे, के त्रण वर्ष सुधीनो यथाशक्ति नियम लेवो. जे माणस ज्यांसुधी नियमो पाळी शके त्यांसुधीने माटे नियमो ग्रहण करवा. परंतु क्षणवार पण नियम वगर रहेवुं नहीं. कारणके विरतिनुं मोटुं फळ छे अने अविरतिथी घणा कर्मोनो बंध थवा विगेरे अनेक दोष छे.

वर्षा चातुर्मास्यमां विशेषपणे नियम ग्रहण करवा ते आ प्रमाणे—दररोज बे वार त्रणवार दर्शन करवा, अष्टप्रकारी पूजा करवी, संपूर्ण देववंदन करवुं, (त्रण काळ देव वांदवा), सर्व जिनबिंबनुं अर्चन अने वंदन करवुं, स्नात्रमहोत्सवो करवा, गुरुने द्वादशावर्त्त वंदना करवी, अपूर्व ज्ञाननो अभ्यास करवो, वैयावच्च करवी, ब्रह्मचर्य पाळवुं, प्रासुक जळ पीवुं, सचित्त वस्तुनो त्याग करवो; वळी वादळामांथी जळवृष्टि थाय त्यारे रायण, आंबा विगेरेना फळमां एळो पडे छे तेथी तेनो त्याग करवो. आर्द्रा नक्षत्र बेसतां पक्व आम्रफळमां तेमज तेना रसमां कीडा जेवा तेना जेवाज वर्णवाळा जीवो उत्पन्न थाय छे, तेथी तेनो तेमज वासी कठोळथी बनेला पुडला, वडां विगेरेनो त्याग करवो. पापड, वडी, सुकां शाक भाजी, सर्व जातना तांजलजा विगेरे पत्रशाक, खारेक, टोपरा, सूकी रायण, खजुर, द्राक्ष, नहीं धोयेली खांड अने सुंठ विगेरेमां लीलफुल अने कुंथुवा तथा येल विगेरे उत्पन्न थवानो संभव होवाथी ते ते पदार्थो त्यजी देवा. कदि औषधि विगेरेमां तेमांथी कोइ चीजनी जरुर पडे तो तेने यतनाथी शोधीने ग्रहण करवी.

बनी शके तो चोमासामां खाटला उपर सुवुं, दातण अने जोडा विगेरेनो त्याग करवो; वर्षा चातुर्मास्यमां पृथ्वी खोदवानो, नवीन वस्त्र रंगाववानो अने ग्रामांतर गमन करवा विगेरेनो निषेध करवो. वस्त्र धोवराववानुं पण परिमाण बांधवुं. वर्षाऋतुमां पृथ्वीउपर लिंपवानो अने छाणा थापवानो सर्वथा निषेध

करवो. कारणके छाशमां बे घडी पछी अनेक जीवो उत्पन्न थाय छे, तेमां पण वर्षाऋतुमां तो विशेषे थाय छे. वली घरनी भींतो, स्तंभ, पलंग, कमाड, पाट, पाटला, सींका, घी तेल तथा जळ विगेरेना पात्रो, इंधण अने धान्यप्रमुख सर्व वस्तुओने लीलफुलथी रहित रहेवाने माटे यथायोग्य खुल्ली गरमीमां राखवी, रखा चोपडवी, चुनो चोपडाववो, मेल कढाववो, हवाना भेजविनानी जग्यामां मूकवी, पाणीने बे त्रण वार गळवुं. तेल, गोळ, छाश अने जळविगेरेना पात्रोने सारी रीते ढांकवा. ओसामण अने स्नानतुं जळ नीलफुलरहित अने जे दर विगेरेथी पोली न होय तेवी भूमिमां छुटुं छुटुं थोडुं थोडुं ढोळवुं. चुलो अने दीवा उघाडा न राखवा. खांडवुं, दळवुं, रांधवुं, तेमज वस्त्र अने भाजनो धोवा–विगेरेमां सारी जतना करवी. अने जिनप्रासाद तथा उपाश्रय विगेरे धर्मालयो पण सारीरीते जोइ, समरावीने यथायोग्य जतना करवी.

अन्यमतीओना शास्त्रोमां पण आ बाबत केटलाक नियमो कहेला छे. वशिष्ट पूछे छे के, " हे ब्रह्मा ! चोमासामां श्रीविष्णुभगवान् समुद्रमां जइने शामाटे सुवे छे ? ते समये कया कया कार्योनो त्याग करवो ? अने ते प्रमाणे त्याग करवाथी शुं फळ प्राप्त थाय ? ते कहो. " ब्रह्मा कहे छे के–" देवाधिपति विष्णुभगवान् सुता नथी, तेम जागता पण नथी, पण वर्षाऋतुमां तेवो उपचार करेलो छे. तेथी ज्यारे श्री विष्णु चोमासामां योगध्यानमां लीन थाय छे, ते समये जे जे वर्जवा योग्य छे ते सांभळो—वर्षाऋतुमां प्रवास करवो नहीं, मृत्तिका खोदवी नहीं, वृतांक (रिंगणा), अडद, चोळा, कलथी, तुवेर अने कालींगडा विगेरे वस्तुओ तथा मूळा, तांजलजा विगेरे पत्रशाक खावा नहीं. अने एकज वार जमवुं. चातुर्मास्यमां जे ए प्रमाणे वर्ते ते पुरुष चतुर्भुज थइ परमगतिने पामे छे. वळी कायम रात्रिभोजन करवुं नहीं. चातुर्मास्यमां तो विशेषे करीने रात्रे खावुं नहीं. जे प्राणी ए प्रमाणे वर्ते ते आ लोकनी तथा परलोकनी सर्व कामनाने पामे छे. वळी विष्णु शयन करे ते समये जे मद्य मांसनो पण त्याग करे तेने मासे मासे सो अश्वमेघ यज्ञोनुं फळ मळे छे. इत्यादि." वळी मार्कंड मुनि कहे छे के " हे राजा ! जे माणस चातुर्मास्यमां तैल मर्दन करे नहीं, ते घणा पुत्र तथा धनवडे युक्त अने निरोगी थाय छे. जे पुष्पादि भोगनो त्याग करे ते स्वर्गलोकमां पूजाय छे. जे कडवो, खारो, तीखो, मीठो, कषायलो अने खाटो–ए छ रसने वर्जे छे ते कदिपण निर्भागीपणुं पामतो नथी. तांबुल तजवाथी

भोग अने लावण्यने पामे छे. जे पाका कंदमूळ, फळ, पत्र, पुष्पादि तजे छे ते दीर्घ वंशने पामे छे. जे पृथ्वी उपर संथारो करीने सुवे ते विष्णुनो अनुचर थाय छे. जे एकांतरे उपवास करे ते ब्रह्मलोकमां पूजाय छे; अने जे नख केश वधारे छे तेने दिवसे दिवसे गंगास्नाननुं फळ मळे छे. तेथी चातुर्मास्यमां उपवासनो नियम धरवो अने पारणे सदा मौनपणे भोजन करवुं. टुंकामां सर्व प्रयत्नवडे चातुर्मास्य व्रत धारण करवुं." आ प्रमाणे भविष्योत्तर पुराणमां तथा अनेक लोक लोकोत्तर शास्त्रने विषे चातुर्मासिक कृत्य संबंधी वर्णन करेलुं छे, ते जाणीने तेनो अंगीकार करवानुं स्वीकारवुं. ते विषे एक नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे—

विजयपुर नगरमां विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने घणा पुत्रो हता. तेमां विजयश्री नामे पुत्र राज्यने योग्य होवाथी एने बीजो कोइ पराभव करवा न इच्छे अथवा मारी न नाखे एवुं चिंतवीने राजा तेने आदर आपतो नहोतो. तेथी ते पुत्र दुःख पामीने विचारवा लाग्यो के, "मारे अहिं रहेवुं शा कामनुं छे ? माटे हुं तो देशांतरे जाउं, कह्युं छे के–जे पुरुष घरमांथी नीकळीने पृथ्वीपर रहेला अनेक सुंदर देखावो अने आश्चर्यो न जुए ते पुरुष कुवाना देडका जेवो छे. वळी जे पुरुष मुसाफरी करी पृथ्वीपर भमे ते विचित्र भाषाओ जाणे, अनेक प्रकारनी देश देशनी रीतिओ समजे, जोवे अने घणां आश्चर्योनुं अवलोकन करे." आवुं चिंतवी ते राजपुत्र एकलो हाथमां खड्ग लइ नगरनी बहार नीकळी गयो. पृथ्वीपर स्वेच्छाए भमतां ते कोइ अरण्यमां आवी चढ्यो. मध्यान्ह समय थवाथी क्षुधा अने तृषावडे पीडित थयो. तेवामां सर्व अंगे दिव्य आकृतिवाळा पुरुषे प्रगट थइने तेने स्नेहपूर्वक बोलावी एक सर्व उपद्रवने वारनारुं अने बीजुं सर्व इष्टनुं साधनारुं–एवा बे रत्नो आप्या. कुमारे पूछ्युं के, 'तमे कोण छो ?' तेणे कह्युं, 'पोताना नगरमां गया पछी कोइ मुनिना मुखेथी तुं मारुं चरित्र जाणीश.' पछी कुमार ते रत्नोना प्रभावथी सर्वत्र विलास करतो कुसुमपुरमां आव्यो. ते नगरना राजा देवशर्माने तीव्र नेत्रपीडा उत्पन्न थइ हती; तेथी ते मटाडनार कोइ पुरुषनी शोधने माटे पडह वागतो हतो. कुमारे ते पडह छबीने रत्नना प्रभावथी तेना नेत्रनी पीडा हरी लीधी. राजाए संतुष्ट थइने तेने राज्य आप्युं, पुण्यश्री नामनी पोतानी पुत्री परणावी, अने पोते दीक्षा लइने चाली नीकळ्यो. अनुक्रमे तेना पिताए पण पोतानुं राज्य तेने सोंपीने दीक्षा लीधी. आ प्रमाणे विजयश्री कुमार बंने राज्यने भोगववा लाग्यो.

एकदा देवशर्मा राजर्षि त्रण ज्ञानी थया सता त्यां पधार्या. तेमणे कुमारने तेना पूर्व भवनी वार्त्ता कही के, "क्षेमापुरी नामे नगरीमां सुवृत्त नामे एक श्रेष्ठी हतो. तेणे गुरु पासे यथाशक्ति चातुर्मास्य संबंधी नियमो ग्रहण कर्या. तेनो एक सेवक हतो. तेणे पण प्रतिवर्षे वर्षाचातुर्मास्यमां रात्रिभोजन, मद्य, मधु अने मांसना भोजननो त्याग कर्यो. ते सेवक मृत्यु पामीने तुं थयो छुं, अने जे सुवृत्त श्रेष्ठी हतो ते महर्द्धिक देव थयो छे. तेणे पूर्व भवना तारा स्नेहथी तने बे रत्नो आप्यां हतां." आ प्रमाणे सांभळी विजयश्री कुमारने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पछी ते विविध प्रकारना नियमोने पाळीने स्वर्गे गयो. त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामशे. आ दृष्टांतथी चातुर्मास्य संबंधी नियमोनो महिमा जाणी लेवो.

वळी बीजा चातुर्मास्यमां पण यथायोग्य नियमो धारण करवा. जेमके फाल्गुन मासनी पूर्णिमाथी आरंभी कार्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी प्रायः पत्रवाळुं[1] शाक भक्षण करवुं नहीं. तेमज तल विगेरे पदार्थो न राखवा. कारणके तेथी घणा त्रस जीवोनो विनाश थवा संभव छे. वळी सामान्ये कहेलुं छे के, "अजाण्युं फळ, नहीं शोधेलुं शाक, पत्र, सोपारी विगेरे आखां फळ, गांधीना हाटनां चूर्ण, मलीन घी अने परीक्षा वगरना माणसे लावेला बीजा पदार्थो खावाथी मांसभक्षण तुल्य दोष प्राप्त थाय छे."

जो के ए त्रणे चातुर्मास्यमां यथायोग्य विधिए नियमो पाळवा, तेमां पण प्रथम तिथिओ तो अवश्य पाळवी. ते तिथिओना त्रण प्रकार छे. बे चौदश, बे अष्टमी, अमास अने पूर्णिमा—ए छ चारित्रतिथि कहेवाय छे. बे बीज, बे पंचमी अने बे एकादशी—ए छ ज्ञानतिथि कहेवाय छे. ए तिथिओमां ज्ञाननी आराधना करवी. बाकीनी दर्शनतिथिओ कहेवाय छे, तेमां दर्शननो महिमा करवो. सामान्यपणे ए सर्व तिथिओमां देवार्चन तथा शास्त्रश्रवण विगेरे क्रियाओ करवी. तेमां पण चातुर्मासिक पर्वने दिवसे विशेषपणे करवी. कह्युं छे के, "सामायिक, आवश्यक (प्रतिक्रमण), पौषध, देवार्चन, स्नात्र, विलेपन, ब्रह्मचर्य, दान अने तप इत्यादि भव्य जनोना चातुर्मास्यना आभूषणो छे." संक्षेपमां एटलुंज के, ए कार्यो चातुर्मास्यना अलंकाररूप छे. तेथी हे भव्यो ! तमारे सेववा योग्य छे. तेमां प्रथम मुहूर्त्त (बे घडी) सुधी जे रागद्वेषना हेतुओमां मध्यस्थपणुं राखवुं ते सामायिक कहेवाय छे. तेवा सामायिकने आच-

---

१ तांजळजो, मेथी, कोथमरी विगेरे भाजीओ अने अजमा, अळवी विगेरे पानो.

रनारा श्रावको बे प्रकारना होय छे. ऋद्धिमान् अने ऋद्धिरहित. तेमां जे ऋद्धिरहित श्रावक होय ते चैत्यमां, साधुनी पासे, पौषधशाळामां अथवा घेर ए चार स्थानकमां जे निर्विघ्न स्थळ होय त्यां सामायिक करे छे अने जे ऋद्धिमान् श्रावक होय ते जैनशासननी उन्नतिने माटे मोटा आडंबर साथे उपाश्रये जइनेज सामायिक करे छे. अढारसो धनाढ्योनी साथे कुमारपाळ राजा उपाश्रये जइने सामायिक करता हता. तेनी अने चंद्रावतंसकराजानी जेम सामायिक करवुं. हवे जे आवश्यक क्रिया छे ते उभय काळने विषे करवानी छे. ते विषे कह्युं छे के, 'वस्त्रमां उत्तम शुं? पडी (पट्टवस्त्र); मरुदेशमां दुर्लभ शुं? क (जळ); पवनथी पण चपळ शुं ? मण (मन); दिवसनुं पाप कोण हरे ? " पडिक्कमण, " अर्थात् दिवसना पापने हरनार पडिक्कमण छे एम सिद्ध थाय छे. ते प्रतिक्रमण महणसिंह श्रावकनी जेम दृढताथी करवुं. पौषध चारे पर्वणीए[1] चारे प्रकारे[2] करवो. केशर बरास विगेरेथी अर्चन, जलादिकथी स्नात्र अने कुंकुम विगेरेथी विलेपन ए त्रण पदवडे समस्त पूजानो संग्रह जाणी लेवो. ब्रह्मचर्य सुदर्शनश्रेष्ठीनी जेम पाळवुं. ते विषे एटले सुधी कह्युं छे के, 'परस्त्रीना अवयवनुं आभूषण पण जोवुं नहीं.' ते बाबतमां एक दृष्टांत छे के, ज्यारे रावणे सीतानुं हरण कर्युं त्यारे राम लक्ष्मण तेने पगले पगले वनमां शोधवा नीकळतां सुग्रीव विगेरे वानरोने मळ्या. तेमने सीतानी शोध विषे पूछतां तेओए कुंडळ विगेरे सीताना आभूषणो जे तेणीए मार्गमां नाखी दीधेला ते बताव्या. रामे ते ओळखवाने माटे लक्ष्मणने बताव्या. त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के,

कुंडलैः नाभिजानामि, नाभिजानामि कंकणैः ।
नुपूरैस्त्वभिजानामि, नित्य पादाब्जवंदनात् ॥ १ ॥

" कुंडळवडे के करना कंकणवडे हुं ओळखतो नथी पण नुपूरवडे ओळखुं छुं के ते सीतानाज छे; कारणके हुं दररोज ते पूज्य भाभीना चरणमां वंदन करतो हतो, तेथी ते दीठेला होवाथी ओळखुं छुं, बीजा आभूषणोवाळा अंग के ते परना आभूषण में कोइ दिवस जोया नथी तेथी तेने ओळखतो नथी. " आ दृष्टांतथी परस्त्रीना अंग उपरना आभूषणो पण जोवा योग्य नथी एम समजवुं.

दान पांच प्रकारनां प्रसिद्ध छे, अने दुष्ट एवा आठ जातिना कर्मोने हणनार तप कहेवाय छे. इत्यादि अनेक चातुर्मास्यनां कृत्यो छे. तेमां तत्पर एवा

---

१ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावास्या—ए चार मुख्य पर्वणी कहेवाय छे.

२ आहार पोसह, शरिर सत्कार पोसह, अव्यापार पोसह, ब्रह्मचर्य पोसह.

सूर्ययशा विगेरेनां अनेक दृष्टांतो पण छे. ते पोतानी मेळे जाणी लेवां. आ प्रमाणे उपदेशप्रासाद ग्रंथनी वृत्तिमां आ चातुर्मास्य क्रियानुं वर्णन श्री प्रेमविजयादिक मुनिने अर्थे (कर्ता कहे छे) में लखेलुं छे. " आ आषाढ शुक्र चतुर्दशी संबंधी कृत्यो के जे श्रीविजयलक्ष्मीसूरिए बतावेला छे ते निर्वाणना साधनोने संपादन करनारा शुभ चेतनावाळा उपासकोए अवश्य सेववा योग्य छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ चातुर्मास्यनियमविषये चतुर्थोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०४ ॥

व्याख्यान १०५ मुं.

इंद्रियना विषयभोगमां घणुं पाप छे अने तेथी घणुं दुःख भोगववुं पडे छे ते कहे छे--

विषयार्त्तमनुष्याणां, दुःखावस्था दश स्मृताः ।
पापान्यपि बहून्यत्र, सारं किं मूढ पश्यसि ॥ १ ॥

व्याख्या.

" विषयपीडित मनुष्योनी दश दुःखावस्था कहेली छे, अने तेमां पाप पण बहु लागे छे, ते छतां हे मूढ ! तेमां तुं सार शुं देखे छे ? " कामीओनी जे दश दुःखावस्था कही छे ते आ प्रमाणे—प्रथम अवस्था अमुक स्त्रीनो अभिलाष, बीजी ते मळशे के नहीं ते विषे चिंता, त्रीजी वारंवार तेनुंज रटण, चोथी तेना गुणोनुं कीर्त्तन, पांचमी ते विषे उद्वेग, छट्ठी ते माटे विलाप, सातमी तेने लीधे उन्माद (गांडापणुं), आठमी रोगनी उत्पत्ति, नवमी जडतानी प्राप्ति अने दशमी मृत्यु—आ प्रमाणे कामी मनुष्यनी दश अवस्था थाय छे.

ते विषे सिद्धांतमां पण कह्युं छे के, " कामी जनने सुखनो विपर्ययज थाय छे-प्रथम तो ते जे जे स्त्रीने देखे तेनी उपर मन करे छे, अने तेथी वायुवडे चलायमान थयेला वृक्षनी जेम तेनो आत्मा निरंतर अस्थिर रह्या करे छे. "

साहित्यमां कह्युं छे के, " कोइ कामी थयेलो पक्षी जळाशयना एक तीरथी बीजे तीरे जाय छे, दीन थइने चिंतामां पडे छे, योगीनी जेम निश्चळ मनवडे नेत्र स्तब्ध करी ध्यान धरे छे, अने पोतानी छायाने जोइने शब्द कर्या करे छे.

कांतामां मुग्ध थयेला पक्षीनी पण आवी स्थिति थइ जाय छे, तेथी आ पृथ्वी-पर जेओए कामवासना निवृत्त करी छे तेवा पुरुषोने धन्य छे अने कामीना दुःखी जीवितने धिक्कार छे! "

स्त्री साथेना विषयभोगमां पाप पण बहु छे ते विषे श्रीसिद्धांतमां कहेल छे के, " गर्भवंती लाख स्त्रीओना निर्दयपणे पेट फाडे अने तेमांथी नीकळेला सात आठ मासना तरफडता गर्भने मारी नाखे तेथी जेटलुं पाप लागे ते करतां पण नवगणुं पाप साधुने एकवार स्त्रीने सेववाथी लागे छे." साध्वीनी साथे एकवार काम सेववाथी तेथी हजारगणुं पाप लागे छे, अने जो तीव्र रागथी कामक्रिडा करे तो कोटीगणुं पण पाप लागे छे अने तेनुं बोधिबीज नाश पामे छे. इत्यादि पापो कहेलां छे.

वळी योगशास्त्रमां पण कहेलुं छे के, "योनियंत्रमां जे सूक्ष्म जंतुओ उत्पन्न थाय छे ते मैथुनवडे पीडित थइने मृत्यु पामे छे तेथी मैथुननो त्याग करवो."

कामशास्त्रना कर्त्ता वात्स्यायन पण योनिमां जंतुनी उत्पत्ति जणावे छे. ते कहे छे के, " योनिरक्तमां कोमळ मध्यभागे सूक्ष्म जंतुओ उत्पन्न थाय छे." ए प्रमाणे स्त्रीना संगथी असंख्य जीवोनो घात थाय छे, माटे हे मूढ! तुं ए विषयमां शुं सार जुए छे? लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के,

भिक्षाशनं तदपि निरसमेकवारं,
शय्या च भू परिजनो निजदेहमात्रं ।
वस्त्रं तु शीर्णपटखंडमयी च कंथा,
हा हा तथापि जंतुः विषयाभिलाषी ॥ १ ॥

" भिक्षार्थी भोजन मळे ते पण एकज वार अने निरस मळे, भूमि उपर सुवानुं होय, पोतानुं शरीरज मात्र परिजन होय, जीर्ण अने फाटेली कंथा ते वस्त्रमां होय, तथापि खेदनी वात छे के, तेवा प्राणीओने पण विषयनी अभिलाषा थया करे छे." ए कामभोगमां मात्र संकल्पज सारनो छे, परमार्थे जोतां तेमां बीजो कांइ पण सार जोवामां आवतोज नथी.

जे प्राणी भावथी स्त्रीसंगनो त्याग करे छे तेज ब्रह्मचारी कहेवाय छे. ते विषे कह्युं छे के—

रामासंगं परित्यज्य, व्रतं ब्रह्म समाचरेत् ।
ब्रह्मचारी स विज्ञेयो, न पुनर्बद्धघोटकः ॥१॥

" स्त्रीनो संग भावथी छोडीने जे ब्रह्मचर्य पाळे तेज ब्रह्मचारी कहेवाय, कांइ बांधेला अश्वनी जेम ब्रह्मचर्य पाळे ते ब्रह्मचारी कहेवाय नहीं." अर्थात् जे स्त्रीमां आसक्ति छोडीने भावथी शील पाळे तेनेज खरेखर ब्रह्मव्रतधारी जाणवो. स्त्रीओने लौकिकशास्त्रमां तेमज लोकोत्तरशास्त्र (जैन शासन) मां दोषनी खाणरूप कहेली छे; एटलुंज नहीं पण ते प्रत्यक्ष राक्षसी छे, स्वजन-स्नेहनी विघात करावनारी छे अने घणी मायावी छे. ते विषे कह्युं छे के,

न सा कला न तत् ज्ञानं, न सा बुद्धिर्न तद् बलं।
ज्ञायते यद्वशाल्लोके, चरित्रं चलचक्षूषां ॥ १ ॥

" तेवी कोइ कळा, तेवुं कोइ ज्ञान, तेवी कोइ बुद्धि अने तेवुं कोइ बळ नथी के जेथी चपळ नेत्रवाळी स्त्रीओनुं चरित्र जाणी शकाय." स्त्रीना संगथी मुंजराजाने मोटुं दुःख प्राप्त थयुं हतुं. तेनी कथा आ प्रमाणे—

मुंजराजानी संक्षेप कथा.

मालवदेशमां परमारवंशी श्रीसिंहभट नामे एक राजा हतो. ते एक वखते वननी शोभा जोवाने शरकटना वनमां गयो हतो. त्यां एक तरतनो जन्मेलो बाळक मुंजना घासमां पडेलो तेना जोवामां आव्यो, तेथी तेने लइ तेनुं मुंज नाम पाडी पुत्र करीने राख्यो. त्यारपछी सिंधुल नामे ते राजाने पुत्र थयो. अनुक्रमे सिंहभटराजा गुजरी जवाथी मुंज राज्य उपर आव्यो. तेणे पोताना भाइ सिंधुलने उग्र पराक्रमवाळो जाणीने कारागृहमां नाख्यो. सिंधुलने श्रीभोज नामे पुत्र थयो. तेना जन्म वखते मुंजे कोइ निमित्तियानी पासे तेनुं भाग्यबळ जोवराव्युं. निमित्तियाए लग्नबळ जोइने कह्युं के, " आ भोजकुमार पचास वर्ष सात मास अने त्रण दिवस सुधी गौडदेश सहित दक्षिणदेशनुं राज्य भोगवशे." आ प्रमाणे सांभळी मुंजराजाना मनमां आव्युं के, ' आ भोजकुमार छतां मारा पुत्रने राज्य मळशे नहीं, तेथी भोजकुमारने मारी नाखवा माटे चंडाळोने सोंपी दउं.' आवुं विचारी तेने चंडाळने सोंप्यो. चंडाळो ज्यारे तेने वधस्थाने लइ गया, त्यारे तेओए कह्युं के, ' तुं इष्टनुं स्मरण कर.' बाळक भोजे बुद्धिथी विचारी पोताना काका योग्य एक पत्रउपर आ प्रमाणे काव्य लखी आप्युं—

मांधाता च महिपति कृतयुगालंकारभूतो गतः।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यांतकृत् ॥

अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दीवं भूपते !
नेकेनापि समं गता वसुमति नूनं त्वया यास्यति ॥ १ ॥

" कृतयुगना अलंकाररूप मांधाता राजा पण चाल्यो गयो, जेणे समुद्र उपर पाज बांधी हती एवा रावणना मारनार रामचंद्र पण चाल्या गया, ते सिवाय बीजा युधिष्ठिर विगेरे राजाओ पण गया, परंतु ते कोइनी साथे आ पृथ्वी गइ नथी, पण लागे छे के हे राजन् ! तमारी साथे तो जरुर आ पृथ्वी आवशे. " चंडाळोने दया आववाथी भोजने बचाव्यो अने पेलुं पत्र लइ जइ तेमणे राजाने आप्युं. ते वांची मुंजराजा तत्काळ क्रोध रहित थइ गयो, अने सत्वर भोजकुमारने बोलावी युवराजपद आप्युं.

एकदा मुंजराजा भोजकुमारने राज्य सोंपी तैलंग देशना राजानी साथे युद्ध करवा गयो. तैलंग भूपे तेने जीती लइ कारागृहमां नाख्यो. त्यां मृणालवती नामनी ते राजानी बहेन हती, तेनी साथे वार्त्ताविनोद करतां मुंजने संबंध जोडायो. भोजकुमारे मुंजराजाने छोडाववा माटे कारागृह सुधी एक सुरंगा खोदावी अने ते द्वारा मुंजने आववानो संकेत आप्यो. एक वखते मुंजराजा दर्पणमां पोतानुं स्वरूप जोतो हतो, तेवामां मृणालवती पछवाडेथी गुप्त रीते आवी पोतानुं मुख पण तेमां जोवा लागी, ते वखते पोताना मुख उपर जरावस्थानो आभास थतो जोइ ते खेद करवा लागी. तेने मुंजे कह्युं के, " हे मृणालवती ! यौवन चाल्युं गयुं तेनो तुं खेद कर नहीं; कारणके साकरने खांडीए तो पण तेनी मीठाश जती नथी. " आ प्रमाणे तेने शांत करी, मुंज पोताना स्थानप्रत्ये जवाने तैयार थयो; परंतु मृणालवतीमां लुब्ध होवाथी तेने कह्युं के, ' प्रिया ! अहिंथी एक सुरंग करावी छे, तेवडे हुं मारा स्थानमां जाउं छुं, माटे जो तमे साथे आवशो तो हुं तमने त्यां लइ जइने पट्टराणी करीश. ' मृणालवती बोली के, ' कांत ! थोडीवार राह जुओ, हुं विचार करी लउं. ' पछी तेणे विचार कर्यो के, ' जो आ त्यां जशे तो जरुर मने छोडी देशे, माटे ते अहिंज रहे तेवी गोठवण करुं. ' आवुं विचारी तेणे आ खबर गुप्त रीते पोताना भाइने आपी दीधा. ते खबर जाणी राजाए तेनी उपर विशेष जापतो कर्यो; अने तेने प्रत्येक घरे भिक्षा मागवा मोकल्यो. घरे घरे भिक्षा माटे भटकतां कंटाळी गयेलो मुंज आ प्रमाणे बोलतो हतो—

" इथ्थीपसंग मत को करो, तिसविसास दुःखपुंज;
घर घर तिणे नचावीओ, जीम मक्कड तिम मुंज ॥ १ ॥

"स्त्रीनो प्रसंग कोइपण प्राणी करशो नहीं. तेमां पण स्त्रीजातिनो विश्वास तो दुःखना ढगलारूपज छे. जुओ तेनो विश्वास करवाथी मर्कटनी जेम आ मुंजने ते घरे घरे नचावे छे." वळी मोटा यतिओना वेष छोडी जेओ आ दासी जेवी स्त्रीओ उपर राचे छे ते पुरुष आ मुंजराजानी पेठे घणा पराभवने सहन करे छे. वळी जे बुद्धि पछवाडे उपजी, ते जो पहेली उपजी होत तो आ मुंजराजनी मृणालवतीए जे दशा करी ते थात नहीं.

एक वखते मुंजराजे कोइने घेर जइ स्त्रीनी पासे भिक्षा मागी. ते स्त्रीए गर्वथी मुंजनो तिरस्कार कर्यो. त्यारे मुंजराजे कह्युं के, "हे धनवती स्त्री ! आ तारा घरना गायोना समूहने जोइने तुं आटलो बधो गर्व कर नहीं, केमके आ मुंजराजाना चौदसो ने छोंतेर हाथीओ चाल्या गया छे." एकदा अक्षयतृतियाने दिवसे मुंजराजा कोइने घेर भिक्षा मागवा गयो, त्यां कोइ गृहस्थनी स्त्रीए घीना बिंदुए टपकतो मांडो हाथमां लइ मोढावडे बटकुं भर्युं. ते जोइ मुंज बोल्यो के—

रे रे! मंडक! मा रोदीः, यदहं खंडितोऽनया।
रामरावणमुंजाद्याः, स्त्रीभिः के के न खंडिताः ॥ १ ॥

"अरे मांडा ! मने आ स्त्रीए खंडित कर्यो एम धारी तुं रो नहीं, कारण के राम रावण अने मुंज विगेरे कया कया पुरुषोने स्त्रीओए खंडित नथी कर्या ?" आगळ जतां कोइ घरमां कोइ स्त्री रेंटीओ फेरवती हती तेनो अवाज सांभळी मुंज बोल्यो के—"अरे रेंटीआ ! आ स्त्री तने भमावे छे तेम जाणी तुं रो नहीं, कारण के स्त्री कोने नथी भमावती ? एक खोटा कटाक्षना आक्षेपमात्रमां भमावी दे छे तो जेने हस्तवडे आकर्षण करे तेनी तो वातज शी करवी ! वळी ते चंद्रलेखानी जेवी कुटिल छे, संध्यानी जेवी क्षण राग[1] धरनारी छे अने नदीनी जेम नीचा स्थळमां जनारी छे, तेवी स्त्री सर्वथा छोडी देवा[2] योग्य छे."

आ प्रमाणे मुंजराजाने घणा वखत सुधी भिक्षा मंगावी छेवटे तेने यमराजनो अतिथि कर्यो.

उपर प्रमाणे लौकिक शास्त्रमां पण स्त्रीनो संग त्याज्य कहेलो छे तो जैनशास्त्रमां तो विशेष प्रकारे कहेल छे एम समजवुं. स्त्रीना संगनो जे भावथी त्याग करे तेनेज खरा ब्रह्मचारी जाणवा, पण बांधेला घोडानी जेम निरुपाये ब्रह्मचर्य पाळे तेने ब्रह्मचारी न जाणवा. केमके बांधेला घोडा द्रव्यथी विषयसेवन नथी

---

१ संध्या पक्षे रंग एवो अर्थ समजवो. २ तजवा योग्य.

करता पण मनमां वारंवार घोडीनुं स्मरण कर्या करता होवाथी ते बहु कर्म बांधे छे. अश्वब्रह्मचर्य उपर एक दृष्टांत कहेवाय छे ते आ प्रमाणे—

कोइ एक राजानी पासे कोइ पुरुषे आवी एक उत्तम अश्व भेट कर्यो. राजाए तेने अश्वशाळामां बंधाव्यो. एकदा ते अश्वशाळानी पासे एकांत प्रदेशमां कोइ मुनि चातुर्मास रह्या. ते हमेशा धर्मोपदेश करता हता, तेमां अन्यदा तेमणे कह्युं के, " शीलव्रतना द्रव्य अने भावथी चार भेद थाय छे. तेमां प्रथम भेद द्रव्यथी शील पाले पण भावथी नहीं. वस्तुनी अप्राप्तिथी भवदेवनी पेठे. तेमज नैषधपति नळराजाए दीक्षा लीधी त्यारपछी पूर्वे लाखो वर्ष सुधी सुखभोग भोगव्या छतां दमयंती साध्वीने जोइ पाछो राग उत्पन्न थयो. दमयंतीए पोताना व्रतनुं खंडन थशे एवा भयथी अनशन कर्युं, अने मृत्यु पामीने देवता थइ. पछी नळराजाने ते प्रतिबोध करवा आवीने प्रतिबोध कर्यो. पछी नळराजा पण मृत्यु पामी वैश्रमण (कुबेर) भंडारी थया. कह्युं छे के, ' विधिथी धर्म आदर्यो होय पण जो तेमां सरागपणुं रहे तो ते धर्म मुक्तिने साधे नहीं. नळराजा स्थवीर (वृद्ध) थया छतां पण सरागपणुं रहेवाथी ते उत्तराधिपति कुबेर नामे लोकपाळ थया.' आ प्रथम भेद जाणवो.

वळी कोइ जीव द्रव्यथी स्त्रीसंग (स्पर्शमात्र) करे पण भावथी शिळव्रत पाळे छे. एक शय्यामां सुनारा विजय शेठ अने विजय शाणीनी जेम; तेमज पाणिग्रहण समये जंबूस्वामीनी जेम, ए बीजो भेद जाणवो. कोइ जीव द्रव्य अने भाव बंनेथी शीळ पाळे. राजिमती अने मल्लीनाथजीनी जेम, ए त्रीजो भेद जाणवो. अने केटलाक जीवो द्रव्यथी पण शील पाळे नहीं अने भावथी पण पाळे नहीं. आ भंगमां संसारी घणा जीवो जाणवा. ए चोथो भेद समजवो." ए प्रकारे धर्मदेशनाने सांभळता एवा अश्वे मनवडे ब्रह्मचर्य ग्रहण कर्युं.

एक वखते राजए तेनी ओलाद वधारवाने माटे ते अश्वने घोडी साथे संगम करावषा मांड्यो, पण ते अश्वे ते कार्यमां उत्साह कर्यो नहीं; तेथी राजाए विस्मय पामी गुरु पासे जइने पूछयुं के ' भगवन् ! आ अश्व घोडीने केम सेवतो नथी ? ' मुनि बोल्या के, ' तेणे मनथी ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर्युं छे. ' राजा बोल्यो–' महाराज ! आ अश्वे तो प्रथम घणीवार काम सेव्यो छे, फक्त आ वखतेज आम करे छे; पण मारा बीजा घणा अश्वो छे के जेमणे जन्मथी ब्रह्मचर्य पाळ्युं छे, तेथी आ अश्व करतां तो तेओ उत्तम अने प्रशंसनीय जणाय

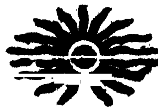
छे.' गुरु बोल्या के, "हे राजन्! एम न समजवुं; कारण के ते तारा बांधेला घोडा ब्रह्मचारी कहेवाय नहीं. केमके तेओ प्रतिदिन विषयने याद कर्या करे छे; तेथी तेओमां शीलनो एक अंश पण गणाय नहीं. वळी आ अश्व तो ब्रह्मचर्य पाळवाथी स्वर्गने पामशे.' ते सांभळी राजा प्रतिबोध पाम्यो, अने तत्काळ तेणे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो.

आ कथानो उपनय मनमां धारीने जे प्राणी ब्रह्मव्रतने ग्रहण करे तेने खरेखरो गुणी समजवो.

हवे आ व्रत संबंधी वर्णननो उपसंहार करे छे के, "त्रण लोकमां पण ब्रह्मचारी जेवो कोइ गुणी नथी, माटे हे भवी प्राणीओ! तमे ए ब्रह्मव्रतनुं अवश्य आचरण करो." आ चोथुं व्रत सूत्रवचनने अनुसारे घणा प्रबंधोथी में वीवरी बताव्युं छे, ते लखवाथी मने जे पुण्य उपार्जन थयुं होय तेवडे मने सर्वदा सुखनी प्राप्ति थाओ.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ
शीलविषये पंचोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०५ ॥

इति सप्तमः स्तंभः



अष्टम स्तंभ.



व्याख्यान १०६ मुं.

हवे परिग्रह परिमाण नामे पांचमुं व्रत कहे छे.

परिग्रहाधिकं प्राणी, प्रायेणारंभकारकः ।
स च दुःखखनिर्नूनं, ततः कल्प्या तदल्पता ॥ १ ॥

व्याख्या.

" प्राणी प्राये अधिक परिग्रहने माटे आरंभ करे छे अने ते प्राणीने निश्चे करीने दुःखनी खाणरूप थाय छे. तेथी परिग्रहनी अल्पता करवी जोइए." समस्त प्रकारना धनादिनुं जे ग्रहण करवुं ते परिग्रह कहेवाय छे. तेवा परिग्रहवडे जे अधिक होय ते परिग्रहाधिक प्राणी कहेवाय छे. तेवा प्राणी प्राये अधिक आरंभ करे छे. कोइ प्राणी संप्रति राजानी जेम तेवा परिग्रह (धन) ने शुभ क्षेत्रमां पण वावे छे; तेथी मूळ श्लोकमां प्रायेण-' प्राये करीने ' ए पदनुं ग्रहण करेलुं छे. ते परिग्रह निश्चये दुःखनी खाणरूप छे, माटे तेनी अल्पता (ओछापणुं) करवी; एटले आटलुंज धन राखवुं एवो नियम करवो. अहिं एवी भावना छे के, परिग्रह बे प्रकारनो छे. बाह्य अने अभ्यंतर. धनधान्यादि ते बाह्य परिग्रह अने रागद्वेषादि ते अभ्यंतर परिग्रह, अथवा सचित्त अने अचित्त एवा पण परिग्रहना बे प्रकार छे. सचित्त पशु दासी (द्वीपद, चतुष्पद) विगेरे अने अचित्त वस्त्र आभूषण विगेरे. तेमां गृहस्थे (श्रावके) सचित्ताचित्तादि परिग्रहना अपार आरंभथी विराम पामवुं; एटले के ते संबंधी इच्छानुं परिमाण करवुं ए पांचमुं अणुव्रत कहेवाय छे.

हवे तेनुं फळ बतावतां परिग्रहनो नियम करवानी आवश्यकता बतावे छे.

परिग्रहमहत्वाद्धि, मज्जत्येव भवांबुधौ ।
महापोत इव प्राणी, त्यजेत्तस्मात्परिग्रहम् ॥ २ ॥

व्याख्या.

"जेम घणा भारथी वहाण समुद्रमां डुबी जाय छे, तेम प्राणी घणा परिग्रहथी संसारसमुद्रमां डुबी जाय छे, तेथी प्राणीए परिग्रहने तजी देवो." अर्थात् परिमाण वगरना परिग्रहने धारण करनार प्राणी तेवा वहाणनी जेम आ संसारमां एटले के नरकादिक दुर्गतिमां डुबी जाय छे; तेथी गृहस्थे धनादिक परिग्रह-संबंधी इच्छापरिमाण करवुं. ते विषे विद्यापतिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

विद्यापतिनी कथा.

पोतनपुर नगरमां सूर नामे राजा हतो. ते नगरमां विद्यापति नामे धनाढ्य अने जैन श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते श्रेष्ठीने शृंगारमंजरी नामे स्त्री हती. एकदा विद्यापतिने स्वप्नमां लक्ष्मीदेवीए आवीने कह्युं के, " हुं तारा घरमांथी आजथी दशमे दिवसे चाली जइश." विद्यापति तरतज जागी गयो अने 'हुं निर्धन थइ जइश' एवी चिंता करवा लाग्यो. "आ लोकमां जे प्राणी प्रकृतिथी (मूळथी) निर्धन होय तेने तेवी पीडा थती नथी के जेवी पीडा द्रव्य मेळव्या पछी निर्धन थयेलाने थाय छे." शृंगारमंजरीए पतिने उद्वेगनुं कारण पूछयुं, त्यारे तेणे स्वप्ननुं स्वरूप कही बताव्युं, अने जणाव्युं के, "आ लोकमां जेनी पासे धन होय तेने शत्रु पण स्वजन थइ जाय छे अने दरिद्रीने स्वजन होय ते पण शत्रु थाय छे. जे अपूज्य छतां पूजाय छे, जे अमान्य छतां मान पामे छे अने जे अवंद्य छतां वंदाय छे ते धननो प्रभाव छे." शृंगारमंजरी बोली—" स्वामी ! तमे शा माटे खेद करो छो ? लक्ष्मी धर्मवडेज स्थिर थाय छे. ज्यांसुधी पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत न लीधुं होय त्यांसुधी त्रण भुवननी लक्ष्मीना परिग्रहथी जे पाप थाय ते अविरतिवडे लाग्या करे छे." आवा प्रियाना वचनथी विद्यापतिए पांचमुं व्रत अंगीकार कर्युं अने सात क्षेत्रमां लक्ष्मी वापरवा मांडी. आठ दिवसमां सर्व लक्ष्मी वापरी नाखी. आठमा दिवसनी रात्रीए तेणे विचार्युं के, 'हवे लक्ष्मी विना प्रातःकाळे याचकोने मुख शी रीते बतावी शकाशे ? तेथी विदेशमां चाल्या जवुं तेज उत्तम छे.' आवी चिंता करतो ते सुइ गयो. निद्रामां पोतानुं घर लक्ष्मीथी परिपूर्ण तेना जोवामां आव्युं. जागृत थयो एटले प्रत्यक्ष लक्ष्मीने जोइने तेणे संघ काढी चतुर्विध संघने शत्रुंजयनी यात्रा कराववामां धनव्यय करवानो संकल्प कर्यो. हवे ज्यारे नवमो दिवस पूरो थयो त्यारे तेणे विचार्युं के, 'आवती काले दशमो दिवस छे, तेथी कदि लक्ष्मी जवानी होय तो भले सुखेथी जाओ.' आवुं विचारी ते

सुइ गयो. लक्ष्मीए स्वप्नमां आवीने कह्युं के, " हुं तारा पुण्यथी विशेष वधीने तारा घरमां स्थिर थइ छुं, कारणके,—

त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः ।
अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते ॥१॥

" अति उग्र करेला पुण्य अने पापनुं फळ त्रण वर्षे, त्रण मासे. त्रण पखवाडीए अथवा त्रण दिवसे अहिंज प्राप्त थाय छे. " एम शास्त्रमां कहेलुं छे. वळी ते विषे श्रीहर्ष कवि लखे छे के, ' संपत्ति अने विपत्ति पूर्व पुण्य संबंधी वैभवना बंधथी अने नाशथी प्राप्त थाय छे; अर्थात् पुण्यवैभवना बंधथी संपत्ति प्राप्त थाय छे अने पुण्यवैभवना नाशथी विपत्ति प्राप्त थाय छे; तेथी ए संपत्तिने सुपात्रना करकमलमां अर्पण करवी. कारणके ते विधिए बतावेलुं तेनुं शांतिक पौष्टिक कर्म छे; अर्थात् संपत्तिने जो सुपात्रमां अपाय तो ते विपत्तिने अटकाववामां शांतिक पौष्टिक कर्मरूप थाय छे. ' माटे हे श्रेष्टी ! हुं हवे तारा घरमांथी नीकळी शकुं तेम नथी. तेथी यथेच्छ रीते मने भोगवजे. " विद्यापति जागृत थइ पोतानी प्रियाने कह्युं, ' प्रिये ! लक्ष्मी आपणा घरमां स्थिर थइ छे, परंतु जो तेथी आपणा पांचमा व्रतनो भंग थाय तेम होय तो आपणे तेने छोडीने अहिंथी चाल्या जइए. ' स्त्रीए तेम करवानी संमति आपी, एटले ते दंपती प्रातःकाळे घर छोडीने चाली नीकळ्या.

नगरनी बहार नीकळतांज पंचदिव्यथी राज्य मळ्युं. मंत्री विगेरे प्रार्थना करीने विद्यापतिने राजभुवनमां लइ गया. तेणे व्रतभंगना भयथी राज्याभिषेक करवानी ना पाडी, तेवामां आकाशवाणी थइ के, " अरे श्रेष्ठी ! अद्यापि तारे भोग्यकर्म छे, तेथी लक्ष्मीनुं फळ ग्रहण कर. " आ प्रमाणे सांभळ्युं एटले तेणे राज्यसिंहासन उपर श्रीवीतरागनी प्रतिमा बेसाडी, मंत्रीओने राज्यकार्य सोंपी दीधुं अने न्यायपूर्वक जे द्रव्य आवे ते बधुं जिननामथी अंकित करवा मांड्युं. पोते ग्रहण करेलो नियम छोड्यो नहीं.

अनुक्रमे पोताना पुत्रने राज्य उपर बेसाडी पोते दीक्षा लइने देवलोके गया. त्यांथी च्यवी पांच भव करीने विद्यापति श्रेष्ठी मोक्षपदने प्राप्त थया.

" आ प्रमाणे विद्यापतिनुं दृष्टांत सांभळी धर्मनी स्पृहावाळा भव्य प्राणीओए परिग्रहपरिमाण रूप पांचमुं व्रत ग्रहण करवामां तत्पर थवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्यवृत्तौ
पंचम परिग्रहपरिमाणव्रतविषये षष्टोत्तरशततमः प्रबंधः ॥१०६॥

व्याख्यान १०७ मुं.

हवे वर्जवा योग्य पांचमा व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

धनधान्यस्य कुप्यस्य, गवादेः क्षेत्रवास्तुनः ।
तारस्य हेम्नश्च संख्यातिक्रमोऽत्र परिग्रहे ॥ १ ॥

व्याख्या.

"१ धन धान्य; २ सामान्य धातुना पात्रादिक; ३ गाय विगेरे पशुओ तथा दासदासीओ; ४ क्षेत्र तथा वस्तु; ५ रूपुं अने सुवर्ण–तेनी परिमाण करेली संख्यानो जे अतिक्रम–ते पांच अतिचार छे."

धन चार प्रकारनुं छे. १ गणिम, गणी शकाय तेवुं जायफळ, सोपारी विगेरे. २ धरिम, तोलनी धारणा करीने वेची शकाय तेवुं केशर, गोळ विगेरे. ३ मेय, मापीने वेची शकाय तेवुं. घी, तेल, लूण विगेरे अने ४ परिच्छेद्य, छेदीने–अथवा परीक्षा करीने वेची शकाय तेवुं–रत्न, वस्त्र विगेरे. धान्य एटले डांगर विगेरे चोवीश प्रकारनुं धान्य. ते चार प्रकारना धन अने चोवीश प्रकारना धान्यना करेला प्रमाणनो जे अतिक्रम ते प्रथम अतिचार; एटले तेनो मूडा माप विगेरेथी परिमाण बांधीने नियम करेलो होय तेना पछी मोटा मूडा विगेरे बांधवा ते. इति प्रथम परिग्रहातिचार.

कुप्य–एटले सोनारूपा सिवायनी त्रांबुं, कांसुं, पीतल विगेरे धातु, तेना पात्रो; माटीना, वांसना अने काष्टना पात्र तथा हळ विगेरे पदार्थो; शस्त्र, मांचा अने गालमसूरीआ विगेरे घरनो उपस्कर (घरवकरी) तेनुं परिमाण संख्यादिवडे थाय छे. जेमके आटलां थाळी, पात्रो अथवा कचोळां विगेरे राखवा. एवी नियमित संख्या राखी होय तेनो अतिक्रम करवो, संख्या बराबर राखवा माटे पात्र भांगीने मोटा कराववा विगेरे. ते बीजो कुप्यातिक्रम अतिचार कहेवाय छे. इति द्वितीय परिग्रहातिचार.

गाय विगेरे पशुओ, बळद, भेंशो, आदि शब्दथी बेपगा दासदासी विगेरे तथा चारपगा प्राणीओ पाडा विगेरे अने हंस, पोपट विगेरे पक्षीओनो समूह जाणवो. तेनी करेली संख्यानो अतिक्रम–ते गवादिअतिक्रम–जेमके अमुक संख्या प्रमाणे गाय, महिषी, घोडी, दास दासी विगेरे राखेलां होय तेमना गर्भथी थयेलां बच्चां होय ते परिमाणथी अधिक संख्याए थता होय छतां न गणवा ते अतिचार. इति तृतीय गवादि परिग्रहातिचार.

हवे क्षेत्र एटले धान्यनी उत्पत्तिनी भूमि. ते सेतु, केतु अने उभय एवा भेदथी त्रण प्रकारनुं छे. तेमां जेमां रेंट विगेरेथी पाणी पवाय ते सेतु क्षेत्र, जे वरसादना पाणीथी निपजावाय ते केतु क्षेत्र अने ते बंने प्रकारे जेमां जळ पवाय ते उभय क्षेत्र. वास्तु एटले घर विगेरे, तथा गाम नगर विगेरे, तेमां गृहादि त्रण प्रकारना छे. खात, उच्छ्रित अने खातोच्छ्रित--तेमां जे भूमिगृहादि (भोंयरा विगेरे) ते खात, महेल माळ विगेरे ते उच्छ्रित अने भूमिगृह तथा तेनी उपर रहेलां घर ते खातोच्छ्रित. ते क्षेत्र तथा वास्तुना करेला परिमाणथी अधिक थवाथी नानां मोटां करी संख्या सरखी राखवी, वच्चेथी वाड के भींत काढी नाखवी ते क्षेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रम. इति चतुर्थ क्षेत्रवास्तुप्रमाणातिक्रम अतिचार.

हिरण्य ते सोनुं अने रजत ते रूपुं तेनुं परिमाण कर्युं होय तेथी अधिक थये छते स्त्री पुत्रोने आपी देवुं--तेना निमित्तनुं ठरावबुं, ते सुवर्णरूप्यातिक्रमनामे परिग्रहनो पांचमो अतिचार थाय छे. इति परिग्रहनो पांचमो अतिचार.

आ पांचमा अणुव्रतमां ए पांच अतिचारनो त्याग करवो, कारणके अतिचार लगाडवाथी व्रतनी मलिनता थइ जाय छे. अहिं एवी भावना छे के, ‘विवेकी मनुष्ये मुख्य वृत्तिए तो धनधान्यादि परिग्रह जे प्रथम पोता पासे होय तेनो पण संक्षेप करी नाखवो, परंतु जो तेम करवानी शक्ति न होय तो इच्छा परिमाण तो अवश्य करवुं; कारणके तेनुं पोतानी इच्छा प्रमाणे परिमाण करवुं ते तो सर्वने सहेलुं छे.’ अहिं कोइ शंका करे के, ‘घरमां तो सो रुपिया पण न होय अने इच्छा परिमाणमां हजार, लाख विगेरेना परिमाणनी मोकळाश राखे तो तेथी शो गुण थाय?’ तेना समाधानमां कहे छे के, ‘जे परिमाण बांध्युं तेथी अधिक द्रव्यनी इच्छा न करवी, तेज मोटो गुण छे. कारणके जेम जेम अधिक द्रव्य मेळववानी इच्छा, तेम तेम अधिक दुःख छे. घरमां सुखे निर्वाह चालतां छतां जे माणस अधिक अधिक धन उपार्जन करवा प्रवर्ते छे ते निरंतर अनेक क्लेशने अनुभवे छे.’ ते विषे सिंदूर प्रकरणमां कह्युं छे के--“आ प्राणी जे मोटी अटवीमां भटके छे, विकट देशमां ममे छे, गहन समुद्रमां पेसे छे, अतुल क्लेशवाळी खेती खेडे छे, कृपण स्वामीनी सेवा करे छे अने धनथी अंध थयेली बुद्धिवाळो गजेंद्रोनी घटाथी दुश्चर एवी रणभूमिमां मरणने पण स्वीकारे छे. ते बधुं लोभनुंज चेष्टित छे.” तेथी जो परिग्रह अल्प होय तो अल्प दुःख अने अल्प चिंता रहे छे. ते विषे धर्मशास्त्रमां लख्युं छे के--

जह जह अप्पो लोहो, जह जह अप्पो परिग्गहारंभो ।
तह तह सुह पवड्ढइ, धम्मस्स य होइ संसिद्धि ॥ १ ॥

" जेम जेम अल्प लोभ अने जेम जेम अल्प परिग्रहारंभ, तेम तेम सुख वृद्धि पामे छे अने धर्मकार्यनी सिद्धि थाय छे. " तेथी कोइपण प्रकारे इच्छानो प्रसार अटकावीने आ व्रतने स्वीकारवुं. आ व्रत विषे पेथड श्रावकनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

पेथड श्रावकनी कथा.

कांकरेजनी नजीकना एक गाममां पेथड नामे एक उर्ध्वकेश (ओसवाळ) जातिनो भलो वणिक रहेतो हतो. तेने पद्मिनी नामे पत्नी हती. तेमने डंडाण नामे एक पुत्र थयो. ते बाळक दरिद्र अवस्थाने लीधे दुःखी थतो हतो. एवामां श्री धर्मघोष नामे आचार्य त्यां पधार्या. तेमनी पासे पांचमुं परिग्रहपरिमाण व्रत अंगीकार करतां पेथडे 'एक हजार द्रव्य उपरांत वधारे द्रव्य मारे राखवुं नहीं ' एम कह्युं; एटले गुरुए कह्युं के—" ज्ञान अने चेष्टावडे तमारुं भाग्य बहु मोटुं छे एम जणाय छे, माटे हे श्रावक ! एटलाज द्रव्यथी तमारे शुं थशे ? " पेथड बोल्यो—" भगवन् ! हमणा तो मारी पासे कांइ पण द्रव्य नथी, पण कदि आपना कहेवा प्रमाणे आगळ मळे तो मारे पांच लाख उपरांतनुं द्रव्य धर्ममार्गे खर्ची नाखवुं." तेनी दृढता जोइ गुरुए तेने ते प्रमाणे पच्चक्खाण कराव्युं. त्यारपछी दरिद्रावस्थानुं दुःख वृद्धि पामतां पुत्रने सुंडलामां मूकी माथे उपाडीने ते माळवा तरफ चाल्यो.

अनुक्रमे ते देशना मुख्य गाममां पेसतां आडो सर्पने उतरतो तेणे जोयो, एटले ते अटकीने उभो रह्यो. तेवामां एक शुकनवेत्ता त्यां आवी चड्यो. तेणे पेथडने पूछ्युं के—'केम उभो रह्यो ?' तेणे सर्पने आडो उतरतो बताव्यो. शुकनज्ञाताए सर्प तरफ दृष्टि करीने जोयुं तो तेना मस्तक उपर कालीदेव (चकली) ने बेठेली जोइ, तेथी तत्काळ ते बोल्यो के, " जो तुं अटक्या वगर चाल्यो गयो होत तो तने माळवानुं राज्य मळत, तथापि आ शुकनने मान आपी हजु अंदर प्रवेश कर. आ शुकनवडे तुं महा धनवान् थइश. " शुकनशास्त्रमां कह्युं छे के, " जो गामथी नीकळतां डाबो स्वर थाय, सर्प जमणो थाय अने डाबी तरफ शियाळ बोले तो स्त्री स्वामीने कहे छे के, स्वामीनाथ ! साथे कांइ भातुं लेशो नहीं, आ शुकनज भातुं आपशे. "

पोताने थयेला शुकननुं फळ सांभळी पेथड गाममां गयो. त्यां गोगा राणाना मंत्रीने घेर सेवक थइने रह्यो. एकदा राजाए घणा अश्वो वेचाथी लीधा तेनुं धन आपवाने मंत्रीने कह्युं, एटले मंत्रीए कह्युं के, 'मारी पासे धन नथी.' एटले राजाए कह्युं के. 'धन क्यां गयुं? नामुं बतावो.' मंत्री दिग्मूढ थइ गयो, तेथी कांइ बोली शक्यो नहीं. तत्काळ राजाए तेने पहेरामां बेसाड्यो. आ खबर मंत्रीनी स्त्रीने थतां तेणीए ते वृत्तांत पेथडनी आगळ जणाव्यो. पेथड राजानी पासे आव्यो अने बोल्यो के, 'स्वामी! मंत्रीने जमवा मोकलो.' राजाए कह्युं के, 'नामुं आप्या वगर मोकलीश नहीं.' पेथडे कह्युं के, 'स्वामी! एक वर्षनो हिसाब हुं आपीश. हुं पेथड नामे तेनो सेवक छुं.' पछी राजाए तेने छुटो कर्यो. मंत्रीने भोजन करी पाछो राजा पासे रजु कर्यो. राजाए पेथडने चतुर जाणी पोतानो मंत्री बनाव्यो; तेथी अल्प समयमां पेथडनी पासे पांच लाख द्रव्यनी संपत्ति एकठी थइ गइ. त्यारपछी जे अधिक लाभ थयो तेवडे तेणे चोवीश तीर्थंकरोना चोराशी प्रासादो कराव्या. पोताना गुरु त्यां पधार्या त्यारे तेमने नगरमां प्रवेश करावतां बोंतेर हजार द्रव्य वापर्युं. बत्रीश वर्षनी वय थइ एटले शीलव्रत ग्रहण कर्युं. शत्रुंजयथी गिरनार सुधीनी एक ध्वजा सोनेरी रुपेरी पट्टावाळी चडावी. बावन धडी प्रमाण सुवर्ण देवद्रव्यमां आपीने इंद्रमाळ पहेरी; अने सिद्धगिरि उपर श्री ऋषभदेव प्रभुना चैत्यने एकवीश धडी सुवर्णवडे मढीने जाणे सुवर्णनुं शिखर होय तेवुं सुवर्णमय बनाव्युं. आ प्रमाणे तेणे घणुं द्रव्य धर्मकार्यमां वापर्युं.

"आ पांचमुं जे परिग्रह प्रमाण नामे व्रत छे ते धर्मने विषे संपत्तिनुं एक महत् स्थान छे, तेने संपादन करीने जेम पेथड श्रावके स्थाने स्थाने समृद्धि अने सुख संपादन कर्युं, तेम तमे पण ते व्रतने दृढताथी धारण करवावडे करो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यवृत्तौ
पंचमव्रतविषये सप्तोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०७ ॥

व्याख्यान १०८ मुं.

हवे परिग्रहपरिमाण व्रत ग्रहण न करवाथी शुं दोष थाय ते कहे छे.

श्रुत्वा परिग्रहक्लेशं, मम्मणस्य गतिं तथा ।
धर्मान्वेषी सुखार्थी वा, कुर्यान्न च परिग्रहम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" परिग्रहथी थतो क्लेश अने तेथी थयेली मम्मण नामना शेठनी गति सांभळीने धर्मने शोधनारा अथवा सुखार्थी पुरुषे (घणो) परिग्रह राखवो नहीं." मम्मण शेठनो प्रबंध आ प्रमाणे—

राजगृही नगरीमां श्रेणिक नामे राजा हतो, तेने चिल्लणा नामे पत्नी हती. एक वखते अर्ध रात्रे चेल्लणा गोखमां बेठी हती, तेवामां नदीना पूरमां तणाइ आवता काष्टने बहार खेंची काढतो एक पुरुष विजळीना प्रकाशथी तेना जोवामां आव्यो. ते जोइ तेणीए श्रेणिकराजाने कह्युं के, " हे स्वामी ! तमे पण मेघनी जेम भरेलानेज भरो छो, तमारा नगरमां आवो गरीब स्थितिनो माणस छे, तेनी तो तमे चिंता पण नथी करता. आ तो तमारी मोटी चतुराइ छे !" आवां प्रियानां वचन सांभळी श्रेणिके माणस मोकली ते गरीब माणसने बोलावीने पूछयुं के ' अरे ! तुं कोण छुं अने शामाटे अत्यारे नदीमांथी काष्ट खेंचे छे ? ' ते बोल्यो के ' हुं मम्मण नामे वणिक छुं, मारे घेर बे बळद छे, तेमां बीजा बळदनुं एक शींगडुं ओछुं छे, ते पूरुं करवा माटेज आ प्रयास छे.' आ प्रमाणे सांभळी राजा आश्चर्य पाम्यो अने कौतुकथी देवी साथे ते वणिकने घेर गयो. घरने त्रीजे माळे सुवर्णना बे मोटा वृषभ तेणे राजाने बताव्या. तेना शींगडा रत्नजडित हता, ते जोइ विस्मय पामेला राजाए देवीने कह्युं, ' प्रिया ! आपणे घेर आवुं एक पण रत्न नथी, तो आने शुं आपवुं ? ' मम्मण बोल्यो- ' स्वामी ! आ शींगडाने माटे मारा पुत्रो वहाणवटानो व्यापार करे छे, मारे घेर कोइ चोळा अने तेल विना कांइ खातुं नथी. जो हुं बीजो व्यापार करुं तो मारे दुकान विगेरे लेवी पडे अने तेमां खर्च थइ जाय; तेथी आ वर्षासमयमां रात्रे नदीमांथी काष्ट काढी, तेने वेची द्रव्य उपार्जन करुं छुं. ' आ प्रमाणे तेनी बेहद कृपणता जोइ राजा मस्तक धूणावतो पोताने घेर गयो अने मम्मण शेठ छेवट सुधी अपूर्ण मनोरथवाळो रही मृत्यु पामीने नरके गयो.

इति मम्मण प्रबंध.

" आ प्रमाणे केटलाएक महा पापी अपरिमित परिग्रहनी इच्छावडे नरके जाय छे; तेथी परिग्रहनुं परिमाण करवुं, ते उत्तम छे." ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे, " सगर राजा पुत्रोथी तृप्त थयो नहि, कुचिकर्ण गायोना धणथी संतोष पाम्यो नहीं, तिलकश्रेष्ठी धान्यथी तृप्त थयो नहि अने नंदराजा सोनाना ढगलाओथी पण तृप्त थयो नही."

सगरराजानो प्रबंध आगळ कहेवामां आवशे. बाकीना त्रण प्रबंध टुंकामां आ प्रमाणे–मगध देशमां कुचिकर्ण नामे श्रेष्ठी हतो. तेने लाखो गायो हती. अनेक गोवाळो दिवसे दिवसे तेने उछेरता हता. ते हंमेशा नव नवी गायोना दुध दहीं खातो हतो. एक वखते दुध विगेरे अतिशय खावाथी आकुळव्याकुळ थइ गायोनाज ध्यानथी मृत्यु पामीने ते तिर्यंचयोनिमां उत्पन्न थयो.

अचलपुरमां तिलक नामे श्रेष्ठी हतो. तेणे एक समये दुकाळ पडवाथी पूर्वे करेला धान्यमां मोटो लाभ उपार्जन कर्यो. त्यारपछी फरीने वळी कोइ निमित्तिकना वचनथी अगाउथी दुकाळ पडवानो जाणी तेणे गामोगाम धान्यना मोटा कोठार भराव्या अने घणा धान्यनो संग्रह कर्यो. तेमां अनेक क्रोडोगमे जीवोनी हिंसा थती तेने पण तेणे गणी नहीं. दैवयोगे ते वर्षमां पाछळथी वर्षाद पड्यो जेथी दुकाळ पड्यो नहीं; अने तेना कोठारोमां पाणी पेशी जवाथी धान्य फुली गयुं एटले तेना सर्व कोठारो फुटी गया. धान्य बधुं तणावा लाग्युं. ते देखी तेनुं हृदय फाटी गयुं अने मृत्यु पामी ते नरके गयो.

पाटलीपुर नगरमां उदायी राजा राज्य करतो हतो. तेना कोइ शत्रुए साधुने वेषे आवी तेने मारी नाख्यो. तेने कांइ संतान नहोतुं, तेथी तेनुं राज्य शून्य थइ गयुं. आ अवसरमां ते नगरने विषे एक नापित अने वेश्याथकी उत्पन्न थयेलो नंद नामे छोकरो हतो. तेने एवुं स्वप्न आव्युं के, 'तेणे पोताना आंतरडाथी पाटलीपुरने वींटी लीधुं.' प्रातःकाळे तेणे पोताना उपाध्यायने ए स्वप्ननुं फळ पूछ्युं. उपाध्याये कह्युं के, 'आ स्वप्नथी तने आ नगरनुं राज्य मळशे.' पछी तरतज उपाध्याये पोतानी पुत्री तेने परणावी. नंद कन्यानुं पाणिग्रहण करी मोटा महोत्सवथी पोताने घेर जतां राजमार्गे आव्यो, तेवामां राज्यना मंत्रीओए मंत्रवडे अधिवासित करेला हाथीए आवीने नंदनी उपर कळश ढोळ्यो; एटले तत्काळ तेने राज्य उपर बेसाडवामां आव्यो. केटलाएक सांमतो नंदनी आज्ञाने मानवा न लाग्या, एटले नंदे महेलनी भींत उपर चीतरेला सुभटोनी सामुं जोयुं; तेथी तत्काळ तेओए भींतथी भूमिपर उतरीने तेमांथी केटलाकने मारी नाख्या. पछी सर्व सामंतो तेनी आज्ञा मानवा लाग्या. नंदे घणा आकरा ने अघटता कर लइ घणुं द्रव्य एकठुं कर्युं; अने समुद्रने कांठे तेणे ते द्रव्यवडे सोनानी नव डुंगरीओ करावी. त्यारथी तेनुं नवनंद एवुं नाम पृथ्वीमां प्रख्यात थयुं. प्रजा उपर घणो जुलम करवाथी ते अपकीर्त्तिनुं अने पापनुं भाजन थइने नरके गयो.

" द्रव्य अल्प होय पण जो ते विश्वोपकारी थाय तो ते प्रशंसा करवा योग्य छे, पण नंदराजानी जेम उपकार वगरनुं अपरिमित द्रव्य पण शा कामनुं? जुओ ! जगतमां जेवो हिमरुचि (चंद्र) प्रीतिकारक छे तेवो हिमसमूह नथी अने जेवो अल्प जळ आपनार पण मेघ प्रिय छे तेवो घणा जलवाळो समुद्र प्रिय नथी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ पंचमव्रतविषये अष्टोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०८ ॥

व्याख्यान १०९ मुं.

परिग्रहमां आसक्त एवो पुरुष अनेक प्रकारना पापो करे छे ते विषे कहे छे.

परिग्रहार्थमारंभ-मसंतोषाद्वितन्वते ।
संसारवृद्धिस्तेनैव, गृह्णीत तदिदं व्रतम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" परिग्रहने अर्थे असंतोष होवाने लीधे आरंभ वधे छे अने तेथी संसारनी वृद्धि थाय छे, माटे आ परिग्रहपरिमाण व्रत अवश्य ग्रहण करवुं. " एटले के धनने माटे ज्यारे संतोष थतो नथी त्यारे तेथी थयेली तृष्णानी वृद्धिवडे खेती विगेरे अनेक प्रकारना आरंभो करे छे, सगा बंधुनो पण वध करवा तत्पर थाय छे अने तेवा आरंभवडे संसारनी वृद्धि थाय छे, तेथी परिग्रहनो अवश्य नियम ग्रहण करवो. आ विषे बे भाइओनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

सोम अने शिवदत्त नामे बे भाइओनो प्रबंध.

अवंती नगरीमां सोम अने शिवदत्त नामे बे भाइ रहेता हता, तेओ द्रव्य मेळववाने माटे सौराष्ट्र देशमां गया. त्यां अनेक जातना अधर्म तथा कर्मादानना व्यापारो करीने तेमणे केटलुंक द्रव्य उपार्जन कर्युं. पछी ते द्रव्यनी वांसळी कटीए बांधी बंने भाइ पोताना नगर तरफ चाल्या. मार्गमां वाराफरती वांसळी पोतपोतानी केडे बांधता. ते ज्यारे मोटा भाइनी केडे हती त्यारे तेने

विचार थयो के, 'जो हुं आ अनुज बंधुने मारी नाखुं तो पछी मारी पासे कोइ भाग मागे नहीं.' आवा कुविचारथी ते अनुज बंधुने लइने गंधवती नदीने तीरे आव्यो; एटले तेने विचार थयो के, 'अहो ! आ धन केवुं अनर्थकारी छे के जेथी मने आवो कुविकल्प थयो. तेथी आनो त्याग करवो तेज योग्य छे.' आवुं धारीने तेणे द्रव्यनी वांसळी नदीना धरामां नाखी दीधी. अनुज बंधुए पूछयुं के, 'भाइ ! आम केम कर्युं ?' त्यारे तेणे पोतानो माठो अभिप्राय जणाव्यो एटले नाना भाइए पण कह्युं के, 'तें घणुं सारुं कर्युं के जेथी मारी दुष्ट बुद्धि पण नाश पामी.' पछी तेओ पोताने घेर आव्या.

हवे पेली द्रव्यनी वांसळी कोइ मत्स्य गळी गयो. ते मत्स्यने कोइ माछीए जाळमां पकड्यो. ते मत्स्य ते बंनेनी माताए वेचातो लीधो. माताए पोतानी पुत्रीने आप्यो. मत्स्यने विदारतां तेणीए द्रव्यनी वांसळी दीठी, एटले तत्काळ तेणे खोळामां गोपवी दीधी. माताए पूछ्युं, 'खोळामां शुं छे ?' तेणीए कह्युं के, 'कांइ नथी.' पछी माता शंकाने लीधे जेवी ते जोवा तेनी पासे आवी तेवो पुत्रीए छरीनो घा कर्यो, तेथी तेनी माता घायल थइने मृत्यु पामी. तेवामां तेना बंने भाइओ घेर आव्या. तेमणे व्हेनना खोळामांथी पडती पेली द्रव्यनी वांसळी जोइ, तेथी तत्काळ विचार्युं के, 'अहो ! द्रव्य केवुं अनर्थदायक छे !' पछी वैराग्य पामीने तेओ गुरु पासे गया. त्यां गुरुना मुखथी आ प्रमाणेनी वाणी सांभळी—"आ जगतमां तृष्णारूपी खाण एवी उंडी छे के ते कोइथी पूरी शकाती नथी, तेमां मोटा मोटा पदार्थो नाखीए तो तेथी ते उलटी वधारे खोदाय छे. तृष्णावाळो जीव द्रव्य प्रगट करवाने माटे घणा पापो करे छे, पण तेथी शुं तेने कांइ पण सुख थाय छे ? नथी थतुं; केम के पापद्रव्यथी शुं सुख होय ? वळी धर्मऋद्धि, भोगऋद्धि अने पापऋद्धि-एम त्रण प्रकारनी ऋद्धि कहेवाय छे. तेमां धर्मऋद्धि ते के जे धर्मकार्यमां उपयोगी थाय छे, भोगऋद्धि ते के जे शरीरना भोगमां वपराय छे अने पापऋद्धि ते के जे धर्मकार्यमां वपराती नथी, तेम शारिरीक भोगमां पण वपराती नथी पण मात्र अनर्थरूप फळनेज आपे छे. तेवी ऋद्धि पूर्वकृत पापना योगे प्राप्त थाय छे अने पुनः पाप करावे छे. ते उपर एक नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे ते सांभळो—

वसंतपुरमां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वणिक अने सोनी ए चार ज्ञातिना चार मित्रो हता, तेओ द्रव्य मेळववाने माटे देशांतर चाल्या. मार्गमां रात्रि पडतां एक उद्यानमां वडवृक्षनी नीचे तेओ विश्रांत थया. त्यां ते वृक्षनी शाखा साथे

लटकतो एक सुवर्णनो पुरुष तेओना जोवामां आव्यो. ते सुवर्णपुरुष बोल्यो के, ' हुं अर्थ छुं पण अनर्थने आपनार छुं. ' ते सांभळी तेओए भय पामीने तेनो त्याग कर्यो. परंतु सोनीथी तेनो लोभ मूकायो नहीं, एटले सोनीए ते पुरुषने ' पड ' एम कह्युं, एटले ते पड्यो. सोनीए बीजाओथी छानो तेने एक खाइमां गोपव्यो, पण सर्वनी दृष्टि तेनापर पडी. पछी आगळ चालतां बे जण कोइ गामनी बहार रह्या अने बे जणने गाममां भोजन लेवा मोकल्या. जे बे बहार रह्या हता तेमणे चिंतव्युं के, ' आपणे गाममां गयेला बे आवे के तेमने मारीने पेलुं सुवर्ण लेवुं. ' बे जणा जे गाममां गया हता तेमणे चिंतव्युं के, ' आपणे अन्नमां विष भेळवीने लइ जवुं के जे खाइने बहार रहेला बे मृत्यु पामे तो आपणने बेने बधुं सुवर्ण मळे. ' आवा विचारथी तेओ विषान्न लइने बहार आव्या. जेवा तेओ पेला बेनी पासे आव्या के ते बंनेए संकेत प्रमाणे तेमने खड्गथी मारी नाख्या. पछी पेलुं विषान्न तेओ जम्या के जेथी तेओ पण मृत्यु पामी गया. आ प्रमाणे चारे मृत्यु पाम्या. आवी जे ऋद्धि ते पापर्द्धि समजवी.

उपरनुं दृष्टांत सांभळी भवि प्राणीओए हंमेशां पोतानी समृद्धि धर्मकार्यमां वापरवी. ' मारी पासे अल्प धन छे ' इत्यादि कारणने लइने धर्मकार्य करवामां विलंब करवो नहीं. कह्युं छे के,

देयं स्तोकादपिस्तोकं, नव्यपेक्षो महोदयः ।
इच्छानुसारिणी शक्तिः, कदा कस्य भविष्यति ॥१॥

" थोडामांथी थोडुं पण धर्मकार्यमां वापरवुं, वधारे द्रव्य थवा उपर मुलतवी राखवुं नहीं. कारण के इच्छा प्रमाणे द्रव्यनी शक्ति क्यारे थशे तेनो कांइ निश्चय नथी. " वळी कह्युं छे के,

स्वकार्यमद्यकुर्वीत, पूर्वान्हे वा परान्हिकं ।
नहि मृत्यु प्रतिक्षेत, कृतं वा ह्यनयाऽकृत ॥ १ ॥

" आवती कालनुं काम आज करवुं, अने मध्यान्हे करवानुं होय ते सवारे करवुं, कारणके मृत्यु एवी राह जोतुं नथी के आणे कर्युं छे के नथी कर्युं ? " केटलाएक जीवो कृपणताथी द्रव्यनी हानिना भयवडे धर्मकार्यमां द्रव्यनो व्यय करता नथी तेमज परिग्रहनुं परिमाण पण करता नथी, तेथी तेओ चक्रीपणा विगेरेनी उंची पदवीने पामता नथी; परंतु अति लोभथी पराभव पामीने अशोकचंद्रनी जेम नरके जाय छे. घणा पुरुषो धननी इच्छाथी पारावार दुःखने

पाम्या छे. आ प्रमाणे गुरुना वाक्यथी ते बंने भाइओ प्रतिबोध पाम्या. पछी ते बंने भाइओ पांचमुं व्रत अंगीकार करी निरतिचारपणे पाळीने स्वर्गे गया.

" जे प्राणीओ परिग्रहमां आसक्त होय छे तेओ निर्दयपणाथी असत्य, चौर्य विगेरे अनेक पापो आचरे छे, अने तेथी करीने तेओ संसारसमुद्रमां अधोगमन करे छे, माटे उत्तम पुरुषोए आ व्रतने अवश्य ग्रहण करवुं के जेथी शिवपदने प्राप्त थवाय. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ
पंचमव्रतविषये नवमोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०९ ॥

इत्युक्तं सातिचारं पंचमव्रतम् ।

व्याख्यान ११० मुं.

हवे छठ्ठुं दिग्विरति रूप व्रत कहे छे.

दशदिग्गमने यत्र, मर्यादा कापि तन्यते ॥
दिग्विरताख्यया ख्यातं, तद्गुणव्रतमादिमम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जेमां दश दिशाओमां जवाने कांइक मर्यादा कराय छे ते दिग्विरति नामे पहेलुं गुणव्रत कहेवाय छे." एटले जे व्रतमां पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋति, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अधो अने उर्ध्व-ए दश दिशाओमां गमन करवाने कोइपण मर्यादा कराय छे ते प्रथम गुणव्रत छे; अने ते उत्तरगुणरूप व्रत कहेवाय छे. गुणव्रतनो अर्थ एवो छे के ' अणुव्रतनो गुण जे उपकार तेने अर्थे जे थाय ते गुणव्रत कहेवाय.' तेमां पहेलुं गुणव्रत दिग्विरति नामे छे. आ व्रत लेवाथी पापस्थानोनी पण विरति थाय छे. ते कहे छे—गमनागमनी मर्यादावडे स्थावर जंगम जीवोना मर्दननी निवृत्ति थती होवाथी तपावेला लोढाना गोळा जेवा गृहस्थे आ व्रत ग्रहण करवामां आदर करवो, एटले त्रस स्थावर प्राणीओनी गमनागमन करवाथी हिंसा थाय छे, ते हिंसानो गमना-

गमन बंध थयेल स्थानमां रोध थवाथी गृहस्थने आ व्रत आदरवा योग्य छे. हिंसानो निषेध थतां असत्यादिक बीजा पापोनो पण निषेध थइ जाय छे. अहिं कोइ शंका करे के, 'त्यारे आ व्रत साधुए पण ग्रहण करवुं जोइए.' तो तेना खुलासा माटे गृहस्थने लोढाना तपावेला गोळानुं विशेषण आपे छे के–गृहस्थ आरंभ परिग्रहमां निरंतर तत्पर होवाथी ते ज्यां जाय, खाय, सुवे, अथवा कांइ व्यापार करे, तेमां तपेला लोढाना गोळानी जेम अनेक जीवोनुं मर्दन करे छे अने साधु तेम करता नथी; कारणके ते तो पंचसमिति ने त्रिगुप्तिमान् होय छे, तेथी तेमने ए दोष लागतो नथी.

आ व्रतनो स्वीकार करनारा गृहस्थने त्रस तथा स्थावर जीवोने अभयदान तथा लोभसमुद्रनी नियंत्रणा इत्यादि महान् लाभ थाय छे. गृहस्थ लोढाना गोळा जेवो छे. ते विषे सर्वज्ञ भगवंते सिद्धांतमां पण कह्युं छे के— "अग्निना तणखाओथी प्रकाशमान लोढाना गोळा जेवो गृहस्थ निरंतर होय छे; अने अविरतिरूप पाप तेने पोताने तेमज समस्त जीवोने पण बाळे छे." वळी कह्युं छे के, "जीव सर्व स्थाने पोताना देहवडे जो के गमनागमन करतो नथी तो पण ते अविरति होवाथी तेने अविरतिपणाथी बंधातुं पाप निरंतर लाग्या करे छे." वळी पूर्व भवमां तजी दीधेला देहवडे जो कोइपण जीवोनो वध थाय छे तो तेनुं पाप पण अविरतिवडे ज्यां नवो देह धर्यो होय त्यां ते जीवने लागे छे. पण जो पूर्वनो देह विनाश पामी जाय तो अथवा व्रत लीधुं होय तो तेथी तेवा पापनो बंध थतो नथी; माटे विरति करवामांज कल्याण छे, एवुं वृद्ध पुरुषोनुं वाक्य छे.

हवे पहेला गुणव्रतनुं फळ कहे छे—"जे प्राणी दिग्विरति व्रत लइने गमनागमनमां संकोच करे छे, ते प्राणी सिंहनी जेम संसारनुं उल्लंघन करवा माटे फाळ मारवानो आरंभ करे छे." आ विषे सिंहश्रेष्ठीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

वसंतपुर नामना नगरमां कीर्त्तिपाल नामे राजा हतो. तेने भीम नामे एक पुत्र हतो अने जेना हृदयमां जैनधर्मनी वासना हती एवो सिंह नामे एक श्रेष्ठी मित्र हतो. ते पोताना कुमारथी पण राजाने विशेष प्रिय हतो. एक वखत कोइ एक पुरुषे राजसभामां आवीने कह्युं के, 'हे देव! नागपुरना राजा नागचंद्रने रत्नमंजरी नामे एक रूपवती कन्या छे. तेना एक रोमरायना दर्शन करवाथी पण बे ब्रह्मनो अनुभव थाय छे अने तेनुं दर्शन थवाथी बे कामदेवथी पूर्ण थवाय छे. ते कन्याने तुल्य कोइ बीजी कन्या नथी. ए कन्या तमारा कुमारने योग्य छे, एवुं चिंतवी तेमणे मने विश्वासी जाणी तमारी पासे प्रार्थना

करवा मोकल्यो छे; माटे तेने वरवा सारु तमारा कुमारने मारी साथे मोकलो.' दूतनां आवां वचन सांभळी राजाए पोताना प्रियमित्र सिंहने कह्युं, 'मित्र! आपण बंनेमां कांइ पण अंतर नथी, माटे कुमारने लइने नागपुर जाओ अने तेनो विवाह करी आवो.' सिंहश्रेष्ठीए अनर्थदंडना भयथी राजाने कांइ पण उत्तर आप्यो नहीं; एटले राजा जरा क्रोध लावीने बोल्यो के—'शुं तमने आ संबंध रुचतो नथी?' श्रेष्ठी बोल्यो–"राजेंद्र! मने रुचे छे, पण में सो योजन उपरांत जवा आववानो नियम लीधो छे अने इहांथी नागपुर सवासो योजन दूर थाय छे; तेथी व्रत भंग थवाना भयथी हुं त्यां जइश नहीं." आ प्रमाणे सांभळतांज घी होमावाथी अग्निनी जेम राजाना कोपाग्निनी ज्वाळा विशेष प्रज्वलित थइ, अने ते बोल्यो के—'अरे! शुं तुं मारी आज्ञा नहीं माने? तने ऊंट उपर बेसाडी सहस्र योजन सुधी मोकली दइश.' सिंह बोल्यो—'स्वामी! हुं तमारी आज्ञा प्रमाणे करीश.' ते सांभळी तरत राजा हर्ष पाम्यो. पछी पोताना पुत्रने सैन्य साथे तैयार करी अने सिंह श्रेष्ठीने सर्व क्रियामां आगेवान ठरावी कुमार साथे रवाने कर्यो. मार्गमां सिंहे प्रतिबोध आपीने भीमकुमारनी संसारवासना तोडी नाखी. सो योजन चाल्या पछी सिंह श्रेष्ठी आगळ चाल्यो नहीं, एटले सैनिकोए एकांते कुमारने जणाव्युं के, 'कुमार! अमने राजाए गुप्तपणे आज्ञा करी छे के, जो सिंहश्रेष्ठी सो योजनथी आगळ न चाले तो तमारे तेने बांधीने नागपुर लइ जवो.' आ विचार कुमारे पोताना धर्मगुरूने निवेदन कर्यो. सिंहे राजकुमारने कह्युं, 'कुमार! आ असार संसारमां प्राणीने शरीर पण पोतानुं थतुं नथी तो बीजुं कोइ शेनुं थाय? माटे हुं तो अहीं पादपोपगम अनशन करीश. पछी तेओ मने बांधी लइ जइने शुं करशे.' आ प्रमाणे कहीने सिंहश्रेष्ठी सिंहनी जेम अनशन लेवा चाल्यो. कुमार पण तेनी साथे गयो. एवामां रात्रि पडी. सैनिकोए कुमारने अने सिंहने जोया नहीं एटले तेओ चारे तरफ तेमने शोधवा लाग्या. एम करतां थोडे दूर आवेला कोइ पर्वत उपर ते बंने तेमना जोवामां आव्या; परंतु दीक्षा अने अनशन आदरी बेठेला तेनने जोइ सैनिको प्रणाम करीने बोल्या के—'हे महाशयो! अमारो अपराध क्षमा करो. पण हे स्वामी! आ खबर जाणी महाराजा अमने घाणीमां घालीने पीली नाखशे.' आ प्रमाणे तेमणे घणा कालावाला कर्या, तथापि तेओ जरा पण क्षोभ पाम्या नहीं. कह्युं छे के, "संतोषरूपी अमृतवडे तृप्त थयेला योगी भोगनी इच्छा करता नथी; कारण के ते तो माटी तथा सुवर्णमां अने शत्रु तथा मित्रमां एक बुद्धि राखे छे."

अनुक्रमे आ खबर कीर्त्तिपाळ राजाना सांभळवामां आवी, तेथी तेने बहु क्रोध चड्यो. तेणे निश्चय कर्यो के, 'कुमारने बांधीमे परणाववो अने सिंहने शत्रुनी जेम मारी नाखवो.' आवा विचारथी राजा तेमनी पासे आव्यो. त्यां तो व्याघ्रादिक प्राणीने ते बंनेना चरणनी सेवा करतां जोइ राजा आश्चर्य पाम्यो अने विचार्युं के 'आ बंनेने भक्तिवचनोथीज बोलाववा.' आवुं चिंतवीने तेणे चाटु वाक्योथी तेमने बोलाववा मांड्या, परंतु दृढ प्रतिज्ञावाळा तेओ किंचित् पण चलित थया नहीं. अनुक्रमे मासोपवासने अंते केवळज्ञान पामी सुरासुरोए नमेला ते बंने मुक्तिने प्राप्त थया. तेमनुं मुक्तिप्रयाण जाणी कीर्त्तिपाळ राजाए उंचे स्वरे कह्युं के—

न योजनशतादुर्ध्वं, यास्यामि तव निश्चयः ।
असंख्यैर्योजनैर्मित्र, मां मुक्त्वा किमगाच्छिवं ॥ १ ॥

"हे मित्र ! तारो एवो निश्चय हतो के मारे सो योजनथी वधारे जवुं नहीं पण आ वखते तुं मने मूकीने असंख्य योजन दूर रहेला शिवनगरमां केम चाल्यो गयो ?" आ प्रमाणे विलाप करतो कीर्त्तिपाळ राजा पोतानी राजधानीमां आव्यो.

"प्राण त्याग करवा ते सारा पण स्वीकार करेला व्रतनो त्याग करवो ते सारुं नहीं, आवो दृढ विचार राखी भव्य प्राणीओए सिंहश्रेष्ठीनी जेम दिग्विरति व्रत ग्रहण करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्यवृत्तौ षष्ठे दिग्विरतिव्रतविषये दशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥११०॥

व्याख्यान १११ मुं.

हवे दिग्विरति व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

स्मृत्यंतर्धानमूर्ध्वाध–स्तिर्यग्भागव्यतिक्रमाः ।
क्षेत्रवृद्धिश्च पंचेति, स्मृता दिग्विरतिव्रते ॥ १ ॥

व्याख्या.

"करेला क्षेत्रप्रमाणनुं भूली जवुं, उंचा नीचा अने तिरछा नियमेला क्षेत्रनुं

उल्लंघन करवुं, अने धारेली क्षेत्र मर्यादामां वधारो करवो–ए पांच छट्ठा व्रतना अतिचार छे." भावार्थ एवो छे के कोइए पूर्व दिशामां सो योजननुं प्रमाण बांध्युं होय पण जती वखते व्याकुळता विगेरेथी तेने विस्मरण थाय के 'मैं पचासनुं परिमाण कर्युं छे के सोनुं?' एवा संदेहथी ते पचासथी वधारे गमन करे तोपण तेने दोष लागे ते प्रथम अतिचार कहेवाय. जो के ए अतिचार सर्व अतिचारने साधारण छे, पण पांचनी संख्या पूर्ण करवाने पृथक् ग्रहण करेलो छे, तेथी ग्रहण करेलां व्रतनुं वारंवार स्मरण करवुं, कारण के सर्व आचरण स्मरणमूळ छे. नियमित करेला क्षेत्रथी बीजे लाभ थतो होय तोपण ते त्यजी देवो. इति प्रथम अतिचार.

बीजा अतिचारमां उर्ध्व भागे एटले पर्वतना शिखर विगेरे पर जवाने करेलो नियम, त्रीजा अतिचारमां अधो भागे एटले अधोग्राम, भूमिगृह तथा कूप विगेरेमां जवानो करेलो नियम अने चोथा अतिचारमां तिरछुं पूर्वादि दिशाओमां जवा माटे करेलो नियम, जे नियम बे त्रण योजनथी मांडीने अनुकूळता प्रमाणे करेलो होय तेनुं उल्लंघन करवुं. ए बीजो, त्रीजो अने चोथो अतिचार जाणवो. इति द्वितीय, तृतीय अने चतुर्थ अतिचार.

उपर कहेला उर्ध्व दिशा विगेरेना त्रण अतिचारोने माटे आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां आवो विधि कहेलो छे के, 'उर्ध्व दिशाए गमन करवानुं परिमाण करेलुं होय अने वानर के कोइ पक्षी वस्त्राभरण लइने ते परिमाणथी वधारे दूर जाय तो नियमने लीधे त्यां जवुं कल्पे नहीं; पण जो ते वस्तु त्यांथी पडे अने कोइ लावी आपे तो ग्रहण करवी कल्पे.' आवी हकीकत हाल पण संमेतगिरि विगेरे उपर संभवे छे. एवीरीते सर्व दिशाओ माटे जाणी लेवुं. योगशास्त्रमां तो एम कह्युं छे के–'जे प्रमाणे व्रत लीधुं होय ते प्रमाणे वर्त्तवुं.'

हवे पांचमो अतिचार कहे छे–पूर्वादि दिशानुं क्षेत्र नियमित कर्युं होय तेमां वधारो करवो, एटले जुदी जुदी दिशाओमां सो सो योजन जवानो नियम लीधेलो होय, पछी कोइ कार्य आवी पडवाथी अथवा लोभने लीधे अमुक दिशाए सो योजनथी वधारे जाय अने बीजी दिशामां तेटला योजन घटाडे; आ प्रमाणे करेला प्रमाणमां वधारो घटाडो करवो, ए भंगाभंगरूप पांचमो अतिचार छे. इति पंचम अतिचार.

उपर प्रमाणे दिग्विरति व्रतना पांच अतिचार वर्जवा. ए व्रत उपर कुमारपाळ राजानो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

कुमारपाळ राजानो प्रबंध.

एक वखते पाटणमां श्रीहेमाचार्ये कुमारपाळ राजानी पासे छठ्ठा व्रत विषे आ प्रमाणे कह्युं के, " हे राजेंद्र ! विवेकी पुरुषोए सर्वदा जीवदयाने माटे छठ्ठुं व्रत ग्रहण करवुं. तेमां पण वर्षाकाळमां तो विशेषपणे ग्रहण करवुं. कह्युं छे के—

दयार्थं सर्व जीवानां, वर्षास्वेकत्र संवसेत् ।

' सर्व जीवोनी दयाने माटे वर्षाऋतुमां एक स्थानेज रहेवुं.' पूर्वे श्रीनेमिप्रभुना उपदेशथी श्रीकृष्णे पोताना नगरनी बहार जवानो नियम लीधो हतो." आ प्रमाणे सांभळी चौलुक्यसिंह कुमारपाळे पण एवो नियम लीधो के, " सर्व चैत्योना दर्शन करवा जवुं अने गुरुने वंदन करवा जवुं, ते सिवाय हुं प्राये नगरमां पण भमीश नहीं. " तेनो आ नियम सर्वत्र प्रख्यात थइ प्रसरी गयो.

आ नियमनी वार्त्ता बातमीदारो द्वारा गीजनीना राजा शकयवनपति (बादशाह) ना जाणवामां आवी, तेथी तत्काळ गुर्जर देशनी समृद्धि ग्रहण करवाने अने ते देशने भांगवाने यवनपतिए चडाइ करी. आ वृत्तांत चरलोकोथी जाणी गुर्जरपति कुमारपाळ मंत्री सहित मोटी चिंतामां पड्या. पछी उपाश्रये आवी गुरुने कह्युं के—' भगवन् ! जो हुं ते यवनपतिनी सामे नहीं जाउं तो तेथी देशनो भंग तथा लोकने पीडा थशे; अने जो जाउं छुं तो मारा नियमनो भंग थाय छे. ' गुरु बोल्या—' हे राजन् ! तमे आराधेलो धर्मज तमारी सहाय करशे, माटे चिंता करशो नहीं. ' आ प्रमाणे राजाने धीरज आपीने श्रीहेमचंद्रसूरि पद्मासन करी कोइ इष्ट देवतानुं ध्यान धरवा बेठा. एक मुहूर्त्त व्यतित थयुं तेवामां आकाशमांथी एक पलंग उतरतो दीठो. ते पलंगमां एक पुरुष सुतो हतो, ते उठीने गुरुनी आगळ उभो रह्यो. राजाए पूछयुं के, ' आ कोनो पलंग छे ? ' त्यारे गुरुए जे हतुं ते यथार्थ कह्युं. ते पलंगमां सुतेलो पुरुष यवनपति बादशाह हतो, ते पलंगमांथी उठीने आसपास जोतां विचारमां पड्यो के, ' ते स्थान क्यां गयुं के ज्यां मारुं सैन्य छे ? आ ध्यान धरनार कोण छे ? वळी आ राजा पण कोण छे ? ' इत्यादि चिंतवन करतो जोइ सूरि बोल्या—' हे यवनपति ! तुं शुं विचार करे छे ? जे पृथ्वी उपर पोताना धर्मनुं एकछत्र ऐश्वर्य धारण करे, तेने देवता पण सहाय करे छे. माटे जो तारे स्वहित करवुं होय तो देवताओ पण जेनी शक्तिनुं उल्लंघन करी शकता नथी एवा आ वज्रपंजररूप धर्मात्मा राजाने शरणे जा. ' तत्काळ यवनपति

भय, उद्वेग अने लज्जाने प्राप्त थयो. पछी सूरिने प्रणाम करी श्रीकुमारपाळराजाने नम्यो अने बोल्यो के–" हे राजन् ! मारा अपराधने क्षमा करो, आजथी हुं यावज्जीव तमारी साथे संधि करीश. अत्यारे मारा जीवनी रक्षा करीने 'जगज्जीवपालक' एवा तमारा बिरुदने सत्य करो. प्रथम तमारुं पराक्रम में सांभळ्युं हतुं पण ते भूली जइने हुं अहि आव्यो. हवे कदि पण तमारी आज्ञानुं उल्लंघन करीश नहीं. तमारुं कल्याण थाओ; अने मने मारा आश्रममां पहोंचाडो." राजर्षि कुमारपाळ बोल्यो के–" हे यवन ! जो तुं तारा देशमां छ मास सुधी अमारी प्रवर्त्तावे तो हुं छोडुं. तारे मारी एटली आज्ञानो अमल करवो तेज मारी इच्छा छे. बळात्कारथी के छळथी पण जीवरक्षा करावची एवो मारो निश्चय छे अने एम करवाथी मने अने तने बंनेने पुण्य थशे." यवनराज आवुं ते बलिष्ट राजानुं वचन उल्लंघन करवाने समर्थ थयो नहीं. पछी कुमारपाळ तेने पोताना महेलमां लइ गयो अने त्रण दिवस सुधी राखी घणो सत्कार करी, जीवदयानी शिक्षा आपीने पोताना आप्तजननी साथे तेने स्थानके पहोंचाड्यो. कुमारपाळना सेवको गीजनीमां छ मास सुधी जीवरक्षा करावी, यवनपतिए आपेली अश्व विगेरेनी भेटो लइने कुमारपाळनी पासे पाटणमां आव्या, अने ते वार्त्ता कहीने चौलुक्यपतिने आनंद पमाड्यो.

"आ प्रमाणे सर्व राजाओए अने मुनिओए स्तुति करेला मार्गमां चालनारा कुमारपाळराजाए सेंकडो कष्ट भोगवीने पण छट्ठा व्रतनुं पालन कर्युं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
षष्टमव्रतविषये एकादशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥१११॥

व्याख्यान ११२ मुं.

लोभनो प्रसार पण छट्ठा व्रतथी निवृत्त थाय छे ते कहे छे.

जगदाक्रममाणस्य, प्रसरल्लोभवारिधेः ।
स्खलनं विदधे तेन, येन दिग्विरतिः कृता ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जे प्राणी आ दिग्विरतिरूप छट्ठं व्रत ग्रहण करे छे, ते आ जगत

बधानुं आक्रमण करनार लोभरूपी महासमुद्रनी स्खलना करे छे." भावार्थ एवो छे के, आ लोभरुपी समुद्र विविध कल्पना करवाथी प्रसरे छे, ते आखा जगतने दबावे छे, कारण के जे लोभने वश थाय छे तेने त्रण लोकनी संपत्ति अने इंद्र, चक्रवर्ती तेमज पाताळपति नागेंद्रनुं स्थान मेळववाना मनोरथ थाय छे. ए रीते ते सर्व जगतने दबावे छे. एवा लोभरूपी समुद्रनी स्खलना ते करी शके के जेणे आ दिग्विरति व्रत ग्रहण कर्युं होय. कारण के ते प्रतिज्ञा करेली सीमाथी आगळ जवाने इच्छतो न होवाथी प्राये करीने करेली सीमानी बहार रहेला सुवर्ण, रूपुं अने धन धान्य विगेरेनो ते लोभ करतो नथी; अने जेने तेवो नियम होतो नथी ते तृष्णावडे सर्वत्र भ्रमण कर्या करे छे. आ विषे चारुदत्तनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

चारुदत्तनी कथा.

चंपा नगरीमां भानु नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेने चारुदत्त नामे पुत्र हतो. ते यौवन वयने प्राप्त थयो एटले पिताए योग्य कन्या साथे परणाव्यो. पण कोइ कारणने लइने वैराग्य आववाथी ते विषयथी विरक्त थइ पोतानी स्त्री पासे पण जतो नहीं. अन्यदा तेना पिताए चातुर्य शीखववाने माटे तेने एक गणिकाने घेर मोकल्यो. चारुदत्त हळवे हळवे ते गणिकापर आसक्त थयो. छेवटे तेणे वेश्याना प्रेमने वश थइ पोतानुं घर पण छोडी दीधुं; अने बार वर्ष सुधी वेश्याने घेर रह्यो. एक वखते तेना पिता भानुश्रेष्ठीनो अंतसमय आव्यो, एटले तेणे पुत्रने बोलावीने कह्युं के "हे वत्स ! तें जन्मथी मांडीने मारुं वचन मान्युं नथी पण हवे आ छेवटनुं एक वचन मानजे. ते ए के ज्यारे तने संकट पडे त्यारे नवकार मंत्रने संभारजे." आ प्रमाणे कही तेनो पिता मृत्यु पाम्या. थोडा दिवस पछी तेनी माता पण मृत्यु पामी. चारुदत्ते दुर्व्यसनथी मातापितानी सर्व लक्ष्मी उडावी दीधी. चारुदत्तनी स्त्री तेना पिताने घेर चाली गइ.

अहीं ज्यारे धन खुटी गयुं त्यारे स्वार्थी वेश्याए तेने घरमांथी काढी मूक्यो, एटले ते सासराने घेर आव्यो. सासरेथी थोडुं धन लइ कमावा माटे वहाणे चड्यो. दैवयोगे वहाण भांग्युं, पण पुण्ययोगे पाटियुं मेळवी कुशलक्षेम किनारे आव्यो. त्यांथी पोताना मामाने घेर गयो. त्यांथी द्रव्य लइ कमावामाटे पगरस्ते चाल्यो. मार्गे धाड पडी एटले सघळुं द्रव्य चोर लइ गया. पाछो दुःखी थइ पृथ्वीपर भटकवा लाग्यो। एवामां कोइ योगी मळ्यो. तेणे अर्धोअर्ध भाग ठरावी रसकूपिकामांथी रस लेवाने मांची उपर बेसाडीने तेने उतार्यो.

रसनो कुंभ भरीने उपर आव्यो एटले कुंभ लइने योगीए मांची कूपिकामां नाखी दीधी. चारुदत्त कुवामां पड्यो ने योगी नाशी गयो. त्यां कोइ मृत्यु पामता पुरुषने तेणे नवकार मंत्र संभळाव्यो. त्रीजे दिवसे चंदनघो त्यां रस पीवा आवी. त्रण दिवसनो क्षुधातुर चारुदत्त तेने पुंछडे वळगीने घणा कष्टे बहार नीकळ्यो. आगळ चालतां तेना मामानो पुत्र रुद्रदत्त तेने मळ्यो. रुद्रदत्ते कह्युं के, 'बे घेटा लइने आपणे सुवर्णद्वीपे जइए.' चारुदत्ते हा पाडी एटले बे घेटा लइने तेओ समुद्रने तीरे आव्या. पछी रुद्रदत्ते कह्युं के 'आ बे घेटाने हणीने तेना चर्मनी अंदर छरी लइने पेशीए. अहीं भारंड पक्षी आवशे ते मांसनी बुद्धिथी आपणने उपाडीने सुवर्णद्वीपे लइ जशे; एटले आपणे चामडाने छेदी बहार नीकळीने त्यांथी सुवर्ण लावशुं.' चारुदत्त बोल्यो के-'ए वात खरी पण आपणाथी जीवनो वध केम थाय?' एटलामां तो रुद्रदत्ते शस्त्रनो घा करीने एक घेटाने मारी नाख्यो. पछी जेवो बीजाने मारवा जाय छे तेवो चारुदत्ते घेटाने नवकार मंत्र संभळाव्यो. घेटाए अनशनव्रत ग्रहण कर्युं. पछी बंने जणा ते घेटाना चर्मनी धमणमां पेठा; एटले भारंड पक्षी ते धमण लइने आकाशे उड्युं. मार्गमां बीजुं भारंड मळवाथी तेनी साथे युद्ध थतां तेना मुखमांथी चारुदत्तवाळी धमण पडी गइ. धमण सहित चारुदत्त एक सरोवरमां पड्यो. तेमांथी बहार नीकळीने ते ठेकाणे ठेकाणे भमवा लाग्यो. अनुक्रमे एक चारण मुनि तेना जोवामां आव्या. मुनिने नमीने ते पासे बेठो. मुनि बोल्या—'रे भद्र! आ अमानुष स्थळमां तुं क्यांथी आव्यो?' तेणे पोतानुं सर्व दुःख जणाव्युं, एटले मुनिराजे छट्ठुं व्रत वर्णवी बताव्युं. चारुदत्ते प्रीतिथी ते व्रत ग्रहण कर्युं.

आ अरसामां कोइ देवे त्यां आवी प्रथम चारुदत्तने अने पछी मुनिने वंदना करी. ते समये कोइ बे विद्याधर ते मुनिने वांदवा आव्या हता. तेमणे पेला देवने पूछ्युं के, "हे देव! तमे साधुने मूकीने प्रथम आ गृहस्थने केम नम्या?" देव बोल्यो के-"पूर्वे पिप्पलाद नामे ब्रह्मर्षि घणा लोकोने यज्ञ करावी, पापमय शास्त्रो प्ररुपीने नरके गया हता, (तेनी उत्पत्ति बीजा व्रतनी कथाना प्रसंगे कहेली छे.) ते पिप्पलाद ऋषि नारकीमांथी नीकळी पांच भव सुधी बकरा थया. ते पांचे भवमां यज्ञमांज होमाया. छट्ठे भवे पण बकरो थया; परंतु ते भवमां आ चारुदत्ते अनशन करावी नवकार मंत्र संभळाव्यो. तेना महिमाथी मृत्यु पामीने ते स्वर्गे गया. ते हुं देव छुं. अवधिज्ञानथी पूर्व भव जाणीने आ मारा गुरुए आपेला नवकार मंत्रनो महिमा कहेवाने अने उपकारी गुरुने वांदवाने हुं अहिं आव्यो

छुं. पूर्वना मारा परना महान् उपकारथी में प्रथम तेने वंदन करीने पछी साधुने वंदना करी छे." आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी चारुदत्ते वैराग्य पामीने दीक्षा ग्रहण करी अने अनेक प्रकारनी तपस्या करीने ते स्वर्गे गयो.

" जेम चारुदत्त दिग्विरति व्रत लीधेलुं न होवाथी अनेक स्थाने भमी भमीने दुःखी थयो, तेम जे प्राणी ते व्रत ग्रहण नहीं करे ते दुःखी थशे; तेथी भव्य प्राणीओए छठ्ठुं दिग्विरति व्रत अवश्य ग्रहण करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ
षष्ठव्रतविषये द्वादशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ ११२ ॥

व्याख्यान ११३ मुं.

केटलाएक विकट संकट आवे तोपण आ छठ्ठुं व्रत छोडता नथी ते उपर कहे छे.

स्वल्पकार्यकृतेऽप्येके, त्यजंति तृणवद्व्रतम् ।
दृढव्रता नराः केचित्, भवंति संकटेऽप्यहो ॥ १ ॥

व्याख्या.

"केटलाएक हीनसत्वी जीवो अल्प कार्यने माटे पण ग्रहण करेला व्रतने तृणनी जेम छोडी दे छे अने केटलाएक पुरुषो संकटमां पण दृढ व्रतवाळा रहे छे." ते विषे महानंदकुमारनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

महानंदकुमारनी कथा.

अवंती नामनी नगरीमां धनदत्त नामे एक कोटीश्वर श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते जैनधर्मी हतो. तेने पद्मा नामे प्रिया हती. सेंकडो मनोरथ करतां तेमने जयकुमार नामे एक पुत्र थयो. ते पुत्रना जन्म वखते, नाम पाडवाने वखते अने अन्नप्राशन विगेरे संस्कारोमां पिताए मोटा महोत्सवो कर्या. कह्युं छे के-"राग, प्रेम, लोभ, अहंकार, प्रीति अने कीर्त्ति एटला स्थानोमां कोण द्रव्यनो व्यय नथी करतुं ?" ज्यारे जयकुमार यौवन वयने प्राप्त थयो त्यारे तेणे व्यसनासक्त थइ पिताना ऐश्वर्यने उडावी दीधुं. कह्युं छे के—" व्यसनरूपी अग्निमां द्रव्यरूपी घीनी आहूति पडवाथी ते व्यसनाग्नि अधिक अधिक वधे छे, अने पछी

ज्यारे दारिद्र्यरूपी जळनो योग थाय छे त्यारे ते तत्काळ शमी जाय छे." एक वखते जयकुमार कोइ धनाढ्यना गृहमां चोरी करवा गयो. त्यां अकस्मात् सर्पे तेने दंश कर्यो. विष चडवाथी ते तत्काळ मृत्यु पाम्यो. प्रातःकाळे राजाए तेना पिताने पकडीने केद कर्यो. महाजने राजानी पासे जइ तेना पुत्रनी हकीकत कहीने तेने छोडाव्यो.

धनदत्तने पहेली स्त्रीथी बीजो पुत्र थयो नहीं, एटले ते स्त्रीए पोताना स्वामीने आग्रहथी कह्युं के, 'स्वामी ! बीजी स्त्रीनुं पाणिग्रहण करो.' पछी वळी रखे बीजो दुष्ट पुत्र थाय एवा भयथी धनदत्ते ते वात ध्यानमां लीधी नहीं. कह्युं छे के, " जेमनुं हृदय दुर्जनना दोषथी दूषित थयेलुं होय छे तेवा पुरुषोने एकाएक सज्जन उपर पण विश्वास आवतो नथी. उष्ण दूधथी दाझेलो बाळक दहींने पण फुंकीने पीवे छे. " एक दिवसे पद्माए बहु आग्रहथी कह्युं के-" हे स्वामी ! तमे शामाटे भय राखो छो ? बधा पुत्रो कांइ तेवा थता नथी. शास्त्रमां चार प्रकारना पुत्रो कह्या छे-प्रथम अभिजात जे पिताथी अधिक थाय ते, बीजा अनुजात पिताना तुल्य थाय ते, त्रीजा अपजात पिताथी कांइक न्यून थाय ते अने चोथा कुलांगार कुलमां अंगारारूप थाय ते. तेओमां प्रथम प्रकारना पुत्र श्री आदीश्वर प्रभु विगेरे जेवा, बीजा प्रकारना पुत्र भरतचक्रीना पुत्र सूर्ययशा विगेरे जेवा, त्रीजा प्रकारना पुत्र सगर चक्रवर्त्तीना पुत्र जन्हुकुमार विगेरे जेवा अने चोथा प्रकारना पुत्र कौणिकराजा जेवा समजवा. वळी सर्व वृक्षो कांइ कांटाळा थता नथी, माटे हे स्वामी ! तमे पुनः पाणिग्रहण करो. "

आवां स्त्रीनां युक्तिपूर्वक आग्रहवाळां वचनथी धनदत्ते कोइ धनवंत शेठनी कुमुद्वति नामनी कन्या साथे पाणिग्रहण कर्युं. अनुक्रमे कुमुद्वति सगर्भा थइ. एकदा ' कोइए आवी रातुं कांसानुं कचोळुं लइ लीधुं ' एवुं तेने स्वप्न थयुं. ते वार्त्ता धनदत्तने जणावतां तेणे कह्युं के, ' आपणो पुत्र बीजाने घेर रहेशे. ' अनुक्रमे पुत्र प्रसव्यो. पूर्व पुत्रना भयथी धनदत्ते तेने एक जीर्णोद्यानमां जइने त्यजी दीधो. तेने छोडीने पाछा वळतां आकाशमां देववाणी थइ के " हे श्रेष्ठी ! आ तारा पुत्रनुं तारे एक सहस्र द्रव्यनुं ऋण छे ते आपीने जा. " भय पामेला धनदत्ते तरतज तेटलुं द्रव्य लावीने त्यां मूक्युं. पछी ते बाळकने ते उद्यानना माळीए घेर लइ जइ पुत्र करीने राख्यो. कह्युं छे के, " मनुष्यो जेनी इच्छा करता नथी तेवी वस्तु सहजमां प्राप्त करे छे अने जेनी हमेशां इच्छा करे छे ते कदि पण प्राप्त थती नथी. अहो ! विधातानुं विपरीतपणुं पण केवुं छे ?"

धनदत्त शेठने त्यारपछी पूर्वना जेवाज स्वप्नथी सूचित बीजो पुत्र थयो. धनदत्ते तेने पण पूर्वनी जेम छोडी दीधो. ते समये आकाशवाणी थइ के, 'श्रेष्ठी ! आ कुमारनुं तारे दश हजारनुं करज छे ते मूकीने पछी जा.' तेणे तेवी रीते कर्युं. ते त्याग करेलो पुत्र कोइ धनपति लइ गयो. पछी शुभ स्वप्नथी सूचित त्रीजो पुत्र थयो, स्त्रीए घणुं वार्या छतां पण श्रेष्ठी तेने उद्यानमां तजी देवा गयो. त्यां दिव्य वाणी थइ के, 'अरे श्रेष्ठी ! आनी पासे तारुं कोटानुकोटी द्रव्य लेणुं छे, ते लीधा वगर एने शामाटे छोडी दे छे ?' आवी वाणी सांभळी हर्षित थइने तेने पाछो लावी स्त्रीने अर्पण कर्यो, अने तेनुं महानंद एवुं नाम पाड्युं. महानंदकुमार प्रतिदिन वृद्धि पामतो सतो यौवनने प्राप्त थयो. अनुक्रमे सर्व कळाओनुं पात्र थयो. बाल्यवयमांज तेणे समकितमूळ श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्या. तेमां छट्ठा दिग्विरति व्रतमां चार दिशाए तिरछा सो सो योजननुं परिमाण राख्युं. यौवनवयमां आवतां पिताए तेने एक धनाढ्य श्रेष्ठीनी कन्या परणावी. पछी व्यापार करतां अल्प दिवसमां कोटीगमे द्रव्य तेणे संपादन कर्युं.

दातव्यलभ्यसंबंधो, वज्रबंधोपमो ध्रुवं ।
धनश्रेष्ठीह दृष्टांत–स्त्रिकुपुत्रसुपुत्रयुग् ॥ १ ॥

"आ संसारमां लेणादेणानो जे संबंध छे ते निश्चय वज्रबंधना जेवो छे. तेना उपर त्रण कुपुत्र अने एक सुपुत्रवाळा धनश्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे." महानंदकुमारे सात कोटी द्रव्य सात क्षेत्रमां वापर्युं.

एक वखते कोइ योगी आकाशगामिनी विद्या साधवाने माटे कोइ उत्तरसाधकने शोधतो हतो. तेणे महानंदकुमारने जोइने कह्युं के–'हे पुण्यवान् ! तमे मने सहाय करो के जेथी मारी विद्यानी सिद्धि थाय.' महानंदे ते कबुल कर्युं, अने रात्रे पर्वतना कोइ भागमां योगीनी साथे गयो. त्यां योगीना मंत्रजपना बळथी कोइ देवी प्रगट थइने बोली के, 'हे योगी ! हुं तारा उत्तरसाधकने विद्या आपुं छुं; तारा कर्ममां ते विद्या नथी, अने विधाता पण कर्ममां होय तेथी अधिक आपवाने समर्थ नथी.' कह्युं छे केः—

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मांडभांडोदरे ।
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे ॥
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितो ।
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥१॥

" जेणे आ ब्रह्मांडरूपी भाजन बनाववाने ब्रह्माने कुंभार करेलो छे, विष्णुने दश अवतार लेवाना महा संकटमां नाख्यो छे, अने शिवने खोपरीनुं पात्र लइ भिक्षाटन करावेलुं छे, तेमज जे हमेशां सूर्यने आकाशमां भमावे छे, ते कर्मने नमस्कार छे." आ प्रमाणे कही ते देवी विजळीनी जेम अंतर्धान थइ गइ. महानंदकुमारने तेवी महाविद्या प्राप्त थइ तो पण संवरने धारण करनार साधुनी जेम तेणे ते वात कोइने जणावा दीधी नहीं, अने समुद्रनी जेम पोते करेली दिग्मर्यादानुं उल्लंघन पण कर्युं नहीं. अनुक्रमे महानंदने एक पुत्र थयो.

एक वखते ते बाळकने दुष्ट सर्पे दंश कर्यो. त्यारे धनदत्त श्रेष्ठीए तेने निर्विष करवा माटे आखा शहेरमां पडह वगडाव्यो. ते सांभळी एक विदेशी ब्राह्मणे कह्युं के, 'हे श्रेष्ठी ! अहींथी मारुं नगर एकसो दश योजन दूर छे. त्यां मारी स्त्री घणी विद्यावाळी छे. जो कोइ तेने अहीं लइ आवे तो आ बाळक सद्य सजीवन थाय.' ते सांभळी धनदत्ते महानंदने कह्युं के, 'हे पुत्र! विद्याना बळथी तुं सद्य त्यां जा अने ते स्त्रीने लइ आव.' महानंदे पोताने दिग्विरति व्रतनो जे नियम छे ते कह्यो. धनदत्ते दरेक व्रतमां छ आगार रहेला छे ते समजावीने कह्युं के, 'आ कारणे जवामां तने दोष नथी.' तथापि महानंदे मान्युं नहीं. ते वात सांभळी ते नगरना राजाए आवीने कह्युं के, 'हे महानंद ! आ नाना बाळकने जीवित आपवा जेवो बीजो उत्कृष्ट धर्म कोइ नथी; अने तेवा धर्मकार्यमां अने तीर्थयात्रामां एक हजार योजन जवामां पण गृहस्थने कांइ दोष लागतो नथी.' तथापि महानंदे ते वात कबुल करी नहीं. त्यां रहेला बीजा अनेक लोको कहेवा लाग्या के, 'अरे! आ महानंदनुं हृदय केवुं कठोर छे के आवी बाळहत्याथी पण ते भय पामतो नथी.' महानंदे राजाने प्रणाम करीने कह्युं के, " स्वामी ! आ पुत्र मने प्राणथी पण प्रिय छे, पण तेनाथी पण मने धर्म अधिक प्रिय छे; माटे स्वीकार करेला व्रतने कल्पांते पण हुं छोडीश नहीं." ते सांभळी राजा बोल्यो–' महानंद ! जो तुं धर्मिष्ट होय तो तारुं माहात्म्य सर्वने बताव.' ते समये विद्यादेवीनी वाणी थइ के–' अरे कुमार ! जळनी अंजलिवडे ते बाळकने तुं सिंचन कर.' आ सांभळी महानंदे तेम कर्युं एटले तत्काळ बाळक विषरहित थइ गयो अने लोकोमां जैन धर्मनो घणो महिमा थयो.

एक वखते धनदत्तशेठनी प्रेरणाथी पोताना कुटुंबनो पूर्वभव पूछवाने माटे महानंदकुमार आकाशमार्गे सीमंधरप्रभुनी पासे गयो. त्यां प्रभुने प्रणाम करीने

तेणे पोताना कुटुंबनो पूर्वभव पूछयो. प्रभु बोल्या–" धनपुरनगरमां सुधन नामे श्रेष्ठी हतो. तेने धनश्री नामे स्त्री हती. ते सुधन श्रेष्ठीने धनावह नामे एक बालमित्र हतो. तेओ बंने साथे व्यापार करता हता. सुधन पोताना मित्रनुं धन घरमां वापरतो. तेम वापरतां तेणे सो सोनैया द्रव्य तेनुं बगाड्युं. बीजा कोइ एक वणिकना वीश सोनैया आपवाना हता ते तेणे उतावळथी आप्या नहीं एटले तेनी पासेज रही गया. त्रीजा कोइ वणिके सुधननुं लेणुं आपतां दश सोनैया भ्रांतिथी वधारे आपी दीधा. सुधनना जाणवामां ते वात आवी, पण तेणे लोभथी पाछा आप्या नहीं. आ त्रण शल्यनी तेणे गुरुपासे आलोचना पण करी नहीं. अन्यदा तेणे कोइ साधर्मीने एकसो सोनैया आपीने यावज्जीवित सुखी कर्यो. कह्युं छे के, " मूर्छित थयेला माणसने ते अवसरे जो एक अंजलि जळ आप्युं होय तो ते मरतो बची जाय छे, पण तेना मृत्यु पाम्या पछी सो घडा पाणी रेडे तोपण तेथी कांइ थतुं नथी. "

अनुक्रमे सुधन, धनश्री, तेनो मित्र, पेला बे वणिक अने पेलो साधर्मी ए छए जणा श्रावकधर्म पाळी मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां देव थया. त्यांथी च्यवीने ते स्त्री पुरुष धनदत्त अने कुमुद्वती नामे तारा माता पिता थया अने बाकीना चार तेना पुत्रो थया. तेमां सुधननो जीव ते तारो पिता अने पेला साधार्मिकनो जीव ते तुं थयो छुं. तारा पिताने जे पेलो पुत्र थयो हतो ते धनाववहनो जीव हतो. पूर्वे तारा पिताए पोताना मित्र धनावहनी सो सोनैयानी हानि करी हती तेथी तेणे पुत्र थइने तेनुं सर्वस्व गुमाव्युं. तेणे मनमां धर्मनिंदा करी हती तेथी ते अल्प आयुष्यवाळो थयो. बे वचला पुत्र जे तारा पिताने थया हता, तेमनुं पूर्वभवनुं देवुं हतुं, तेथी ते पचासगणुं ने हजारगणुं आपवुं पड्युं. आ कुमुद्वतीए पूर्वभवमां एक वखते पोताना घरनी महिषी (भेंस) ने बे पाडा अवतर्या हता त्यारे एवुं दुर्ध्यान कर्युं हतुं के, ' जो कोइ आ बे पाडाने हरी जाय तो सारुं.' आवा दुर्ध्यानथी आ भवमां तेने जन्मतांज बे पुत्रनो वियोग थयो. "

आ प्रमाणे श्री सीमंधरप्रभु पासेथी पूर्वभव सांभळी महानंदकुमार घणो आनंद पाम्यो, अने निःसंदेह थइने पोताने घेर आव्यो. त्यां ते सर्व वृत्तांत तेणे मातापिताने जणाव्यो. ते सांभळी तेना मातापिता वैराग्य पामी दीक्षा लइने स्वर्गे गया, महानंदकुमारे पोताना पेला बे सहोदर बंधुने शोधी काढी धर्म पमाड्यो. पछी पोते योग्य समये दीक्षा लइ माहेन्द्रदेवलोकमां देवता थयो. त्यांथी च्यवीने सिद्धिने पामशे.

"आ प्रमाणे भव्य प्राणीओए जेमां दिशाओनो घणो संक्षेप कराय छे तेवा दिग्विरति व्रतने स्वीकारी कष्टमां पण पोतानी बुद्धि निश्चळ राखी धनदत्त शेठना पुत्र महानंदकुमारनी जेम ते व्रतनुं पालन करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ दिग्विरतिव्रतविषये त्रयोदशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ ११३ ॥

व्याख्यान ११४ मुं.

हवे भोगोपभोग नामे बीजुं गुणव्रत कहे छे.

सकृत्सेवोचितो भोगो, ज्ञेयोऽन्नकुसुमादिकः ।
मुहुः सेवोचितस्तूप–भोगः स्वर्णांगनादिकः ॥ १ ॥

व्याख्या.

"एक वखत सेववा योग्य अन्न, पुष्प विगेरे ते भोग कहेवाय अने वारंवार सेववा योग्य अन्न, पुष्प विगेरे ते उपभोग कहेवाय छे." आ भोगोपभोग नामनुं बीजुं व्रत, भोगथी अने कर्मथी बे प्रकारनुं छे. तेमां भोग बे प्रकारनो छे. जे एक वार कोठामां क्षेपन करवा विगेरेथी भोगवाय ते भोग, जेवा के आहार, पुष्प विगेरे अने जे वारंवार शरीरना बाह्य भागथीज भोगवाय ते उपभोग, जेवा के सुवर्ण, स्त्री विगेरे. आ भोगोपभोग व्रत भोगववा योग्य वस्तुओनुं परिमाण करवाथी थाय छे. कह्युं छे के–" जेमां यथाशक्ति भोगोपभोग वस्तुनी संख्या विगेरेनुं परिमाण थाय ते भोगोपभोगमान नामे बीजुं गुणव्रत कहेवाय छे." आ जगतमां भोगोपभोगनी वस्तुओ अपरिमित छे, तेथी श्रावके तेनुं परिमाण करवुं जोइए. मुख्यवृत्तिए उत्सर्गे तो श्रावके अचित्तभोजीज थवुं जोइए. पण जो तेम न बनी शके तो सचित्त विगेरेनुं परिमाण बांधवुं. ते परिमाण बांधवा योग्य वस्तु आ प्रमाणे–सचित्त, द्रव्य, विगइ, उपानह, तांबूल, वस्त्र, पुष्प, वाहन, शय्या, विलेपन, ब्रह्मचर्य, दिशागमन, स्नान, अने भक्तपान–आ चौद प्रकारना नियमो करवाना छे.

जे सजीव ते सचित्त कहेवाय छे. ते सजीव द्रव्य पूर्वाचार्ये कहेली गाथावडे जाणी लेवां. तेमां पिष्ट (लोट) नुं सचित्तपणुं आ प्रमाणे कहेलुं छे–

श्रावण तथा भाद्रपद मासमां पांच दिवस सुधी चाळ्या वगरनो मिश्र रहे छे, आसो अने कार्त्तिक मासमां चार दिवस मिश्र रहे छे, मागशर अने पोष मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे छे, माघ अने फाल्गुन मासमां पांच पहोर मिश्र रहे छे, चैत्र अने वैशाख मासमां चार पहोर सुधी मिश्र रहे छे, अने जेठ तथा अशाड मासमां त्रण प्रहर मिश्र रहे छे. त्यारपछी ते अचित्त थइ जाय छे. पण जो चाळ्यो होय तो एक मुहूर्त्त पछी अचित्त थाय छे. अचित्त थया पछी केटले काळे पाछो बगडे छे, ते विषे कोइ ग्रन्थमां लखेलुं जोवामां आवतुं नथी. पण ज्यां सुधी तेना वर्णादि बदलाय नहीं अथवा एळ विगेरे जीवात पडे नहीं त्यां सुधी ते कल्पे छे. हवे जळने माटे सचित्त अने अचित्तपणुं आ प्रमाणे छे. काचुं पाणी तो सर्वथा सचित्तज छे. जो गृहस्थ हंमेशां तेने त्यजी देवाने अशक्त होय तो तेणे एक अथवा बे घडा विगेरेनुं परिमाण करवुं. पक्व जळ पण अमुक काळ सुधी अचित्त रहे छे. ते विषे लख्युं छे के, "अग्नि उपर त्रण उकाळा आवे त्यारे जळ प्रासुक थाय, तेवुं जळ साधुने कल्पे. पण तेमां एटलुं विशेष के ग्लान विगेरेने माटे त्रण पहोर उपरांत एक मुहूर्त्त सुधी ते राखी शकाय. ते अचित्त जळने मूकवानुं पण जो योग्य स्थान न होय तो ते एक मुहूर्त्तनी अंदर पण सचित्त थइ जाय छे. जो त्रिफला अथवा राख के चुना विगेरेथी प्रासुक कर्युं होय ते त्रण मुहूर्त्त (छ घडी) पछी प्रासुक थाय छे एम श्रीजिनेंद्रप्रभुए कह्युं छे; अने प्रासुक कर्या पछी पाछुं छ घडीए ते सचित्त थाय छे एम रत्नसंचय नामना ग्रंथमां लख्युं छे. वली कह्युं छे के, ग्रीष्मऋतुमां पांच पहोर पछी सचित्तता थाय छे. शीतकाळनी रुतु स्निग्ध छे तेथी शिशिर ऋतुमां चार पहोर पछी जळ सचित्त थाय छे अने वर्षारुतु अति स्निग्ध छे तेथी तेमां प्रासुक जळ त्रण पहोरे सचित्त थइ जाय छे. उपर कहेली मर्यादाथी अधिक काळ सुधी जो राखवुं होय तो तेमां चार चुनो अथवा बकरानी लींडीओ नाखवाथी ते सचित्त थतुं नथी. आ प्रमाणे प्रवचनसारोद्धारना १३६ मां द्वारमां कहेलुं छे तेथी जाणी लेवुं. हवे ते जळ बहारना अग्नि विगेरे शस्त्रना संपर्कथी वर्ण गंध विगेरे बदलाइने अचित्त थाय त्यारे वापरवुं, पण जे स्वभावे करी अचित्त थयुं होय ते वापरवुं नहीं. महाज्ञानीओ पण बाह्य शस्त्रना योगविना अचित्त थयेला जळने ग्रहण करता नथी; कारण के तेम करवाथी व्यवहार-मर्यादा विचारतां घणा दोष लागवानो भय रहे छे. ते उपर एक कथा प्रसंग छे—

एक वखते श्रीवीरप्रभु घणा शिष्यो साथे विहार करता हता, मार्गमां एक

अचित्त सरोवर तेमना जोवामां आव्युं, तेमां त्रस जीव के सेवाळ पण बीलकुल नहोती, तथापि तेमणे पोताना तृषातुर शिष्योने ते जळ पीवानी आज्ञा आपी नहीं; तेवीज रीते एक वखत विहार करतां घणा शिष्यो बहुज क्षुधातुर थया अने देहचिंत्ताथी पीडित थया; ते वखते अचित्त तलनुं भरेलुं गाडुं जोवामां आव्युं. तेमज बाह्य शस्त्र विना थयेल अचित्त स्थंडिल पण दीठी ते छतां ते तल वापरवानी के तेवा स्थंडिल उपर ठल्ले[1] जवानी आज्ञा आपी नहीं. श्रुतज्ञाननुं प्रमाणपणुं बतावबाने माटे. जेथी सामान्य श्रुतज्ञानी पण बाह्य शस्त्रना संपर्क विना जळ विगेरेनुं अचित्तपणुं स्वीकारे नहीं; अने केटलीएक अचित्त वस्तुओ पण निःशुकपणे वापरे नहीं जेमके गळो सूकी होय तो पण ते उपर जळ सिंचन करवाथी ते सचित्त थइ जाय छे. वळी एम सांभळ्युं छे के, उदरमांथी विष्टाद्वारा नीकळेला केटलाक सख्त चीभडाना बीज पाक्या विना नीकळेला होवाथी उगी नीकळे छे; एथी अचेतन वस्तुमां पण यतना करवा योग्य छे.

आ सचित अने आ अचित्त विषेनी स्पष्टता बहुश्रुतना मुखथी निश्चयपूर्वक करीने पछी सातमुं व्रत ग्रहण करवुं. तेमां सचित्तादि सर्व भोग्य वस्तुओना नाम लइ लइनेज एनो नियम करवो. जेम आनंद प्रमुख श्रावके करेल छे तेम. जे सर्वथा सचित्त वस्तुनो त्याग करवा अशक्त होय तेणे प्रतिदिन एक बे इत्यादि संख्याथी नियम करवो. ए प्रकारे जुदी जुदी वस्तु प्रतिदिन फेरबदल करतां सर्व सचित्तनुं ग्रहण पण थइ जाय, अने विशेष विरति न थाय. पण जो नाम साथे अमुक अमुक वस्तु राखीने बाकीनी सचित्त वस्तुनो यावज्जीव नियम कर्यो होय तो तेथी बाकीनी बधी सचित्त वस्तुनो त्याग थइ जवाथी स्पष्ट रीते घणुं फळ थाय. ते विषे पूर्वसूरिनुं वचन छे के "जेओ पुष्प, फळ, रस, मदिरा, मांस अने महिलानो स्वाद जाणतां छतां तेनो त्याग करीने विरति थाय छे तेवा दुष्करकारकने हुं वंदना करुं छुं." सर्व सचित्त वस्तुना त्यागविषे अंबड परिव्राजकना सातसो शिष्योनुं दृष्टांत उववाई (औपपातिक) सूत्रमां तथा भगवतिसूत्रमां कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे—अंबड परिव्राजकना सातसो शिष्योए श्री वीरप्रभु पासे श्रावकना व्रत ग्रहण कर्यां हतां. तेमां सचित्तनो तेमज अदत्तादाननो सर्वथा त्याग करेलो होवाथी तेओ बीजाना आपेला प्रासुक अन्नजळनोज आहार करता हता. एक वखते ग्रीष्मऋतुमां तेओ गंगाने कांठे फरता हता, तेवामां तेमने अति तृषा लागी. तृषाथी अत्यंत

१ वडीनीति--स्थंडिल जवुं ते.

पीडीत थया तो पण तेमणे ग्रहण करेलो दृढ नियम के अमारे कदिपण सचित्त अने अदत्त जळ सर्वथा ग्रहण करवुं नहीं, तेथी तेमणे समीप रहेला गंगाना जळने पण सचित्त तेमज अदत्त धारी ग्रहण कर्युं नहीं; अने ' अहो ! आ अप्-कायजीव अमारा कुटुंबी होवाथी हणवा योग्य नथी ' आवुं चिंतवन करतां तेओ गंगानी रेतीमांज अनशन करी मृत्यु पामीने ब्रह्मदेवलोकमां इंद्रसमान देवता थया.

आ दृष्टांत जाणी श्रावके सचित्त वस्तुनो त्याग करवा प्रयत्न करवो; अथवा प्रत्येक मिश्र वस्तु प्रमुखनुं परिमाण करवुं. ते विषे कह्युं छे के, " जे निर्दोष आहार, अचित्त आहार अने परिमित आहारवडे आत्माने धर्ममार्गे प्रवर्त्तावे छे ते गुणवंत श्रावक कहेवाय छे. " तेथी प्रथम कहेला चौद नियम लीधा सिवाय एक दिवस पण निरर्थक जवा देवो नहीं.

हवे द्रव्यनी व्याख्या कहे छे—सचित्त अने विकृति (विगइ) सिवाय जे वस्तु मुखमां नखाय ते सर्व द्रव्य कहेवाय छे. तेना नाम-खीचडी, रोटली, निवीयातां, मोदक, लापसी, पापड, चूरमुं, करंबो अने क्षीर विगेरे. कोइ द्रव्य घणा धान्यादिकथी निपजेलुं होय पण परिणामांतरने पामी जवाथी ते एकज द्रव्य गणाय छे, अने एकज धान्यमांथी बनेली पूरी, थूली, घुघरी, रोटली, सातपडा, मांडा, मालपुवा, ढोकळा, खाखरा, वडा, दहींथरा विगेरे जुदा जुदा नामवाळा अने जुदा जुदा स्वादवाळा होवाथी ते जुदा जुदा द्रव्य कहेवाय छे. फळ, फुल, फळी विगेरे एक नामवाळा छतां पण जुदा जुदा स्वाद होवाथी तेमज परिणामांतरने पामेला नहीं होवाथी तेनामां बहुद्रव्यपणुं रहेलुं छे; अथवा बहुश्रुतनी आज्ञाथी अन्यथा रीते पण द्रव्यनी संख्या गणवी. रुपाविगेरेनी शलाका तथा हाथना अंगुली विगेरे मुखमां नखाय छे पण ते द्रव्यमां गणाय नहीं.

विगयना दुध, दहीं, घी, तेल, गोळ अने कडाईमां थयेलां सर्व पकान्न एम छ भेद पडे छे. आमांथी दररोज बनी शके तेटलीनो त्याग करवो.

चोथो भेद ' उपानह ' एटले पगरखानी जोड तथा काष्टनी पादुका. तेमां पण काष्टनी पावडीथी घणा जीवनी घात थाय छे, माटे ते त्याग करवा योग्य छे.

पांचमो भेद ' तांबूल ' एटले पान, सोपारी, काथो विगेरे स्वादिष्ट द्रव्य. तेमां पत्र ते नागरवेल विगेरेना समजवा. नागवल्लीपत्र हमेशां जळथी भिंजेला रखाय छे तथा तेमां लील, फुल; कुंथवा तथा इंडा प्रमुख घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय छे अने तेमनी विराधना थाय छे; तेथी पापभीरु पुरुषो तेनो रात्रे

उपयोग करताज नथी. तेम छतां जेओ उपयोग करे छे तेओ दिवसे सारी रीते शोधीने उपयोग करे छे. प्रत्येक सचित्त वस्तुमां एक शरीरे एक जीव होय छे, पण फळादिकमां असंख्य जीवोनी विराधना थवानो संभव छे. ते विषे श्री आचारांग सूत्रना पहेला अध्ययनना बीजा उद्देशानी वृत्तिमां कह्युं छे के, " बादर एकेंद्रियमां ज्यां एक पर्याप्त जीव होय छे त्यां असंख्य अपर्याप्त जीव होय छे, अने सूक्ष्ममां ज्यां एक अपर्याप्त जीव होय छे त्यां नियमथी असंख्य पर्याप्त जीव होय छे. " तेमज श्री प्रज्ञापनासूत्रमां पण कह्युं छे के, " वनस्पतिमां ज्यां एक बादर पर्याप्त जीव होय त्यां तेनी निश्राए प्रत्येक वनस्पतिमां अपर्याप्त जीव संख्याता अथवा असंख्याता होय अने साधारण वनस्पतिमां तो नियमा अनंता जीवो उत्पन्न थाय छे. " एवी रीते नागरवेलना एक पान विगेरेमां असंख्य जीवो हणाय छे अने तदाश्रित लीलफुलना संभवे तो अनंत जीवो हणाय छे, तेथी तेनो अवश्य नियम (त्याग) करवो.

छठ्ठा नियममां ' वस्त्र ' एटले पंचांग वेश-तेमां धोती, पोती के रात्रिए पहेरवानुं वस्त्र विगेरे न गणवुं.

सातमा नियममां ' पुष्प ' जे मस्तके अने कंठे पहेरवाने योग्य छे, तेनो नियम करवो. कदि तेनो त्याग कर्यो होय तो पण ते देवपूजामां कल्पे छे.

आठमो नियम ' वाहन ' एटले रथ, पोठिया तथा सुखपाल विगेरे.

नवमो नियम ' शयन ' एटले खाटला विगेरे.

दशमा नियममां 'विलेपन' एटले देहना भोगने अर्थे चंदन, फुलेल तेल तथा अत्तर विगेरे-तेनो नियम करवो. तेनो नियम छतां पण देवपूजादिकमां ललाटे तिलक करवुं, हाथे कंकण करवुं अने हाथ धुपवा विगेरे कल्पे छे.

अग्यारमा नियममां ' ब्रह्मचर्य ' एटले रात्रि दिवस संबंधी पोतानी विवाहित पत्नी आश्री अब्रह्मसेवननुं प्रमाण बांधवुं-मोकळापणुं टाळवुं.

बारमो नियम ' दिक्परिमाण ' जेनो अर्थ दिग्विरति व्रतमां लखायेल छे. वळी आगळ दशमा व्रतमां लखशुं.

तेरमो नियम ' स्नान ' एटले तेल विगेरे चोळी आखे शरीरे स्नान करवुं ते. तेनुं प्रमाण करवुं.

चौदमो नियम ' भात ' एटले रांधेलुं धान्य, सुखडी विगेरे. तेनुं त्रण शेर, चार शेर विगेरे प्रमाण करवुं, खडबुजा विगेरेनुं ग्रहण करवाथी घणा शेर पण थाय छे.

आ प्रमाणे चौद नियम जेणे पूर्वे स्वीकार कर्या होय तेणे प्रतिदिन संक्षेपवा एटले पूर्वे जावज्जीवसुधीने माटे धारेला होय तेमांथी नित्य यथाशक्ति संक्षेपवा, एटले तेथी ओछा ग्रहण करवा. हमेशां प्रातःकाळे जुदा जुदा स्पष्ट नाम लइने तेनो नियम करवो अने रात्रे तेनो संक्षेप करवो. आ प्रमाणे नियम धारवा विषे कुमारपाळ राजानो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—राजा कुमारपाळ आ सातमा व्रतने विषे चौद नियम प्रतिदिन धारता हता. तेमां ते राजा दिवसे सचित्तमां एक नागरवेलना पानज राखता. तेना पण आठ बीडा राखता हता अने रात्रे तो चतुर्विध आहारना पच्चक्खाण करता हता. वर्षाऋतुमां एक घीनी विकृति (विगइ) ज छुटी, सर्वे जातनी लीलोतरीनो त्याग, तपमां सर्वदा एकासणुं, पारणा अने उत्तरपारणा सिवाय दिवसे ब्रह्मचर्य; सर्व पर्वमां शील पाळवुं अने सचित्त तथा विगइनो त्याग, इत्यादि नियमोमां तत्पर रहेता हता. भोगोपभोगमां जो के निःस्पृह हता तो पण राजधर्मना परवशपणाने लीधे परिमित अने निष्पाप भोगोपभोग आचरता हता. आ प्रमाणे वर्तवाथी तेणे पंदर कर्मादानथी आवती आवकनो निषेध करी तेना लिखित पट्टाने पण फाडी नाख्या हता.

"उपर प्रमाणे भोगोपभोगमां विरक्त अने परद्रव्यमां निःस्पृह एवा परमार्हत कुमारपाळे आ सातमुं व्रत ग्रहण कर्युं हतुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ सप्तमव्रतविषये चतुर्दशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ ११४ ॥

व्याख्यान ११५ मुं.

आ भोगोपभोग व्रतमां बावीश प्रकारना अभक्ष्यनो पण त्याग करवो जोइए; ते बावीश अभक्ष्यमां प्रथम चार महाविकृतिनुं स्वरूप कहे छे.

मद्यं द्विधा समादिष्टं, मांसं त्रिविधमुच्यते ।
क्षौद्रं त्रिधापि त्याज्यं च, मृक्षणं स्याच्चतुर्विधम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" मद्य बे प्रकारनुं कहेलुं छे, मांस त्रण प्रकारनुं कहेवाय छे, मधु त्रण प्रकारनुं छे अने माखण चार जातनुं होय छे—ए सर्व त्याग करवा योग्य छे." आ चारे विकृतिओने अभक्ष्य जाणी विवेकी पुरुषोए त्यजी देवी. कारण के तेमां तत्समान रंग विगेरेथी जोवामां आवी शके नहीं तेवा अनेक जीवोनी उत्पत्ति थया करे छे.

मद्य काष्ट अने पिष्टथी उत्पन्न थतुं होवाथी बे प्रकारनुं छे. सर्व अभक्ष्यमां प्रथम मद्यनुं ग्रहण तेने सर्वथी महा अनर्थना हेतुभूत जाणीने करेलुं छे. ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, " मद्य दुर्गतिनुं मूळ छे अने ते लज्जा, लक्ष्मी, बुद्धि तथा धर्मनो नाश करनारुं छे. " वळी कह्युं छे के-" मद्यपानवडे उन्मत्त थयेलो पुरुष बाळा, युवति, वृद्धा, ब्रह्मणी अने चंडाळी गमे तेवी परस्त्रीने पण भोगवे छे." एक वखत कृष्ण वासुदेवे श्रीनेमिनाथने पूछ्युं के, " स्वामी ! आ मारी नगरीनो विनाश शावडे थशे ? " प्रभु बोल्या-" मदिराथी. " ते सांभळी कृष्णे आखा नगरमांथी मदिराने कढावी नाखी. एक वखते शांब अने प्रद्युम्न बंने दूर वनमां गया, त्यां मदिरा जोइने तेनुं पान कर्युं. पछी मदविह्वल थइ तेमणे द्वैपायन तापसने बांध्यो ने मार्यो. तत्काळ ते तापसे " हुं यादवोनो तथा तेना नगरनो दाहक थाऊं" एवुं नियाणुं कर्युं. ते सांभळी रामकृष्ण तेनी पासे आव्या अने प्रणाम कर्यो. तापस बोल्यो के—' हुं तमारा बे विना बीजा सर्वने हणीश.' रामकृष्णे घणुं समजाव्या पण समज्या नहीं. अनुक्रमे ते मृत्यु पामी अग्निकुमार देव थयो. तरतज ते क्रोधायमान थइने यदुपुरीने दहन करवा आव्यो. ते समये नगरीना लोकोए बार वर्ष सुधी आचाम्ल[1] व्रत कर्युं, तेथी ते तेमनो पराभव करी शक्यो नहीं. अन्यदा कोइ लौकिक पर्वमां लोकोए आचाम्ल कर्युं नहीं, एटले ते छळ पामी तेणे आखुं द्वारकानगर बाळी नाख्युं. राम अने कृष्ण जीवता बहार नीकळ्या. रोहिणी, देवकी अने वसुदेव नगरनी प्रतोळीमां दबाई मृत्यु पामीने स्वर्गे गया. एम संभळाय छे के, "मद्यथी अंध थयेला एवा सांबे सर्व यादवकुलने हणी नाख्युं अने पितानी नगरीने पण बाळी नाखी; अर्थात् तेना कारणभूत थया."

मद्यना त्याग विषे पंचम काळमां उत्पन्न थयेला अंबागणिआ श्रावकनो संबंध छे, [2] ते श्रावकनी जेम मद्यनो त्याग करवो.

१ छए विगयना त्याग सहित एकवार जमवुं ते (आंबिल). २ आ संबंध जाणवामां आव्यो नथी.

मांस त्रण प्रकारनुं छे. जलचर मांस, स्थलचर मांस, अने खेचर मांस- अथवा चर्म, रुधिर अने मांस एवा पण त्रण भेद छे. मांस पण अत्यंत दुष्ट छे. कह्युं छे के,

आमासुअ पक्कासुअ, विपच्चमानासु मंसपेसीसु ।

सययं चिय उववाओ, भणिओ अ णिगोअजीवाणं ॥

"काचा मांसमां, पक्व मांसमां, रंधाता मांसमां अने तेनी पेशीओमां, तेना जेवा वर्णवाळा निगोदीआ (लीलफुल आश्री) अनंत जीवो निरंतर उत्पन्न थाय छे." वळी योगशास्त्रमां पण कह्युं छे के, "क्षणे क्षणे उत्पन्न थता असंख्य संमूर्छिम जीवोनी संततिवडे दुषित एवुं मांस जे नरकना मार्गमां पाथेय समान छे, तेनुं कयो बुद्धिमान् भक्षण करे?" मांसमां अनंता निगादीआ जीव क्षणे क्षणे विसामा वगर पुनः पुनः उत्पन्न थया करे छे. आ प्रमाणे ते श्लोकनी टीकामां कहेलुं छे. वळी लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के, "शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थयेलुं मांस विष्टारूप कहेवाय छे. वळी ते पुरिषमांथी उत्पन्न थाय छे तेथी उत्तम पुरुषे तेनो त्याग करवो." वळी "अग्नि, मधु, विष, शस्त्र, मद्य अने मांस ए छ वस्तु पंडितोए पोते ग्रहण करवी नहीं, तेम कोइने आपवी पण नहीं." स्मार्त्तलोको कहे छे के-

न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ।

प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला ॥१॥

"मांस भक्षण करवामां, मद्य पीवामां अने मैथुन सेववामां कांइ दोष नथी, ए तो प्राणीमात्रनी प्रवृत्ति छे; पण जो तेथी निवृत्ति राखे तो ते मोटुं फळ आपे छे." आ श्लोकनो अर्थ आ प्रमाणे करवो अयोग्य छे; कारण के जे आचरवाथी दोष नथी लागतो, छतां तेथी निवृत्ति करवी ते महा फळ आपे छे. आवो अर्थ देखीतोज अघटित छे; अने तेवो अर्थ करवाथी तो निर्दोष एवा शुभ धर्मथी पण निवृत्ति करवानो प्रसंग आवे, तेथी ए श्लोकनो अर्थ आ प्रमाणे करवो योग्य छे-" मांस भक्षण करवामां अदोषपणुं नथी (मांस भक्षणेऽदोषो न) एवी रीते मद्य पिवामां अने मैथुन सेववामां पण अदोषपणुं नथी, कारण के ते मद्य मांस ने मैथुन प्राणीओनी उत्पत्तिनां स्थान छे, अर्थात् तेमां असंख्याता ने अनंता जीवो उपजे छे. अहीं जीवोनी उत्पत्तिरूप प्रवृत्ति समजवी; तेथी मद्य, मांस ने मैथुनथी निवृत्ति करवी ते महा फळवाळी छे."

वळी मांस अग्नि प्रमुख उपायथी पण अचित्त थतुं नथी; बीजी सर्व वस्तुओ उपायथी प्रासुक थाय छे पण मांस तो कदि पण थतुं नथी. एथीज तेने माटे उपर कहेली गाथामां (आमासुअ) इत्यादि पद छे. वळी मांस सिवाय बीजी वस्तुओ अग्नि विगेरे शस्त्रथी अचित्त थाय छे पण अग्निथी संस्कार कराता मांसमां ते वखते पण निगोदीआ जीवो उत्पन्न थया करे छे. तेथी उपर गाथामां (विपच्चमाणासु) एवुं पद छे. वळी कह्युं छे के, " जे पुरुष सेंकडो कृमिथी आकुळ, परु, रुधिर अने चरबीथी मिश्रित एवा मांसनुं भक्षण करे छे, ते पुरुषने शुद्ध बुद्धिवाळा पुरुषो श्वान जेवोज गणे छे. "

हवे मध त्रण प्रकारनुं छे, माक्षिक (माखीथी थयेलुं), कौतिक (कुत्ताथी थयेलुं) अने भ्रामर (भमरीथी थयेलुं.) आ त्रणे प्रकारनुं मध त्याग करवा योग्य छे. कह्युं छे के, " माखीओना मुखनी लाळथी थयेलुं अने लाखो जंतुओना नाशथी बनेलुं एवुं क्षुद्र मध के जे नरकने आपनारुं छे, तेने बुद्धिमान् पुरुषो शामाटे स्वीकारे ? " पुराणमां पण कह्युं छे के,

सप्तग्रामेषु यत्पाप–मग्निना भस्मसात् कृते ।
तदेतत् जायते पापं, मधुबिंदुप्रभक्षणात् ॥ १ ॥

" सात गाम बाळ्याथी जे पाप लागे तेटलुं एक मधना बिंदुनुं भक्षण करवाथी लागे छे. "

यो ददाति मधु श्राद्धे, मोहितो धर्मलिप्सया ।
स याति नरकं घोरं, खादकैः सह लंपटैः ॥ २ ॥

" जे धर्मनी इच्छाथी मोह पामी श्राद्धमां मध आपे छे, ते तेना खानारा लंपट पुरुषोनी साथे घोर नरकमां जाय छे. " वळी कह्युं छे के, " जे माणस औषधनी इच्छाथी मध खाय छे ते पण थोडा काळमां घणुं उग्र दुःख पामे छे, केमके जीववानी इच्छाए भक्षण करेलुं विष शुं तत्काळ जीवितने शिक्षा नथी करतुं ? अर्थात् करे छे. "

हवे माखण चार प्रकारनुं छे. गायनुं, भेंशनुं, बकरानुं अने गाडरनुं–तेना दोष विषे कह्युं छे के, " जेमां सूक्ष्म शरीरवाळा प्राणीओ निरंतर उपजे छे एवुं माखण तेने सेवनारा प्राणीओने तेना पापथी तत्काळ नरकगति आपे छे." छाशमांथी बहार काढीने राखेला माखणमां एक अंतर्मुहूर्त्तमां घणा सूक्ष्म जीवो उत्पन्न थाय छे तेवा माखणने विवेकी पुरुषो केम भक्षण करे ?

एवी रीते उपर कहेली चार विगइने अभक्ष्य (भक्षण करवाने अयोग्य)

जाणी धर्मज्ञ एवा विवेकी पुरुषोए त्यजी देवी. कारण के तेमां तत्समान वर्ण-वाळा तज्जातीय अनेक सूक्ष्म जीवो उत्पन्न थाय छे के जे आपणी जेवा सामान्य जीवोनी दृष्टिने अगोचर छे; अतींद्रिय ज्ञानीओ तेने जोइ शके छे. कह्युं छे के—

मज्जे महुंमि मंसंमि, नवनीयंमि चउत्थए।
उवज्जंति अणंता, तव्वण्णा तत्थ जंतुणो ॥ १ ॥

" मद्य, मधु, मांस अने माखणमां तेना जेवा वर्णवाळा अनंता जीवो उपजे छे. " अहिं मद्य विगेरेना वर्ण जेवाज वर्णवाळा अनंता निगोदरूप जंतु उत्पन्न थाय छे एम समजवुं. एथी ते चारे विगइ अभक्ष्य छे. आ गाथानो अर्थ करतां कोइक एम विचार करे छे के, " निगोदीआ जीव तो सर्वत्र चौद राजलोकमां अवारितपणे उपजे छे, तेथी जो ते निमित्ते त्याज्य गणशुं तो सर्व वस्तुओनो त्याग करवो जोइशे; माटे एनो अर्थ पूर्वे कर्यो छे तेवो बंधबेसतो नथी; तेनो अर्थ एम संभवे छे के निगोदीआनी जेवा सूक्ष्म एटले रसमां उत्पन्न थता बेइंद्री जीवोनी तेओमां उत्पत्ति जाणवी. आवा कारणथी केटलीक प्रतमां ते गाथाना त्रीजा पादमां (अणंता) ने बदले (असंखा) एवो पण पाठ देखाय छे. वळी मदिरामां रसोत्पन्न जीवनी उत्पत्तिने लीधे असंख्यात जीवपणुं श्रीहैमीनाममाळामां पण कह्युं छे. " रसजामद्यकीटाद्याः " एटले रसथी उत्पन्न थयेला जीव ते मदिरा विगेरेमां उत्पन्न थता जीवो जाणवा. ए वाक्यथी एम सिद्ध थाय छे के, मदिरामां रसथी उत्पन्न थतां बेइंद्रिय जीवो असंख्याता उपजे, अनंता नहीं. वळी तेमणेज श्रीयोगशास्त्रमां कह्युं छे के, " अंतर्मुहूर्त्त पछी तेमां जीवोनी उत्पत्ति थाय छे." आ श्लोकमां जीवनी उत्पत्तिनो काळ प्रतिपादन कर्यो छे, तेथी निगोदीआ जीवोनी उत्पत्ति संभवती नथी; कारणके तेमनी उत्पत्तिनो तो तेमां तेनी पूर्वे पण संभव छे, अने तेने माटे तो कांइ काळनो नियम नथी. आ उपरथी एम जणाय छे के, चार महाविगयमां निगोदना जीववडे अभ-क्ष्यपणुं नथी, पण असंख्य एवा रसोत्पन्न जीववडे छे. आ प्रसंग विचारवा योग्य छे. अत्र प्रसंगोपात ते उपर विचार दर्शाव्या छे.

" उपर बतावेली चार विकृतिओने जे भवी प्राणीओ त्यजे छे, ते श्रीजैन-धर्मना धारक गृहस्थो देवतादिकनी संपत्तिने पामे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
भोगोपभोगव्रतविषये पंचदशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥११५॥

व्याख्यान ११६ मुं.

हवे बाकीना अभक्ष्य कहे छे.

बहुजीवाकुलाभक्ष्यं, भवेदुंबरपंचकम् ।
हिमं विषं तथा त्यज्याः, करकाः सर्वमृत्तिकाः ॥ १ ॥

व्याख्या.

" घणा जीवोथी व्याप्त एवा उदुंबर विगेरे पांच जातिना फळो अभक्ष्य छे, तथा बरफ, विष, करा अने सर्व जातनी मृत्तिकाओ पण अभक्ष्य होवाथी त्याग करवा योग्य छे. " तेनो भावार्थ एवो छे के, उंबरडा विगेरे पांच जातिनां फळ मशलाना जेवी आकृतिवाळा घणा सूक्ष्म जंतुओथी सर्वदा व्याप्त होय छे; तेथी ते अभक्ष्य छे. ते पांच जाति आ प्रमाणे—वडनां फळ, पीपरनां फळ, उंबरडानां फळ, पीपळाना टेटा अने काकोदुंबरनां फळ. ए पांचे जातिना फळोनो त्याग करवो.

हिम एटले बरफ तेमां शुद्ध असंख्यात अप्काय जीवो रहेला छे तेथी ते त्याज्य छे.

विष एटले सोमल, अफीण विगेरे. औषधिप्रयोगे निर्विष करेलुं होय तो पण विषने भक्षण करवाथी उदरमां रहेला गंडोलक विगेरे घणा जीवोनो घात छे तेथी अभक्ष्य छे.

पाणीना करा पण असंख्य अप्काय जीववाळा होवाथी त्याग करवा योग्य छे. अहिं कोइ शंका करे के, ' एवी रीते गणशो तो जळ पण अभक्ष्य थशे. ' ते सत्य छे, पण जळविना जीवननो निर्वाह थतो नथी अने करा विना सुखे निर्वाह थइ शके छे, तेथी तेनो निषेध करेलो छे.

सर्व जातनी मृत्तिकाओ (माटीओ) पेटमां गया पछी पण देडका विगेरे पंचेंद्रिय जीवोनी उत्पत्तिनी हेतुरूप छे. तेमज महारोगादिकने करनारी छे तेथी ते त्याज्य छे. मृत्तिकाविषे सर्वजातनी ए शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे तेथी खडी, गेरु, हरिताळ विगेरे तेना बीजा भेदनो पण त्याग जाणी लेवो. मीठुं पण अग्नि विगेरे शस्त्रोथी प्रासुक थयेलुं होय तोज लेवुं, बीजुं नहीं. तेने अचित्त थवानो बीजो प्रकार पण छे. श्राद्धविधिमां लखे छे के, " कोइ पण सचित्त वस्तु सो योजन उपरांत जवाथी तेने मळता आहारना परमाणुना अभावथी, नवनवा

पात्रमां फरवाथी, पछडावाथी अने पवन तथा धूमाडो लागवाथी अचित्त थाय छे. लवण प्रमुखना सचित्तपणानो विध्वसं थाय छे." वळी हरिताळ, मणशील, पीपर, खजुर, द्राक्ष अने हरडे ए वस्तुमांथी केटलीक वस्तु उपर प्रमाणे सो योजन दूर गया पछी ग्रहण कराय छे अने केटलीएक ग्रहण नथी कराती. तेमां गीतार्थ कहे ते प्रमाण समजवुं. लवणादिक सो योजन गया पछी केवी रीते अचित्त थाय ? ए प्रश्नना जवाबमां एटलुंज कहेवानुं के, ज्यां ते उत्पन्न थयुं होय ते देशने योग्य तेने आहार मळवानो अभाव थवाथी, एक पात्रमांथी बीजा पात्रमां वारंवार फेरववाथी, तेमज वायु, अग्नि [तडको] अने धूमाडो लागवाथी अचित्त थाय छे. कह्युं छे के, शस्त्र त्रण प्रकारनां छे. स्वकायशस्त्र, परकायशस्त्र ने उभयकायशस्त्र. ते आ प्रमाणे–खारुं पाणी ने मीठुं पाणी मेळववाथी बंनेना जीवोनो विनाश थाय ते स्वकायशस्त्र, अग्नि बीजा जीवोने बाळे ते परकायशस्त्र अने जळ अग्नि भेळा थवाथी तेमज काची माटी ने पाणी भेळा थवाथी बंनेनो विनाश थाय ते उभयकायशस्त्र. पीपर, खजुर, द्राक्ष, हरडे विगेरे पण लवणनी जेम सो योजन उपरांत गया पछी अचित्त थवानो संभव छे; पण तेमांथी केटलीक वस्तु परंपराए आदरे छे, अने केटलीक आदरता नथी. एटले के पीपर हरडे प्रमुख वस्तु अचित्त गणीने वपराय छे अने खजुर द्राक्ष विगेरे वपराती नथी. तेज प्रमाणे लवण पण जो अग्निथी प्रासुक थयुं होय तो ज वापरवुं, अपक्व होय तो वापरवुं नहीं; कारणके ते मृत्तिकारूप होवाथी अभक्ष्य छे.

हवे चौदमुं रात्रिभोजन नामनुं अभक्ष्य कहे छे.

चतुर्विधं त्रियामाया–मशनं स्यादभक्ष्यकम् ।
यावज्जीव तत्प्रत्याख्या, धर्मेच्छुभिरुपासकैः ॥ १ ॥

व्याख्या.

" रात्रे चारे प्रकारनुं अशन अभक्ष्य छे, तेथी धर्मनी इच्छावाळा उपासको (श्रावको) ए यावज्जीवसुधी तेना पच्चक्खाण करवा." चार प्रकारनुं एटले अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य ते चारे प्रकारनुं भोजन रात्रे अभक्ष्य छे. कारणके ते समये तेमां घणा जीवो उद्भवे छे. ते विषे श्रावकदिनकृत्यमां कह्युं छे के,

तज्जोणिअ जीवाणं, तहा संपाइमाणयं ।
निसिभत्ते वहो दीट्ठो, सव्वदंसीहिं सव्वहा ॥ १ ॥

" चारे प्रकारना आहाररूप योनिथी उत्पन्न थता तेमज उपरथी पडता अनेक त्रस जीवोनो सर्वथा प्रकारे सर्वज्ञोए रात्रीभोजनमां विनाश दीठेलो छे. "

साथवा विगेरे रांधेला पदार्थमां निगोदनी जेम उरणीकादि जीव उपजे छे, तेथी तेओ ते योनिवाळा कहेवाय छे. वळी संपातिम एटले उपरथी आवीने पडता पतंगीआ, फुदां, कुंथुवा, कीडी विगेरेनो पण रात्रे वध थतो सर्वज्ञ पुरुषोए जोयेलो छे. शीतयोनिवाळा त्रसजीवो भूमि, वस्त्र अने आहारादिमां रात्रे उत्पन्न थाय छे, तेथी रात्रे असंख्य जीवोनो घात कहेलो छे. वळी आकाशमार्गे एटले अगासीमां तो दिवसना आठमा भागथी अप्काय जीवोनी वृष्टि थाय छे ते प्रभाते चार घडी दिवस चडे त्यांसुधी रहे छे, तेथी जो आकाशस्थळे बेसीने भोजन करे तो अनंत जीवोनो पण घात थाय छे. कारणके "जथ्थ जलं तथ्थ वणं " ज्यां जळ त्यां वनस्पति होयज-एम सिद्धांतमां कह्युं छे अने वनस्पति अनंत जीवात्मक पण होय छे.

वळी रात्रिभोजन करवाथी आलोक आश्री पण घणा प्रकारनी हानिनो संभव छे. भोजनमां कीडी आवी जाय तो बुद्धिने हणे छे, मक्षिका आवे तो वमन थाय, जु आवे तो जलोदर थाय अने करोळीओ आवे तो कुष्ट रोग थाय छे. वळी रात्रे पात्र धोतां अने एठुं नाखतां कुंथुवा विगेरे घणा जीवो हणाय छे-इत्यादि रजनीभोजनना दोष कहेवाने कोण समर्थ छे ? रात्रिभोजनना दोष घणा छे, अने ते कहेवानुं आयुष्य थोडुं छे, तथापि संक्षेपमां तेना दोष कहुं छुं—

कोइ एक जीव छन्नु भव सुधी जीवहिंसा करे तेटलुं पाप एक सरोवरने शोषवाथी लागे छे, एकसो आठ भव सुधी तेवा सरोवरने शोषनारने जे पाप लागे तेटलुं पाप एकवार दावानळ लगाडनारने लागे छे, एकसो एक भव सुधी दव आपनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एक कुव्यापार करनारने लागे छे, एकसो चुंमाळीस भव सुधी कुव्यापार करवावडे जेटलुं पाप लागे तेटलुं एक कुकर्मीने लागे छे. एकसो चुंमाळीस भव सुधी कुकर्मीने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एकवार खोटुं आळ आपनारने लागे छे, एकसो एकावन भव सुधी खोटुं आळ आपनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एकवार परस्त्रीगमन करनारने लागे छे, नवाणुं भव सुधी परस्त्रीगमन करनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एकवार रात्रिभोजन करनारने लागे छे. आ प्रमाणे रत्नसंचय नामना ग्रंथमां कह्युं छे. तेनुं तत्त्व तो बहुश्रुत जाणे छे.

वळी कह्युं छे के, " जे बुद्धिमान पुरुषो सर्वथा रात्रे आहार वर्जे छे, तेमने एक मासे पक्षोपवासनुं फळ थाय छे. " ते माटे श्रावकोए यावज्जीव सुधी रात्रिभोजननो त्याग करवो. दररोज रात्रे चतुर्विध आहारना पच्चख्खाण करवा. जो चारे आहार त्यजवानी शक्ति न होय तो अशन तथा स्वादिम तो अवश्य त्यजवा; अने स्वादिम ते सोपारी विगेरे दिवसे सारी रीते शोधी राखी रात्रे ग्रहण करवा; नहीं तो तेमां त्रस जीवोनी हिंसानो पण दोष लागे छे. मुख्य रीते तो प्रातःकाळे अने सायंकाळे रात्रिनी नजीकनी बे बे घडी आहारनो त्याग करवो. कह्युं छे के, " रात्रिभोजनना दोषने जाणनार जे प्राणी दिवसना मुखमां अने अवसानमां बे बे घडी छोडीने भोजन करे छे, ते पुण्यनुं भाजन थाय छे. " वळी " रात्रिभोजन करवाथी घुवड, काक, मार्जार, गीध, साबर, सुवर, सर्प, वींछी अने घोनो अवतार आवे छे. " आ प्रमाणे रात्रिभोजननुं पारलौकिक फळ छे.

रात्रिभोजन विषे रामायणमां पण दोष जणाव्यो छे. ते संबंध एवो छे के, लक्ष्मण अने सीता सहित रामचंद्र वनवासमां गया हता, ते प्रसंगमां एक दिवस कुबेर नगरनी बहार एक वडना वृक्ष नीचे रात्रिवासो रह्या हता. ते नगरना राजा महीधरने वनमाळा नामे एक पुत्री हती. ते लक्ष्मणनी उपर प्रथमथी रागी थयेली हती. ते लक्ष्मणनो वनवास सांभळी खेदयुक्त थइ सती दैवयोगे तेज वनमां तेज रात्रे गळे फांसो खावा आवी. आ देखाव रात्रे जागृत रहेला लक्ष्मणना जोवामां आव्यो. लक्ष्मणे तेनी पासे जइने पूछ्युं, एटले तेणीए जे सत्य हतुं ते कही आप्युं. तत्काळ लक्ष्मणे पाश छेदी नाखीने तेनुं पाणिग्रहण कर्युं. वनमाळा के जे शुभ लक्षणवाळी सुचरिता हती, तेणे पोतानी प्रतिज्ञा प्रमाणे लक्ष्मणने योग्य वर जाणी पोतानो स्वामी कर्यो. पछी लक्ष्मणे तेणीने जणाव्युं के, ' हमणां तमे पिताने घेर रहो, ज्यारे हुं वनवास पूर्ण करी पाछो वळीश त्यारे तमने साथे लइ जइश. ' तथापि ते रागी रमणीए मान्युं नहीं. पछी लक्ष्मणे स्त्री, गाय, बालहत्या विगेरे सोगन लीधा; तो पण तेणीए मान्युं नहीं. त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के ' जे तमे कहो ते सोगन हुं लउं. ' वनमाळा बोली के—' आ जगतमां रात्रीभोजन करनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप जो हुं पाछो न आवुं तो मने लागे ' आवा जो सोगन ल्यो तो हुं सत्य मानुं. लक्ष्मणे तेवा सोगन लीधा; एटले तेणीए लक्ष्मणने मुक्त कर्या.

उपरना दृष्टांतमां वनमाळाए स्त्री, गाय अने बाळहत्या करतां पण रात्रिभोजननुं पाप बहु मोटुं मानीने लक्ष्मणने तेवा सोगन आप्या हता, तेथी रात्रिभोजननुं पाप घणुं उग्र छे एम सिद्ध थाय छे; माटे सर्व भवी प्राणीओए अवश्य ते नियम ग्रहण करवो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ रात्रिभोजनविषये षोडशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥११६॥

व्याख्यान ११७ मुं.

रात्रिभोजनरूप अभक्ष्य दुस्त्याज्य छे एवुं धारी पुनः तेनो प्रतिबोध करवा माटे विवेचन करे छे.

स्वपरसमये गर्ह्यं, आद्यं स्वभ्रस्य गोपुरम् ।
सर्वज्ञैरपि यत्त्यक्तं, पापाढ्यं रात्रिभोजनम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

"स्व अने पर शास्त्रमां निंदवा योग्य, नरकना प्रथम द्वाररूप अने सर्वज्ञोए त्यजेलुं रात्रिभोजन पापरूप छे." आ श्लोकमां स्व अने पर शास्त्रमां निंदित करेलुं एम कह्युं छे ते विषे स्वशास्त्रमां लखे छे के-'प्रासुक आहार होय अने महा ज्ञानी पुरुषो कुंथुवा विगेरे सूक्ष्म जीवोने पण जोइ शके तेम होय ते छतां तेओ पण रात्रिभोजनने टाळे छे. कदि दीपक विगेरेना साधनथी कीडी विगेरे स्थूल जीवो देखी शकाय पण सूक्ष्म जीवनी दया नहीं पळावाथी मूळ व्रतनी विराधना थाय, माटे रात्रिभोजन निषेध्युं छे.' ते विषे परशास्त्रमां पण लखे छे के—

मृते स्वजनमात्रेऽपि, सूतकं जायते किल ।
अस्तंगते दिवानाथे, भोजनं क्रियते किमु? ॥ १ ॥

"मात्र स्वजन मृत्यु पामवाथी पण जो सूतक लागे छे तो सूर्य अस्त पामतां भोजन करवुं केम घटे ?"

मद्यमांसाशनं रात्रौ, भोजनं कंदभक्षणं ।
ये कुर्वंति वृथा तेषां, तीर्थयात्रा जपस्तपः ॥ २ ॥

" जे मद्य पीवे, मांस खाय, रात्रिभोजन करे, अने कंदनुं भक्षण करे तेओनी तीर्थयात्रा, जप अने तप सर्व वृथा थाय छे. " तेमज तेनुं करेलुं एकादशीनुं व्रत रात्रीजागरण, पुष्करतर्थिनी यात्रा, अने चांद्रायण व्रत पण वृथा थाय छे एम पद्मपुराणमां कह्युं छे. वळी भारतना अढारमा पर्वमां लखेछे के, ' हे युधिष्ठिर ! तपस्वीए तो विशेषे करीने रात्रे जळ पण पीवुं नहीं अने विवेकी गृहस्थे पण पीवुं नहीं. ' महाभारतमां कह्युं छे के, " रात्रे जळ रुधिर समान अने अन्न मांस समान थाय छे, तेथी रात्रिभोजन करनार रुधिर अने मांसनुं भक्षण करे छे. "

वळी अन्य शास्त्रमां लखे छे के, " रात्रे आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवार्चन अने दान करवां नहीं अने भोजन तो विशेषपणे नहीं करवुं. "

वळी प्रथम श्लोकमां रात्रिभोजन नरकनुं आद्य द्वार छे. एम कह्युं छे ते विषे पद्मपुराणना प्रभासखंडमां लखे छे के,

चत्वारो नरकद्वारा, प्रथमं रात्रीभोजनं ।
परस्त्रीगमनं चैव, संधानानंतकायिके ॥ १ ॥

" चार नरकना द्वार छे, तेमां प्रथम द्वार रात्रिभोजन, बीजुं परस्त्रीगमन, त्रीजुं द्वार बोळ अथाणुं अने चोथुं द्वार अनंतकाय (कंदमूळ नुं भक्षण छे. " वळी आयुर्वेदमां कह्युं छे के, " ज्यारे सूर्य अस्त पामे छे त्यारे हृदयकमळ तथा नाभिकमळ संकोच पामे छे, एथी रात्रे भोजन करवुं नहीं. तेमज तेम करवाथी सूक्ष्म जीवनुं भक्षण थइ जाय छे ते कारणथी पण करवुं नहीं. " स्कंदपुराणमां रुद्रे रचेला सूर्यनी स्तुतिरूप कपाळमोचन स्तोत्रने विषे लखे छे के,

एकभक्ताशनान्नित्यं, अग्निहोत्रफलं लभेत् ।
अनस्तभोजनान्नित्यं, तीर्थयात्राफलं लभेत् ॥ १ ॥

" हमेश एक वार भोजन करवाथी अग्निहोत्रनुं फळ मळे छे अने जेओ सूर्यास्त पछी भोजन करता नथी तेओने नित्ययात्रानुं फळ मळे छे. "

इत्यादि अनेक शास्त्रवचनोथी रात्रिभोजन पापात्मक छे, तेथी सर्व द्रव्यने जोनारा श्री सर्वज्ञपुरुषोए तेने त्यजी दीधेलुं छे, कारण के, तेओ सर्वज्ञ होवाथी

रात्रीसमये भोजनमां उत्पन्न थता सूक्ष्म जीवोनो वध निवारवाने असमर्थ हता, अर्थात् तेवा अंतर्दृष्टिवाळा सर्वज्ञोए पण निषिद्ध कर्युं छे. तो बाह्यदृष्टिवाळा आपणे तो विशेषपणे त्याग करवा योग्य छे-ए तात्पर्य छे. आ व्रत उपर त्रण मित्रनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

कोइ गाममां एक श्रावक, बीजो भद्रिक अने त्रीजो मिथ्यात्वी-एम त्रण वणिक मित्रो रहेता हता. एक वखते तेओए कोइ गुरु पासे आ प्रमाणे धर्म सांभळ्यो-" रात्रे जळ पीवा करतां स्वादिम खावामां बमणुं पाप लागे छे, स्वादिमथी खादिममां त्रणगणु पाप लागे छे अने खादिमथकी अशनमां त्रणगणुं लागे छे." वळी " रात्रे अंधकारमां सूक्ष्म जीवो दृष्टिए पडता नथी, तेथी जे रात्रे बनाव्युं ते दिवसे खाय तो पण तेने रात्रिभोजन सरखुं समजवुं." एम रत्नसंचय नामना ग्रंथमां लखेलुं छे. आ प्रमाणे छतां जे अज्ञानी प्राणीओ कदाग्रहथी रात्रिभोजनने वर्जता नथी तेओ एडकाक्ष तथा मरुकनी जेम बहु दुःख पामे छे. ते एडकाक्षनो संबंध आ प्रमाणे छे—

एडकाक्षनी कथा.

दशार्णपुरमां धनश्री नामे एक श्रावकनी पुत्री हती, तेनो धनदेव नामे पति हतो. धनश्रीए मांडमांड समजावी एक दिवस धनदेवने रात्रिए दिवसचरिमनुं प्रत्याख्यान कराव्युं. तेज रात्रिए कोइ व्यंतरदेवी धनदेवनी परीक्षा करवाने माटे तेनी ब्हेननुं रूप लइ भोजन आपवा आवी. धनश्रीए घणो वार्यो तो पण धनदेव भोजन करवा बेठो. तत्काळ देवीए लपडाक मारीने तेना लोचन बहार काढी नाख्या. पछी तेनी पत्नी धनश्रीए कायोत्सर्ग करीने कोइ देवीने आराधी, एटले ते देवीए आवीने कोइए तरतमां मारेला घेटाना नेत्र लावी तेने लगाडी दीधा, तेथी ते देखतो थयो; अने त्यारथी एडकाक्ष नामथी प्रसिद्ध थयो.

मरुकनी कथा श्राद्धदिनकृत्यबृहद्वृत्तिथी जाणी लेवी.

आ प्रमाणे रात्रिभोजन संबंधी देशना सांभळी पेला श्रावकमित्रे तो कुलाचारने लीधे घणा नियमो ग्रहण कर्या. बीजा भद्रिकमित्रे बहु विचारीने एक प्रस्तुत नियम ग्रहण कर्यो अने जे मिथ्यात्वी हतो ते तो जरापण प्रतिबोध पाम्यो नहीं. पेला बंने मित्रनुं कुटुंब पण अनुक्रमे ते नियममां तत्पर थयुं. हवे जे श्रावक हतो ते क्रमेक्रमे शिथिल थतो गयो. कोइ कोइवार तजवा योग्य एवी दिवसनी आद्यनी तथा अंतनी बे बे घडीमां पण खावा लाग्यो अने छेवटे रात्रे

पण भोजन करवा लाग्यो. एक वखते ते श्रावक अने भद्रिक बंने कोइ राजकार्यमां जोडाया. सवारे जम्या विना गयेला ते सायंकाळे घेर आवतां भोजननुं असुर थइ गयुं. सूर्य अस्त पाम्यो. पछी तेमना संबंधी अने मित्रोए घणो आग्रह कर्यो तो पण भद्रिके भोजन कर्युं नहीं; अने पेलो श्रावक 'हजु क्यां पूरेपूरी रात्री पडी छे' एम बोलतो अंधकारमां पण निःशूकपणे भोजन करवा बेठो. शास्त्रमां कह्युं छे के—

रयणीभोजने जे दोषा, ते दोषा अंधयारंमि ।
जे दोषा अंधयारंमि, ते दोषा संकडंमि मुहे ॥ १ ॥

"रात्रिभोजनमां जे दोष छे ते दोष अंधकारमां जमवाथी लागे छे अने अंधकारमां भोजन करवाथी जे दोष लागे छे ते दोष सांकडा मुखवाळा पात्रवडे जमवाथी लागे छे." आ प्रमाणे कह्युं छे. तो पछी रात्रीए अंधकारमां जमतां महान् दोष लागे तेमां तो शुं कहेवुं ?

हवे पेलो श्रावक भोजन करवा बेठो तेना भोजनमां तेना मस्तकमांथी जु पडी, तेनुं भक्षण करवाथी तेने जलोदरनो व्याधि थयो, जेथी ते पंचत्व पामी गयो. त्यांथी ते मार्जार[1] योनिमां आव्यो. ते भवमां अशुभ ध्यानवडे मृत्यु पामी पहेली नरके गयो. पेलो मिथ्यात्वी पण रात्रे सर्पना विषवाळा अन्नने जमवाथी मृत्यु पामी मार्जार थयो अने त्यांथी पहेली नरकमां उत्पन्न थयो.

भद्रिकनो जीव मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां देवता थयो. जे श्रावकनो जीव हतो ते पहेली नारकीमांथी नीकळी एक निर्धन ब्राह्मणने घेर श्रीपुंज नामे पुत्र थयो; अने जे मिथ्यादृष्टि हतो, ते पण नारकीमांथी नीकळी तेनोज अनुज बंधु थयो. अहिं भद्रिकना जीवे अवधिज्ञानवडे तेनी उत्पत्ति जाणी त्यां आवी नियमभंगनुं फळ जणावीने तेमने प्रतिबोध आप्यो. ते उपरथी ते बंनेए सर्व अभक्ष्यना नियमो ग्रहण कर्या. ते बंनेना मातापिता ब्राह्मण अने मिथ्यात्वी होवाथी तेमणे तेमना कदाग्रहनो निग्रह करवाने माटे सर्वथा भोजन निषिद्ध कर्युं. बंनेने उपराउपरी त्रण लंघन थइ. त्रीजी रात्रे पेला सौधर्मदेवे ते नगरना राजाना उदरमां पीडा उत्पन्न करी. ते अनेक उपायोथी शांत थइ नहीं त्यारे ते देवे जणाव्युं के, 'रात्रिभोजनना नियमवाळा श्रीपुंजना हस्तस्पर्शथी राजानी पीडा शांत थशे.' तत्काळ मंत्रीओए श्रीपुंजने त्यां बोलाव्यो; एटले ते उंचे

---

१ बीलाडो थयो.

स्वरे बोल्यो के, 'जो मारुं व्रत सत्य होय तो आ राजानी पीडा शांत थाओ.' आ प्रमाणे कही तेणे राजाना शरीरने करथी स्पर्श कर्यो, एटले तत्काळ राजा व्यथा रहित थयो. राजाए प्रसन्न थइने तेने पांचसो गामनुं आधिपत्य आप्युं. श्रीपुंजे सर्वस्थळे पोताना नियमनो महिमा फेलाव्यो. अनुक्रमे आयु पूर्ण करीने श्रीपुंज अनुजबंधु साथे सौधर्म देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी च्यवी अनुक्रमे ते त्रणे सिद्धिपदने पामशे.

व्रतात्तमात्रान्नहि धर्मपूर्णता, निमित्तमुख्यं परिणामसंगतं ।
सभद्रकोपासकयोः प्रबंधतः, विचार्य तत्त्वं निशिभोजनं त्यज ॥१॥

" मात्र व्रत लेवाथी कांइ धर्मनी पूर्णता थती नथी, पण तेमां दृढता साथे शुभ परिणाम राखवा ते मुख्य छे. आ हकीकत उपर भद्रक अने श्रावक ए बे मित्रनो प्रबंध छे ते उपरथी तत्त्वने विचारीने रात्रिभोजननो त्याग करो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्यवृत्तौ
रात्रिभोजनाविषये सप्तदशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ ११७ ॥

व्याख्यान ११८ मुं.

हवे बाकीना अभक्ष्य विषे कहे छे.

अनंतकायसंधाने, बहुबीजं च भक्ष्यकम् ।
आमगोरसमिश्रं च, द्विदलं सूक्ष्मसत्वजम् ॥ १ ॥
तुच्छफलं च वृंत्ताकं, रसेन चलितं तथा ।
अज्ञातफलमेतानि, ह्यभक्ष्याणि द्विविंशतिः ॥ २ ॥

व्याख्या.

" १५ अनंतकाय, १६ बोळ अथाणा, १७ बहुबीजवाळां फळ, १८ काचा गोरसे मिश्र एवा द्विदळ के जेमां सूक्ष्म जंतु उपजे छे, १९ तुच्छफळ, २०- वृंताक, २१ चलित रसवाळी वस्तुओ अने २२ अजाण्या फळ—ए प्रमाणे बावीश अभक्ष्य जाणवा.

अनंतकाय एटले साधारण वनस्पति, तेनुं भक्षण अनंत जीवनो घात थवामां हेतुरूप छे, तेथी ते अभक्ष्य छे तेनुं स्वरूप आगळ कहेवाशे.

संधान एटले लींबु, आंबली, बीली विगेरेनुं बोळ अथाणुं. ते अनेक जीवोनी उत्पत्तिनुं निमित्त छे, तेमज लवणवाळां शाक राइ साथे मिश्र करेलां त्रण दिवसथी वधारे रहे तो अभक्ष्य थाय छे एवो व्यवहार प्रवर्त्ते छे; परंतु खारमां नाखेला लींबु विगेरेनो गंध रस विगेरे बदलाय तो त्रण दिवस तडके राखेला पण अनाचिर्ण थाय एम वृद्धो कहे छे.

बहुबीज एटले पंपोटा, अंजीर विगेरे. दाडम विगेरे फळोनी जेम अंतरपड वगरना केवळ बीजवाळा फळो, तेओमां प्रत्येक बीजे जीवनो घात थाय छे. अने जे फळ बहुबीजवाळुं होय पण अंदर पड होय जेवा के दाडिम टिंडोरा विगेरे ते अभक्ष्य नथी.

आम गोरस, एटले उना कर्या विनाना दुध, दहीं ने छाश—तेमां जो द्विदल मिश्र थाय तो तेमां केवळीगम्य सूक्ष्म जंतुओ उपजे छे. शास्त्रमां द्विदलनुं लक्षण आ प्रमाणे कह्युं छे—"जेने पीलवाथी तेल नीकले नहीं अने पीलतां बे दळ (दाळ) जुदा पडे ते द्विदळ कहेवाय छे, एरंडी राइ विगेरेने पीलवाथी बे दळ थाय छे पण तेमांथी तेल नीकळे छे माटे ते द्विदळ न कहेवाय." आवां कठोळनी साथे टाढां दुध, दहीं के छाश खावां नहीं, ते विषे परशास्त्रमां पण लखे छे के—

गोरसं माषमध्ये तु, मुद्गादिसु तथैव च ।
भक्षमाणं भवेन्नुनं, मांसतुल्यं च सर्वदा ॥ १ ॥

"अडद अने मग विगेरे कठोळमां गोरस भेळवीने भक्षण करे तो ते मांसतुल्य थाय छे." तेथी घोळवडां एटले काचा दहींमां नाखेला वडां अभक्ष्य छे. पण जो प्रथम काची छाश के दहींने गरम करीने पछी तेमां द्विदळ निष्पन्न पदार्थ नाखे तो ते दोषयुक्त नथी, एम वृद्धो पासेथी सांभळ्युं छे. आ वातने केटलाएक ढुंढियादिक मानता नथी पण ते तेमनो दुराग्रह छे. विचारसंसक्त निर्युक्तिमां कह्युं छे के, 'जो बिया जातना वृक्षनी यष्टि अने अंकोल वृक्षनी घाणी करावीने तेमां सेलडी पीले तो तत्काळ संमूर्छिम माछलांओ उत्पन्न थाय छे.' तेवी रीते अहीं पण जाणवुं. वळी कह्युं छे के "मग तथा अडद विगेरे द्विदळ काचा गोरसमां पडतां तत्काळ त्रस जीव उत्पन्न थाय छे, तेमज बे दिवस उपरांतना दहींमां पण त्रस जीव उपजे छे." कोइ ठेकाणे 'तिदिणुवरिं' एटले त्रण दिवस पछी एवो पाठ छे, ते योग्य लागतो

नथी. कारण के बे दिवस व्यतित थयेलुं दहीं अभक्ष्य छे. एम श्री योगशास्त्रमां कह्युं छे. आटला उपरथी काचा गोरस साथे द्विदळ मिश्र थवाथी तेमां अनेक सूक्ष्म जीव उपजे छे एम सिद्ध थाय छे, तेथी ते अभक्ष्य जाणवुं. ए प्रथम श्लोकनो अर्थ थयो.

हवे तुच्छ फल एटले महुडां, लींबुं, बोर, कोठां विगेरे. उपलक्षणथी तुच्छ पुष्प तथा पत्रनुं पण ग्रहण करवुं. अहिं पुष्प ते केरडा विगेरेना लेवा अने पत्र ते वर्षाकाळमां थती तांदळजा विगेरेनी भाजी लेवी; तथा कोमळ मगचोळानी सींगो पण ग्रहण करवी, कारण के तेमां घणा जीवो हणाय छे अने तृप्ति थती नथी.

हवे वृंताक के जे कामोद्दीपक अने निद्रावर्धक होवाथी दूषित छे, ते विषे लौकिकशास्त्रमां पण लखे छे के-" शिव पार्वतीने कहे छे, हे प्रिये ! वृंताक, कालींगडा अने मूळा विगेरेनुं भक्षण करनार मूढ पुरुष अंतकाळे मने संभारशे नहीं. " वळी "शास्त्रने जाणनार पुरुषे वृंताक, धोळा वृंताक, मूळा अने राता मूळा वर्जवा एम मनुए कहेलुं छे. " आ प्रमाणे भारतना शांतिपर्वना प्रथम पादमां लखे छे.

वळी रसथी चलित एटले बेस्वाद थयेलां वासी, द्विदल, पुल्ला, वडां अने रांधेला कुर विगेरे. ते सिवाय बीजुं पण कोहेलुं सर्व अन्न त्यजी देवुं, कारणके ते बहु जीव संसक्त थइ जाय छे. वळी कह्युं छे के, "तेवां अन्ननो संचय करवाथी मिथ्यात्व वधे छे, वापरवाथी विराधना थाय छे अने तेमां उंदर विगेरे घणी जातना संमुर्च्छिम जीवो उपजे छे इत्यादि घणां दोष थाय छे. " एनो भावार्थ एवो छे के, तेवुं अन्न जो रात्रे वासी राख्युं होय तो ते जोइने बीजा मिथ्यात्व पामे छे अने केटलाक निंदा करे छे के, " जुओ आ श्रावक ! केवो संचय करनारा छे ! " वळी तेवी रीते वासी राखवाथी संयमनी पण विराधना थाय छे, तेमज तेवा साथवा विगेरेने राखी मूकवाथी करोळीआनी जाळ तथा बीजा सूक्ष्म प्राणीओनी जाति तेमां उपजे छे. पोळी, मालपुवा विगेरे वासी राखवाथी तेमां ळाळीआ जीव उत्पन्न थाय छे. तेवा आहारनी अभिलाषा करवा उंदर आवे छे, अने तेना करडवानो अवाज सांभळी मार्जार विगेरे त्यां आवी तेनुं भक्षण करी जाय छे. इत्यादि घणां दोष प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे श्रीबृहत्कल्पनी टीकामां कहेलुं छे. ळाळीआ जीव द्वींद्रिय जातिना छे एम वृद्ध संप्रदाय छे. केटलाएक ढुंढकादि आ चळीतरसने अभक्ष्य मानता नथी ते अयुक्त छे. कारण

के रोटली विगेरेमां ते प्रत्यक्ष जणाय छे. उपलक्षणथी कालातिक्रम थयेला पक्वान्नने पण चलितरसमां गणवुं. ते विषे एम लख्युं छे के, "जे दिवस पक्वान्न कर्युं होय त्यारथी वर्षाकाळमां पंदर दिवस सुधी कल्पे, शीतकाळमां एक मास सुधी कल्पे अने उष्णऋतुमां वीश दिवस सुधी कल्पे. मुनि त्यां सुधी ते ग्रहण करे." केटलाएक एम कहे छे के, ज्यांसुधी वर्ण, गंध, रसादि बगड्युं न होय त्यांसुधी कल्पे छे. वळी आद्रा नक्षत्रथी आंबानो रस, अने बे दिवस पछीनुं दहीं अने छाश पण सेववा योग्य नथी. आ प्रमाणे भक्ष्याभक्ष्यनो विचार संप्रदायथी जाणी लेवो.

वळी अजाण्युं एटले जेनी जाति के नाम जाणवामां न होय तेवां फळ, पत्र, पुष्प अने मूळनो त्याग करवो. ते विषे ब्रह्मांडपुराणमां लखे छे के, 'अभक्ष्यनुं भक्षण करवाथी कंठरोग विगेरे थाय छे.' शांतातप ऋषिना रचेला शास्त्रमां पण कह्युं छे के, 'अभक्ष्यनुं भक्षण करवाथी हृदयमां कृमि उत्पन्न थाय छे.'

उपर प्रमाणे सर्व मळीने बावीश प्रकारना अभक्ष्य छे. ए बीजा श्लोकनो अर्थ कह्यो.

"उपर कहेला सर्व अभक्ष्य पापरूप छे, तेथी श्रीजिनेंद्रना आगमना मर्मने जाणनारा व्रतधारी गृहस्थोए इंद्रियोने वश करीने ते सर्वदा सेववा नहीं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
अभक्ष्यविषये अष्टादशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥११८॥

व्याख्यान ११९ मुं.

चलित रस एटले वासी अन्न विगेरे अभक्ष्य कह्युं छे, पण तेनो बाळगोपाळ विगेरे सर्वथी त्याग थवो अशक्य छे माटे पुनः तेनुं वर्णन करे छे.

रसैः चलित निःस्वादं, द्व्यक्षाणां योनिस्थानकं ।
पर्युषितं कुत्सितान्नं, भक्षणाद्दुःखमासदेत् ॥ १ ॥

"चलितरस एटले रसथी चलित थयेलुं, निःस्वाद थयेलुं, बेइंद्रिय जीवोनी

उत्पत्तिनुं स्थानक, वासी रहेलुं, अथवा कोही गयेलुं अन्न भक्षण करवाथी प्राणी दुःखने प्राप्त थाय छे. " आ अर्थने दृढ करवाने नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे:—

कनकपुर नामना नगरमां जिनचंद्र नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने शीलवती नामे पत्नी हती. ते उभयथी गुणसुंदर नामे एक पुत्र थयो हतो. ते बाल्यवयथी धर्म रहित हतो. एक वखते तेनी माताए तेने कह्युं के, " वत्स ! तुं वासी भोजन कर नहीं; केमके वासी भोजन करवाथी देहमां धाधर, करोळिया, अने त्वचाविकार विगेरे तथा वात संबंधी अनेक रोगो थशे, वळी बुद्धिनुं हीनपणुं थशे. ते साथे त्रस जीवनी हिंसा लागशे. ते संबंधी विशेष दोषो जाणवा होय तो श्री समयामृतसूरिनी पासे जइने जाणी लेजे' तेणे उद्यानमां रहेला ते गुरु पासे जइने तेना दोष पूछ्या; एटले गुरु बोल्या के, ' तुं सुभागनगरमां जा, त्यां थावर नामे एक चंडाळ छे, ते तने एना दोष कहेशे. ' गुणसुंदर सुभागनगरे गयो, त्यां थावर चंडाळनुं घर शोधी तेने वासीना दोष पूछ्या. थावरे कह्युं के ' हुं कहीश. ' पछी ते चंडाळे एक गृहस्थनी दुकानेथी शाळ, दाळ विगेरे सीधुं तेने अपाव्युं. तेणे लीधुं अने ते कोई कृपणने घेर मूल्य आपीने रंधाव्युं. ज्यारे ते भोजन करवा बेठो त्यारे ते कृपणनी स्त्रीए पुछ्युं के, ' तमे क्यांथी आव्या छो ? ' गुणसुंदरे पोतानो सर्व वृत्तांत जणाव्यो. ते उपरथी ते स्त्रीए पोताना भाइ तरीके ओळख्यो. बीजे दिवस गुणसुंदर जवाने तैयार थयो. पण ते स्त्रीए आग्रहथी रोक्यो. पछी तेणीए पोताना लुब्ध पति पासे शालि विगेरे सारुं भोजन रांधवा माग्युं; एटले तेणे कह्युं के, ' वाल अने तेल लइ जइने भोजन कराव, बीजुं नहीं मळे. ' पण ते स्त्रीए तो बीजी दुकानेथी घी खांड विगेरे लावी गुणसुंदरने माटे घेवर विगेरे करवा मांड्या. ते वातनी तेना पतिने खबर पडी, एटले ते बहु खेद पाम्यो अने क्रोधथी तेणे वासी अन्न खाधुं. तेथी ते तत्काळ हृदय फाटीने मृत्यु पाम्यो. स्त्रीए जाण्युं के, ' में मारा भाइने भोजन करवा राख्यो तेथी आ बन्युं. ' पण तेणीए आ वात कोइने जणावी नहीं; कारणके जो ते वात बहार पडे तो ते अपुत्र होवाथी बधुं द्रव्य राजा लइ जाय. आवा भयथी ते वात कोइने जणाव्या सिवाय तेणीए श्रेष्ठीना शबने घरमां खाडो खोदीने दाटी दीधुं. पछी तेणीए पोताना बंधुने गुप्त रीते ते वात जणावी अने कह्युं के, "भाइ ! तुं अहीं रहीने तारा बनेवीना चार कोटी द्रव्यनो व्यापार कर अने श्रेष्ठी विषे कोइ तने पूछे तो तारे कहेवुं के, ' ते दरीआ वाटे व्यापार करवा गया छे. ' जो तेने जीवतो कहीशुं तो मारे सौभाग्यवतीनो वेष रखाशे अने जो मृत्यु पामेलो

कहीशुं तो विधवापणुं भोगववुं पडशे; तेथी शोक के रुदन कांइ करवुं नहीं; केमके तेम करवाथी उलटुं नुकशान छे." आवां भगिनीनां वचनथी गुणसुंदर त्यां रही दुकाने बेसीने व्यापार करवा लाग्यो.

हवे पेलो चंडाळ गुणसुंदरने अन्न अपावी घेर गयो. भोजन समय थतां तेनी स्त्रीए 'आ आजेज रांध्युं छे' एम कठोर अने असत्य वचन कही, ते चंडाळने वासी भोजन खावा आप्युं. ते साथे बावीश पहोरनी छाश पण आपी. ते समये कांइक अंधकार पण थयो हतो. चंडाळे 'ते वासी छे' एम जाण्युं पण क्षुधार्त्त होवाथी पोताना नियमने गण्या वगर तेणे खाधुं; तेथी शूलना रोगवडे गाढ निद्रामां मृत्यु पाम्यो अने गुणसुंदरनी ब्हेनना उदरमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. (जे रात्रे शेठ जीवता हता.)

केटलाक दिवसो गया पछी गुणसुंदर मातंगना पाडामां गयो. त्यां थावर मातंगने घेर शोकयुक्त आक्रंद सांभळी तेणे कोइने पूछयुं, एटले तेणे थावर चंडाळनुं मरण जणाव्युं. ते सांभळी गुणसुंदर खेद पाम्यो अने 'अरे! तेने अकस्मात् शुं थयुं? तेना मरण पामवाथी मारो संदेह पण भांग्यो नहीं.' एम विमासवा लाग्यो. पछी ते स्वदेश जवाने तैयार थयो, पण तेनी बहेने पोताने पुत्रनो जन्म थतां सुधी रोक्यो.

एक दिवस गुणसुंदर हाटे बेठो हतो, तेवामां कोइ स्त्रीए आवीने तेने कह्युं के, 'तने तारो भाणेज तेडावे छे.' ते विस्मय पामीने घेर गयो. त्यां तरतना जन्मेला बाळकने दीठो. तेणे कह्युं के, 'तुं थावर चंडाळने घेर जा, त्यां तरतना जन्मेला बाळकने थावरनी स्त्री मारी नाखे छे तेने बचाव.' गुणसुंदरे त्यां जइ चंडाळीने कह्युं के, 'अरे! शा माटे हिंसा करे छे?' चंडाळी बोली–'शुं करुं? आ पुत्र ज्यारे उदरमां आव्यो त्यारे तमारा मित्र मृत्यु पाम्या अने घरमां अत्यंत दारिद्र्य आव्युं.' पछी गुणसुंदरे तेने घणुं द्रव्य आपीने ते पुत्रने मृत्युथी बचाव्यो. पछी ते घेर आव्यो, एटले तेनो भाणेज बोल्यो के–'मामा! तमारो संदेह भग्न थयो?' मामाए कह्युं, 'भग्न थयो नथी.' त्यारे ते बोल्यो–"हुं थावरचंडाळनो जीव छुं. ते तमारा जेवा साधर्मीनी भक्ति करवाथी अने अभक्ष्यनो नियम पाळवाथी चार कोटी द्रव्यनो स्वामी थयो छुं. तेमां पण में किंचित् विराधना करी हती, तेथी ते भवमां हुं शूलरोगना महाव्याधिथी मृत्यु पाम्यो हतो. अने जे तमारा बनेवी श्रेष्ठी हता ते लोभथी तेमज वासी अन्ननुं भक्षण करवाथी मृत्यु पामीने थावरचंडाळने घेर पुत्रपणे अवतर्या छे, माटे हवे

तमे पण आजथी अभक्ष्य खावानो नियम अंगीकार करो." आ प्रमाणेनी हकीकत जाणवाथी निःसंदेह थयेलो गुणसुंदर तरतज ते नियम लइ पोताने नगरे आव्यो अने सर्व वृत्तांत पोतानी माताने जणाव्यो. ते सांभळी तेनी माता हर्ष पामी. कह्युं छे के,

अधमा सान्वया सूना, मध्यमा द्रविणार्जनैः ।
उत्तमा हृष्यति माता, तैस्तैः सुकृतकर्मभिः ॥ १ ॥

" अधम माता पुत्रनो वंश वधवाथीज राजी थाय छे, मध्यम माता पुत्र द्रव्य कमाय तेथी हर्ष पामे छे अने उत्तम माता पुत्र अनेक प्रकारना सुकृत्यो करे तेथी हर्ष पामे छे."

गुणसुंदरे एक वखते गुरुमहाराजने पूछयुं के–' स्वामी ! आपनी आज्ञा प्रमाणे करवाथी मारो संदेह तो दूर थयो पण मारा बाळक भाणेजने वाचा शी रीते थइ ?' गुरु बोल्या के, "ते चंडाळे अंत समये पोताना मित्र कोइ व्यंतर देवने पूछयुं हतुं के, 'मित्र ! गुणसुंदरनो संशय माराथी भग्न थयो नहीं, तेनुं मारे शुं करवुं ?' देवे कह्युं के, 'तुं पेला कृपण श्रेष्टीने घरे ज्यारे जन्मीश त्यारे हुं तारा मुखमां प्रवेश करीने तेनो संशय दूर करीश.' एथी तेने बाळपणे पण वाणी थइ हती.' आ प्रमाणे सांभळी गुणसुंदर श्रावकधर्म पाळी, प्रांते मुनिधर्मने पण स्वीकारी स्वर्गने प्राप्त थयो.

" उपर कहेला चरित्रना तत्त्वने विचारी जेमां सर्व इंद्रियोनी पटुता प्राप्त थाय छे तेवुं संन्मनुष्यपणुं मेळवी भवि प्राणीओ वासी अने कोहेला अन्ननो त्याग करवारूप व्रतने ग्रहण करो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ चलितरसअभक्ष्यविषये एकोनविंशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥११९॥

व्याख्यान १२० मुं.

हवे अजाण्या फळ संबंधी गुण दोष कहे छे.

फलान्यज्ञातनामानि, पत्रपुष्पाण्यनेकधा ।
गुरुसाक्ष्यात्मसौख्यार्थं, त्याज्यानि वंकचूलवत् ॥ १ ॥

व्याख्या.

"जेना नाम जाणवामां न होय तेवां अजाण्यां फळ, पुष्प अने पत्रोने आत्मसुखने माटे गुरुनी साक्षीए वंकचूलनी जेम त्यजी देवां."

ते वंकचूलनो प्रबंध आ प्रमाणे—

वंकचूलनी कथा.

ढींपुरी नामे नगरीमां विमलयश नामे राजा हतो. तेने पुष्पचूल अने पुष्पचूला नामे पुत्र पुत्री हता. तेमां पुष्पचूल प्रकृतिथी बळवान् अने उद्धत हतो, तेथी लोकमां वंकचूल एवा नामथी प्रख्यात थयो हतो. तेनी रंजाडथी कंटाळीने प्रजाए राजाने फरियाद करी. राजाए क्रोध पामी तेने नगरीनी बहार काढी मूक्यो. तेना अनुरागथी तेनी स्त्री अने तेनी बहेन पुष्पचूला तेनी पाछळ गयां. अरण्यमां जतां भिल्ल लोकोए तेने पोतानो राजा कर्यो.

एक वखते ते सिंहगुहा नामनी पाळमां कोइ आचार्य पधार्या. तेमणे वर्षाकाळना चार मास रहेवाने माटे वंकचूलनी पासे स्थाननी याचना करी. वंकचूले कह्युं के, 'जो अहिं रहेवुं होय तो मारी सीममां धर्मोपदेश करवो नहीं, मौन रहेवुं.' सूरिए कह्युं के, 'ते अमारे मान्य छे, पण ज्यांसुधी अमे रहीए त्यांसुधी तमारे जीवहिंसा करवी नहीं.' वंकचूले ते स्वीकार्युं. चार मास पछी विहार करवानो समय आव्यो एटले आचार्ये वंकचूलने जणाव्युं. कह्युं छे के "साधु, पक्षी, भ्रमरनां टोळां, गोकुळ अने मेघ एक ठामे रहेतां नथी." सूरिनी साथे केटलेक सुधी वंकचूल वळाववा गयो. ज्यारे पोतानी सीमा पूरी थवाथी ते उभो रह्यो त्यारे सूरि बोल्या के, "हे भद्र! तुं आटला अभिग्रह ले—१ अजाण्या फळ खावां नहीं. २ सात आठ पगलां पाछा हठीने कोइनी उपर घा करवो, ३ राजानी स्त्रीने सेववी नहीं अने ४ कागडानुं मांस खावुं नहीं. आ नियम सुगम लागवाथी वंकचूले ग्रहण कर्या. पछी ते गुरुने नमीने पोताने घेर गयो.

एक समये वंकचूल बीजा चोरोनी साथे कोइ साथने लुंटीने अरण्यमां पेठो. ते वखते सर्वने क्षुधा लागी. बीजा चोर लोकोए क्षुधार्त्त थइ किंपाकना फळ खाधा अने वंकचूले अज्ञात फळनो अभिग्रह होवाथी ते फळनुं नाम न जाणवाना कारणथी खाधा नहीं. बीजा चोर मृत्यु पामी गया; कारण के किंपाकना फळ विषमय होय छे. ते जोइ वंकचूले विचार्युं के, 'अहो! नियमनुं फल केवुं उत्तम!'

पछी ते त्यांथी रात्रे पोताने घेर आव्यो, त्यां पोतानी पत्नी साथे तेणे एक पुरुषने सुतेलो जोयो; एटले कोपथी तेने मारवाने तैयार थयो. त्यां गुरुए आपेलो नियम याद आववाथी सात आठ पगलां पाछो हठ्यो; तेथी हाथमां उगामेलुं खड्ग द्वार साथे अथडायुं, तेना अवाजथी तेनी व्हेन जागी उठी अने बोली के 'तुं कोण छे?' स्वर उपरथी व्हेनने ओळखीने तेणे पूछयुं के, 'आवो पुरुष वेष केम लीधो छे?' तेणीए कह्युं के, 'पुरुषनो (तारो) वेष लइने नटनुं नृत्य जोवा सभामां गइ हती. त्यांथी पाछी फरतां थाकी जवाथी वेष बदल्या विना एमने एम मारी भाभी साथे सुइ गइ हती.' ते सांभळी तेणे पोताने नियम देनारा गुरुनी प्रशंसा करी.

एक वखते पेला सूरिना शिष्यो त्यां आव्या, तेमने नमी वंकचूले श्रीजिन-प्रासाद कराववा विषे धर्मदेशना सांभळी. तेथी तत्काळ तेणे तेज पल्लीमां चर्मणवती नदीने तीरे एक जिनप्रासाद कराव्यो. तेमां श्रीवीरभगवंतनी स्थापना करी. अनुक्रमे ते तीर्थ थयुं. ए तीर्थनी यात्रा करवाने कोइ वणिक स्त्री साथे त्यां आव्यो. चर्मणवती नदी उतरवाने ते दंपती वहाणमां बेठा. प्रासादनुं शिखर जोतां ते वणिकनी स्त्री चंदनादिक उत्तम द्रव्यो सुवर्णना कचोळामां लइ लइने तेनी सामे नाखवा लागी. एटलामां ते वणिकस्त्रीना हाथमांथी कचोळुं नदीमां पडी गयुं. ते जोइ वणिक बोल्यो—'अरे भद्रे ! बहु खोटुं थयुं, आ कचोळुं राजानुं छे, आपणे घराणे राख्युं छे, तेमां अमूल्य रत्न जडेला छे, हवे हुं तेने शुं उत्तर आपीश ?' पछी ते वणिकनी आज्ञाथी कोइएक माछी ते लेवा नदीमां पड्यो. अंदर शोधतां श्रीपार्श्वनाथना बिंबना खोळामां रहेलुं ते कचोळुं तेणे दीठुं. ते लइने तेणे वणिकने आप्युं. ते रात्रे खलासीने स्वप्न थयुं के, 'नदीमां पुष्पमाळा नाखवी, ते माळा जे स्थाने स्थिर थाय तेनी नीचे श्रीपार्श्वनाथजीना बिंबनी शोध करवी, अने ते बिंब लइने वंकचूलने आपवुं.' खलासीए ते प्रमाणे कर्युं अने श्रीपार्श्वनाथजीनुं बिंब काढीने वंकचूलने आप्युं. तेथी घणा खुशी थइ तेणे ते माछीने पुष्कळ दान आप्युं; अने श्रीवीरप्रभुना प्रासादनी बहार मंडपमां ते बिंबने तेणे स्थापित कर्युं. पछी नवीन चैत्य बंधावी तेमां स्थापवाने माटे ते बिंब लेवा मांडयुं, घणा पुरुषोए मळीने प्रयत्न कर्यो, पण ते बिंब त्यांथी चलित थयुं नहीं, त्यांज रह्युं. अद्यापि ते त्यांज छे. त्यारपछी एक दिवस पेला माछीमारे आवीने कह्युं के,'हे स्वामिन् ! बीजुं एक बिंब अने सुवर्णनो रथ नदीमां ते स्थानके छे.' एटले वंकचूले सभावच्चे पूछयुं के, 'आ बंने बिंब विषे कोइ कांइपण हकीकत जाणे छे ?' एटले एक वृद्ध पुरुषे कह्युं के, "देव ! पूर्वे

प्रजापाळ नामे राजा शत्रुना सैन्य साथे युद्ध करवा गया हता, ते समये शत्रुना भयथी ते राजानी राणी पोतानुं सर्वस्व अने आ बे बिंब सुवर्णरथमां राखीने आ चर्मणवती नदीने जलदुर्ग धारी तेमां एक वहाणमां रही हती. एवामां कोइ दुर्जने आवीने तेने कह्युं के, ' राजा मृत्यु पाम्या.' ते सांभळतांज तेणीए ते बिंब तथा रथ सहित वहाणज आक्रमण करवा वडे जळमां डुबाडी दीधुं. पोते जिनध्यानथी मृत्यु पामीने देवता थयेल हशे, नहीं तो आ बिंबनो महिमा कोण करे? ते बे बिंबमांथी एक बिंब तमे लाव्या छो अने बीजुं एक बिंब त्यां ज रहेल जणाय छे." आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी ते बिंब लेवाने माटे वंकचूले अनेक उपाय कर्या पण ते नीकळ्युं नहीं. एम संभळाय छे के, 'ते बिंब अद्यापि त्यांज छे अने वर्षमां एक दिवस दर्शन आपे छे.' श्री वीरप्रभुना बिंबनी अपेक्षाए श्रीपार्श्वनाथना बिंब बहु नाना होवाथी श्रीवीरप्रभुनी आगळ ते बाळकरूप छे एवुं धारी त्यांना मेवाडी भिल्ल विगेरे लोकोए तेनु चेल्लण पार्श्वनाथ एवुं नाम पाड्युं. ते सिंहगुहा पल्लीने ठेकाणे अनुक्रमे मोटुं नगर वसेलुं छे. अद्यापि श्रीवीरभगवंतनी तथा चेल्लणपार्श्वनाथनी यात्रा करवा अनेक संघो त्यां आवी तेमने आराधे छे.

एक वखते वंकचूल उज्जयिनी नगरीमां घोना पूच्छे वळगीने राजाना भंडारगृहमां पेठो. त्यां ते राजानी मुख्य पटराणीना जोवामां आव्यो, एटले तेणे कोप करीने पूछयुं के, ' तुं कोण छुं ? ' तेणे कह्युं के, ' हुं चोर छुं. ' राणीए कह्युं के, ' भय पामीश नहीं पण मारी साथे संगम कर.' वंकचूले कह्युं के, ' तुं कोण छुं ? ' ते बोली के, ' हुं राजानी राणी छुं. ' चोरे कह्युं के, ' जो तुं राजपत्नी हो तो मारी माता छो, माटे हुं पाछो जाउं छुं. ' ते सांभळी राणीए नखवडे पोताना शरीरे विदारण करीने पोकार कर्यो, एटले तत्काळ रक्षकपुरुषोए आवीने वंकचूलने बांधी लीधो. आ बधी हकीकत गुप्त उभेला राजाए सांभळी हती; तेथी राजाए चिंतव्युं के, ' अहो ! स्त्रीचरित्र केवुं दुर्लक्ष छे ! ' प्रातःकाळे रक्षको तेने राजानी पासे सभामां लइ गया. राजाए तेना बंधन छोडाव्या; एटले ते नमस्कार करीने आगळ बेठो. राजाए पूछयुं के, ' तुं मारा मंदिरमां केम पेठो हतो ? ' वंकचूल बोल्यो के, ' देव ! हुं चोरी करवाने पेठो हतो, त्यां मने देवीए दीठो, एटले सिपाइओ पासे पकडाव्यो. ' वंकचूले पेली नीच वार्त्ता कही नहीं, तेथी राजा घणो खुशी थयो अने तेने पुत्र करीने राख्यो. राजाए पटराणीने मारवा मांडी, त्यारे वंकचूले तेने बचावी. आवी

रीते प्रत्यक्ष नियमोनुं फळ देखी वंकचूल मनमां वारंवार विचारवा लाग्यो के, 'अहो! नियमोनुं फळ केवुं उत्तम छे.'

एक वखते राजाए तेने कोइनी साथे युद्ध करवा मोकल्यो. त्यां ते शत्रु-सैनिकोना गाढ प्रहारोथी घायल थयो. राजसेवको तेने राजा पासे लइ आव्या. राजाए तेना औषध माटे घणा वैद्योने एकठा कर्या. वैद्योए कागडाना मांसनुं औषध बताव्युं, पण वंकचूले तेनो नियम करेलो होवाथी ते औषधनी इच्छा करी नहीं. पछी राजाए तेना मित्र जिनदासने नजीकना गामथी बोलाव्यो. जिनदास उज्जयिनीए आवतो हतो, त्यां मार्गमां बे देवीओने रुदन करती तेणे दीठी. श्रेष्ठीए पूछ्युं के, 'भद्रे! केम रुवो छो?' ते बोली के, 'भद्र! अमे बंने भर्त्तार वगरनी सौधर्मदेवलोकनिवासी देवीओ छीए काकपक्षीनुं मांस न खाय तो वंकचूल अमारो पति थाय तेम छे; पण तमारा वचनथी जो ते नियमनो भंग करशे तो ते दुर्गतिने पामशे अने अमे भर्त्तार विनानी रहेशुं, एथी अमे रुदन करीए छीए.' ते सांभळी जिनदास बोल्यो के-'देवी! रुदन करो नहीं, हुं तेने विशेष दृढ करीश.' पछी जिनदास उज्जयिनी आव्यो अने राजानी प्रेरणा छतां वंकचूलने तेणे कह्युं के, "मृत्यु आवे ते सारुं, दारिद्र्यनो संगम थाय ते सारुं, पण ग्रहण करेला व्रतनो भंग करवो ते सारुं नहीं." इत्यादि. छेवटे मृत्यु पामीने ते अच्युतकल्पमां देवता थयो. ज्यारे जिनदास त्यांथी पाछो वळ्यो त्यारे पाछी पेली बंने देवीओने मार्गमां रुदन करती तेणे दीठी. एटले पूछ्युं के, 'भद्रे! हवे केम रुवो छो? में तेने मांसभक्षण करवा दीधुं नथी.' ते बोली के, 'भद्र! ते नियमनी अधिक आराधना करवाथी अच्युत देवलोकमां देवता थयो, एटले अमे तो भर्त्तार विनानीज रही.' ते सांभळी जिनदास पोताने घेर गयो. त्यारथी आ ढींपुरी तीर्थने निर्माण करनार वंकचूल अधिक प्रख्यात थयो.

"जेम श्री वंकचूल चोर छतां अंगीकार करेला नियमोने दृढपणे पाळवाथी अच्युतकल्पने पाम्यो, तेम अन्य भव्य प्राणीओ पण सर्व अभक्ष्यनो त्याग करवाथी अत्यंत सुखनी पुष्टिने पामे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ रात्रिभोजनविषये विंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥१२०॥

आठमो स्तंभ समाप्त.

नवम स्तंभ प्रारंभ.



व्याख्यान १२१ मुं.

सातमा व्रतनी अंतर्गत

अनंतकाय स्वरूप.

प्रसिद्धा आर्यदेशेषु, कंदा अनंतकायिकाः ।
द्वात्रिंशः संख्यया ज्ञेया, त्याज्यास्ते सप्तमे व्रते ॥१॥

व्याख्या.

"आ आर्यदेशमां कंद विगेरे बत्रीश प्रकारना अनंतकाय प्रसिद्ध छे, ते सातमा व्रतमां त्याग करवा योग्य छे." कंद प्रमुख अनंतकाय बत्रीश प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे–१ सूरण कंद, २ वज्रकंद, ३ लीली हळदर, ४ लीलुं आदु, ५ लीलो कचुरो, ६ सतावरी, ७ विराली (वरियाळी कंद), ८ कुंआर, ९ थोर, १० गलो, ११ लसण, १२ वंशकारेला, १३ गाजर, १४ लुणीनी भाजी, १५ लोढीनी भाजी, १६ गिरिकर्णिका, १७ पत्रना कुंपलीआ, १८ खरसुओ, १९ थेगी, २० लीली मोथ, २१ लोणरुख वल्ली, २२ खिल्लहुडा, २३ अमृतवेल, २४ मूळा (कांदा), २५ भूमिमांथी नीकळता बीलाडीना टोप, २६ विदळना अंकुरा, २७ ढक वथ्थुलो, २८ सूअरवल्ल, २९ पल्लंक, ३० कोमळ (काची) आंबली, ३१ आलु कंद, ३२ पिंडालु–आ बधा नामे करी अनंतकाय छे; ते सिवाय बीजा लक्षणवडे अनंतकाय छे. आ सर्व कंदजाति अनंतकायिक छे. तेओना प्रसिद्ध भेद नामथी कहे छे. १ सूरण कंद प्रसिद्ध छे. २ वज्रकंद प्रसिद्ध छे. ३ आर्द्र (लीली) हळदर, ४ आर्द्रकंद शृंगवेर ते लोकमां 'आदु' एवा नामथी प्रसिद्ध छे, ५ आर्द्रकचूरक, ६ शतावरी, ७ विरालिका एक जातनी प्रसिद्ध वेल छे, ८ कुमारी एटले कुंवार, ९ थोर, १० गडुची एटले गळो, ११ लशुन के लसण, १२ वंशकारेला, १३ गाजर, १४ लवणक एक जातनी वनस्पति छे, जेने बाळवाथी सज्जिका (साजी) उत्पन्न थाय छे. १५ लोढक एटले कमलिनीनो कंद, १६ गिरिकर्णिका एक जातनी वेल. १७ कुंपलीआ–पात्रा–ते प्रौढ पत्र थया पहेलां

बीज उगवाने समये जे अंकुरा थाय छे ते बधा लेवा. अहिं शिष्य शंका करे छे के " शास्त्रमां कह्युं छे के 'सर्व किशलय-कुंपलीओ उगती वखते अनंतकाय छे.' ते वाक्य तो तमे सत्य कर्युं, पण अन्यत्र शास्त्रमांज कहेलुं छे के, 'जोविय मूले जीवो, सोविय पत्तं पढमया एति' एटले जे मूळनो जीव छे ते पण प्रथम उगतां पत्रमां आवे छे.' ए वाक्यनुं समाधान शुं? एक ठेकाणे सांधो छो तो बीजे ठेकाणे तुटे छे." गुरु कहे छे-" तेनो उत्तर सांभळ, उतावळो न था. जे बीज छे तेनो जीव वर्षाकाळ तथा पृथ्वी विगेरे सामग्री पामीने उगवानी अवस्थामां तेनो ते रहे छे अथवा बीजो पण होय छे. बीज, मूळ ने प्रथम पत्रमां एकजीवपणुं कहेलुं छे, ते अमे पण जाणीए छीए. पण कह्युं छे के, 'बीजमां मूळपणे उत्पन्न थइने ते बीजनो जीव अथवा बीजो जीव ते पछी थनारी उगवानी अवस्थाने उत्पन्न करे छे.' उद्भव वखते किशलय-कुंपलीओनी अवस्थामां जरूर अनंता जीवो उत्पन्न थाय छे, तेथी ते मूळनो जीव पोतानी स्थितिना क्षयथी विनाश पामी तेज जीव अनंतकायपणाने प्राप्त करी ज्यांसुधी प्रथम पत्र थाय त्यांसुधी वधे छे एटले तेमां विरोध आवतो नथी; केमके कि लयमां अनंतकायपणुं अने एककर्त्तापणुं बंने होय छे." केटलाएक आचार्यो प्रथम पत्र ए शब्दथी बीजनी पहेली उगवानीज अवस्था कहे छे. पछी ते प्रत्येक हो के साधारण हो. सार ए छे के सर्व प्रकारना किशलय अनंतकायिक छे. १८ खरसुओ. १९ थेग ते गोपीकंद. २० लीली मोथ. २१ लवणनो बीजो पर्याय भ्रमर नामना वृक्षनी त्वचा. ते त्वचा सिवाय तेना बीजा अवयव लेवा नहीं. २२ बावीशमो भेद खिलोडा ते प्रसिद्ध छे. २३ त्रेवीशमो भेद अमृतवल्ली छे. २४ चोवीशमो भेद मूळा छे. ते विषे भारतमां पण लखे छे के,

पुत्रमांसं वरं भुक्तं, न तु मूलकभक्षणं ।
भक्षणान्नरकं गच्छे-द्वर्जनात् स्वर्गमाप्नुयात् ॥ १ ॥

" पुत्रनुं मांस खावुं सारुं पण मूळानुं भक्षण करवुं सारुं नहीं. जो मूळा खाय तो नरके जाय छे अने तेने वर्जवाथी स्वर्गे जवाय छे." वळी कह्युं छे के—

रक्तमूलकमित्याहु-स्तुल्यं गोमांसभक्षणं ।
श्वेतं तद्विद्धि कौंतेय, मूलकं मदिरोपमं ॥ १ ॥

" हे कुंताना पुत्र! जे रातो मूळो खाय छे ते गायना मांस जेवो छे अने श्वेत मूळो छे ते मदिरा जेवो छे." वळी कह्युं छे के—

यस्मिन् गृहे सदान्नार्थं, कंदमूलानि पच्यते ।
स्मशानतुल्यं तद्वेश्म, पितृभिः परिवर्जितं ॥ १ ॥

" जेना घरमां हमेशां खावाने माटे कंदमूळ रंधाय छे, तेनुं गृह स्मशान जेवुं छे अने पितृओ तेने त्यजी दे छे."

२५ पचवीशमो भेद भूमिरुह एटले छत्रकनो छे. ते वर्षाकाळमां पृथ्वीने फाडीने उगीने नीकळे छे, तेने बीलाडीना टोप कहे छे. २६ छवीशमो भेद विरुढ एटले अंकुरित थयेला द्विदल धान्यनो छे. २७ सत्तावीशमो ढंकवथ्थुलानो छे, ते एक जातनुं शाक थाय छे. २८ अठावीशमो भेद शूकर नामे वालनो छे, तेमां धान्यवाल लेवा नहीं. २९ ओगणत्रीशमो भेद पल्यंक जातना शाकनो छे. ३० त्रीशमो भेद कोमळ आंबलीनो छे. ३१ एकत्रीशमो भेद आलुकंदनो छे. ३२ बत्रीशमो भेद पिंडालु नामे कंदजातिनो छे. आ प्रमाणे बत्रीश प्रकारनाज अनंतकाय जाणवा नहीं, पण सिद्धांत युक्तिथी ते सिवाय बीजा पण जाणी लेवा. कह्युं छे के, " जेनी नसो, संधीओ अने गांठ गुप्त होय, जेना भांगता सरखा ककडा थाय अने जे छेद्या थकां पण पाछां उगे ते साधारण शरीर कहेवाय; अने तेथी विपरीत ते प्रत्येक शरीर कहेवाय. " ते एक शरीरमां रहेल अनंत जीवोने श्वासोश्वास तथा आहार विगेरे सर्व एक साथेज होय छे, तेने दुःख अनंतु छे. ते साधारण वनस्पति कहेवाय छे, तेना सोयना अग्र जेटला भागमां पण अनंत जीवो कहेला छे; तेथी विपरीत लक्षण जेनामां होय ते प्रत्येक वनस्पति कहेवाय छे. आ विषे घणुं कहेवानुं छे, पण ते लोकप्रकाश ग्रंथथी तथा वनस्पतिसप्ततिकाथी जाणी लेवुं.

लौकिक शास्त्रमां (३८११७२९७०) आटली संख्यानो एक भार कहेलो छे. बीजे ठेकाणे त्रण क्रोड एकाशी लाख बार हजार एकसो ने सीत्तेर (३८११२१७०) आटली संख्यानो एक भार कहेलो छे. एक एक जातिना एक एक पत्रादिकनी जुदी जुदी गणत्री करतां अढार भार वनस्पति थाय छे एम कहेलुं छे. ते आ प्रमाणेः—

चार भार पुष्प, आठ भार फळ, ने छ भार वेलो—एम त्रणे मळीने अढार भार वनस्पति थाय छे, एम शेषनागे कहेलुं छे; अथवा पक्षांतरे एम पण कह्युं छे के—चार भार कटु, बे भार तिक्त, त्रण भार मिष्ट, त्रण भार मधुर, एक भार क्षार, बे भार कषाय, एक भार विषसहित, बे भार विषरहित—एम अढार भार छे; अथवा छ भार कंटक, छ भार सुगंधी, अने छ भार गंधरहित—एम पण

अढार भार कहेला छे. वळी एम पण कह्युं छे के, चार भार पुष्प वगरनी वनस्पति, आठ भार फळ वगरनी वनस्पति, अने छ भार फळ अने फुलवाळी वनस्पति-एम अढार भार वनस्पति छे.

जे अनंतकाय छे ते अभक्ष्य छे. कदि ते अचित्त थयेल होय तो पण ते ग्रहण करवा योग्य नथी. तेमां जे सुंठ विगेरे छे ते ग्राह्य छे. आ प्रमाणे अनंतकायनुं स्वरूप जाणीने ते सातमा व्रतमां त्याग करवा योग्य छे. माटे ते अनंतकाय वस्तुनुं भक्षण करवुं नहीं. ए विषे धर्मरुचिनी कथा छे, ते आ प्रमाणेः—

धर्मरुचिनी कथा.

वसंतपुर नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने धारणी नामे राणी हती. तेमने धर्मरुचि नामे एक पुत्र थयो हतो. एक वखते कोइ तापस पासे दीक्षा लेवानी इच्छाथी राजा पुत्रने राज्य उपर बेसाडवाने उद्युक्त थयो. ते खबर सांभळी धर्मरुचिए पोतानी माताने पूछयुं के, 'माता! मारा पिताजी शा माटे राज्यनो त्याग करे छे?' माताए कह्युं, "पुत्र! आ राज्यलक्ष्मी शा कामनी छे? आ राज्यलक्ष्मी चपळ, नरकादि सर्व दुःखना हेतुरूप, स्वर्ग तथा मोक्षना मार्गमां भोगलरूप, परमार्थे पापरूप अने आ लोकमां मात्र अभिमान करावनारी छे; एथी तारा सुज्ञ पिता तेनो त्याग करी सर्व सुखनो साधक धर्म करवाने उद्युक्त थया छे." ते सांभळी धर्मरुचिए कह्युं के, 'हे जननी! ज्यारे एवी राज्यलक्ष्मी छे त्यारे शुं हुं मारा पिताने एवो अनिष्ट छुं, के ते सर्व दोषनी भूमिरूप राज्यलक्ष्मी मने वळगाडे छे.' आ प्रमाणे कही तेणे पण पितानी साथे दीक्षा लीधी अने सघळी तापसक्रिया ते यथार्थपणे पाळवा लाग्यो.

एक वखते अमावास्याने आगले दिवसे (चौदशे) एक तापसे उंचे स्वरे आघोषणा करी के, 'हे तापसो! आवती काले अमावास्या होवाथी अनाकुट्टि छे. माटे आजे दर्भ, पुष्प, समिध, कंद, मूळ तथा फळ प्रमुख लावी मूकवा योग्य छे.' ते सांभळी धर्मरुचिए गुरु थयेला पिताने पूछयुं, 'पिताजी! आ अनाकुट्टि एटले शुं?' तेमणे कह्युं, 'पुत्र! लता विगेरेने छेदवां नहीं ते अनाकुट्टि कहेवाय छे. ते अमावास्यानो दिवस के जे पर्व गणाय छे ते दिवसे न करवुं. कारण के छेदनादि क्रिया सावद्य गणाय छे.' ते सांभळी धर्मरुचि चिंतववा लाग्यो के, "मनुष्यादिकना शरीरनी जेम जन्मादि धर्मने युक्तपणाने लीधे वनस्पतिमां पण सजीवपणुं स्फुटपणे प्रतीत थाय छे." त्यारे जो सर्वदा

अनाकुट्टि थाय तो वधारे सारुं. आवुं चिंतवनारा धर्मरुचिने अमावास्याने दिवसे तपोवननी नजीकना मार्गे चाल्या जता केटलाएक साधुओ जोवामां आव्या. तेणे साधुओने पूछयुं के, 'शुं तमारे आजे अनाकुट्टी नथी, के जेथी आ वनमां प्रयाण करो छो?' तेओए कह्युं के, "अमारे तो यावज्जीवित अनाकुट्टि छे' तेम कही साधुओ चाल्या गया. ते सांभळी उहापोह करतां धर्मरुचिने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं; तेथी तेने याद आव्युं के, 'हुं पूर्व भवमां दीक्षा लइ मृत्यु पामी, देवलोकनुं सुख अनुभवीने अहीं आव्यो छुं. पूर्वे में सर्वे वनस्पति जीवने अभयदान आप्युं हतुं, तो हवे आ भवमां पण तेनी हिंसा करवी मने योग्य नथी.' आवुं विचारी ते प्रत्येकबुद्ध थयो. पछी तेणे बीजा कंदादिकनुं भक्षण करनारा तापसोने पण तेना पच्चक्खाण कराव्या.

मेषोष्ट्रहस्त्यादभवेषु भक्षणं,वल्ल्यादिकानां बहुधा विधायितम्।
श्राद्धत्वमाप्त्वाथ विधेहि रक्षणं, तासां यथा धर्मरुचिमुनींद्रवत्॥१॥

"बकरा, उंट अने हाथी विगेरेना भवमां वल्ली प्रमुखनुं बहु प्रकारे भक्षण करेलुं छे, तो हवे श्रावकपणाने प्राप्त करीने हे जीव! ते वल्ली विगेरेनुं रक्षण कर, के जेथी धर्मरुचि मुनींद्रनी जेम उत्तम फळ प्राप्त थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्यग्रंथस्य वृत्तौ
एकविंशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १२१ ॥

व्याख्यान १२२ मुं.

भोगोपभोग व्रतना वीश अतिचार छे, तेमां प्रथम भोगसंबंधी पांच अतिचार कहे छेः–

सचित्तस्तेन संबंधः, संमिश्रोऽभिषवस्तथा ।
दुष्पक्वाहार इत्येते, भोगोपभोगमानगाः ॥ १ ॥

"सचित्त, सचित्तनी साथे संबंधवाळुं, मिश्र, अपक्व अने दुष्पक्व–आ पांच प्रकारनी वस्तुओनो उपभोग करवो ते भोगोपभोग व्रतना पांच अतिचार छे." तेमां सचित्त ते कंद विगेरे जाणवा. तेनो नियम लेनार कोइ मनुष्य अनाभोगपणे तेनुं भक्षण करे ते पहेलो सचित्त अतिचार जाणवो. धान्यनुं सचित्तपणुं एटला काळ सुधी छे के ज्यांसुधीमां बीज निर्बीज थइ जाय के जे वाव-

वाथी पुनः अंकुरित न थाय. ते विषे कह्युं छे के, "जव, गोधुम अने शाली ए त्रण वर्ष पछी निर्जीव थाय छे, तिल अने द्विदल–ए पांच वर्ष पछी निर्जीव थाय छे. अलसी, कोसंबो, कोद्रा विगेरे सात वर्ष पछी निर्जीव थाय छे. जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त पछी योनि–बीजनो विध्वंस थाय छे. तथा सेड्डुक–कपास ते त्रण वर्ष पछी निर्बीज थाय छे. इत्यादि सचित्तनो विचार सूत्रथी जाणीने एना अतिचारनो त्याग करवो. १

सचित्तनी साथे प्रतिबद्ध वस्तु एटले वृक्षादिकनी साथे संबंधवाळो तत्काळ ग्रहण करेल गुंदर विगेरे अथवा रायण. खजुर, केरी अने खारेक प्रमुख, तेमज सचित्त बीज जेनी अंदर रहेल छे एवुं पाकेलुं फळ ते पक्व छे, तेथी प्रासुक छे माटे हुं तेने भक्षण करीश अने तेमां बीज अप्रासुक छे तेथी तेनो त्याग करीश. एवी बुद्धिथी आखुं फळ मुखमां नाखे ते सचित्तप्रतिबद्ध आहाररूप बीजो अतिचार छे. २

जे सचित्तनी साथे मिश्र होय ते मिश्राहार कहेवाय; अथवा तिलमिश्र जव धान्य विगेरे मिश्राहार कहेवाय. अथवा सचित्तना संभववाळा अपक्व जव, अग्निथी संस्कार कर्या वगरनी कणिक विगेरे–तेने लोट छे एम जाणी अचितबुद्धिथी आहार करे. पण जे पिष्ट (लोट) चाळ्यो होय ते अंतर्मुहूर्त्त पछी अचित्त छे अने चाळ्यो न होय ते मिश्र छे. कारणके नहीं चाळवाथी तेमां धान्यना नखीया प्रमुख रहे छे, तेथी तेनुं अपरिणतपणुं संभवे छे. मिश्रकाळनुं मान पूर्वे कहेलुं छे. तेना आहारथी अनाभोगादिवडे अतिचार थाय ते त्रीजो अतिचार छे. ३

अभिषव एटले अनेक वस्तुओना संधानथी उत्पन्न थाय ते अथाणुं, मदिरा, सरको इत्यादि, मांसनो प्रकार अथवा खांड विगेरे, अथवा तो सुरा थइ शके एवा द्रव्यनो के तेवा वृक्षनो उपयोग–आ पण सावद्य आहारने छोडनाराने अनाभोगवडे आहारमां आववाथी जे अतिचार थाय ते चोथो अतिचार छे.४

दुःपक्व एटले मंद पक्व एवो आहार जेमके, अर्धो सेकेलो साथवो, चणा, जव, गोधुम, जाडा मांडा अने तिंडुरा प्रमुख फलादि, तेमां दुःपक्वपणाथी सचेतनपणानो संभव छे अने पक्वपणाथी अचेतन छे; ते छतां दुःपक्वने अचित्त धारी सचित्तना त्यागी एवा भक्षण करनारने जे अतिचार लागे ते पांचमो अतिचार छे.

वळी ते विषे श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रमां "अप्पोल० दुप्पोल० तुच्छोसहि०" इत्यादि गाथामां कहेल छे. तेमां अपक्व अने तुच्छ औषधिनो

आहार ते सचित्तनी अंतर्गत जाणवो.— आ पांच अतिचार भोगोपभोगपरिमाण व्रतनी अंदर जाणी लेवा. अने ते भोजनआश्री छोडी देवा. आ विषे धर्मराजानुं उदाहरण छे, ते आ प्रमाणेः—

धर्मराजानी कथा.

कमलपुर नगरमां कमलसेन नामे राजा हतो. एक वखते तेनी पासे कोइ निमित्तिओ आव्यो. तेणे राजाने कह्युं के, 'बार वर्षनो दुकाळ पडशे.' ते सांभळी राजा अने लोको नित्य चिंतातुर रहेवा लाग्या. तेवामां अशाडो मेघ अत्यंत वर्ष्यो; तेथी सर्व अति हर्ष पाम्या. ते उपर एक काव्य छे—

तावन्नीतिपरा धराधिपतयस्तावत्प्रजाः सुस्थिताः ।
तावन्मित्रकलत्रपुत्रपितरस्तावन्मुनीनां तपः ॥
तावन्नीतिसुरीतिकीर्त्तिविमलास्तावच्च देवार्चनं ।
यावत्स प्रतिवत्सरं जलधरः क्षोणितले वर्षति ॥१॥

भावार्थ— ज्यांसुधी प्रतिवर्ष पृथ्वीपर मेघ वर्षे त्यांसुधी राजाओ नीतिथी वर्ते छे, त्यांसुधी प्रजा स्वस्थ रहे छे, त्यांसुधी मित्र, स्त्री, पुत्र अने पितानो संबंध रहे छे, त्यांसुधी मुनिओथी तपस्या थाय छे, त्यांसुधी नीति, रीति अने निर्मळ कीर्त्ति प्रवर्ते छे अने त्यांसुधीज देवपूजा पण थाय छे. १

पछी सर्व लोको पेला निमित्तिआनुं उपहास्य करवा लाग्या. अन्यदा कोइ चतुर्ज्ञानी युगंधर नामे मुनि त्यां पधार्या. राजाप्रमुखे तेमनी पासे आवी वंदना करीने पूछयुं के, 'हे गुरुमहाराज! आ निमित्तिआनुं कथन केम खोटुं पड्युं?' गुरुमहाराज बोल्या—'राजन्! पुरिमताल नगरमां प्रवरदेव नामे कोइ गृहस्थ रहेतो हतो. तेनुं कुळ छिन्नभिन्न थइ गयुं हतुं अने ते निरंतर अविरतिपणे सर्वभक्षी हतो. एकदा तेने अजीर्ण थवाथी कुष्टरोग थयो. लोकोए तेने धिक्कारवा मांड्यो. एक वखते कोइ मुनिने जोइने तेणे पूछ्युं, 'महाराज! मने कुष्टरोग थवानुं शुं कारण छे? अने आ रोग शी रीते उपशमी जाय? ते कहो.' मुनि बोल्या—'भद्र! तारो आत्मा अविरत होवाथी असंतोषीपणाने लीधे तुं ज्यां त्यां जे ते वस्तु खातो हतो, तेथी प्रबळ अजीर्ण थवाने लीधे तने कुष्टरोग उत्पन्न थयो छे. जो हवे विरति थइ चतुर्विध आहारनुं परिमित भोजन करीश तो तारा रोगनो क्षय थशे.' मुनिनां वचनथी तेणे त्यारथी एक अन्न, एक विगइ, एक शाक अने प्रासुक जळ लेवानो नियम कर्यो. एम मितभोजी थवाथी अनु-

क्रमे ते निरोगी थइ गयो. पछी जेणे धर्मनुं माहात्म्य जाण्युं छे एवो ते निष्पाप वृत्तिथी व्यापार करतां अनुक्रमे कोटि परिमित धनवाळो थयो; परंतु पोते भोगोपभोगथी पराङ्मुख थइ नियामित आहारनुंज भोजन करनार अने सुपात्रने दान आपनार थयो.

एक वखते दुकाळना समयमां ते प्रवरदेवे लाखो महर्षिओने प्रासुक घृतादिकनुं दान दीधुं अने लाखो साधर्मीओनो प्रच्छन्न दान आपीने उद्धार कर्यो. एवी रीते यावज्जीवित अखंडितपणे व्रत पाळी छेवटे मृत्यु पामीने सौधर्मदेवलोकमां शक्रेंद्रनो सामानिक देवता थयो.

एक वखते ते देव स्वर्गना चैत्योने नमस्कार करतां पोताना मृत्युने नजीक जाणीने आ प्रमाणे विचारवा लाग्यो के, ' ज्ञान दर्शनथी शुद्ध एवा श्रावकना कुळमां दास थवुं ते उत्तम छे पण मिथ्यात्वथी मोहित बुद्धिवाळा चक्रवर्त्ती थवुं ते उत्तम नथी. ' आवी भावना भावतां त्यांथी च्यवीने आ नगरमां शुद्धबोध श्रावकने घेर विमला नामनी पत्नीना उदरमां ते उत्पन्न थयो. तेना जन्मथी अने शुभ ग्रहचार विगेरेना योगथी दुष्काळ पडवानो हतो छतां नष्ट थयेल छे."

आवुं गुरुनुं वचन सांभळी राजा विस्मय पाम्यो अने राणी विगेरे परिवारसहित ते शुद्धबोध श्रावकने घेरँ गयो. त्यां सर्व लक्षणसंपन्न पुत्रने जोइ राजा बहु खुशी थयो. पछी तेने पोताना खोळामां बेसाडी राजाए आ प्रमाणे एक श्लोक कह्यो—

"मूर्त्तिमानिव धर्मस्त्व–मित्थं दुर्भिक्षभंगभृत् ।
इति तस्याभिधा धर्म, इति धात्रीभृता कृता ॥१॥

" हे वत्स ! तुं जाणे मूर्त्तिमान् धर्म होय तेवो छुं अने तुं दुकाळनो भंग करनार छुं, तेथी हुं राजा तारुं नाम 'धर्म' एवुं पाडुं छुं." हवेथी हुं तारो कोटवाळ छुं अने तुं धर्मराजा छे. आ प्रमाणे कही राजा घेर गयो. पछी ते धर्मकुमार यौवनमां घणी राजकन्याओ परण्यो. ते राजाना पुण्यथी निरंतर सुभिक्ष विगेरे थया अने सर्वत्र अद्वैतपणे हर्ष प्रवर्त्त्यो.

समकित मूळ बार व्रतनो आराधक ते धर्मराजा अनेक भोग भोगवी अनुक्रमे दीक्षा लइ तेज भवे केवळज्ञान प्राप्त करीने मुक्तिने प्राप्त थयो. " आ

प्रमाणे ते धर्मराजाना बे भवनुं वृत्तांत सांभळीने जैनधर्ममां तत्पर एवा श्रावकोसातमुं व्रत अंगीकार करवुं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ सप्तमव्रतविषये द्वाविंशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १२२ ॥

व्याख्यान १२३ मुं.

हवे कर्मादान संबंधी पंदर अतिचार कहे छे.

अंगारवनशकट–भाटकस्फोटजीविका ।
दंतलाक्षारसकेश–विषवाणिज्यकानि च ॥ १ ॥
यंत्रपीडानिर्लांछन–मसतीपोषणं तथा ।
दवदानं सरःशोष इति पंचदश त्यजेत् ॥ २ ॥

भावार्थ—अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, भाटककर्म अने स्फोटककर्म, ए पांच प्रकारना कर्मवडे आजीविका करवी. दांत, लाख, रस, केश अने विषनो व्यापार करवो. यंत्रपीडा एटले घाणी विगेरे यंत्रो चलाववा, निर्लांछन कर्म करवुं, कुलटा स्त्री विगेरेनुं पोषण करवुं, दावानळ मूकवो अने सरोवरने शोषवुं-ए पंदर कर्मादाननो त्याग करवो १–२.

हवे पंदर कर्मादाननुं विवेचन करे छे–उपरना श्लोकमां बे जीविका शब्द छे ते प्रत्येक कर्मादाननी साथे जोडवो.

१ अंगारकर्म—एटले काष्ट दहन करीने नवा अंगारा पाडवा–चुनो तथा इंटनी भठ्ठी करनारा तेमज कुंभार, लुहार, कलाल, सोनी अने भाडभुंजा विगेरेनुं कर्म ते अंगारकर्म कहेवाय छे. तेनाथी जे आजीविका करवी ते अंगार आजीविका कहेवाय छे. ए आजीविका मुख्यत्वे अग्निथी चाले छे. अग्नि दश तरफ धारवाळुं (दशधारुं) खड्ग छे. कारण के तेमां सर्व जगतने दहन करवानी शक्ति छे, तेवी आजीविकामां ‘ छजीवनिकायनो ’ वध थाय छे; तेथी ए व्यापार गृहस्थने त्याग करवा योग्य छे. ए पहेलो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

२ वनकर्म—वनस्पति संबंधी छेदेलां अने वगर छेदेलां पत्र, पुष्प, फळ, कंद, मूळ, तृण, काष्ट अने वांस विगेरे लावीने वेचवा; तेमज बाग तथा वनकटी विगेरे करवां ते 'वनकर्म' कहेवाय छे. तेनाथी आजीविका करवी ते 'वनकर्म आजीविका' कहेवाय छे. ए आजीविका वृक्षने आश्रीने होवाथी तेमां वृक्षादिकना आश्रीत एवा त्रस प्रमुख जीवोनो वध थाय छे. ए बीजो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

३ साडीकर्म—गाडां अने गाडांनां अवयवो-पैडां विगेरे करवां, गाडां खेडवां अथवा ते वेचवां, ते 'शकटकर्म' कहेवाय छे. गाडां चलाववावडे आजीविका करवाथी मार्गमां रहेला षट्जीवनिकायनो वध थाय छे. ए त्रीजो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

४ भाडीकर्म-उंट, बळद, पाडा, खच्चर अने घोडा विगेरेना भाडां करवां एटले भाडे आपी भार वहन करावबुं ते 'भाटककर्म' कहेवाय छे; तेथी भारवाहक प्राणीओने बहु दुःख थाय छे. ए चोथो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

५ फोडीकर्म—जव, गोधुम, मग, अडद अने चणा विगेरे धान्यनी करड कराववी, एटले धान्य छूटुं पाडवुं, साथवो करवो. दाळ कराववी. शालीने खंडावी चोखा करवा, तळाव वापी अने कुवाने माटे पृथ्वी खोदाववी, हळ खेडवुं अने खाणमांथी पाणा कढावी घडाववा-ए 'स्फोटककर्म' कहेवाय छे. तेनाथी आजीविका करवी ते 'स्फोटक आजीविका' छे. तेमां कणना दलनथी वनस्पतिकाय जीवोनो, भूमि खोदवाथी पृथ्वीकायनो अने तेने आश्रीने रहेला त्रसादि जंतुओनो वध थाय छे. ए पांचमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

हवे पांच वाणिज्य संबंधी पांच अतिचार कहे छे.

१ प्रथम दंतवाणिज्य—एटले हाथीना दांत, हंस विगेरे पक्षीना रोम, मृगोना चर्म, चमरीमृगना पुच्छ सावर विगेरेना शृंग. तेमज शंख, छीप, काडी अने कस्तूरी विगेरेना उत्पत्तिस्थाने जइ ते ते प्रकारना त्रसकाय जीवोना अंगादि ग्रहण करवा ने तेनो व्यापार करवो-ए 'दंतवाणिज्य' कहेवाय छे. कदि पोते ते जीवोनी हिंसा न करे पण तेना उत्पत्तिस्थाने व्यापारीने आवेला जोइ भिल्ल विगेरे नीच लोको लोभथी तत्काळ हस्तीप्रमुख जीवोना वध करे छे अने

तेना व्यापारीओने जोइती चीजो लावी दे छे. तेथी ते त्याज्य छे. ए छट्ठो कर्मादान संबंधी अतिचार छे.

२ बीजुं लाक्षावाणिज्य—एटले लाख विगेरे हिंसक वस्तुओनो व्यापार. लाखमां त्रस जीवो घणा होय छे. वळी तेना रसमां रुधिरनो भ्रम थाय छे. धावडीनी त्वचा अने पुष्प मदिरानुं अंग छे अने तेनो कल्क घणा जीवोनी उत्पत्तिना हेतुरूप छे गळी घणा जीवोना घातथी थाय छे. मनशिल अने हडतालमां घणा माखी विगेरे जीवोनी हिंसा थाय छे. पडवास त्रस जीवोथी व्याप्त होय छे. टंकणखार, साबु अने क्षारादिकमां प्रत्यक्ष महादोष जोवामां आवे छे. लाख विगेरेना दोषयुक्तपणा विषे 'मनुस्मृति'मां पण कह्युं छे के—"लाख. गळी, तिल, क्षार, कसुंबो, दुध, घी, दहीं अने छाशने वेचनारो ब्राह्मण शुद्र कहेवाय छे." आ सातमो कर्मादान संबंधी अतिचार छे.

३ त्रीजुं रसवाणिज्य एटले मध, मदीरा, मांस, माखण, दुध, दहीं, घी अने तेल विगेरे रस पदार्थोनो व्यापार करवो ते. तेमां पण प्रथम कहेली युक्तिथी दोषो जाणी लेवा. दुध विगेरेमां संपातिम[1] जीवोनो पण वध थाय छे. बे दिवस गया पछी दहीं अने छाशमां महान् दोष उद्भवे छे. तेमां पण छाश तो सोळ पोहोरनी अंदर पण गळीने पीवा योग्य छे. ते विषे कह्युं छे के, "जो छाश गळ्या वगरनी ग्रहण करे तो घणा दोष उत्पन्न थाय छे. कारण के तेमां माखणनो योग होय तो तत्काळ जीवोनी उत्पत्ति थइ आवे छे. घी अने तेलना व्यापारमां पण दुर्ध्यानथी महा पाप लागे छे. कदि बीजी रीते आजीविका चाले तेम न होय तेथी घी तेल वेचवावडे आजीविका करवी पडे तो तेमां अशुभ ध्याननो त्याग करवो. कह्युं छे के, "अभिप्रायना वशथी पापध्यान (दुर्ध्यान) थाय छे, कांइ वस्तुना दर्शनथी थतुं नथी." आ विषय उपर विद्वानोए घृत तथा चर्मना व्यापारीनी कथा जाणी लेवी. ते कथा आ प्रमाणे छेः—

घृत तथा चर्मना व्यापारीनी कथा.

एकज नगरना रहेवासी कोइ बे वणिक आषाढ मासमां पोतपोताना व्यापारने अर्थे देशांतर जतां मार्गमां कोइ ग्रामे कोइ श्राविकाने घेर जमवा गया. श्राविकाए तेओने पूछयुं के, 'तमे कइ कइ वस्तुनो व्यापार करो छो?' तेओए

१ उपरथी पडे ते.

कह्युं के, 'माता! अमारामां एक घीनो व्यापारी छे अने बीजो चामडानो व्यापारी छे. तेनी खरीदी करवा जइए छीए.' ते सांभळी श्राविकाए विचार्युं के, " जे घीनो व्यापारी छे तेना परिणाम अत्यारे सारा वर्त्तता हशे. जेम के, 'जो मेघ सारा वर्षे तो गायो अने भेंसो दुध घणुं आपे,एटले घी सोंघुं थाय.' आवा शुभ परिणामनुं चिंतवन तेने थया करे; अने जे चर्मनो व्यापारी छे तेना मनमां अत्यारे पापी विचार वर्त्तता हशे. जेम के 'जो मेघ सारा वर्षे नहीं तो पशुओ घणा मरी जाय एटले चामडां सोंघां थाय.' आवा परिणाम सारा नथी." आवुं विचारी ते श्राविकाए घीना व्यापारीने घरमां ज्यां चंदरवो बांध्यो हतो, तेनी नीचे बेसाडी जमाड्यो अने चर्मना व्यापारीने घरनी बहार उघाडा भागमां बेसाडीने जमाड्यो. तेओ जमी रह्या पछी पोतपाताना काममां प्रवर्त्या.तेओ पोतपोतानुं कार्य करीने पाछा फरतां फरीथी ते श्राविकाने घेर जमवा आव्या; जमवाने अवसरे श्राविकाए तेमने प्रथम करतां उलटी रीते बेसाड्या.एटले घीना व्यापारीने बहार अने चर्मना व्यापारीने घरनी अंदर बेसाड्यो. तेमणे श्राविकाने तेम करवानुं कारण पूछ्युं.घीना व्यापारीए कह्युं के, " हे माता! प्रथम तमे जे अमारी बेठक करी हती ते योग्य हती, कारण के मने घीना व्यापारीने घरमां बेसाड्यो हतो ते उत्तम व्यापारने लीधे योग्य हतुं. तो आ वखते आम उलटापणुं केम कर्युं?" चामडाना व्यापारीए कह्युं के, "माता! आ वखते हुं चामडांनो अधम व्यापारी छतां तेने घरमां बेसाड्यो अने घीना उत्तम व्यापारीने बहार बेसाड्यो–तेम विपरीतपणुं करवानो शो हेतु छे?" श्राविका बोली–" हे पुत्रो! सांभळो, जे घीनो व्यापारी छे तेनी मनोवृत्ति हमणा अशुभ थइ छे, ते घी मोंघुं थाय एम इच्छे छे. घीनुं मोंघापणुं पशुओने उपद्रव थवाथीज थाय छे; अने ते उपद्रव मेघ अने घास प्रमुखना अभावे थाय छे. अने चर्मना व्यापारीनी मनोवृत्ति हाल सारी छे. ते हाल चर्मने मोंघा थवाने इच्छे छे; अने चर्मनुं मोंघापणुं पशुओना आरोग्यथी थाय छे; हे भद्र! आवो विचार करीने में तमारा बंनेना आसननुं विपरीतपणुं करेलुं छे; कारणके हुं श्राविका छुं. गुणी विना बीजाने मान आपती नथी. एथीज में ए प्रमाणे कर्युं छे." आ वृत्तांत सांभळी तेओ प्रतिबोध पाम्या अने पापव्यापार छोडीने शुभ व्यापारमां प्रवर्त्या. आ कथा सांभळी गृहस्थोए रसवाणिज्यनो त्याग करवो. आ आठमो कर्मादान संबंधी अतिचार छे.

४ चोथुं केशवाणिज्य—एटले दासी[१] दास विगेरे माणसांनो, अने गाय

१ गुलामी धंधो.

प्रमुख पशुओ तथा पक्षिओनो विक्रय करवो ते. आ नवमो कर्मादान संबंधी अतिचार छे.

५ पांचमुं विषवाणिज्य–एटले कोश, कोदाळी, अने लोढाना हळ विगेरेनो तथा अनेक प्रकारना शस्त्रोनो व्यापार. आदिशब्दथी वच्छनाग तथा सोमल विगेरे विषोनुं पण ग्रहण करवुं. शस्त्र अने विष प्रत्यक्षपणे जीवितने हणनारा जोवामां आवे छे, तेथी तेनो व्यापार पापरूप छे. अन्यमति पण विषादि वाणिज्यनो निषेध करे छेः—

कन्याविक्रयिणश्चैव, रसविक्रयिणस्तथा ।
विषविक्रयिणश्चैव, नरा निरयगामिनः ॥ १ ॥

" कन्यानो विक्रय करनार, रस पदार्थनो विक्रय करनार, अने विषनो विक्रय करनार पुरुषो नरके जाय छे. "

आ दशमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

अंगारकर्मप्रमुखानि पंच, कर्माणि दंतादिकविक्रयाणि ॥
विहाय शुद्धव्यवसायकश्च, गृही प्रशस्यो जिनशासनेस्मिन् ॥१॥

" अंगारकर्म विगेरे पांच कर्म अने दंतवाणिज्य विगेरे पांच वाणिज्यने छोडी शुद्ध व्यवसाय (व्यापार) करनार गृहस्थ (श्रावक) आ जिनशासनमां प्रशंसा करवा योग्य छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
सप्तमव्रतविषये त्रयोविंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥१२३॥

व्याख्यान १२४ मुं.

पंदर कर्मादानमां छेल्ला पांच अतिचार कहे छे.

११ अग्यारमुं यंत्रपिलणकर्म–यंत्रपीडा एटले शिला (छीपर), खारणीओ, मुशल (सांबेलुं), घंटी, रेंटीओ, निशातरो अने कंकपत्र (कांकशी) विगेरेनो विक्रय करवो अथवा तेलनी घाणी चलाववी, शेलडीना वाढ करवा, गोळ जमाववो, सरसव, अळसी, डोल, एरंडी विगेरेने पीलवावडे तेल काढवुं,

जळयंत्र (पाणी काढवाना रेंट) चलाववा–ते यंत्रपीडा संबंधी कर्ममां अनेक त्रस जीवोनो पण वध थाय छे. तेज कारणथी कह्युं छे के 'खांडणी, पेषणी घंटी, चुलो, जळकुंभी (पाणीआरुं) अने मार्जनी (सावरणी) ए पांच गृहस्थने हिंसानां स्थान छे.'

वळी तेलनी घाणी विगेरे महापापना हेतु छे. ते विषे शिवपुराणमां पण कह्युं छे के, " हे राजन् ! जे तेलनी घाणी चलावे छे तेने तेमां जेटला तलनी संख्या पीलाय छे तेटला हजार वर्ष सुधी रौरव नर्कमां रंधावुं पडे छे." तेमज " जे तलनो व्यापार करे छे ते तलनी जेवा हलका थाय छे, तलनी जेवा क्षुद्र थाय छे अने तलनी जेम पीलाय छे." तेमां पण फाल्गुनमास पछी तल पीलाववा, तल खावा के तलनो व्यापार करवो तेमां मोटो दोष लागे छे. कारण के ते समये तेमां त्रस जीवनी उत्पत्तिनो संभव छे. ते विषे कह्युं छे के, " फाल्गुनमास पछी तल के अलसी राखवी नहीं, तेमज गोळ तथा टोपरां विगेरे पण राखवां नहीं; कारण के वर्षाकाळमां तेमां जीवोत्पत्ति थवाथी घणा जीवोनी हिंसा थाय छे." तेथी ते समय उपरांत तल राखवा नहीं. तलनो व्यापार दुःखदायक छे एम जणाववा माटे तलना व्यापारी तिलभट्टनी कथा कहे छेः—

तिलभट्टनी कथा.

पृथ्वीपुर नामना नगरमां गोविंद नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते हमेशां तलनो व्यापार करतो हतो; तेथी तेनुं तिलभट्ट एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं हतुं. तेने एक स्वेच्छाचारी स्त्री हती. तेणे तलनी वखारमांथी छानी रीते पांच मुडा तल वेची तेना पैसामांथी पोताने मनगमता भोजन, वस्त्र अने आभूषण मेळव्यां अने दुर्व्यसन सेववा लागी.

एक वखते ते स्त्री विचारवा लागी के, 'जो मारो पति आ तल वेचवानी वात जाणशे तो मने हेरान करशे; माटे प्रथमथीज तेनो कांइक उपाय करी राखुं.' आ प्रमाणे विचारीने एक वखते ते तिलभट्ट रात्रे पोताना शालिना खेत्रनी रक्षा करवाने गयो हतो ते अवसर जोइने ते स्त्रीए नगरनी बहार जइ पिशाचणीनुं रूप कर्युं. ते दिवसे मुनिपति नामे राजर्षि मुनिनी बारमी प्रतिमा वहेवाने माटे हेमंतऋतुमां तेज वनने विषे कायोत्सर्गे रह्या हता. संध्याकाळे गायो चारीने नगरमां आवता गोवाळो ते मुनिने जोइ तेमने शीत न लागे तेवा

इरादाथी पोताना वस्त्र ते मुनिने ओढाडी पोतपोताने घेर गया हता. पेली स्त्री ते मुनिनी आगळ आवी, मुख उपर काजळ लगाडी, काळा वस्त्रो पहेरी, हाथमां उघाडुं खड्ग लइ अने माथे बळती सघडी लइ भयंकर शब्द करती शालिना चेत्रमां रहेला पोताना पति तिलभट्ट पासे गइ अने बोली के, "अरे तिलभट्ट! हुं भुखी छुं माटे तारुं भक्षण करीश. जो तारे जीववानी इच्छा होय तो तारी तलनी वखारो मने अर्पण कर." तिलभट्ट भयथी विह्वळ थइ तेना पगमां पडीने बोल्यो के, "हे माता! जाओ, मारी वखारना बधा तलनुं भक्षण करो."

आवुं चरित्र करीने ते स्त्री पाछी ज्यां मुनिपति मुनि काउसग्गध्याने रहेला हता त्यां आवी. तेणे विचार्युं के, 'मारुं आ चरित्र आ मुनिए जोयुं छे, तेथी ते सवारे लोकोनी आगळ कही देशे माटे ज्वळता अग्निथी तेने बाळी नाखुं.' आवुं चिंतवी मुनिना शरीर उपर रहेला वस्त्रो सळगावीने ते पोताने घेर गइ, अने असल वेष धारण कर्यो. मुनिपति मुनि तो प्रबळ आयुष्यने लीधे जीवता रह्या. तेमणे अग्निना प्रबळ उपद्रवमां पण शुभ ध्यान छोडयुं नहीं. ते वखते तेमणे चिंतव्युं के, 'अहो! आ अग्नि तो जड एवा शरीरना पुद्गलोने बाळे छे. पोतानुं घर दूर छतां बीजानुं घर बळतुं जोइने तो मूढ पुरुष शोक धरे छे. हे चेतन! तारुं घर तो ज्ञानादि गुणरूप छे, तेनुं यत्नथी समतारूप जळवडे सिंचन कर, के जेथी तेने क्रोधरूप अग्निनी ज्वाळा लागे नहीं.' आवा शुभ ध्यानमां तत्पर एवा ते मुनिना मुखनुं अवलोकन करवा सूर्यनो उदय थयो. सर्वत्र प्रातःकाळ थयो एटले पेला गोवाळीआओ त्यां आव्या. तेमणे मुनिनी आवी स्थिति जोइने ते नगरना कुंचिक नामना श्रेष्ठीने ते वात जणावी. कुंचिक शेठे अच्चंकारी श्राविकाने घेरथी लक्षपाक तेल लावीने तेवडे मुनिना देहने निरोगी कर्युं. पेलो तिलभट्ट रात्रे घेर आवी सुइ गयो. पण तेने भयथी ज्वर आव्यो अने विचारमां पड्यो के, 'अरेरे! मारी तलनी बधी वखारो गइ, हवे हुं शुं करीश?' आम विचारतां तेनुं हृदय फाटी जवाथी ते मृत्यु पाम्यो. पछी घणा भव सुधी ते तलमांज उत्पन्न थयो. प्राये करीने एम जाणवुं के, 'जे आ भवमां घांची थइने तल पीलवानुं काम करे छे ते मरीने तलमां उत्पन्न थाय छे अने तेणे तलपणे पीलेला जीवो तेने तिलयंत्रमां पीले छे.' आम विचारी श्रावकोए तल पीलवानो व्यापार छोडी देवो. इत्यादि यंत्रपीलण कर्म ते अग्यारमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

१२ बारमुं निलंछण कर्म—ते गाय विगेरेना कान, कांबल, शींगडा अने

पुंछ छेदवा, तेने नाथवा, आंकवा, नपुंसक करवा (खासी करवा), बाळवा, तेमज उंट प्रमुखनी पीठ गाळवी–ए नीलंछन कर्म कहेवाय छे. ते प्रमाणे करवाथी गाय, बळद, अश्व अने उंट विगेरेने घणी कदर्थना थाय छे, तेथी तेनो त्याग करवो. ए बारमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

१३ तेरमुं दवदान कर्म—ते अरण्यमां एक भागनो दाह करवाथी वनचर प्राणीओ सुखे चरे अने जुनुं घास बाळवाथी नवा अंकुरानी पेदाश वधे एटले गाय प्रमुखने घणो चारो थाय अथवा वृष्टि पहेलां जो क्षेत्रमां दव मूक्यो होय तो पछी तेमां घणा धान्यनी निष्पत्ति थाय. एवी इच्छाथी लोभबुद्धिवडे ते प्रमाणे करे. वळी भिल्ल प्रमुख पुण्यबुद्धिथी कहे छे के, 'अमारा श्रेयने अर्थे धर्मदीपोत्सवी करवी, एटले डुंगर उपर दव सळगाववो.' तेम वळी कोइ कौतुकथी पण दव सळगावे छे; तथा केटलाक हुताशणीमां मोटो अग्नि सळगाववाथी घणुं पुण्य माने छे. परंतु आवा दव लगाडवाथी कोटीगमे जीवोनो वध थाय छे. पांचमा अंग श्री भगवतीजीमां गणधर महाराजाए प्रभुने पूछयुं के "हे स्वामी! जे माणस अग्निने वधारे सळगावे तेने वधारे पाप के जे जळ के धूळवडे अग्निने बुझावे तेने वधारे पाप?" प्रभुए कह्युं के, "हे गौतम! जे अग्निने वधारे ते क्लिष्ट कर्म बांधे अने जे बुझावे ते अक्लिष्टतर (घणां हळवां) कर्म बांधे.' तेथी श्रावके दव मूकवा संबंधी कर्म करवुं नहीं. आ तेरमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

१४ चौदमुं सरशोषण कर्म–सरोवर विगेरेने शोषवामां जळचर प्राणी मत्स्य विगेरेनो तेमज छजीवनिकायनो वध थाय छे, माटे ते कर्म पण त्यजी देवुं. ए चौदमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

१५ पंदरमुं असतिपोषण कर्म–पैसा कमाववाने माटे दुःशील दासीओ राखवी. शुक, सारिका, मोर, मार्जार, कुकडा, मांकडा, श्वान अने डुक्कर विगेरेनुं पोषण करवुं–ए 'असतिपोषण' कहेवाय छे. कारणके एवा जीवो जो अशुभ अन्नपानथी पोषण पामवावडे पुष्ट थाय छे, तो उंदर, सशला विगेरे घणा जीवोनी हिंसा करी पोताने सुख करनारा थाय छे. आवुं विचारी तेमनुं पोषण करवुं नहीं. तेमनुं पोषण करवाथी पापनी वृद्धि थाय छे; तोपण तेओने अभयदान तो आपवुं. ए पंदरमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

आ प्रमाणे पंदर कर्मादाननो त्याग करवो. श्रीभगवतीजी अंगमां श्रावकने माटे पंदर कर्मादाननो सर्वथा निषेध कहेलो छे ते उत्सर्गीक जाणवो. कह्युं छे के,

" जे पुण्य धर्मने बाधा करनारुं होय अने यश आपे तेवुं न होय तेवुं पुण्य घणा लाभवाळुं होय तोपण पुण्यार्थी पुरुषोए ग्रहण करवुं नहीं. " परंतु कदि बीजो धंधो थइ शके तेम न होय, अथवा दुष्काळ पडेलो होय अथवा राजानी आज्ञा थइ होय-इत्यादि कारणोथी जो ते निंदित व्यापारोनो सर्वथा त्याग थइ शके नहीं-तेमांथी कोइ कार्य करवुं पडे तो श्रावक अपवादरूपे करे; पण पोताना आत्मानी निंदा करतो सतो सशूगपणे करे. महाराजा सिद्धराजे करेला सोरठदेशना स्वामी सज्जन दंडनायके जेम ते देशनी पेदाशनुं सर्व द्रव्य रेवताचलमां पुण्यरूपे वापर्युं हतुं तेम.

" आ प्रमाणे प्रथम कहेला पांच अतिचार परिभोगथी अने पंदर कर्मादानथी-एम वीश अतिचार थाय छे. तेनुं उपर प्रमाणे स्वरूप जाणी सुज्ञ पुरुषोए आ सातमुं व्रत आचरवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
सप्तमव्रतविषये चतुर्विंशत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१२४॥

व्याख्यान १२५ मुं.

पूर्वे पापव्यापारनो निषेध कह्यो त्यारे कया प्रकारे द्रव्यवृद्धि करवी ते कहे छे.

जाहित्वा खरकर्माणि, न्यायवृत्तिममुंचकः ।
शुद्धेन व्यवसायेन, द्रव्यवृद्धिर्व्रजेत् गृहि ॥ १ ॥

" खरकर्मो तजीने, न्यायवृत्ति मूक्या सिवाय, शुद्ध व्यवसायवडे गृहस्थ द्रव्यवृद्धि करे. " खरकर्म एटले निर्दय जनोने उचित एवा कोट्टवाळ गुप्तिपाळ (जेलर) अने सीमपाळ विगेरेनी नोकरी-के जे अत्यन्त पापव्यापारवाळी छे ते श्रावके न करवी; अने सज्जनोने स्तुति करवा योग्य एवी न्यायवृत्ति राखवी-शुद्ध निष्टा राखवी. कारणके परमार्थे तो द्रव्य उपार्जननुं हेतु न्यायवृत्तिज छे. कह्युं छे केः—

सुधिरर्थार्जने यत्नं, कुर्यान्न्यायपरायणः ।
न्याय एवानपायेय-मुपायं संपदां यतः ॥ १ ॥

"डाह्या मनुष्यो न्यायपरायणपणेज द्रव्य उपार्जन करवानो यत्न करे छे; कारणके संपदा मेळववानो कष्ट विनानो उपाय न्यायज छे." उपलक्षणथी देव, ज्ञान, पाखंडी अने पासथ्थाना धनवडे, तेमज देश, काळ अने जाति विगेरेने अनुचित एवा व्यापार करवावडे जे द्रव्य मेळववुं ते पण अन्यायवृत्ति छे.

देवद्रव्य तो व्याजे लेवुं ते पण महान् दोषोने आपनारुं छे. ते विषे लौकिकशास्त्रमां पण कह्युं छे के:—

देवद्रव्येण या वृद्धि–र्गुरुद्रव्येन यद्धनं ।
तद्धनं कुलनाशाय, मृतोपि नरकं व्रजेत् ॥ १ ॥

" देवद्रव्यथी जे द्रव्यवृद्धि करवी अने गुरुद्रव्यथी जे धन मेळववुं, ते धन कुळना नाशने अर्थे थाय छे, अने ते द्रव्यनो मेळवनार मृत्यु पामीने पण नरके जाय छे. " आ विषे एक महाभारतमां दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे–पूर्वे श्रीरामचंद्रजीना राज्यमां एक वखते कोइ श्वान राजमार्गमां बेठो हतो. तेने कोइ ब्राह्मणे कांकरावडे मार्यो; एटले ते श्वान रोष करी पोताने निरपराधे मारनार ब्राह्मणना वस्त्रनो छेडो मजबुत पकडीने बोल्यो के–' अरे विप्र ! तें मने निरपराधीने केम मार्यो ?" ते समये ए कौतुक जोवाने घणा लोको एकत्र मळ्या; अने तेमने न्यायसभामां लइ गया. राजा रामचंद्रे श्वानना मुखथी बधी हकीकत सांभळी पेला ब्राह्मणने दंड करवा योग्य गणी श्वानने पूछयुं के, ' आ तने मारनार ब्राह्मणनो शो दंड करुं ? ' श्वान बोल्यो के–' ते दुष्टने कोइ महादेवनो पूजारी करो. ' राजाए पूछयुं के, ' एवो दंड आपवानुं शुं कारण ? ' श्वान बोल्यो–" महाराज ! आजथी सातमे भवे हुं कोइ महादेवनो पूजारी हतो. हंमेशा महादेवनी पूजा करी रखे देवद्रव्य खावामां आवे एवा भयथी हुं हाथ धोइने भोजन करतो हतो. एक वखते एवुं बन्युं के, कोइ पर्वनो दिवस आव्यो एटले महादेवनुं लिंग दुध दहीं अने घृतवडे पूरवामां आव्युं. पछी महादेवनी पखाल करवा वखते जामी गयेलुं घी मारा नखमां भराइ रह्युं. भोजन करती वखते उष्णताने लीधे ते घी ओगळी गयुं, ते अणजाणपणे मारा खावामां आवी गयुं. ते देवद्रव्य भक्षणना दुष्कृत्यथी हुं सात भवथी श्वाननो अवतार पाम्या करुं छुं. आ भवे तमारा प्रभावथी जातिस्मरण थतां मने मानुषी वाणी प्राप्त थइ छे." आ वात सांभळी ते ब्राह्मणे श्वानने प्रसन्न करी ते सिवाय कोइ बीजो दंड कराववा प्रार्थना करी.

आवी रीते अजाणपणे पण जो देवद्रव्य खावामां आवे तो दुःखनुं कारण

थाय छे, तेथी विवेकी पुरुषोए पोतानी शक्ति प्रमाणे देवद्रव्यनुं रक्षण करवुं. आ वृत्तांत सांभळी अनेक रीते अन्यायवृत्ति छोडी देवी, यशोवर्मा राजानी जेम क्यारे पण नीति छोडवी नहीं.

यशोवर्मा राजानी कथा.

कल्याणकटक नामे नगरमां यशोवर्मा नामे राजा राज्य करतो हतो. ते न्याय आपवामां सदा तत्पर रहेतो. लोकोने न्याय आपवाने माटे तेणे पोताना गृहना द्वार उपर एक न्यायघंटा बांधी हती. एक वखते तेना राज्यनी अधिष्ठात्री देवी राजा यशोवर्मानी न्यायवृत्तिनी परीक्षा करवाने एक गायनुं रूप अने तेनी साथे एक तत्काळ जन्मेला वाछडानुं रूप करीने राजमार्गमां बेठी. ते वखते यशोवर्मा राजानो पुत्र पोताना वाहनने वेगथी दोडावतो त्यां आव्यो. वेगने लीधे तेनी गाडी वाछडानी उपर थइने पसार थइ गइ, तेथी ते वत्स मृत्यु पाम्यो. ते जोइ गाय मोटे स्वरे रुदन करवा लागी अने अश्रुधारा छोडवा लागी. कोइए गायने सूचना करी के, राजद्वारे जइ फरियाद करीने न्याय मेळव; एटले गाय त्यां गइ अने तेणीए शींगडाना अग्रभागवडे पेली न्यायघंटा वगाडी. राजा यशोवर्मा ते वखते भोजन करवा बेठो हतो. तेणे घंटानो शब्द सांभळी सेवकोने कह्युं के, “कोण घंटा वगाडे छे ? तपास करो.” सेवकोए जोइने कह्युं के, “ महाराज ! कोइ नथी, आप भोजन करी ल्यो. ” राजा बोल्यो–“ निर्णय कर्या सिवाय केम भोजन थाय ? ” एम कही भोजननो थाळ छोडी राजद्वारनी दोढीए आवीने जोयुं तो त्यां बीजुं कोइ जोवामां आव्युं नहीं, पण पेली गायने दीठी. एटले कह्युं के, “ हे धेनो ! शुं तारो कोइए पराभव कर्यो छे ? कर्यो होय तो ते मने बताव. ” ते सांभळी गाय आगळ चाली एटले तेनी पछवाडे राजा चाल्यो. गाये पेलो मृत्यु पामेलो पोतानो वाछडो ज्यां पड्यो हतो त्यां लइ जइ ते बताव्यो. ते जोइ राजाए सर्वेनी वच्चे कह्युं के, “ जेणे आ वत्स उपर गाडी हांकी होय, ते मारी आगळ हाजर थइ जाओ. ” बधा ते वाक्य सांभळी रह्या, पण कोइ प्रगट थयुं नहीं; एटले राजाए प्रतिज्ञा करी के, ‘ ज्यारे आ वार्त्ता स्फुट थशे, अर्थात् आनो गुन्हेगार मळशे त्यारे हुं भोजन करीश.” राजाने एक लांघण थइ एटले बीजे दिवसे प्रातःकाळे राजकुमारे आवीने जणाव्युं के, ‘ हे देव ! तेमां हुं अपराधी छुं, तेथी जे योग्य लागे ते दंड करो. ’ पछी राजाए नीतिशास्त्रने जाणनारा विद्वानोने एकठा करीने पूछयुं के, ‘ आ राजकुमारने शो दंड

आपवो जोइए ? " नीतिवेत्ताओए कह्युं—" महाराजा ! राज्यने योग्य आ एकज पुत्र छे, तेने शो दंड होय ? " राजा बोल्यो—" राज्य कोनुं ? अने पुत्र कोनो ? मारे तो नीतिज मोटी छे. सोमनीतिमां कह्युं छे के, पोतानो पुत्र होय तोपण तेने अपराध प्रमाणे दंड आपवो जोइए; तेथी जे तेने योग्य दंड होय ते कहो. " आवां राजानां वचनो सांभळी ते विद्वानोमांथी एक बोल्यो के—'नीतिमां एम कह्युं छे के, जे बीजाने जेवी व्यथा करे तेवी व्यथा तेने करवी; कारणके जे जेवुं करे तेने तेवुं करवुं जोइए. " ते सांभळी राजाए पोतानी गाडी मंगावी अने पुत्रने बोलावी कह्युं के. 'हे पुत्र ! तुं अहीं सुइ जा.' ते विनितपुत्र तत्काळ सुइ गयो. राजाए सेवकोने कह्युं के, 'आ कुमारनी उपरथी गाडी वेगवडे पसार करो. ' कोइ तेम करी शक्युं नहीं. उलटा सर्व राजाने वारवा लाग्या. ते छतां राजा तेमनुं नहीं मानीने पोते गाडी उपर बेसी पुत्रना चरण उपरथी जेवामां गाडीने पसार करवा जता हता, तेवामां देवीए प्रगट थइ राजानी उपर पुष्पनी वृष्टि करी अने गाय के वत्स कांइ जोवामां आव्युं नहीं. देवी बोली—' हे राजन् ! में तारी परीक्षा करवा माटे बधी रचना करी हती. प्राणप्रिय एवा एकना एक पुत्रथी पण तने न्याय व्हालो छे एम सिद्ध थयुं छे, माटे धन्य छे तने, तुं निर्विघ्ने राज्य कर. '

आ प्रमाणे न्यायसंबंधी दृष्टांत मनमां धारण करीने गृहस्थ-एटले श्रावके न्यायवृत्ति छोडवी नहीं. शुद्ध व्यापारवडे द्रव्यनी वृद्धि करवी. ते शुद्ध व्यापार चार प्रकारना छे. १ यथार्थ बोलवुं. २ वंचना (ठगवा) वगरनी क्रिया करवी. ३ अपायनुं प्रकाश न करवुं (चाडी न खावी). ४ सद्भाव (मैत्रीभाव) राखवो. तेमां जे प्रथम ' यथार्थ बोलवुं ' ते आ प्रमाणे—" धर्म तथा अधर्मने जाणनारा भावश्रेष्ठ पुरुषो बीजा ठगाय तेवुं न बोले; हमेशां सत्य अने मधुर वचनज बोले. तेमां पण धर्मने पीडा करे तेवुं तो कदि पण बोलेज नहीं. ' कमळश्रेष्ठी विगेरेनी जेम.

बीजो प्रकार जे ' अवंचिका क्रिया ' एटले जेथी बीजाने व्यसन-दुःख थाय तेवा हेतुवाळी मन, वचन अने कायाना व्यापाररूप चेष्टा न करवी. ते अवंचिका क्रिया. जेम के, "जे शुद्ध धर्मनो अर्थी होय ते प्रतिरूप विधिवडे तेमज खोटां त्राजवां, काटलां विगेरेथी ओछुं वधतुं लेवा देवावडे बीजाने छेतरे नहीं."

त्रीजो प्रकार ' अपाय प्रकाश करवो नहीं ' एटले जे अशुद्ध व्यापार

---

१ वेचवानी वस्तुमां भळी शके तेवी ओछी किंमतनी वस्तु मेळववी.

करवाथी भावी अनर्थ थाय; जेवा के. राजदंड अने नरकमां पडवुं विगेरे. तेवा अशुद्ध व्यापारनो प्रकाश करवो नहीं, अर्थात् तेवी कोइनी चाडी खाइने पोताना धनने वधारवुं नहीं.

चोथो प्रकार 'मैत्रीपणानो भाव राखवो' एटले सारा मित्रनी जेम निष्कपटपणे वर्त्तवुं. दंभथी कोइने छेतरवुं नहीं. एवी रीते न वर्त्ततां जे प्राणी गायना जेवा मुखवाळी अने वाघना जेवा आचरणवाळी वृत्तिथी व्यवहार करे छे ते कोइनो विश्वासपात्र थतो नथी अने पापनुं भाजन थाय छे. आ प्रमाणे जाणीने शुद्ध वृत्तिथी द्रव्यनी वृद्धि करवी. गृहस्थोने दरेक कार्यनी सिद्धि द्रव्यथी थाय छे, परंतु धर्मथी अविरुद्ध व्यापारवडे वैभवनी वृद्धि करवी. ए सर्वनो भावार्थ छे.

" देश, जाति अने कुळना धर्मनो नाश करनार कुबुद्धिने छोडी देवाथीज नीतिमां तत्पर थवाय छे अने तेवा नीतिवान्‌पणाथीज उत्तम उपासक (श्रावक) शुभ संपत्तिने अने व्यापारनी शुद्धिने प्राप्त करे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
सप्तमव्रतविषये पंचविंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥१२५॥

व्याख्यान १२६ मुं.

शुद्ध व्यापार केवी रीते थाय ? ते कहे छे.

निंदायोग्यजनैः सार्द्धं कुर्यान्न क्रयविक्रयौ ।
द्रव्यं कस्यापि नो देयं साक्षिणं भूषणं विना ॥१॥

भावार्थः—" निंदा करवा योग्य लोकोनी साथे खरीदी के वेचाणनुं काम करवुं नहीं अने साक्षी राख्या विना के घरेणा विना कोइने द्रव्य आपवुं नहीं. "

विस्तारार्थ—निंदा करवा योग्य लोको जेवा के, नट, धूतारा, वेश्या, कलाल, कसाइ, माछी, वागुरिक (वाघरी), राजद्रोही अने पूजारा विगेरे, तेमनी साथे गृहस्थे क्रयविक्रय (खरीदी के वेचाण) न करवा. तेमज शस्त्रधारी पुरुषोनी तथा राजा विगेरेनी साथे अल्प पण व्यवहार करवाथी प्राये कांइ पण गुण थतो नथी; केमके जेने पोताने हाथे द्रव्य आपीने पाछुं मागतां

भय उत्पन्न थाय तेनी साथे व्यवहार करवाथी शुं शुभ फळ थाय ? कह्युं छे के, " ब्राह्मण साथे अने शस्त्रधारीनी साथे श्रेय इच्छनार वणिके कदिपण व्यवहार करवो नहीं. "

वळी जे जुगार अने धातुवाद प्रमुखथी द्रव्यनी इच्छा करे छे, तेओ मेशना कुचडाथी पोतानुं घर धोळुं करवाने इच्छे छे. कदि तेवा प्रकारथी के अशुद्ध व्यवहार करवाथी लाभ प्राप्त थाय तो ते लाभ लांबो काळ रहेतो नथी. कह्युं छे के, " खोटा माप अने खोटा तोलथी जे कांइ द्रव्य उपार्जन थाय छे ते तपेला पात्र उपर मूकेलां जळना बिंदुनी जेम नाश पामतुं जोवामां पण आवतुं नथी. "

वळी घणा लोकोनी साक्षी वगर कोइने द्रव्य आपवुं नहीं. तेमज न दीठेलुं अने परीक्षा कर्या वगरनुं करियाणुं लेवुं नहीं. अने लेवुं त्यारे पण घणा लोकोना समुदाय समक्ष लेवुं के जेथी कदि वांधो पडे तो ते जोनारा साक्षीओ सहाय आपे. साक्षी राखीने आपेलुं द्रव्य वा कोइ वस्तु पुनः काळांतरे पण प्राप्त थाय छे. ते उपर एक वणिकनुं दृष्टांत कहेवाय छे ते आ प्रमाणे:—

धूर्त्त वणिकनुं दृष्टांत.

कोइ धनाढ्य धूर्त्त वणिक विदेशे जतो हतो. मार्गे चालतां एक अरण्य आव्युं. तेमां चोरलोकोनी धाड मळी. तेणे वणिकने जुहार करी तेनी पासेथी द्रव्य माग्युं. वणिके कह्युं, ' कोइ साक्षी राखीने बधुं द्रव्य खुशीथी ल्यो, कोइ अवसरे मने पाछुं आपजो अने मने मारशो नहीं. ' चोरोए विचार्युं के, ' आ वणिक मुग्ध (भोळो) जणाय छे. ' पछी तेमणे कोइ बिलाडाने साक्षी राखी तेनुं सर्व द्रव्य लइने तेने छोडी मूक्यो. ते वणिक अनुक्रमे ते चोरलोकोना गामठाम विगेरे जाणी लइने पोताने गामे गयो. केटलेक काळे ते चोरलोको घणी वस्तुओ लइने वेचवा माटे तेना गाममां आव्या. वणिके तेमने ओळखीने पोते आपेलुं द्रव्य माग्युं. चोरोए आनाकानी करवा मांडी एटले परस्पर कळह थइ पड्यो. न्यायाधीश आगळ तेओ गया. न्यायाधीशे पूछ्युं के, ' आ वातमां कोइ साक्षी छे ? ' एटले पेलो वणिक कोइ काळा बिलाडाने लइ आवी पोतानी काखमां राखीने बोल्यो के, ' आ बिलाडो साक्षी छे. ' चोरलोकोए कह्युं के, ' अमारे ते साक्षी जोवो छे, के ते केवो साक्षी छे ? ' वणिके चोरोने ते बताव्यो, एटले चोरलोको बोली उठ्या के-' नहीं, आ तो काळो छे अने ते तो कावरो हतो. ' आ प्रमाणेनां तेनां वचनो सांभळी तेमना मुखनीज कबुलात

जाणी न्यायाधीशे तेमनी पासेथी बळात्कारे सर्व द्रव्य पेला वणिकने अपाव्युं. आ दृष्टांत उपरथी साक्षी राखवानुं फळ जाणी कोइने साक्षी विना गुप्त रीते कांइपण द्रव्य आपवुं नहीं के मूकवुं नहीं.

तेमज कोइने अलंकार (घराणुं) लीधा विना अंगउधारे द्रव्य आपवुं नहीं. कारण के तेम करवाथी कदिपण मूळ धननो नाश थतो नथी. कह्युं छे के, " धननी रक्षा करवामां परायण एवा पुरुषे नटने, वेश्याने, जुगारीने अने जारपुरुषने उधारे द्रव्य आपवुं नहीं. " तेमां पण मुख्य रीते गृहस्थोए वधारे किंमतनुं घराणुं राखीने द्रव्य आपवुं योग्य छे. नहीं तो मागती वखते क्लेश, विरोध, धर्मनी हानि, लांघण, धरणुं घालीने बेसवुं अने सोगन खावा विगेरे अनेक अनर्थ करवा पडे छे. तेमां कदि सोगन खावानो वखत आवे तोपण जेमतेम सोगन खावा नहीं. तेमां पण विशेषे करीने देव, गुरु, ज्ञान, धर्म अने तीर्थयात्रा विगेरेना सोगन खावा नहीं. ते विषे पूर्वविद्वानो कहे छे—" जे मूढ पुरुषो खोटा के साचा चैत्यना सोगन ले छे, ते बोधिबीजनुं वमन करे छे अने अनंत संसारी थाय छे. "

वळी जो कदि लांघण करवाथी कार्यसिद्धि थाय तेम लागे तो पोते जाते लांघण करवी, पण बीजा बाळ वृद्ध प्रमुखने लांघण कराववी नहीं. कारण के ढंढणऋषिए एक क्षणमात्र पंदरसो जीवोने लांघण करावी हती, तेथी तेमने छ मास सुधी आहार मळ्यो न हतो. इत्यादि अनेक दोषोनी उत्पत्ति पोतानी बुद्धिथी विचारीने वधारे किमतनुं घराणुं राखीने द्रव्य आपवुं. आ विषयनी हितशिक्षा माटे पूर्वमुनिओए एक दृष्टांत कहेलुं छे, ते आ प्रमाणेः—

पूर्वमुनिओए कहेलुं दृष्टांत.

जिनदत्त नामना कोइ श्रेष्ठीने मुग्ध (भोळो) एवा नामे पुत्र हतो. स्वभावे पण ते मुग्ध हतो. पितानी पासे पुष्कळ द्रव्य होवाथी ते निश्चिंत रहेतो हतो. एक वखते जिनदत्तनो अंतकाळ आव्यो, एटले तेणे पोताना पुत्रमां भोळापणानो गुण जोइ गूढार्थ वाक्योथी आ प्रमाणे शिक्षा आपी—" हे वत्स ! १ घरनी आसपास दांतनी वाड करवी. २ बीजाने धन आप्या पछी मागवुं नहीं. ३ माथे जरा पण बोजो उपाडवो नहीं. ४ हमेशां दिवसने सफळ करवो. ५ स्त्रीने स्थंभ साथे बांधीने मारवी. ६ मिष्टान्न भोजन करवुं. ७ सुखे शयन करवुं. ८ प्रत्येक गामे घर करवुं. ९ दुरवस्था आवे त्यारे गंगा अने यमुनानी

वचे खोदवुं. जो ए बाबतमां कांइ शंका पडे तो मारा मित्र सोमदत्तने पूछवुं. अने १० प्रत्येक क्षेत्रे धन वाववुं."

आ प्रमाणे कही श्रेष्ठी जिनदत्त मृत्यु पाम्या. त्यारपछी पिताना शिक्षाना गूढ अर्थथी अजाण एवो तेनो पुत्र ते प्रमाणे करवाथी निर्धन थइ गयो, एटले मुंझाइने पाटलीपुत्र नगरमां पिताना मित्र सोमदत्त श्रेष्ठीने घेर गयो. श्रेष्ठीए तेने मुग्ध जाणी घणीवार खोटी करीने पछी चोळा प्रमुखनुं भोजन पीरस्युं. ते क्षुधापीडित होवाथी सुखडीनी जेम खाइ गयो. पछी नाम्नुं मांडवा विगेरेमां घणी रात्रि निर्गमन करावी एटले ते मुग्ध बगासां खावा लाग्यो अने अंग मरडवा लाग्यो; एटले तेने मांकणवाळो मांचो सुवा आप्यो. जेमां ते तत्काळ निद्रावश थइ गयो. श्रेष्ठीए ब्रह्ममुहूर्ते (चार घडी रात्रि बाकी होय त्यारे) तेने जगाड्यो. मुग्धे प्रातःकाळे उठीने पिताए कहेली शिक्षानो भावार्थ पूछयो, एटले श्रेष्ठीए कह्युं-" सांभळ, घरनी आसपास दांतनी वाड करवी, एटले सर्वनी आगळ हितकारी अने प्रिय वचन बोलवुं, के जेथी पोताना मुखमां रहेला दांतनी पोतानी फरती वाड थाय छे. कह्युं छे के,

जीह्वामें अमृत वसे, विष भी उनके पास;
एके बोल्ये कोडी गुण, एके कोडी विनाश ॥ १ ॥

' जिव्हामां अमृत अने विष बंने वसे छे. एक वचने कोडोगमे गुण थाय छे, अने एक वचने कोटीगमे विनाश थाय छे. ' आ प्रमाणे पहेली शिक्षानो भावार्थ समजवो. १

" बीजाने धन आप्या पछी मागवुं नहीं " एटले सवायुं के दोढुं घरेणुं राखीनेज द्रव्य आपवुं के जेथी तेनी पासे मागवा जवुं पडे नहीं. ते पोतानी मेळेज देवा आवे. आ प्रमाणे " द्रव्य आप्या पछी मागवुं नहीं " एवी बीजी शिक्षानो भावार्थ छे. २

" माथे बोजो उपाडवो नहीं " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, माथापर करज संबंधी भार राखवो नहीं. ते विषे श्री जिनागममां कह्युं छे के, " जे प्रमाणे निर्वाह थइ शके ते प्रमाणेज वचन बोलवुं अने अर्धे मार्गे छांडवो पडे नहीं तेटलो भार उपाडवो." वळी करज कापवामां पण विलंब करवो नहीं. कयो मूढ पुरुष आ लोक अने परलोकना कारणरूप ऋणने क्षणमात्र पण धारण करे. कह्युं

छे के, " धर्मना आरंभमां, करज फीटाडवामां, कन्यादानमां, द्रव्यनी प्राप्तिमां, शत्रुनो घात करवामां, अग्निने बुझाववामां अने रोगने शमाववामां काळक्षेप करवो नहीं. " तैलनुं मर्दन, करजनुं फीटाडवुं अने कन्यानुं मृत्यु-ए तत्काळ तो दुःखरूप लागे छे पण परिणामे सुखरूप छे. आ भवमां जो करज आपे नहीं तो भवांतरमां तेनो सेवक अथवा पाडो थइने अवतरवुं पडे छे. वळी करज राखवाथी बंनेने परस्पर भवांतरे वैरवृद्धि प्रमुख पण थया करे छे.

एवी एक कथा छे के, भावड श्रेष्ठीने पूर्वना ऋण संबंधे एक पुत्र थयो हतो. ते नठारा स्वप्नथी सूचवेलो अने मृत्युयोगमां उत्पन्न थयो हतो तेथी श्रेष्ठीए तेने नदीना तीर उपर रहेला कोइ वृक्ष नीचे छोडी दीधो. ते वखते ते बाळक प्रथम रुदन करी पछी हसतो हसतो बोल्यो के, "हे श्रेष्ठी ! हुं तमारी पासे लाख सोनैया मागुं छुं, ते आपो, नहीं तो तमने अनर्थ प्राप्त थशे. " एटले श्रेष्ठीए तेने पाछो घरे लइ जइने तेना जन्मोत्सव विगेरेमां पुष्कळ द्रव्य खर्च्युं. षष्ठीने दिवसे लक्ष सोनैया पूरा खर्चाइ गया, एटले ते मृत्यु पामी गयो. एवी रीते बीजो पुत्र त्रण लाख पूरा खर्च करावी मृत्यु पाम्यो. त्रीजो पुत्र सारा स्वप्नाथी सूचित आव्यो. तेणे कह्युं के, " मारे तमारा ओगणीश लाख सोनैया देवा छे. " ते पुत्रनुं नाम जावड पाड्युं. तेणे मातापिताने निमित्ते धर्मकार्यमां तेटलुं द्रव्य खर्चवानो निर्णय कर्यो. पछी काश्मीर देशमांथी नव लाख सोनैया खर्ची श्रीऋषभ, पुंडरिक अने चक्रेश्वरीनी मूर्त्तिओ लइ आव्यो. एक लाख सोनैया खर्ची तेनी प्रतिष्टा (अंजनशलाका) करावी. ते पछी अढार वहाण वडे व्यापार करी असंख्य द्रव्य उपार्जन कर्युं. ते द्रव्यवडे शत्रुंजय उपर लेप्यमय बिंब हता ते उत्थापी तेने स्थाने मणिमय बिंबनी प्रतिष्टा करी.

आ कथा सांभळीने धर्मार्थी पुरुषे ते भवमांज ऋणनो संबंध मुक्त करवो. पोतानो देवादार माणस जो करज आपवाने असमर्थ होय तो ' जो शक्ति थाय तो आपजे, नहीं तो मारे धर्मस्थाने हजो. ' एम तेनी आगळ कही देवुं, पण ऋणनो संबंध चिरकाळ राखवो नहीं. आ प्रमाणे बंने जणे परस्पर विवेक करवो. आ प्रमाणे प्रसंगोपात कहेली वार्ताथी जाणवुं के, ऋणनो भार माथापर राखवो नहीं. इति तृतिय शिक्षार्थः (३).

" दिवसने सफळ करवो " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, गृहस्थे दररोज कांइपण द्रव्य पेदा करवुं; केमके गृहस्थनो दिवस तेथी सफळ थाय छे. कह्युं छे के, " वणिक, वेश्या, कवि, भाट, चोर, जुगारी अने ब्राह्मण जे

दिवसे नवा द्रव्यनो लाभ थाय नहीं, ते दिवसने निष्फळ माने छे." गीत, नृत्य अने निंदा विकथा विगेरे करवावडे दिवस गाळवाथी दिवस सफळ थतो नथी. (इति चतुर्थ शिक्षार्थः) ४.

"स्त्रीने स्थंभ साथे बांधीने मारवी" ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, स्त्रीने छोकरांवाळी थया पछीज शिक्षा करवी घटे तो करवी के जेथी ते पुत्रादिकना स्नेहरूप स्थंभ साथे बंधायेली होवाथी ताडन करवाथी पण कांइ विपरीत करी शकती नथी. (इति पंचम शिक्षार्थः) ५.

"मिष्टान्न भोजन करवुं" ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, ज्यारे सारी पेठे क्षुधा लागे त्यारे खावुं. तेवे वखते जे कांइ भोजन करीए ते सर्व मिष्ट लागे छे, कांइ पक्वान्नज मिष्ट कहेवाता नथी. गइ काले तें जे भोजन कर्युं ते हलकुं भोजन हतुं, तो पण तने केवुं मिष्ट लाग्युं हतुं ? तेम हमेशां ज्यारे क्षुधा लागे त्यारेज भोजन लेवुं. श्रावकना पांत्रीश गुणोना विवरणमां कह्युं छे के,

अजीर्णे भोजनत्यागी, काले भोक्ता च सात्म्यतः ।

"अजीर्ण होय त्यांसुधी भोजननो त्याग करे अने वखतसर पोताना शरीरने अनुकूळ भोजन करे." पूर्वे करेलुं भोजन अपक्व छतां नवुं भोजन करवाथी घणा रोग थाय छे. वैद्यकशास्त्रमां कह्युं छे के, "मळमां अने वायुमां दुर्गंध छुटे, विष्टा अपचा जेवी आवे, शरीर भारे लागे, अन्न उपर अरुचि थाय अने अशुद्ध ओडकार आवे-ए छ अजीर्णनां स्पष्ट चिन्हो छे." तेथी अजीर्ण सते भोजन छोडी देवुं अने भुख लागे त्यारे वखतसर खावानी लोलुपता छोडीने भोजन करवुं. कह्युं छे के,

कंठनालमतिक्रांतं, सर्वं तदशनं समं ।
क्षणमात्रसुखस्यार्थे, लौल्यं कुर्वीत नो बुधाः ॥ १ ॥

"गळाथी नीचे उतर्या पछी बधुं भोजन सरखुं छे, माटे मात्र क्षणिक सुखने माटे प्राज्ञपुरुषोए लोलुपता करवी नहीं."

जिव्हे प्रमाणं जानिही, भोजने वचने तथा ।
अतिभुक्तमतिवोक्तं, प्राणिनां मरणप्रदं ॥ १ ॥

"हे जीव्हा ! तुं भोजन अने वचनमां प्रमाण राखजे. कारण के, अति

करेलुं भोजन अने अति बोलेलुं वचन प्राणीओने मृत्युदायक थइ पडे छे." क्षुधा लागी होय ते वखते खाधेलुं विष पण अमृत जेवुं थाय छे. एवी एक वार्त्ता छे के, 'कोइ राजा वखतसर भोजन करतो हतो. तेने रोगी करवाने माटे कोइ वैद्ये रसोइआने शिखव्युं के, 'तारे कांइ मिष करीने रसोइ करवाना वखतमां विलंब करी राजानो भोजन वखत उल्लंघन कराववो.' रसोइआए तेम कर्युं. राजाए रसोइमां विलंब थशे एम जाणी भीनी कणिकमां घी गोळ मिश्र करी खाइ लीधुं अने तेवी रीते भोजननो वखत साचवी लीधो; तेथी ते खाधेलुं पण राजाने पची गयुं, अजीर्ण न थयुं, तेथी पेलो वैद्य विलखो थयो.' आ प्रमाणे प्रसंगोपात जणावेली हकीकतथी जाणवुं के ज्यारे क्षुधा लागे छे त्यारे गमे तेवुं भोजन पण मिष्ट लागे छे. ६.

"सुखे शयन करवुं" ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, ज्यारे बराबर निद्रा आववा लागे त्यारेज सुवुं; अन्यथा सुवुं नहीं. काले में जे मांचो आप्यो हतो तेमां तने केवी सुखे निद्रा आवी हती ? तेवी रीते महेनत करीने ज्यारे निद्रा आवे त्यारे सुवानी टेव पाडवी. ७.

"गामेगाम घर करवुं" ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, प्रत्येक ग्रामे मैत्री करवी के जेथी ज्यां जइए त्यां पोताना घरनी जेम सर्व भोजनादि साध्य थाय. ८.

"दुरवस्था आवे त्यारे गंगा अने यमुनानी वच्चे खोदवुं" ते शिक्षानो भावार्थ एवो छे के गंगा अने यमुना नदी नहीं पण तारे घेर गंगा अने यमुना नामनी बे गायोनी कोंढ छे, तेनी वच्चे खोदवुं. त्यां तारा पिताए द्रव्य डाटेलुं छे. ९.

"प्रत्येक क्षेत्रे धन वाववुं" तेनो अर्थ एवो छे के, क्षेत्र एटले धर्मस्थान, तेमां धन वाववुं के जेथी महत्फळ प्राप्त थाय. लोकमां पण 'एकगणुं दान अने सहस्रगणुं पुण्य' एवी कहेवत छे. खात्रना ढगलावाळा क्षेत्रमां धन नाखवुं, एम एनो अर्थ न समजवो. वळी साधर्मीरूप क्षेत्रमां धन वाववुं, एटले तेमनी साथे व्यवहार करवो ए योग्य छे. कारण के कदि तेनी पासे द्रव्य रही जाय तोपण तेनो उपयोग धर्मकार्यमांज थाय; पण नीच माणसरूप क्षेत्रमां धन नाखी देवुं नहीं. १०.

"एवी रीते मुग्ध पुत्र पिताए आपेलो शिक्षानो गूढार्थ जाण्या वगर

दुःखी थयो अने पाछळथी तेनो भावार्थ समजी शुद्ध व्यवहार करवाथी सुखी थयो, तेम बीजाओए पण ते दृष्टांतनो सार समजी शुद्ध व्यवहार करवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ सप्तमव्रतविषये षट्विंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १२६ ॥

व्याख्यान १२७ मुं.

शुद्ध व्यवहार विषे बीजी विशेष हितशिक्षा कहे छे.

कार्पण्याच्चातिराटित्वं, न कुर्यादर्थम(र्या)र्जकः ।
मायाबुद्धिं च सर्वत्र संत्यजद्व्यवसायवान् ॥ १ ॥

भावार्थः—"द्रव्यनी वृद्धि करवाने इच्छनारा व्यापारीए कृपणपणाने लइने अति राडियापणुं करवुं नहीं अने सर्व ठेकाणे कपटबुद्धिनो त्याग करवो."

विस्तारार्थः—द्रव्य उपार्जन करवाने इच्छनारा पुरुषे कृपणता करवी नहीं. कृपणता करवाथी भुवनभानु केवलीना जीवे सोमदत्तना भवमां पोताना मामाना पुत्रनी पासे द्रव्य मागवा जतां लांघण करीने कोटी रत्न लीधां हतां. पछी शेष रहेलां पांच रत्नने माटे पोते अने तेना मामानो पुत्र सात दिवस सुधी भुख्या रह्या, तेमां तेना मामानो पुत्र मृत्यु पामी गयो. आ वार्त्ता लोकमां प्रसरी तेथी कोइ तेनी साथे व्यवहार करतुं नहीं. एक वखते ते पांचसो गाडां लइने वनमां काष्ट लेवा गयो. त्यां एकाकी वृक्ष छेदतां कोइ गुहामांथी व्याघ्र नीकळ्यो अने तेनुं भक्षण करी गयो. त्यां मरण पामीने ते एकेंद्रियपणाने प्राप्त थयो. एवी रीते कृपणपणाथी ते सर्व दिशाओमां घणुं भम्यो; पण पुण्यथी अधिक द्रव्य तेने प्राप्त थयुं नहीं, माटे गृहस्थे कृपणपणुं छोडी देवुं.

अहीं कोइ शंका करे के, 'द्रव्यने ज्यां त्यां वेरी नाखवाथी तेनी स्थिरता शी रीते थाय?' तेना उत्तरमां कहेवानुं के, 'गृहस्थे अचिंत्य स्थळमां तेने राखवुं, पण अवसरे कृपणपणुं करवुं नहीं." ते विषे एक वार्त्ता कहेवाय छे के, "कोइ श्रेष्ठीने घेर नवी पुत्रवधू आवी. ते एक वखते पोताना सासराने दीवा उपरथी पडेलो तेलनो छांटो उपान्ह उपर चोपडतां देखी विस्मय पामी

अने विचारमां पडी के आ ते मारा सासरानुं कृपणपणु हशे के कांइ बीजो हेतु हशे ?' आवो संदेह पडवाथी तेनी परीक्षा करवा माटे तेणीए खोटो मिष करीने कह्युं के, 'मारुं माथुं दुःखे छे.' पछी सुइ जइने घणो पोकार करवा लागी. सासराए तेने माटे घणा उपाय करवा मांड्या पण मट्युं नहीं; एटले तेणीए कह्युं के, 'मने पहेलां आ प्रमाणे थतुं त्यारे साचा मोतीनुं चूर्ण करी तेनो माथे लेप करवाथी मारी पीडा शमी जती.' ते सांभळी सासरो खुशी थयो अने तत्काळ मोती मंगावीने वटाववा मांड्या. एटले ते पुत्रवधू हर्ष पामी बेठी थइ, अने पोताने पडेला संदेहनी वात कही बतावी. ते सांभळी श्रेष्ठीए कह्युं के, "जे कुमार्गे पडेली एक कोडीने पण एक हजार सोनामहोर जेवी गणी शोधे छे अने अवसरे कोटी द्रव्य वापरवामां पण छुटो हाथ मूके छे, तेनो संबंध लक्ष्मी कदिपण छोडती नथी."

वळी द्रव्यना अर्थीए अति क्लेश के क्रोध करवो नहीं. कारण के क्षमागुण लक्ष्मीनी वृद्धि करनारो छे. कह्युं छे के,

होममंत्रबलं विप्रे, नितिशास्त्रबलं नृपे ।
राजाबलमनाथानां, वणिग्पुत्रे क्षमाबलं ॥ १ ॥

ब्राह्मणोने होम ने मंत्रनुं बळ होय छे, राजाने नीतिशास्त्रनुं बळ होय छे, अनाथ जनोने राजानुं बळ होय छे अने वणिकने क्षमानुं बळ होय छे" वळी कह्युं छे के, "अर्थनुं मूळ प्रिय वचन अने क्षमा छे; कामनुं मूळ वित्त, शरीर अने वय छे. धर्मनुं मूळ दान, दया अने दम छे; अने मोक्षनुं मूळ सर्व अर्थनी निवृत्ति छे."

एवी वार्त्ता छे के एक वखते लक्ष्मी अने दारिद्र्यने परस्पर पोताने रहेवा विषे विवाद थयो. तेओ बंने इन्द्रनी पासे गया. प्रथम दारिद्र्ये इन्द्रने कह्युं के, 'आ लक्ष्मी माराथी बीहे छे, तेथी ते सर्व ठामे भम्या करे छे; अने हुं निर्भय छुं, तेथी ज्यां जउं छुं त्यां स्थिर थइने रहुं छुं.' इन्द्रे लक्ष्मीने पूछयुं के, 'तुं क्यां रहे छे?' लक्ष्मी बोलीः—

गुरवो यत्र पूज्यंते, वित्तं यत्र नयार्जितं ।
अदंतकलहो यत्र, तत्र शक्र वसाम्यहं ॥ १ ॥

"ज्यां गुरु–वडिलनी पूजा थाय छे, ज्यां न्यायथी द्रव्य मेळवाय छे अने

ज्यां परस्पर कळह थतो नथी, त्यां हे शक्र ! हुं वसुं छुं." पछी इन्द्रे दारिद्रने कह्युं, 'तुं क्यां रहे छे ?' एटले ते बोल्युंः—

द्युतपोषी निजद्वेषी, धातुवादी सदालसः ।
आयव्ययमनालोची, तत्र तिष्ठाम्यहं हरे ॥ १ ॥

"ज्यां जुगारनुं पोषण थाय, ज्यां स्वजननो द्वेष थाय, ज्यां धातुवाद थतो होय ज्यां सदा आळस रहेलुं होय अने ज्यां आवक तथा खर्चनी तपास थती न होय त्यां हुं वसुं छुं." पछी इन्द्रे कह्युं के-'ज्यां क्लेश कंकास न होय त्यां लक्ष्मीए रहेवुं अने ते सिवाय बीजे स्थळे दारिद्रे रहेवुं.' आ प्रमाणे ठराव करी आपीने तेमनो विवाद भांगी नाख्यो.

आ वार्त्ता सांभळीने तेमांथी एटलो सार लेवो के 'उत्तम श्रावके शांतिथीज कार्य साधवुं, क्लेशथी नहीं.' कह्युं छे के, "जेओ घणा तीक्ष्ण अने घणां निष्ठुर होय छे तेओ पण मृदुता राखवाथी वश थाय छे. जुवो ! कठोर एवा दांत दासनी जेम मृदुतावाळी जिव्हानी उपासना करे छे." कोइनी पासे लेणुं मागवुं होय तो ते पण कोमळ अने धीरा वचनथी मागवुं, कठोर वचनवडे मागवाथी धर्म अने यशनी हानि थाय छे. कदि जो कोइ मोटा माणस साथे द्रव्यनी लेवड-देवड थइ गइ होय तो तेनी साथे नरमाशवडेज कार्य सिद्ध करवुं, कळह विगेरे करवा नहीं. कह्युं छे के, "उत्तम माणस साथे प्रणिपातथी काम लेवुं अने सरखानी साथे पराक्रमथी काम लेवुं."

वळी व्यापारीए सर्वत्र क्रयविक्रय निमित्ते पारका ग्राहक वाळवामां, नामामां विपरीत लखवामां के लांच लेवादेवा विगेरेमां माया-कपट अने परवंचना करवी नहीं. कह्युं छे के, "जे प्राणी विविध उपायवडे माया रची बीजाने छेतरे छे ते महामोहनो मित्र स्वर्ग तथा मोक्षना सुखथी पोताना आत्मानेज छेतरे छे." प्राये करीने माया-कपटरहितपणे कापड, सूतर अने सोना रूपा विगेरेनो व्यापार करवो; अर्थात् जेम बने तेम जेमां अल्प पाप थाय ते व्यापार करवो.

अहिं कोइ शंका करे के 'साधारण स्थितिवाळा व्यापारीने माया-कपट कर्या विना केवळ शुद्ध व्यापारथी निर्वाह शी रीते थाय ?' उत्तरमां कहेवानुं के 'घणां कुडकपटथी जे द्रव्य उपार्जन कर्युं होय ते वर्ष पछी अंते राजा,

चोर, अग्नि, जळ के राजदंड विगेरेथी हराइ जाय छे, चिरकाळ स्थायी रहेतुं नथी. तेम देहना उपभोगमां के धर्मकार्यमां वापरवामां पण उपयोगी थतुं नथी.' कह्युं छे के,

अन्यायोपार्जितं वित्तं, दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे, समूलं च विनश्यति ॥ १ ॥

"अन्यायथी मेळवेलुं धन दश वर्ष सुधी रहे छे, ज्यारे अगीआरमुं वर्ष प्राप्त थाय छे त्यारे ते समूळगुं नाश पामे छे." ते प्रमाणे आगरश्रेष्ठी, पापबुद्धि अने रंकश्रेष्ठी विगेरेने बन्युं हतुं; तेथी जे माया–कपट रहितपणे वर्तवुं ते आ लोकमां पण प्रतिष्ठाना हेतुभूत थाय छे. विहार, आहार अने व्यवहार ए त्रणे तपस्वीओना जोवाय छे अने गृहस्थनो तो शुद्ध व्यवहारज जोवाय छे. वृद्धो पासेथी एवी पण एक वार्त्ता सांभळी छे के, 'पुणिक नामे श्रेष्ठी मात्र पचवीश दोकडानो स्वामी हतो, अने ते हमेशां साडाबार दोकडा पेदा करी शुद्धवृत्तिथी गृहभार निर्वाह करतो हतो.'

अहिं कोइ शंका करे के, 'केटलाएक न्यायधर्मथी चालनारा दारिद्र्यप्रमुखना दुःखथी पीडाता जोवामां आवे छे, अने केटलाएक अधर्मथी व्यापार करनारा ऐश्वर्य अने समृद्धि विगेरेथी सुखी देखाय छे. तो पछी शुद्ध व्यवहारनी प्रधानता क्यां रही?' तेना उत्तरमां कहेवानुं के, 'तेमां पूर्व कर्मना विपाकनी मुख्यता छे, आ भवना कर्मनी मुख्यता नथी.'

कर्म चार प्रकारनुं छे. ते विषे श्रीधर्मघोषसूरि कहे छे के, 'पुण्यानुबंधी पुण्य, पापानुबंधी पुण्य, पुण्यानुबंधी पाप अने पापानुबंधी पाप–एम चार प्रकारनुं कर्म छे. जिनधर्मनी सम्यक् प्रकारे आराधना करनार भरतचक्री जेवाओनुं पुण्यानुबंधी पुण्य, अज्ञानकष्टवडे कोणिकनी जेम समृद्धि पामवी ते पापानुबंधी पुण्य, ते भवमां पापना उदयथी दरिद्री थयेला एवा द्रमकमुनिनी जेम बने ते पुण्यानुबंधी पाप, अने काळकशौरिकादिकनी जेम थाय ते पापानुबंधी पाप समजवुं.'

कोइ माणसने पापानुबंधी पुण्यना उदयथी आ भवमां विपत्ति जोवामां आवती नथी; तथापि परिणामे आगामी भवमां तेने अवश्य विपत्ति प्राप्त थवानी एम समजवुं. ते विषे एक एवी वार्त्ता छे के 'कोइ श्रावक अने चोर बंने पोतपोताना घरमांथी साथे नीकळ्या. श्रावक चोरनी आगळ आगळ प्रभुना दर्शन

करवा जतो हतो, त्यां मार्गे तेना पगमां कांटो वाग्यो अने पेला चोरने आगळ जतां एक रुपीओ जड्यो तेथी ते हर्ष पाम्यो. आथी श्रावक विचारमां पड्यो, के, 'अहो ! अधर्मीने सारुं फळ अने धर्मीने दुःख-आ केवी वात ?' आ संदेह तेणे गुरु पासे जइने पूछयो एटले गुरु बोल्या के, 'हे श्रावक ! तारुं पाप पगमां कांटो वागवाथी नाश पाम्युं अने ते चोरने आगळ जतां राजाना सुभटो पकडीने शूळीए चडावशे.' क्षणवारमां तेमज बन्युं, अने ते पेला श्रावकना सांभळवामां आव्युं. त्यारथी ते श्रावक निरंतर शुद्ध व्यापारमां तत्पर थयो.

"आ प्रबंधने हृदयमां उतारी द्रव्यनी हानिना हेतुरूप कृपणता विगेरे दोषोने तजी दइ हमेशां शुद्ध व्यवहार राखवो के जेथी द्रव्यनी वृद्धि थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ सप्तमव्रतविषये सप्तविंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥१२७॥

व्याख्यान १२८ मुं.

माया-कपट करवानुं फळ कहे छे.

कूटस्य जल्पनं मोच्यं, राज्ञां पुरो विशेषतः ।
दंभात्कीर्तिश्रियोर्हानिः, तस्मात् श्राद्धः परित्यजेत् ॥१॥

भावार्थः—"कुड-कपटथी बोलवुं नहीं, तेमां पण विशेषे करीने राजानी आगळ तो बोलवुंज नहीं. दंभ करवाथी कीर्त्ति अने लक्ष्मीनी हानि थाय छे, तेथी गृहस्थे (श्रावके) तेनो त्याग करवो."

विशेषार्थ—लेवड-देवड विगेरेमां कपटथी बोलवुं नहीं; तेमज कोइनुं गुह्य बीजानी आगळ प्रकाशित करवुं नहीं, कह्युं छे के, "पोताना अने पोतानी स्त्रीना आहार, सुकृत, द्रव्य, गुण, दुष्कर्म, मर्म अने मंत्र एटलां कोइनी आगळ प्रकाश करवा नहीं."

अहीं कोइ शंका करे के, 'आ श्लोकमां तो सत्य भाषण करवानो निषेध कर्यो; कारण के उपरनी बाबतमां कोइ पूछे तो तेनी आगळ प्रकाश न करवाथी असत्यज बोलवुं पडे, तेथी तमे कूट-भाषण करवानो निषेध केम करो छो ? तेना

उत्तरमां कहेवानुं के, "कोइ आयुष्य, द्रव्य, अने घरनुं छिद्र विगेरे पूछे तो तेना उत्तरमां जूठुं बोलवुं नहीं, पण तेने 'आवा प्रश्नथी शुं?' एम कही भाषासमिति (बोलवानी युक्ति) वडे प्रत्युत्तर आपवो." तेमां वळी राजानी आगळ तो कूट-वचननो विशेषपणे त्याग करवो. उपलक्षणथी गुरु–वडील प्रमुखनी आगळ पण जे यथार्थ होय तेज कहेवुं. कह्युं छे के, "मित्रनी आगळ सत्य कहेवुं, स्त्रीनी पासे प्रिय कहेवुं, शत्रुनी आगळ मधुर अने खोटुं कहेवुं अने स्वामी आगळ अनुकूळ तथा सत्य होय ते कहेवुं." ते उपर एक वार्त्ता कहेवाय छे ते आ प्रमाणेः—

"दिल्लीशेहेरमां महणसिंह नामे एक शाहुकार हतो. ते सत्यवादी अने शुद्ध व्यवहारवाळो छे एवी तेनी प्रशंसा सांभळी बादशाहे तेने बोलावीने पूछयुं के, 'तारी पासे केटलुं धन छे?' महणसिंहे जवाब आप्यो के, 'हुं चोपडा जोइ लेखुं करीने आपने कहीश.' एम कही घेर आवी सारी रीते लेखुं करी बादशाह पासे आवीने कह्युं के "साहेब! मारी पासे चोरासी हजार द्रव्य छे." बादशाहे विचार्युं के, 'में तेनी पासे थोडुं द्रव्य छे एम सांभळ्युं हतुं अने आ शाहुकारे तो वधारे कह्युं, माटे ते बराबर सत्य कहे छे.' आथी खुशी थइ राजाए महणसिंहने पोतानो कोशाध्यक्ष बनाव्यो; तेथी जे सत्य होय तेज कहेवुं."

असत्य कहेवाथी दंभ कर्यो कहेवाय छे, अने तेथी कीर्त्ति अने लक्ष्मीनी हानि थाय छे, माटे श्रावके दंभ छोडी देवो. आ प्रसंग उपर धर्मबुद्धिनी कथा छे ते आ प्रमाणेः–

धर्मबुद्धि तथा पापबुद्धिनी कथा.

भीमपुर नामना नगरथी पापबुद्धि अने धर्मबुद्धि नामे बे मित्र द्रव्य कमावाने माटे देशांतर गया हता. त्यां द्रव्य उपार्जन करी पाछा पोताने घेर त्वराथी आवता हता. कह्युं छे के, "विद्या प्राप्त करीने घरे आवनारा शिष्योने अने देशांतरथी द्रव्य पेदा करीने घरे आवनारा व्यवहारीओने एक कोश पण सो योजन जेटलुं लागे छे." आ प्रमाणे उतावळे चालतां पोताना गाम पासे आव्या एटले बोजो वधारे होवाथी तेओ केटलुंक द्रव्य गामनी बहार दाटीने घेर आव्या, कह्युं छे के, "प्राज्ञ पुरुषे कोइने अल्प द्रव्य पण बताववुं नहीं; कारणके द्रव्य जोवाथी मोटा मुनिनुं मन पण चळित थाय छे." वळी कह्युं छे के, "जेम जळमां मांस पडे तो मत्स्य खाइ जाय छे, पृथ्वीपर होय तो हिंसक प्राणी खाइ जाय छे अने आकाशमां होय तो गीध विगेरे पक्षीओ खाइ जाय छे, तेम द्रव्यवान्ना द्रव्य विषे पण जाणी लेवुं."

एक वखते पेला बे मित्रमांथी पापबुद्धि रात्रे जइने दाटेलुं द्रव्य काढी लइ ते खाडो कांकराथी पूरी घेर आव्यो. अन्यदा धर्मबुद्धिए पापबुद्धि पासे आवीने कह्युं के, 'हुं द्रव्य विना दुःखी थाउं छुं, माटे चालो, पेलुं द्रव्य काढी लावीए.' पापबुद्धि बोल्यो–'चालो जइए.' पछी बंने द्रव्य लेवा गया. त्यां खाडो खोदीने जोतां द्रव्य रहित जोइ पेलो दांभिक पापबुद्धि कपटथी माथुं कुटवा लाग्यो अने बोल्यो–"अरे ! धर्मबुद्धि ! आमांथी तुंज धन काढी गयो छे." धर्मबुद्धिए कह्युं के, "में लीधुं नथी पण तें लीधुं छे, अने आ खोटी माया करे छे; में तो दंभवृत्ति करवाना पच्चख्खाण लीधा छे." आ प्रमाणे वाद–विवाद करतां बंने राजद्वारमां फरियादे गया. बंने परस्पर एक बीजाना दूषण कहेवा लाग्या. ते सांभळी न्यायाधिकारीओए कह्युं के, 'तमे बंने दिव्य करी बतावो.' एटले पापबुद्धि बोल्यो के–"तमे अमारो न्याय बराबर कर्यो नहीं. केमके न्यायमां प्रथम दिव्य होयज नहीं. कह्युं छे के–प्रथम तो वाद–विवाद सांभळीने न्याय आपवो, अने जो ते बराबर न जणाय तो पछी साक्षीओ लइने न्याय आपवो, अने जो साक्षीनो अभाव हाये तो पछी छेवटे दिव्य कराववुं–एम विद्वानो कहे छे. आ वातमां तो अमारे ज्यां द्रव्य हतुं, ते वननी देवी साक्षी छे, ते जे चोर हशे तेनुं नाम आपशे." अधिकारीओए कह्युं. "ते वात सत्य छे. कह्युं छे के, जो वाद–विवादमां एक चंडाळ पण साक्षी मळे तो त्यां दिव्य कराववुं नहीं; तो ज्यां देवता साक्षी होय त्यां तो वातज शी करवी ?" आ प्रमाणे न्यायाधिकारीओए मान्य करीने ठराव्युं के, 'काले सवारे त्यां जइ वनदेवताने पूछवुं.'

पापबुद्धि घेर आव्यो अने रात्रे पोताना पिताने कोइ खीजडीना वृक्षना कोटरमां गोपव्यो. पछी ते वृक्षनी आसपास सिंदूर अने तेल लगाव्युं. तेणे पोताना पिताने शीखवाड्युं के, 'अहीं ज्यारे वनदेवीने पूछवामां आवे त्यारे तमारे स्वर बदलावीने कहेवुं के, धर्मबुद्धि गोमुखो वाघ छे, तेणे आवीने धन काढी लीधुं छे.' आम शीखवीने ते चाल्यो गयो. बीजे दिवसे धर्मबुद्धि, पापबुद्धि, राजा अने अधिकारी प्रमुख लोको वनमां गया. पछी वनदेवीनी पूजा करीने पूछयुं के, "हे वनदेवता ! आ द्रव्य कोणे लीधुं छे ते कहो." एटले खीजडीना कोटरमांथी एवो शब्द नीकळ्यो के, "गोमुखो वाघ धर्मबुद्धि द्रव्य लइ गयो छे." पछी अधिकारीओ धर्मबुद्धिने कहेवा तत्पर थया के, 'आ द्रव्य तें लीधुं छे.' तेवामां धर्मबुद्धिए सर्वनी समक्ष ते खीजडीना वृक्षने अग्नि लगाड्यो, जेथी ते वृक्ष बळवा मांड्युं, एटले

जेनुं अर्धुं अंग दग्ध थयेलुं छे अने जेनी आंखो फुटी गइ छे तेवो पापबुद्धिनो पिता तेना कोटरमांथी नीकळ्यो. ते जोइ अधिकारीओ आश्चर्य पामीने बोल्या के–" अरे श्रेष्ठि ! आ शुं ! तें वृद्धावस्थामां आवुं पाप केम कर्युं ? " श्रेष्ठी बोल्यो–" आ पाप मने पुत्रे कराव्युं." त्यारथी ते बंने लोकमां धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि एवा नामथी प्रसिद्ध थया. राजाए दांभिक पापबुद्धिनुं सर्वस्व लुंटी लइने तेने पोताना देशमांथी काढी मूक्यो. कह्युं छे के,

मायामविश्वासविलासमंदिरं, दुराशयो यो कुरुते धनाशया ।
सोनर्थसार्थं न पतंतमिच्छयते, यथा बिडालो लकुडं पयः पिबन् ॥१॥

" जे दुष्ट हृदयवाळो मनुष्य धननी आशाथी अविश्वासना विलास-मंदिररूप माया आचरे छे, ते दुधनुं पान करवा इच्छतो मार्जार जेम पोतानी उपर पडती लाकडीने जोतो नथी तेम पोतानी उपर आवी पडनारा अनर्थना समूहने जोतो नथी. "

राजाए शुद्धधर्मी धर्मबुद्धिनां घणां वखाण कर्यां अने ते सुखी थयो.

" आ बंने मित्र (धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि) नी वार्त्ता सांभळीने गृहस्थ व्रत-धारीओए दंभ छोडीने व्यवहार करवो, जेथी सौभाग्य अने लक्ष्मी प्राप्त थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ शुद्ध व्यापारविषये अष्टाविंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १२८ ॥

व्याख्यान १२९ मुं.

शुद्धव्यापार विषे विशेष हितशिक्षा कहे छे.

बाधां मिथस्त्रिवर्गस्य, न कार्या ह्यास्तिकैर्नरैः ।
विश्वस्तघातकार्यं च, सुवृत्त्या दूषणं मतम् ॥ १ ॥

भावार्थः—" आस्तिक पुरुषोए धर्म, अर्थ अने कामने परस्पर बाधा थाय तेम न करवुं, अने विश्वासघातनुं काम पण न करवुं; केमके ते सद्वृत्तिनुं दूषण छे. "

विशेषार्थः—त्रिवर्ग एटले धर्म अर्थ अने काम–तेने परस्पर बाधा थाय

तेम आस्तिक पुरुषोए करवुं नहीं. ते त्रणमां निःश्रेयस (कल्याण) सुखने साधनार ते धर्म कहेवाय छे. सर्व अर्थ (प्रयोजन) नी सिद्धि करे ते अर्थ कहेवाय छे; अने शब्दादि पांच इंद्रियोने प्रीति उपजावे ते काम कहेवाय छे. ए त्रणमांथी कोइ पण एकने आसक्तिवडे सेववाथी बीजाओने बाधा थाय छे. अतिमुक्तकुमार तथा जंबुस्वामीनी जेम कोइ एकला धर्मनेज सेवे छे.

म्लेच्छ कुळमां पण केटलाएक लघुकर्मी थाय छे. ते विषे एक एवी कथा छे के, अहमद बादशाह दररोज सवामण पुष्पनी शय्यामां सूतो हतो. एक वखते कोइ दासी कौतुकथी ते शय्यामां सुइ गइ. तत्काळ ते निद्रावश थइ गइ. तेवामां बादशाह अकस्मात् राजसभामांथी त्यां आवी चड्यो, अने दासीने सुतेली जोइ एक चाबुक मारी. दासी हसती हसती बेठी थइ अने पृथ्वी उपर उभी रही. बादशाहे आग्रहथी तेने हास्य करवानुं कारण पूछ्युं. एटले दासी बोली–" साहेब ! आपे मने एक प्रहार कर्यो तेथी फुलनी शय्यामां थोडीवार सुवानुं मारुं पाप तो नष्ट थइ गयुं, पण आप हमेशां अनेक वृक्षोना फूलो मंगावी तेनी शय्या करावीने तेपर निद्रा करो छो, ते पापनो दंड केटलो थशे ? ते विचारतां मने हास्य आवे छे. " दासीनां आवां वचनो सांभळीने बादशाहे ते दिवसथी पुष्पशय्यामां सुवानुं छोडी दीधुं.

एक वखते तेज बादशाह चतुरंग सेना लइ उपवनमां जतो हतो. मार्गमां कोइ उंट मृत्यु पाम्युं, तेथी सर्व सैन्य उभुं थइ रह्युं. ते जोइ बादशाहे पूछ्युं के– 'सैन्य आगळ केम चालतुं नथी ?' अमात्ये आवीने उंटना मृत्युनी वात कही. बादशाह मृत्युना तत्त्व विषे कांइपण जाणतो नहतो; तेथी पूछ्युं के, ' मृत्यु एटले शुं ? ' अमात्योए कह्युं, ' स्वामी ! काने सांभळे नहीं, आंखे देखे नहीं अने खाय पीवे नहीं ते मृत्यु. ' राजा ते सांभळी विस्मय पाम्यो; अने मृत्यु पामेला उंट पासे जइने कह्युं के–' अरे पशु ! उठ, खान पान कर. क्रोधथी आवी निद्रा न करीए. ' त्यारे बीजाओए कह्युं के, ' साहेब ! आ तो निर्जीव थयुं छे. ' एम कही घणी युक्तिओथी मृत्युनुं स्वरूप समजाव्युं, ते उपरथी बादशाह पोते विचार करवा लाग्यो के–' अहो ! आवुं मृत्यु अणचिंतव्युं आवशे त्यारे आपणी कोण रक्षा करशे ? ' एम विचारी तत्काळ सर्वनो त्याग करी पोतानी जातिना श्रेष्ठ धर्म (फकीरी)नो स्वीकार कर्यो. ते उपरथी लोकोमां पण आ प्रमाणेनी कहेवत छेः—

दोहा.

सोल सहस्स साहेलियां, तुरी अढारह लक्क ।
साहेब तेरे कारणे, छोड्यां सहेर बुलक्क ॥ १ ॥

अन्य शास्त्रोक्त आ संबंध उपयोगी जाणीने अहीं कह्यो छे. जेम ते बादशाहे अर्थ अने कामनो त्याग करी अहिंसा, सत्य विगेरे धर्म स्वीकार्यो एवी रीते बीजाओए पण यथायोग्य प्रवर्त्तन करवुं.

कोइ मंमणश्रेष्ठीनी पेठे एकला अर्थनेज साधे छे, पण ते अयोग्य छे. कारण के धर्म अने कामने उल्लंघन करीने उपार्जन करेला धननो उपभोग बीजाओ करे छे अने पापनुं भाजन पोते थाय छे. जेम सिंह हाथीनो वध करनार पोते थाय छे अने तेना मौक्तिक अने दांत विगेरेनो स्वामी बीजो थाय छे. कह्युं छे के,

किटिकासंचितं धान्यं, माक्षिकासंचितं मधुः ।
कृपणोपार्जिता लक्ष्मीः, परैरेवोपभुज्यते ॥ १ ॥

"कीडीओनुं संचय करेलुं धान्य, माखीओनुं संचेलुं मध अने कृपणे उपार्जन करेली लक्ष्मी–तेनो उपभोग बीजाज करे छे."

वळी कोइक एकला कामनेज सेवे छे. अर्थ अने धर्मने सेवता नथी. विषयसुखमां लुब्ध एवा ब्रह्मदत्तचक्री विगेरेनी जेम. ते विषे लौकिकशास्त्रमां पण एक वार्त्ता छे के, सवालाख गामनो अधिपति अने दिल्लीनो स्वामी पृथुराज चहुवाण कामासक्त थवाथी राज्यभ्रष्ट थयो हतो. तेनी हकीकत एवी छे के, एक वखते पृथुराज पांगुराजाना अंतःपुरमांथी तेनी पुत्री संयोगिताने छळथी हरी गयो अने पोताना नगरमां आव्यो. पछी अत्यंत कामासक्त अने राज्यचिंताथी रहित एवा ते राजानी वात कोइ म्लेच्छ बादशाहना जाणवामां आवी. तेथी तत्काळ ते बादशाहे तेनापर चडाइ करीने सुखे सुखे तेनुं राज्य लइ लीधुं अने तेनी बंने आंखोना पोपचां सोयदोराथी सीवी लइ सोयदोरासहित लोढाना पांजरामां पूर्यो. त्यां ते महा दुःख पाम्यो.

श्रीजैनआगममां पण एकला कामसेवन उपर अनंगसेन सोनीनो संबंध छे. शीळोपदेशमाळानी वृत्तिमां तेने स्त्रीनुं दासत्व करनारो वर्णव्यो छे. ते सिवाय रिपुमर्दन विगेरेना संबंध पण कामासक्ति उपर कहेला छे. आ प्रमाणे धर्म, अर्थ अने काम संबंधी एकसंयोगी त्रण भांगा थाय छे.

हवे द्विकसंयोगी भांगा बतावे छे. एटले बेमां आसक्ति अने एकमां नहीं, एवी रीते पण त्रण भांगा थाय छे ते आ प्रमाणे–कोइ धर्म अने अर्थमां आसक्त होय छे, पण काममां आसक्त होता नथी. कुमारपाळराजानी जेम. कुमारपाळ धर्म प्राप्त थया पहेलां घणी राजकन्याओ परण्या हता. पण व्रत लेवा वखते अल्प आयुष्यने योगे बीजी राणीओ मरण पामी हती अने एक भूयल्लदेवीज जीवती हती. व्रत लीधा पछी ते पण केटलेक काळे मृत्यु पामी. पछी तेमना बहोंतेर सामंतादिक वर्गे घणी विनंति करी के, ' हे प्रजापाळ महाराजा ! पुनः पाणिग्रहण करो. ' त्यारे कुमारपाळे कह्युं के, ' हवे संसार वधारवाना उपायभूत पाणिग्रहणना आग्रहथी सर्युं. मारे आजथी यावज्जीवित शीळव्रत हो, के जेथी बधी क्रियाओ सफळ थाय. ' सिद्धांतमां कह्युं छे के, " शीळथी व्रत, दान, तप अने नियम विगेरे भले प्रकारे आचरेला थाय छे. " सामंतोए कह्युं, " राजन् ! पटराणी विना मांगळिक उपचारो शी रीते थाय. बीजा लोकोनी जेम राजाओ राणी वगरना क्यांइ सांभळ्या नथी, तेम जोया पण नथी. " राजाए कह्युं, ' अरे ! श्रीगांगेय (भीष्म पितामह) ने केम भूली जाओ छो ? जेमणे जन्मथीज पाणिग्रहण कर्युं नहोतुं. ' पछी कुमारपाळे सामंतादिकथी परवरेला गुरु पासे जइने तेमने मुखे ब्रह्मव्रत अंगीकार कर्युं. त्यारथी मंत्रीओ राजधर्म संबंधी मांगळिक उपचारो–आरात्रिक अने मंगळप्रदीप करवाने अवसरे राणी भूयल्लदेवीनी सुवर्णनी मूर्ति करावीने राजानी पडखे मूकता हता. ब्रह्मचर्य ग्रहण कर्युं ते वखते गुरुए कुमारपाळने राजर्षिनुं बिरुद आप्युं हतुं.

आ प्रमाणे ते महापुरुषने युक्त छे; पण व्यवहारमां रहेला गृहस्थने केटलीक वखत कामपीडावडे परस्त्री विगेरेनो उपद्रव थाय छे.

कोइ धर्म अने कामनेज सेवे छे, अर्थने सेवता नथी. अर्थात् द्रव्योपार्जन करवानी चिंता करता नथी; पण एवी रीते धर्म अने कामनी सेवा करनारने करज वधे छे अने माननी हानि थाय छे. तेथी गृहस्थे प्रयत्नथी धन उपार्जन करवुं. कह्युं छे के, " एवुं कोइ पण कार्य नथी के जे अर्थ विना सिद्ध थाय, तेथी मतिमान् पुरुषे यत्नथी अर्थने साधवो. "

आ संबंधमां एवी एक वार्त्ता छे के, " एक धनदत्त नामे मिथ्यात्वी श्रेष्ठी हतो. ते धर्मबुद्धिथी ब्राह्मणोने दान आपतो अने वारंवार ज्ञातिनुं पोषण करतो. वळी कन्यादान, गोदान इत्यादि दानो आपतो तेमां तेणे एक लाख द्रव्य खर्ची नाख्युं अने नवुं धन उपार्ज्युं नहीं. वळी कामनी लोलुपतामां पण तेनुं घणुं धन

गयुं. तेथी ते निर्धन थइ गयो अने अपमानने प्राप्त थयो. पछी ते पोतानो धर्म वेचवाने माटे साथवानुं भातुं लइने देशांतरे चाल्यो. मार्गे कोइ वनमां भोजन करवाने बेठो. तेवामां कोइ मासक्षपणी मुनि त्यां पधार्या. धनदत्ते तेने दान आप्युं. पछी तेणे पोताना धारेला कोइ गृहस्थने घेर जइ पूर्वकृत धर्मने वेचवा माग्यो. ते गृहस्थे पोताना पूर्वजोना कहेवाथी धनदत्तने कह्युं के, 'जो पेला मुनिदर्शननुं फळ मने आप तो हुं तने मुखे माग्युं द्रव्य आपुं.' ते सांभळी धनदत्त तेनो जवाब पण न आपतां तत्काळ पोताना घर तरफ चाली निकळ्यो. मार्गमां अरण्यनी अंदर उंबराना फळ पड्या हता, ते पोटकीमां बांधीने घेर आव्यो. मुनिदानना पुण्यथी मुनिनी भक्ति करनार वनदेवताना प्रसादवडे ते सर्व स्वर्णमयी थइ गया. पछी ते श्रावक प्रमाणे खर्च करवा लाग्यो अने उत्तम श्रावक थयो." आ वार्त्ता सांभळीने गृहस्थे यथायोग्य आचरण स्वीकारवुं.

कोइ अर्थ अने कामनीज सेवा करे छे, धर्मने सेवता नथी. सागर श्रेष्ठी अने धवळ श्रेष्ठीनी जेम; परंतु अधर्मीनुं परिणामे कांइपण कल्याण थतुं नथी.

कोइ धर्म, अर्थ अने काम—ए त्रणेने सेवता नथी. पण तेओ ए त्रणथी अतीत एवा चोथा वर्ग (मोक्ष) ना आराधक होय छे. तेथी तेवा मुनिमहाराजाने ए भांगाना स्वामी पोतानी मेळे जाणी लेवा.

कोइ धर्म, अर्थ अने काम—ए त्रणेने सेवे छे. ए भांगाना स्वामी अभयकुमार अने सुलसा विगेरेने जाणी लेवा.

आ प्रमाणे सांभळीने त्रण वर्गमांथी कोइने पण बाधा करवी ते गृहस्थने योग्य नथी. कह्युं छे के, " जे गृहस्थना धर्म, अर्थ अने कामनी सेवा वगर शून्य दिवसो जाय छे ते लुहारनी धम्मणनी जेम श्वास लेय छे छतां जीवन नथी एम समजवुं."

जो दैवयोगे त्रण वर्गमां परस्पर प्रतिबंध थवानो संभव लागे तो उत्तर उत्तरने पीडा थतां पूर्व पूर्वनी बाधानो त्याग करवो. जेमके, कामने बाधा थती होय तो धर्म अने अर्थने बाधा न थाय तेम करवुं. कारण के जो धर्म अने अर्थ होय तो काम प्राप्त थवो सहेलो छे.' अने काम अर्थने बाधा थती होय तो थवादइने पण धर्मने धारण करवो. कह्युं छे के, " श्रावकमांथी एक भाग भंडारमां राखवो, एक भाग वेपारमां रोकवो, एक भाग धर्ममां अने पोताना उपभोगमां वापरवो अने एक भागवडे सर्वनुं भरण—पोषण करवुं." वळी सिंदूरप्रकरणमां पण कह्युं छे के,

त्रिवर्गसंसाधनमंतरेण, पशोरिवायुर्विफलं नरस्य ।
तत्रापि धर्मं प्रवरं वदंति, न तं विना यद् भवतोऽर्थकामौ ।१।

" धर्म, अर्थ अने कामनुं साधन कर्या वगर पशुनी जेम मनुष्यनुं आयुष्य निष्फळ छे, तेमां पण धर्मने सर्वथी श्रेष्ठ कहेलो छे; कारण के धर्म विना अर्थ तथा काम सिद्ध थतां नथी. "

" आ प्रमाणे धर्म, अर्थ अने कामनी परस्पर अबाधाथी शुद्धपणे आराधना करनार सुबुद्धिपुरुष अनुक्रमे स्वर्ग अने मोक्षनुं सुख प्राप्त करे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ सप्तमव्रतविषये एकोनत्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१२९॥

व्याख्यान १३० मुं.

उपरना व्याख्यानमां कहेला श्लोकना पाछला बे पदनी विशेष व्याख्या करे छे.

" विश्वस्तघातकार्यं च, सुवृत्त्या दूषणं मतं "

" कोइनो विश्वासघात करवो ते शुद्धव्यवहारना दूषणरुप जाणवुं. "

विश्वासीने छेतरवामां महा पाप छे. ते पाप बे प्रकारनुं छे. गुप्त अने प्रगट. गुप्त पाप पण बे प्रकारनुं छे–अल्प अने महत्. खोटां तोलां ने खोटां माप विगेरेनुं पाप ते अल्प अने विश्वासघात विगेरेनुं पाप ते महत्. प्रकट पाप बे प्रकारनुं छे–कुळाचारथी अने निर्लज्जपणा विगेरेथी. कुळाचारवडे गृहस्थोने आरंभ प्रमुखमां पाप थाय छे अने म्लेच्छादिकने हिंसा प्रमुखमां पाप थाय छे ते अने निर्लज्जपणा विगेरेथी यतिवेशमां हिंसादि पाप प्रगटपणे करवाथी अनंतसंसारीपणुं थाय छे; कारण के ते प्रवचननी उड्डाह (निंदा) नुं कारणभूत छे. कुळाचारथी प्रकट पाप करवामां थोडो कर्मबंध छे अने गोप्यमां अति तीव्र कर्मबंध छे. कारण के ते असत्यमय होवाथी तेवी रीते बीजाने छेतरवामां मोटुं पाप लागे छे. ते विषे विसेमिरानी कथा छे, ते आ प्रमाणे—

विसेमिरानी कथा.

विशाळानगरीमां नंद नामे राजा हतो. तेने विजयपाळ नामे पुत्र, बहुश्रुत नामे अमात्य अने भानुमती नामे राणी हती. राजा राणी उपर एवो आसक्त हतो के तेने सभामां पण पासे बेसाडतो. एक वखते मंत्रीए विज्ञप्ति करी के, "हे देव ! सभामां राणीने पासे राखीने बेसवुं ते अनुचित छे. कह्युं छे के, 'राजा, अग्नि, गुरु अने स्त्री जो अति पासे रह्या होय तो विनाश[1] करे छे अने अति दूर रह्या होय तो फळ आपता नथी, तेथी तेमने मध्यम भावथी सेववा.' तेम करतां जो आपनी पासे राखवानी इच्छाज होय तो राणीनुं रूप चित्रावीने ते चित्र पासे राखो." राजाए मंत्रीनां वचनथी तेम कर्युं. ते विषे किरातार्जुनीय काव्यमां कह्युं छे के, "जे पोताना स्वामीने सारी रीते साची शिखामण आपे नहीं, ते मित्र के मंत्री शेनो ? अने जे पोताने अणगमतुं सांभळे पण नहीं, ते स्वामी पण शेनो ? तेथी जे राजा अने मंत्री सदा परस्पर अनुकूळ होय, तेमनी साथेज सर्व संपत्तिओ प्रीति करे छे."

एकदा राजाए ते चित्र पोताना शारदानंदन नामना गुरुने बताव्युं. गुरुए पोतानुं पांडित्य दर्शाववाने कह्युं के, "राणीने डाबा साथळमां तिल छे, ते आ चित्रमां कर्यो नथी." ते सांभळी नंदराजाने शंका थई के, 'आ मारी राणीनो जार हशे.' ते उपरथी तेणे मंत्रीने आज्ञा करी के, 'आ गुरुने मारी नखावो.' प्रधान विचारीने काम करे तेवो हतो, तेथी तेणे शारदानंदनने पोताने घेर गुप्तपणे राख्यो.

एक वखत राजकुमार शीकार करवाने माटे वनमां जतां कोई डुक्करनी पछवाडे दोड्यो. ते घणे दूर चाल्यो गयो. सायंकाळ थई जवाथी राजकुमार सरोवरमांथी जळपान करीने व्याघ्रादिकना भयथी कोई वृक्ष उपर चडी गयो. ते वृक्ष उपर एक वानर रहेतो हतो, तेना शरीरमां ते वृक्षनो निवासी कोई व्यंतर पेठो. तेथी ते वानर मनुष्यवाणीथी बोल्यो के, 'हे कुमार ! नीचे व्याघ्र आवेलो छे, पण तुं मारा उत्संगमां सुखे सुई जा.' कुमार विश्वास राखीने सुतो. नीचे रहेला व्याघ्रे तेनी घणी याचना करी तोपण वानरे तेने आप्यो नहीं. थोडी वार पछी कुमार जाग्यो, एटले वानर ते कुमारना उत्संगमां सुई गयो. पेला वाघे कुमारने कह्युं के, "अरे कुमार ! ए वानरनो विश्वास शुं राखे छे ? कह्युं छे के,

---

[1] गुरुमां विनाश तेमनो अविनय, अनादर थई जाय ते समजवो.

'नदी, नखवाळां प्राणी इत्यादिनो विश्वास करवो नहीं.' वळी एम पण कहेवाय छे के, 'क्षणमां रुष्ट अने क्षणमां तुष्ट तेमज क्षणे क्षणे रुष्ट तुष्ट थनारा अने जेमनुं चित्त स्थिर नथी तेवाओनो प्रसाद पण भयंकर छे.' माटे तुं एने मूकी दे." क्षुधातुर वाघनां आवां वचनथी राजकुमारे ते कपिने पडतो मूक्यो. वानर पडतो पडतो अंतराळ भागे बीजी शाखा साथे वळगी पडीने बोल्यो के-'अरे कुमार! तुं तारा करेला विश्वासघातरूप कर्मने जाणेछे?' आम कहीने ते वानरना शरीरमां रहेला व्यंतरे प्रातःकाळे तेने गांडो करी दीधो; एटले ते 'विसेमिरा, विसेमिरा' एम बोलतो वनमां चोतरफ भमवा लाग्यो. तेनो घोडो भयथी त्रास पामी पोतानी मेळे शहेरमां राजानी आगळ गयो. घोडाने एकलो आवेलो जोइ राजाए कुमारनी शोध करावी अने तेने वनमांथी शोधीने घरे लाव्या. पछी तेनुं घेलापणुं मटाडवा राजाए घणा उपाय कर्या पण तेने कांइ गुण थयो नहीं. एटले राजा पोताना गुरु शारदानंदनना गुण संभारी तेने मरावी नाखवा माटे पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्यो. पछी राजाए कुमारने साजो करनारने अर्धुं राज्य आपवानो पडह वगडाव्यो. त्यारे मंत्रीए कह्युं के, 'मारी पुत्री आ विषे कांइक जाणे छे.' राजा पुत्रने लइ तत्काळ मंत्रीने घेर गयो. त्यां पडदानी अंदर रही शारदानंदन गुरु आ प्रमाणे श्लोक बोल्याः-

विश्वासप्रतिपन्नानां, वंचने का विदग्धता।
अंकमारुह्य सुप्तानां, हंतुं किं नाम पौरुषम् ॥ १ ॥

भावार्थः—"विश्वास पामेलाने छेतरवामां चतुराइ शानी? अने खोळामां सुतेलाने मारवामां पराक्रम शानुं?" ए श्लोक सांभळी कुमारे पहेलो 'वि' अक्षर मूकी 'सेमिरा, सेमिरा,' एम बोलवा मांडयुं. गुरुए पछी पडदामांथी बीजो श्लोक कह्योः—

सेतुं गत्वा समुद्रस्य, गंगासागरसंगमे।
ब्रह्महा मुच्यते पापै-र्मित्रद्रोही न मुच्यते ॥ २ ॥

भावार्थः—"समुद्रना सेतु (किनारा) उपर अने गंगासागरना संगम उपर जवाथी ब्रह्महत्या करनार पापमुक्त थाय पण मित्रद्रोही पापमुक्त न थाय."

आ श्लोक सांभळी कुमारे बीजो अक्षर 'से' मूकी 'मिरा, मिरा' एटलुं बोलवा मांडयुं. पछी पडदामांथी पाछो नीचेनो श्लोक कहेवामां आव्योः—

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च, स्तेयी विश्वासघातकः ।
चत्वारो नरकं यांति, यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ३ ॥

भावार्थ—" मित्रद्रोही, कृतघ्नी, चोरी करनार अने विश्वासघाती ए चार जण ज्यांसुधी सूर्य चंद्र रहे त्यांसुधी नरकमां रहे छे." आ श्लोक सांभळी कुमार त्रीजो अक्षर ' मि ' मूकी मात्र ' रा, रा ' एटलुं कहेवा लाग्यो. पछी पडदामांथी पाछो एक श्लोक कहेवामां आव्योः—

राजंस्त्वं राजपुत्रस्य, यदि कल्याणमिच्छसि ।
देहि दानं सुपात्रेषु, गृही दानेन शुध्यति ॥ ४ ॥

भावार्थ—" हे राजन् ! जो तुं तारा पुत्रनुं कल्याण इच्छतो हो तो सुपात्रमां दान आप; कारण के गृहस्थ दान आप्याथी शुद्ध थाय छे." आ श्लोक सांभळी राजकुमार तद्दन स्वस्थ थइ गयो; अने वनमां बनेलो सर्व वृत्तांत तेणे कही बताव्यो. ते सांभळी पडदा तरफ जोइने राजा बोल्यो के, " हे पुत्री ! तुं गाममां रहे छे छतां आ वानर, वाघ अने मनुष्यनुं वन संबंधी वृत्तांत तें केवी रीते जाण्युं ?" ते सांभळी पडदामां गुप्त रहेला शारदानंदने नीचेनो श्लोक कह्यो–

देवगुरुप्रसादेन, जिव्हाग्रे मे सरस्वती ।
तेनाहं नृप जानामि, भानुमत्यास्तिलं यथा ॥ १ ॥

भावार्थः–" देवगुरुना प्रसादथी मारी जिव्हाना अग्र उपर सरस्वती वसे छे; तेथी हे राजन् ! भानुमती राणीना तिलनी जेम हुं बधुं जाणी शकुं छुं."

आ श्लोकथी राजानो पूर्व संदेह दूर थयो, एटले राजा अने गुरु परस्पर हर्षथी मळ्या.

आ वृत्तांत सांभळीने श्रावकोए स्वामी, विश्वासी, देव, गुरु, मित्र, वृद्ध अने बाळकनो द्रोह तथा थापण ओळववी इत्यादि महापाप सर्वथा विशेषपणे वर्जवा.

" एवी रीते श्रावके शुद्धव्यवहारमां लागता सर्व दूषणो तजी देवा के जेथी आ लोक अने परलोकमां निरंतर यशस्वीपणुं प्राप्त थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
सप्तमव्रतविषये त्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३० ॥

व्याख्यान १३१ मुं.

उपरना प्रबंधोमां अतिचारो सहित बीजुं गुणव्रत कह्युं, हवे अनर्थदंडपरिहार नामे त्रीजुं गुणव्रत कहे छे.

शरीराद्यर्थदंडस्य, प्रतिपक्षतया स्थितः ।
योऽनर्थदंडस्तत्त्यागः, तृतीयं तु गुणव्रतम् ॥ १ ॥

भावार्थः—" शरीरादिने अर्थे थता ' अर्थदंड ' ना प्रतिपक्षी अनर्थदंडनो त्याग करवो ते त्रीजुं गुणव्रत कहेवाय छे. "

विस्तारार्थः—जेनाथी प्राणी अनर्थ एटले प्रयोजन विना पुण्यरूप धनना अपहारवडे दंडाय अने पापकर्मथी लेपाय ते अनर्थदंड कहेवाय छे. तेना मुख्य चार प्रकार छे ते आ प्रमाणे–" आर्त्तरौद्ररूप अपध्यान, पापकर्मनो उपदेश, हिंसामां उपकारी थाय तेवी वस्तुनुं दान अने प्रमादनुं आचरण. "

तेमां जे अपकृष्ट कहेतां नठारुं ध्यान ते अपध्यान कहेवाय छे. ध्यान एटले अंतर्मुहूर्त्त सुधी मननी स्थिरता अथवा एकाग्रता. श्री ठाणांगसूत्रमां कहेलुं छे के, " अंतर्मुहूर्त्त पर्यंत चित्तनी एकाग्रता ते छद्मस्थनुं ध्यान अने योगनिरोध ते केवळीनुं ध्यान. " ते अपध्यान आर्त्त अने रौद्र एवा बे भेदवाळुं छे. तेमां पण आर्त्तध्यान चार प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—अनिष्ट एवा शब्द, रूप, रस अने गंधादि प्राप्त थवाथी त्रण काळमां पण तेवां न मळे तो ठीक एवी तेना वियोगनी चिंता करवी ते आर्त्तध्याननो पहेलो भेद. इच्छित शब्दादिक मेळवीने त्रणे काळ पण तेनो विच्छेद-वियोग न थाय एवुं चिंतवन ते आर्त्तध्याननो बीजो भेद. रोगादिकनी वेदना प्राप्त थये ते क्यारे जशे एवी तेना वियोगनी चिंता ते आर्त्तध्याननो त्रीजो भेद अने भोगवेला कामभोगनुं स्मरण करवुं ते आर्त्तध्याननो चोथो भेद; अथवा आवश्यक निर्युक्तिमां आवेला ध्यानशतकनी वृत्तिमां तो कह्युं छे के–इंद्र तथा चक्रवर्त्ती विगेरेना रूपादिक अने समृद्धि सांभळीने अथवा जोइने तेनी प्रार्थना करनारुं अधम निदान के नियाणुं करवुं के, ' आ तपना अथवा दान विगेरेना प्रभावथी हुं देवेंद्रादि थाउं ' ते आर्त्तध्याननो चोथो भेद जाणवो. अहिं कोइ शंका करे के, ' ए ध्यान अधम केम कहेवाय ? ' तेना उत्तरमां कहेवानुं के, ' ते ध्यान अत्यंत अज्ञानमग्नपणाथी थाय

छे तेथी ते अधम ध्यान कहेवाय छे. केमके ज्ञानी सिवाय बीजाओने ज सांसारिक वैभवमां अभिलाषा थाय छे.'

ध्यान आत्मवृत्तिवाळुं होवाथी अलक्ष्य छे पण ते लक्षणोथी जणाय छे. आर्त्तध्यानना आ प्रमाणे चार लिंग के चिन्ह छे. आक्रंदन एटले मोटा शब्दथी रुदन करवुं, शोचन एटले नेत्रमांथी आंसु पाडवा, परिदेवन एटले दीनता करी वारंवार क्लिष्ट भाषण करवुं अने ताडन एटले छाती कुटवी–आ चार लिंग इष्ट वियोग अने अनिष्ट संयोगथी थती वेदनावडे उत्पन्न थाय छे. आ ध्यानथी तिर्यंचनी गति प्राप्त थाय छे.

श्रीआवश्यकसूत्रनी वृत्तिमां श्रीहरिभद्रसूरिए कह्युं छे के, "आर्त्तध्यानथी तिर्यंचगति प्राप्त थाय छे, रौद्रध्यानथी नरकगति प्राप्त थाय छे, धर्मध्यानथी देवगति प्राप्त थाय छे अने शुक्लध्यानथी मोक्षगति प्राप्त थाय छे."

आर्त्तध्यानथी संजती नामे साध्वी गृहगोधा (घरोळी) थइ हती. ए ध्यान देशविरति नामे पांचमा गुणठाणा सुधी होय छे. ए ध्यानथी नंदमणिकार श्रेष्ठी मंडुक एटले देडकापणुं पाम्यो हतो अने सुंदर श्रेष्ठी चंदनघो थयो हतो. एवी रीते आर्त्तध्याननुं फळ जाणवुं.

बीजुं रौद्र नामनुं अपध्यान आर्त्तध्यानथी विशेष क्रूर अध्यवसायवाळुं छे. ते पण चार प्रकारनुं छे. एकेंद्रियादि प्राणीओने ताडन करवुं, वींधवुं, बंधन करवुं, आंकवुं अने तेमना प्राणनो वियोग कराववो. वळी खड्ग, शक्ति, भाला विगेरेथी तेमज वीर, भूत, पिशाच के मूठ विगेरेना प्रयोगथी अने विषप्रयोगथी अथवा मंत्र, तंत्र के यंत्रादिकथी मनुष्यादिकने मारी नाखवानुं क्रोधथी चिंतवन करवुं ते हिंसानुबंधि नामे रौद्रध्याननो प्रथम भेद छे.

चाडी करवी, अघटतुं वचन–चकार मकारादि बोलवुं, पोताना गुणनी अधिकता करी बीजाना दोष प्रगट करवा, तेमज पोताने इच्छित एवा राजानो जय सांभळी बीजा राजाने माटे रौद्रबुद्धिथी कहेवुं के "ठीक थयुं, आपणा राजाना खड्गमांज जय छे, के जेना एक प्रहारवडे आटलाने मारी नाख्या." इत्यादि वारंवार बोलवुं अथवा तेवुं चिंतवन करवुं ते मृषानुबंधि नामे रौद्रध्याननो बीजो भेद छे.

तीव्र रोषथी द्रव्यना स्वामीओना मरणादिवडे परद्रव्यहरण करवानी सगवडता थवा विगेरेनुं चिंतवन करवुं ते स्तेयानुबंधि नामे रौद्रध्याननो त्रीजो भेद छे.

पोताना द्रव्यनी रक्षा माटे सर्वत्र शंका पामी शत्रु विगेरेने हणवा विगेरेना अध्यवसाय करवा ते संरक्षणानुबंधि नामे रौद्रध्याननो चोथो भेद छे.

ध्यानशतकमां कह्युं छे के, करवुं, करावयुं, अनुमोदवुं, अने तत्संबंधी वारंवार चिंतवन कर्या करवुं–एम चार प्रकारनुं रौद्रध्यान छे. अविरत सम्यग्दृष्टि अने देशविरति श्रावकोए सेवेलुं–चिंतवन करेलुं एवुं ते दुर्ध्यान अश्रेयकारी, पापरूप अने निंदवा योग्य छे. एना चार लिंग (चिन्ह) छे, ते आ प्रमाणे–पूर्वे बतावेल हिंसाप्रमुख चारेने विषे जे एक वार आदर करवो ते प्रथम लिंग. ए चारेमां वारंवार प्रवृत्ति करवी ते बीजुं लिंग. कुशास्त्र सांभळीने अथवा अज्ञानथी हिंसात्मक यज्ञ विगेरेमां धर्मबुद्धिथी प्रवर्त्तवुं ते त्रीजुं लिंग. मरणांत सुधी काळशौकरिक कसाइनी जेम हिंसादिक थकी निवृत्त न थवुं ते चोथुं लिंग. अथवा विचारामृतसंग्रह नामना ग्रंथमां कह्युं छे के, " रौद्रध्यानथी मृत्यु पामेलो तंदुल जातिनो मत्स्य, हिंसादि दुष्कर्म कर्या विना पण असंख्य दुष्कर्मवडे पराभव करनारा एवा दुरंत नरके[1]मां जाय छे. " रौद्रध्यान ऊपर कुरुड अने उकुरुड नामना बे महाशयनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

कुरुड अने उकुरुड मुनिनी कथा.

कुणालानगरीना दरवाजानी खाळ पासे कुरुड ने ऊकुरुड नामना बे मुनि कायोत्सर्गे रह्या हता. तेमना प्रभावथी ' तेओने जळनो उपसर्ग न थाय ' तेम धारी मेघ नगरनी बहार वर्षतो हतो. ते हकीकत जाणीने लोकोए एकठा थइ तेमने ऊपद्रव करवा मांड्यो अने कहेवा लाग्या के, " तमारा बंनेना महिमाथी नगरमां वरसाद थतो नथी, तेथी अमने घणो परिताप रहे छे, अने ए अमारे मोटा अरिष्ट–विघ्नरूप छे. माटे तमे अहींथी नीकळो. " आ प्रमाणे वारंवार कहेवाथी ते बंनेना ध्यानमां भंग थयो अने ते लोकोनी उपर रौद्रध्यान उत्पन्न थयुं. तेथी ते बंने आ प्रमाणेनो श्लोक बोल्या—

वर्ष मेघ कुणालायां, दिनानि दश पंच च ।
नित्यं मुशलधाराभि–र्यथा रात्रौ तथा दिने ॥१॥

भावार्थः—" हे मेघ ! कुणालानगरीमां मुशळधाराए जेवो रात्रीए तेवोज दिवसे पंदर दिवस सुधी वरष. " आटलुं कहेतांमांज मेघ वरसवा लाग्यो. ते

[1] तंदुलमत्स्य सातमी नरके जाय छे.

एटलो वर्ष्यो के तेना जळप्रवाहमां आखुं नगर तणाइने समुद्रमां चाल्युं गयुं. तेमां ते बंने मुनि पण अशुभ ध्यानमां वर्तता सता तणाइ गया. ए प्रमाणे ते बंने मुनि द्रव्यथी अने भावथी डुबीने नरके गया.

" आर्त्तादि अपध्यानथी मेघनी वृष्टि करावीने क्षमारहितपणे आखा नगरने तणावी ते बंने मुनि अनर्थदंडवडे नरकगतिने प्राप्त थया.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ
अष्टमव्रतविषये एकत्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३१ ॥

व्याख्यान १३२ मुं.

अनर्थदंडना बीजा भेदो कहे छे.

अनर्थदंडनो बीजो भेद पापकर्मनो उपदेश करवो ते छे; जेमके, ' क्षेत्रमां खोदो, हळ विगेरे तैयार करो, बळदने पलोटो (दमो), शत्रुओने मारो, कन्यानो विवाह करो. ' इत्यादि बीजाने उपदेश देवो ते पापोपदेश छे. आगममां सांभळ्युं छे के, ' कृष्ण वासुदेव अने चेडा महाराजाने पोताना बाळकोनो विवाह करवानो पण नियम हतो. '

अनर्थदंडनो त्रीजो भेद ' हिंसामां उपयोगी थाय तेवी वस्तुओ आपवी ते छे. ' हिंसामां उपयोगी उपकरणो जेवां के गाडुं, शस्त्र, घंटी, सांबेलुं, खारणीओ, दातरडुं, करवत, छरी, कांकसी, कोदाळी, रेचक औषध, व्रणना कृमि अने गर्भनो नाश करे तेवां मूळीयां तथा क्षार विगेरे कोइने आपवा ते पापबंधना हेतु छे. ते विषे एक वार्ता छे के, " द्वारिकानगरीमां धन्वंतरि अने वैतरणी नामे बे वैद्य हता. तेमां धन्वंतरी घणा सावद्य कर्म करतो अने वैतरणी पण औषधादिमां घणी जीवहिंसा करतो, तथापि ते कोइपण रोगी मुनिने निर्दोष औषध आपतो. एक वखते कृष्ण वासुदेवे नेमिनाथ प्रभुने पूछ्युं " हे स्वामी ! वैद्योनी शी गति थाय ? लोकमां कहेवत छे के,—

कवी चीतारो पारधी, वळी विशेषे भट्ट;
गांधी नरक सधावीआ, वैद्य देखाडे वट्ट ॥ १ ॥

' कवि, चित्रकार, पारधि, भट्ट, अने गांधी-ए नरके जाय छे अने तेमने वैद्य मार्ग बतावे छे. ' आ नगरीमां धन्वंतरि अने वेतरणि नामे बे वैद्य रहे छे, तेमनी शी गति थशे ?" प्रभु बोल्या-" राजन् ! पहेलो सातमी नर्कना अप्रतिष्ठान पाथडे उत्पन्न थशे अने बीजो आरंभ करे छे पण ते करतां मनमां कांइक बीहे छे, तेथी मरण पामीने वनमां वानर थशे. त्यां कोइ मुनिने पगे कांटो वागेलो जोइ, जातिस्मरण उत्पन्न थतां शल्योद्धारिणी औषधिवडे तेमने साजा करशे. पछी मुनि तेने धर्मोपदेश आपशे. ते सांभळी पूर्वना पापकृत्यने आळोवी त्रण दिवस सुधी अनशन करी सहस्रार देवलोकमां देवता थशे. पेलो धन्वंतरि वैद्य षट्काय जीवनी हिंसाथी वारंवार अप्रतिष्ठान पाथडे उत्पन्न थशे; अने वनस्पत्यादिकमां एक कोडीने अनंतमे भागे वेचाशे. " आ प्रमाणे अनर्थदंडनो त्रीजो भेद जाणवो.

प्रमादनुं आचरण ते अनर्थदंडनो चोथो भेद छे. प्रमाद–मद्यादि पांच प्रकारना छे, तेने अंगीकार करवा ते अनर्थदंड छे. ते विषे आगममां कह्युं छे के,—

मज्जं विसय कसाया, निद्दा विकहा य पंचमी भणिया ।
एए पंच पमाया, जीवं पाडंति संसारे ॥ १ ॥

" मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा-ए पांच प्रमाद जीवने संसारमां नाखे छे. " मद्य एटले मदिरा–उपलक्षणथी आथो, मांस, सरको, अने ताडी विगेरेनुं ग्रहण करवुं. मद्य लौकिक अने लोकोत्तर बंनेमां निंद्य छे. कह्युं छे के, " मद्यथी मोहित थयेल बुद्धिवाळो पुरुष गाय छे, भमे छे, यद्वातद्वा बोले छे, रोवे छे, दोडे छे, जेने तेने पकडे छे, क्लेश करे छे, मारे छे, हसे छे, खेद पामे छे अने पोतानुं हित समजतो नथी. " वळी " संबोधसत्तरी " नी वृत्तिमां कह्युं छे के, " मद्यथी मदोन्मत्त थयेला कृष्णना पुत्रोना दोषथी एकसो ने बत्रीश कुळकोटी यादवोनो द्वारकानो दाह थवावडे क्षय थयो. " तेमां छप्पन कुळकोटी यादवो नगरमां रहेता हता अने बोंतेर कुळकोटी यादवो नगरनी बहार रहेता हता. तेओमां जेमणे चारित्र अंगीकार करवुं कबुल कर्युं तेमने नेमिनाथ प्रभु पासे मूकीने बाकीनाओमां जेओ द्वारकाथी दूर गया हता, तेमने पण खेंची लावीने अग्निमां होमी दीधा हता. कुळकोटीनी संख्या एवी रीते छे के कोइ एक यादवना घरमांथी एकसो आठ कुमार नीकळे एवा कुळने एक कुळकोटी

कहेवाय एम वृद्धो पासेथी सांभळ्युं छे. तत्त्व तो बहुश्रुत जाणे. आ प्रमाणे पहेलो मद्य नामे प्रमाद् जाणवो.

विषय ते शब्दादिक पांच प्रकारे छे. कह्युं छे के, " जेनुं चित्त विषयथी व्याकुळ होय छे तेवो पुरुष, पोतानुं हित के अहित जाणतो नथी, तेथी ए जीव अनुचित कर्म करीने आ दुःखथी भरेला संसाररूप अरण्यमां चिरकाळ भटके छे. " आ बीजो विषय नामे प्रमाद् जाणवो.

कष एटले संसार तेनो आय एटले लाभ जेनाथी थाय ते कषाय कहेवाय. तेना चार प्रकार छे, तेनुं विशेष स्वरूप आगळ कहेवामां आवशे. आ कषाय नामे प्रमादनो त्रीजो भेद् जाणवो.

निद्रा एटले उंघ, ते पांच प्रकारनी छे. जे निद्रामांथी सुखे जगाय ते निद्रा, जेमांथी दुःखे जगाय ते निद्रानिद्रा, उभा उभा आवे ते प्रचळा, चालता चालता आवे ते प्रचळाप्रचळा अने वासुदेवथी अर्द्ध बळवाळी के जेमां दिवसे चिंतवेलो अर्थ रात्रे साधे छे ते स्त्यानर्द्धि. ए प्रमाणे निद्राना पांच भेद छे.

स्त्यानर्द्धि निद्रानी पूर्वे कथित व्याख्या कर्मग्रंथनी चूर्णीमां कहेली छे. पण तेटलुं बळ वज्रऋषभनाराच संघयणनी अपेक्षाए समजवुं. ते सिवाय तो वर्त्तमानकाळना युवानोथी आठगणुं बळ होय एवो कर्मग्रंथनी वृत्तिनो अभिप्राय छे. जितकल्पनी वृत्तिमां एम लखे छे के, " स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थाय त्यारे अति संक्लिष्ट परिणामथी दिवसे जोयेला अर्थने रात्रे उंघमां ने उंघमां उठीने साधे छे; अने तेनुं वासुदेवथी अर्द्ध बळ होय छे. ते निद्रानो वियोग होय त्यारे पण ते मनुष्यमां बीजा पुरुषोथी त्रणगणुं के चोगणुं बळ होय छे. आ निद्रा नरकगामी जीवोनेज होय छे. " आ निद्रा विषे महाभाष्यनी २३४ मी गाथामां घणां दृष्टांतो कहेला छे. ते गाथामां कह्युं छे के—" थीणद्धी निद्रा उपर मांस, मोदक, हाथीदांत, कुंभार अने वडवृक्ष—एम पांच उदाहरणो जाणवा. ते उदाहरणो आ प्रमाणे—

कोइ कणबी मांसभक्षी हतो. तेने कोइ स्थविर साधुए प्रतिबोध पमाडी दीक्षा आपी. अन्यदा कोइ ठेकाणे पाडानो वध थतो तेना जोवामां आव्यो. तेथी तेनो अभिलाष करतो ते सुइ गयो. रात्रे तेने स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थइ आव्यो, तेथी तेणे उभा थइ कोइ ठेकाणे जइ बीजा पाडाने मारी तेनुं मांस भक्षण कर्युं अने बाकीनुं जे वध्युं ते साथे लावी उपाश्रयमां मूकीने सुइ गयो. प्रातःकाळे तेणे गुरुने कह्युं के, ' में आवुं स्वप्न जोयुं छे. ' त्यां तो पेलुं मांस

बीजा साधुओना जोवामां आव्युं. तेथी तेमणे जाण्युं के, 'आ साधुने रात्रीए स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थयेलो जणाय छे.' पछी संघे मळी तेनी पासेथी ओघो मुहपत्ति विगेरे मुनिलिंग लइ लीधुं अने तेने विसर्जन करी दीधो.

कोइएक साधु श्रावकने घेर मोदक जोइ तेनी अभिलाषा करतो सुइ गयो. रात्रे तेने स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थयो, एटले उठीने ते श्रावकने घेर गयो, अने तेना कमाड भांगी ते मोदक खाइ बाकीना उपाश्रये लावी पात्रामां नाखीने सुइ गयो. सवारे उठीने तेणे पण स्वप्न आव्यानुंज गुरुने कह्युं, पण पात्रां पडिलेहतां तेमां मोदक दीठा, एटले गुरुए स्त्यानर्द्धि निद्रा आवेली जाणी विसर्जन करी दीधो.

कोइएक साधुने हाथीए बहु खेद पमाड्यो. त्यांथी कोइ प्रकारे नाशीने ते उपाश्रयमां आव्यो, अने ते हाथी उपर मनमां कोप करतो सुइ गयो. रात्रीए तेने स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थतां ते मुनि नगरना कमाड भांगी, ते हाथीने मारी, तेना दांत खेंची काढी पोताना स्थानमां लावीने सुइ गयो. प्रभाते ते हकीकत जाणवामां आवतां तेने संयमने अयोग्य जाणी गुरुए काढी मूक्यो.

कोइ कुंभारे मोटा गच्छमां दीक्षा लीधी. एक वखत स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थतां पूर्वे जेम माटीना पिंड तोडतो हतो तेम तेणे साधुओना शिर तोडीने कबंध [धड] नी साथे एकांतमां मूकी दीधा. बीजा केटलाएक मुनिओ त्यांथी खसी गया ते बच्या. प्रातःकाळे ए देखाव जोइ संघे ते साधुने गच्छथी दूर कर्यो.

कोइ साधुने जवा आववाना मार्गमां एक वडनुं वृक्ष बहु दुःखदायक लागतुं हतुं. एकदा रात्रे स्त्यानर्द्धि निद्रा आवतां ते वडने ऊखेडी पोताना ऊपाश्रय पासे नाखीने ते सुइ गयो. सवारे एवुं स्वप्न दीठानुं आलोचतां बीजा मुनिना जाणवामां ते वृत्तांत आव्युं; एटले तेना साधुचिन्हो छीनवी लइने संघे तेने गणनी बहार कर्यो. आ सिवाय बीजा दृष्टांतो पण निशीथसूत्रमांथी जाणी लेवा.

निद्रामां घणा दोषो छे. निद्रा सर्व गुणनो घात करनारी, संसारने वधारनारी अने प्रमादने उत्पन्न करनारी छे. मुनि अने धर्मिष्ट माणसने तो निद्रारहितपणुंज श्रेष्ठ छे. श्रीभगवतीसूत्रमां वीरप्रभुनी शय्यातरी अने मृगावती श्राविकानी नणंद जयंतीए प्रभुने प्रश्न कर्यो छे के, "हे भगवंत ! सुवुं सारूं के जागवुं सारूं ?" प्रभुए कह्युं के, "केटलाकने सुवुं सारूं छे अने केटलाकने जागवुं सारूं छे. जे अधर्मी ने अधम मनुष्यो अधर्मवडेज आजीविका करता सता

विचरे छे, तेवा जीव सुता सारा छे; केमके एवा जीव सुता सता घणा प्राणीओने, भूतोने, सत्वोने दुःख देनारा थइ शकता नथी. वळी एवा जीवो सुता सता पोताने, परने अने बंनेने अधर्ममां–हिंसादि कार्यमां प्रवर्त्तावी शकता नथी, तेथी तेओ सुता सारा छे. अने हे जयंति ! जे जीवो धर्मी छे अने धार्मिक प्रवृत्तिनाज करनारा छे, एवा जीवो जागता सारा छे. ” इत्यादि जाणी लेवुं. (एवी रीते बळवान्पणुं, दुर्बळपणुं, चतुरपणुं अने आळसुपणुं इत्यादि विषे पण जाणी लेवुं.) आ प्रमाणे निद्रा नामे प्रमादनो चोथो भेद जाणवो.

“ चौद पूर्वधर मुनि पण निद्रारूप प्रमादना योगथी पूर्वोनुं विस्मरण पामी जइने घणा काळ सुधी निगोदमां जइने वसे छे, तेथी निद्रारूप प्रमादनो अवश्य त्याग करवो. ”

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ अष्टमव्रतविषये द्वात्रिंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥१३२॥

व्याख्यान १३३ मुं.

हवे ‘ विकथा ’ नामे पांचमो प्रमाद कहेछे.

राज्ञा स्त्रीणां च देशानां, भक्तानां विविधाः कथाः ।
संग्रामरूपसद्वस्तु–स्वादाद्या विकथाः स्मृताः ॥ १ ॥

भावार्थः—“ राजाओना युद्धादिनी ते राजकथा, स्त्रीओना रूपादिकनी ते स्त्रीकथा, देशनी उत्तम वस्तुओनी ते देशकथा अने भोजनना स्वाद विगेरेनी ते भक्तकथा–ए प्रमाणेनी विविध कथाओ ते विकथा कहेवाय छे. ”

विस्तारार्थः—राजाओना युद्ध विगेरेनुं वर्णन ते राजकथा. जेमके, “ आ राजा भीमनी जेम युद्ध करनारो छे, ते चिरकाळ सुधी राज्य करो. ” अथवा “ आ राजा दुष्ट छे ते मृत्यु पामो. ” इत्यादि. स्त्रीनी कथा एटले तेना रूपनी निंदा अथवा प्रशंसा करवी ते. जेम के,

द्विजराजमुखी गजराजगति–स्तरुराजविराजितजंघतटी ।
यदि सा दयिता हृदये वसति, क्व जपः क्व तपः क्व समाधिरिति॥१॥

" आ स्त्रीनुं मुख चंद्र जेवुं छे, तेनी चाल गजेंद्रना जेवी छे अने तेनी जंघा कदळीना स्तंभ जेवी छे; एवी स्त्री जो हृदयमां वसे तो पछी जप, तप अने समाधि शा कामनी छे ? " तेनी निंदा आ प्रमाणे-" आ स्त्रीनी गति उंट जेवी छे, स्वर कागडा जेवो छे, पेट लांबुं छे, नेत्र पीळा छे. माठा शीळवाळी छे, अने कटु भाषण करनारी छे तथा अभागिणी छे. तेवी स्त्रीथी शुं सुख मळे ? " वळी स्त्री संबंधी देश, जाति, कुळ, रूप, नाम, पहेरवेश अने परिजननी कथा करवी ते पण स्त्रीकथा. तेमां देश संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे-"लाटदेशनी स्त्रीओ मधुरभाषी अने रतिक्रियामां निपुण होय छे. " इत्यादि. जाति संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे-' विधवा थयेली ब्राह्मणनी स्त्रीओने धिक्कार छे, के जेओ जीवती मर्या जेवी छे, अने केटलीक बीजी जातिनी स्त्रीओने धन्य छे, के जे सदा अनिंदित रहे छे. " इत्यादि. कुळ संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे-" अहो ! सोलंकी राज्यवंशनी पुत्रीओनुं साहस जगतमां सर्वथी अधिक छे, जेओ पतिनी अणमानीती होय तोपण पति मृत्यु पाम्ये तेनी पाछळ अग्निमां प्रवेश करे छे. " इत्यादि. रूप संबंधी स्त्रीकथा ते के जेमां स्त्रीना स्वरूपनुं वर्णन करवामां आवे. नाम संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे-" जेवुं स्त्रीनुं नाम तेवुं परिणाम " एम कहे. नेपथ्य (वेश) संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे-" ते स्त्रीना रूप, यौवन अने पहेरवेशने धिक्कार छे के जे युवान पुरुषोना नेत्रने आनंददायक थतां नथी. " परिजन संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे-" आ स्त्रीनो दास दासीनो परिवार डाह्यो अने विनीत छे " इत्यादि-स्त्रीकथानो त्याग करवो.

देशकथा आ प्रमाणे-जेमके " माळवदेश रमणीय छे, के जेमां सारां धान्य अने सुवर्ण थाय छे; अने ज्यां कटिमेखळा पण सोनानी पहेराय छे. गुर्जरभूमि दुर्गम अने उग्र सुभटवाळी छे. लाटदेश तो भील्ललोकोथी भरपूर छे. काश्मीरमां मूर्खता बहु छे; अने कुंतलदेश सुखमां स्वर्ग जेवो छे. " आ प्रमाणे देशकथा सद्बुद्धिवाळा पुरुषोए दुर्जनना संगनी जेम छोडी देवी.

भक्तकथा—एटले भोजनना स्वाद विगेरेनी कथा, ते आ प्रमाणे-जेमके " आ पुरुषे विवाहादि कार्यमां घणी उत्तम रसोइ करी हती. तेमां जे शाक भाजी बनाव्या हता, तेनो स्वाद तो हजु दाढमांज छे " अथवा " आणे करेला पकान्न विगेरे तो बाळी देवा जेवाज हता. एक पापड विना बीजुं बधुं खराब कर्युं हतुं. " इत्यादि.

आ प्रमाणे चार प्रकारनी विकथा जाणवी. संबोधसत्तरी नामना प्रकरणनी

वृत्तिमां सात प्रकारनी विकथा कहेली छे–तेमां उपर कहेली चार अने बीजी त्रण प्रकारनी विकथा आ प्रमाणे–श्रोताना हृदयने मृदु बनावी दे ते पहेली मृद्वीकथा, के जेमां पुत्रादि प्रजानी कथानुं प्रधानपणुं होवाथी ते करुणा उत्पन्न करे तेवी होय छे जेमके, " हा पुत्र ! हा वत्स ! अमने मूकीने तुं प्रज्वलित अग्निमां क्यां पड्यो ? " इत्यादि. बीजी दर्शनभेदिनी कथा–जेमां कुतीर्थीओना ज्ञानादिकना अतिशयपणानी प्रशंसा करवामां आवे छे. जेमके, " बुद्धनुं शासन सूक्ष्म अर्थने जणावनारुं होवाथी श्रवण करवा योग्य छे. " इत्यादि. त्रीजी चारित्रभेदिनी कथा–जेमां व्रत ग्रहण करेला अथवा व्रत लेवाने तत्पर थयेला पुरुषना चारित्र संबंधी विचारनो भेद करवामां आवे छे. जेमके, " केवळी विनाना आ काळमां चारित्रनो शुद्ध के अशुद्ध भाव कोण जाणे छे, माटे चारित्र लेवुं नकामुं छे. " वळी " आज तो चारित्र लइने मात्र देहने पीडा करवानी छे. कारण के गिरिना शिखर उपरथी पडवुं सहेलुं छे पण चारित्र पाळवुं सहेलुं नथी. " वळी एम कहे के,—

काले पमायबहुले, दंसणनाणेहिं वट्टए तीथ्थं ।
वुच्छिन्नं च चरित्तं, तो गिहिधम्मो वरं काऊ ॥ १ ॥

" बहु प्रमादवाळा आ काळमां दर्शन अने ज्ञानवडेज शासन प्रवर्त्ते छे, चारित्र तो विच्छेद पाम्युं छे, तेथी हाल तो गृहस्थनो धर्म अंगीकार करवो तेज श्रेष्ठ छे. "

आ प्रमाणे पूर्वोक्त चारमां बीजी त्रण विकथा मेळववाथी सात प्रकारनी विकथा थाय छे; पण अहिं मथाळाना श्लोकमां तो आवश्यकादि सूत्रमां प्रसिद्ध चार विकथा होवाथी चार प्रकारनीज कहेली छे. विकथा उपर एक रोहिणी नामनी स्त्रीनी कथा छे ते आ प्रमाणेः—

विकथा उपर रोहिणीनी कथा.

कुंडनपुरी नामनी नगरीमां सुभद्र नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने रोहिणी नामे एक बाळविधवा पुत्री हती. तेणीए गुरु पासे अध्ययन करीने कम्मपयडी विगेरे ग्रंथो पोताना नामनी जेवा कंठे कर्या हता. ते हमेशां त्रिकाळ जिनपूजा अने बे काळ आवश्यक करवा छोडती नहोती अने नित्य भणवाथी ते एक लाख करतां विशेष स्वाध्यायनो पाठ करनारी थइ हती.

अहिं अंतरंग एवुं बन्युं के, चित्तरूप नगरमां रहेनारा मोहराजाने तेना कुबोध नामना दूते जणाव्युं के, ' महाराज ! एक रोहिणी नामे स्त्री तमारा वारंवार अवगुण गाय छे अने तमारा पुत्र राग अने द्वेषनी, तमारा मिथ्यात्व नामना मंत्रीनी, अने अढार पापस्थानकरूप सभासदोनी घणी निंदा करे छे. ' ते सांभळी मोहराजा पोतानी सभा समक्ष रुदन करतो गद्गद् वाणीए बोल्यो के, ' अरे ! मारी सभामां-मारा परिवारमां कोइ एवो नथी के जे मारी आज्ञाने खंडन करनारी रोहिणी के जे मारा वैरी चारित्रधर्मने मळवाने उत्सुक छे तेने वश करीने मने सोंपी दे ? ' आ प्रमाणेनां मोहराजानां वचनो सांभळीने एक खुणे बेठेली मोहराजानी स्त्री कुदृष्टिनी सखी विकथा नामे योगिनी बोली-' हे स्वामी ! आवा स्वल्प काममां आपने खेद करवो योग्य नथी; केमके तमारा एके एक सेवके सम्यक्त्व, व्रत अने श्रुतथी पूर्ण थयेला एवा जीवोने पण पोताना गुणोथी पाडी दीधा छे, तेओ अद्यापि आपना चरणनी पासे रजनी जेम रझळे छे. तेमनी संख्या पण कोइ जाणतुं नथी. ते विषे जीवानुशासननी वृत्तिमां कहेलुं छे के, ' मोहना प्रभावथी अनंता श्रुतकेवळीओ पण पूर्वगत श्रुतने भूली जइ मृत्यु पामीने अनंतकायमां गयेला ने रहेला छे. ' ते माटे हे राजा ! आ बिचारी रोहिणी तो कोणमात्र छे ? " आ प्रमाणे कही मोहराजाए आपेली आशिष ग्रहण करीने विकथाए रोहिणीना मुखमां अने चित्तमां प्रवेश कर्यो. ते वखतथी रोहिणी तत्काळ धर्मनां सर्व कार्यमां विकथा करवा लागी अने बीजानी पासे करावबा लागी. एक वखते साधुओए अने साध्वीओए तेने शिक्षा आपी के, ' हे श्राविके ! तने सुज्ञातने परनिंदा ने विकथा करवी योग्य नथी. कह्युं छे के,

यदिच्छसि वशीकर्त्तुं, जगदेकेन कर्मणा ।
परापवादसस्येभ्य-श्चरंतीं गां निवारय ॥ १ ॥

" जो एकज कर्मथी आ जगत्ने वश करवाने तुं इच्छतो हो तो परनिंदारूप घासने चरती एवी तारी वाणीरूप गायने तेमांथी निवृत्त कर. " ते सांभळी रोहिणीने क्रोध चड्यो; एटले हळवे हळवे मोहराजानुं सर्व सैन्य तेनी पासे आव्युं अने विकथानी प्रशंसा करवा लाग्युं. पछी तो रोहिणी विकथा करवामां एटली बधी मशगूल थइ गइ के तेणीए सर्व पठन पाठनादि पण छोडी दीधुं.

एक वखत राजमार्गे जतां रोहिणी राजानी राणीना दोष कहेती हती. ते

राणीनी दासीए सांभळ्या, एटले तेणीए राजाने ते वात कही. राजाए रोहिणीना पिताने बोलावीने पूछयुं के, 'हे श्रेष्ठी! तारी पुत्रीए मारी राणीनुं कुशीलपणुं क्यां जोयुं अने शी रीते जाण्युं?' श्रेष्ठी बोल्यो—'हे स्वामिन्! ए पुत्रीनो स्वभाव दुष्ट छे.' पछी कोप पामेला राजाए तेने नगरमांथी काढी मूकी. अरण्यमां दुःखनो अनुभव करीने ते मृत्यु पामी अने अपरिग्रहिता व्यंतरदेवी थइ. त्यां बीजा देवताओए आपेलुं दुःख अनुभवी त्यांथी च्यवीने एकेंद्रियादिकमां अनंतकाळ भमी. छेवटे तेनो जीव भुवनभानु केवळी थयो.

"आ प्रमाणे विकथा करनारा प्राणीओने घणुं दुस्तर दुःख थाय छे, तेने जाणीने भव्यप्राणीओए वैराग्यादिवडे बंधमुक्त करनारी सत्कथा हंमेशा करवी, अने विकथाने छोडी देवी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ अष्टमव्रतविषये त्रयस्त्रिंशत्युत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३३ ॥

व्याख्यान १३४ मुं.

वळी सामान्यथी अनर्थदंडनो प्रमादाचरण नामनो चोथो भेद विशेषे कहेछे.

जीवाकुलेषु स्थानेषु, मज्जनादि विधापनम् ।
रसदीपादिपात्राणि, आलस्यात् स्थग्यते नहि ॥ १ ॥
उल्लोचं नैव बध्नाति, स्थाने महानसादिके ।
सर्वमेतत्प्रमादस्या—चरणमभिधीयते ॥ २ ॥

भावार्थः—"जीवथी भरपूर एवा स्थानमां स्नान विगेरे करे, रस पदार्थोना तथा दीपक विगेरेना पात्रोने आलसथी ढांके नहीं, अने रसोडा विगेरे स्थानोमां चंदरवा बांधे नहीं—ए सर्व प्रमादनुं आचरण कहेवाय छे."

विस्तारार्थः—जीवथी भरपूर एवा स्थान एटले जेमां लील, फुल, कीडीओ, मंकोडा तथा कुंथुवा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसा थाय तेम होय तेवी भूमि विगेरेमां स्नान करवुं योग्य नथी. एकादशीपुराणमां कह्युं छे के,

गृहे चैवोत्तमं स्नानं, जलं चैव सुशोधनात् ।
ततो त्वं पांडवश्रेष्ठ, गृहे स्नानं समाचरेत् ॥ १ ॥
कुपे ह्रदेऽधमं स्नानं, नद्यामेव च मध्यमं ।
वाप्यां च वर्जयेत्स्नानं, तटाके नैव कारयेत् ॥ २ ॥
पीड्यंते जंतवो यत्र, जलमध्ये व्यवस्थिताः ।
स्नाने कृते ततः पार्थ, पुण्यं पापं समं भवेत् ॥ ३ ॥

" जल गळीने घरे स्नान करवुं ते उत्तम स्नान छे; तेथी हे पांडवश्रेष्ठ ! तमारे घरे स्नान करवुं. १ कूवा अने धरामां स्नान करवुं ते अधम स्नान छे; नदीमां स्नान करवुं ते मध्यम स्नान छे, अने वापी तथा तळावमां स्नान करवुं ते तो तदन योग्य नथी. २ ज्यां स्नान करवाथी जळमां रहेला जंतुओ पीडा पामे, त्यां स्नान करवाथी हे पार्थ ! पुण्य अने पाप सरखुं थाय छे. ३ वळी ब्रह्मांडपुराणमां पण कह्युं छे के—

ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं, दानं तीर्थमुदाहृतं ।
तीर्थाणामपि यत्तीर्थं, विशुद्धिर्मनसः परा ॥ १ ॥

" ज्ञान तीर्थ छे, धैर्य तीर्थ छे अने दान पण तीर्थ छे; परंतु ते बधा तीर्थोनुं पण तीर्थ मननी उत्कृष्ट शुद्धि छे. " विष्णुपुराणमां पण कह्युं छे के, " जळस्वभावथी पवित्र छे. तेने पण जो अग्निवडे उष्ण कर्युं होय तो तेनी पवित्रतानी वातज शी करवी; तेथी पंडितजनो उष्ण जळवडे शुद्धि करवी तेने वखाणे छे. " मनुस्मृतिमां कह्युं छे के, " अंतर्गत दुष्ट चित्त तीर्थस्नान करवाथी शुद्ध थतुं नथी. ते तो सेंकडोवार जळथी धोयेला मदिराना पात्रनी जेम अपवित्रज रहे छे. १ प्रथम शौच सत्य, बीजुं शौच तप, त्रीजुं शौच इंद्रियोनो निग्रह अने चोथुं शौच सर्व प्राणी उपर दया करवी ते छे. त्यार पछी पांचमुं जळशौच छे. २. " वळी नागरखंडमां पण कह्युं छे के, " दृष्टिथी पवित्र (जोयेला) स्थाने पग मूकवो, वस्त्रथी पवित्र (गळेलुं) जळ पीवुं, सत्यथी पवित्र (साचुं) वचन बोलवुं अने मनथी पवित्र आचरण करवुं. "

हवे गृहस्थे जो स्नान करवुं होय तो दिवसे यतनापूर्वक करवुं; रात्रे करवुं

नहीं. मूळश्लोकमां आदिशब्द छे, तेथी पिशाब अने दस्त पण निर्जीव भूमिकाए ज करवुं. इत्यादि पोतानी बुद्धिथी समजी लेवुं.

वळी रसपदार्थ एटले घी, तेल, दुध, दहीं, छाश, अने जळ विगेरेनां पात्रो तेमज दीवो अने आदि शब्दथी भोजन विगेरेनां पात्रो आळसथी ढांके नहीं; अर्थात् ढांकवावडे जीवरक्षा करे नहीं ते प्रमादाचरण जाणवुं.

वळी महानस एटले रसोडा विगेरे स्थान उपर उल्लेच एटले चंदरवो बांधे नहीं ए पण प्रमादाचरण कहेवाय छे; कारण के गृहस्थे शयन, भोजन अने पाक करवाना स्थान उपर तेमज जलना, तथा देव, गुरु अने धर्मना स्थान उपर अवश्य उल्लेच बांधवो जोइए. कारण के रसोडा विगेरे स्थळे चंदरवो बांधेल न होवाथी जीववध सबंधी बहु दोषनो संभव छे. ते उपर एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणेः—

उल्लेच बांधवा उपर मृगसुंदरीनी कथा.

श्रीपुर नामना नगरमां श्रीषेण नामे राजा हतो. तेने जाणे बीजो देवराज (इंद्र) होय तेवो देवराज नामे एक पुत्र थयो हतो, ते कुमार दैवयोगे यौवन वयमां कुष्टी थयो. सात वर्ष सुधी घणा उपायो कर्या पण ते रोग मट्यो नहीं. छवटे वैद्योए तेने तजी दीधो. पछी राजाए गाममां एवो पडह वगडाव्यो के, " जे आ कुमारने नीरोगी करशे तेने हुं मारुं अर्धुं राज्य आपीश. " ते शहेरमां यशोदत्त नामना एक श्रेष्ठीने शीलादिव्रतमां आसक्त एक पुत्री हती, तेणीए पडहने निवारी पोताना हाथना स्पर्शमात्रथी राजकुंवरनो कोढ मटाड्यो. राजाए ते बंनेनुं पाणिग्रहण कराव्युं, अने विवाहउत्सव करी पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने पोते दीक्षा ग्रहण करी.

एकदा ते नगरे पोटिलाचार्य पधार्या. तेमने वंदना करवा माटे राजा अने राणी गया. देशना सांभळीने तेमणे पोतानो पूर्व भव पूछ्यो. गुरु बोल्या— 'वसंतपुर नगरमां देवदत्त नामे एक व्यापारी हतो. तेने धनेश्वर विगेरे चार पुत्रो मिथ्यात्वी हता. ते अरसामां मृगपुर नामना नगरमां जिनदत्त नामे श्रेष्ठीने मृगसुंदरी नामे एक पुत्री हती. तेणे त्रण अभिग्रह लीधा हता के, " जिनेश्वरनी पूजा करीने अने मुनिने दान आपीने जमवुं अने रात्रे जमवुं नहीं. " एक वखते व्यापार करवाने माटे पेलो धनेश्वर श्रेष्ठिपुत्र मृगपुरे आव्यो. तेणे जिनदत्त श्रावकनी पुत्री मृगसुंदरीने दीठी; तेथी ते तेनी उपर रागवाळो थयो. पण ' हुं मिथ्यात्वी छुं, तेथी आ कन्यानो पिता श्रावक मने ते कन्या आपशे नहीं '

एवुं विचारीने ते कपट श्रावक थयो; अने कोइ रीते तेना पिताने समजावी ते कन्याने परणीने पोताने घेर लाव्यो.

त्यां धर्मनी इर्ष्याथी तेणे मृगसुंदरीने जिनपूजा करवानो निषेध कर्यो. तेने जिनपूजा कर्या सिवाय जमवानो त्याग होवाथी त्रण उपवास थया. तेणीए कोइ मुनिमहाराजाने ते विषे पूछयुं, एटले गुरुए लाभालाभ विचारीने कह्युं के, "तुं चुला उपर चंदरवो बांध अने भावथी पंचतीर्थनी स्तुति करी, पांच साधुने नित्य दान दे, तेथी तने तारा अभिग्रह प्रमाणे फळ थशे." तेणीए ते प्रमाणे कर्युं. परंतु तेना सासरा विगेरेए चुला उपर चंद्रुओ देखीने धनेश्वरने कह्युं के, 'आ तारी स्त्रीए कांइक कामण करेलुं छे.' ते सांभळी धनेश्वरे तेणीए बांधेला उल्लेचने बाळी नाख्यो. मृगसुंदरीए पुनः बीजो उल्लेच बांध्यो. ते पण धनेश्वरे बाळी नाख्यो. एवी रीते सात उल्लेच बाळी नाख्या. पछी मृगसुंदरीने तेना सासराए कह्युं के, "हे भद्रे! शामाटे उल्लेच बांधवानो प्रयास करे छे?" मृगसुंदरीए कह्युं के 'जीवदया माटे.' त्यारे तेना सासराए क्रोधथी कह्युं के, 'चंद्रुआ बांधवा होय तो तारा बापने घेर जा.' ते बोली के–'तमे बधुं कुटुंब साथे आवीने मने मारे पियर मूकी जाओ.' पछी सर्वे तेने मुकवा चाल्या. मार्गमां कोइ गाम आव्युं. त्यां सासराना पक्षना कोइ सगाए सर्वनी महेमानगति करवा माटे तेमने जमाडवाने रात्रे रसोइ करी. जमवाने अवसरे मृगसुंदरीने घणुं कह्युं, तोपण ते जमवा उठी नहिं, एटले बीजा पण जम्या नहीं, तेथी जेने घेर रांध्युं हतुं तेना घरना बधा जम्या. तेओ सर्वे रात्रीमां मृत्यु पामी गया. प्रातःकाळे मृत्युनुं कारण तपासतां रांधवाना पात्रमां सर्प जोवामां आव्यो. सर्वेए विचार्युं के, 'रात्रे रांधवा माटे थयेला धुमाडाथी आकुळव्याकुळ थयेलो सर्प अन्नना पात्रमां पड्यो हशे.' पछी सर्वेए मृगसुंदरीने खमावी. मृगसुंदरी बोली के, 'आ कारण माटेज में चुला उपर चंदरवो बांध्यो हतो, अने रात्रे हुं भोजन करती नथी, तेनुं कारण पण अहीं प्रत्यक्ष तमे जोयुं छे.' ते सांभळी सर्वने प्रतिबोध थयो. पछी 'तेणीए सर्वने जीवितदान आप्युं छे' एम मानीने सर्वे तेने कुळदेवीनी जेम मानवा लाग्या; अने ते गामथी सर्वे पाछा पोताने घेर आव्या. अनुक्रमे मृगसुंदरी ने धनेश्वर धर्मनी आराधना करीने स्वर्गे गया. त्यांथी च्यवीने तमे राजा अने राणी थया छो. "हे राजा! तें पूर्वभवे सात चंदरवा बाळी नाख्या हता तेथी आ भवमां सात वर्ष सुधी तने कोढनो व्याधि रह्यो हतो.", आ प्रमाणे पोतानो पूर्व भव सांभळीने ते बंनेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पछी पुत्रने राज्य सोंपी पोटिलाचार्य पासे दीक्षा लइने ते बंने स्वर्गे गया.

"उपरनी कथा सांभळीने जे धार्मिक श्रावक शयनस्थाने, पाणीआरामां अने रसोडा विगेरेमां भावथी चंदरवा बांधे ते उत्तम देवलोकने पामे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
अष्टमव्रतविषये चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३४ ॥

व्याख्यान १३५ मुं.

वळी बीजां प्रमादाचरण दर्शावे छे.

अव्रतप्रत्ययी बंधं, प्रत्याख्यानेन वारयेत् ।
सर्वं प्रयत्नतः कार्यं, तथा द्युतादिसेवनम् ॥ १॥
कुतूहलान्नृत्यप्रेक्षां, कामग्रंथस्य शिक्षणम् ।
सुधीः प्रमादाचरणं, एवमादि परित्यजेत् ॥ २ ॥

भावार्थः—"व्रत लीधा विना अविरतिपणाथी जे कर्मनो बंध पडे छे तेने पच्चख्खाण लेवावडे निवारवो, सर्व कार्य यतनाथी करवुं; अने जुगटा विगेरेनुं रमवुं, कुतूहलथी नृत्य जोवुं, अने कामग्रंथनुं शिखवुं इत्यादि प्रमादाचरण सद्बुद्धिवाळा मनुष्योए छोडी देवां."

विस्तारार्थः—अविरतिवडे थतो कर्मनो बंध पच्चख्खाण करीने निवारवो. देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी-ए चार गतिरूप आ अपार संसारने विषे भ्रमण करता प्राणीओए जे जे देह, आयुष्य भोगवीने अस्थि, लोह अथवा काष्ट रूप पूर्वे छोड्या छे, ते शरीरवडे ज्यारे ज्यारे बीजा जीवोना वधरूप अनर्थ थाय, त्यारे त्यारे प्रथम मुकेला देहनो स्वामी जे जीव तेणे अन्य भवने प्राप्त कर्या छतां पण तेनी सत्तानो त्याग कर्यो नथी एटले ते देहने वोसराव्या नथी तेथी त्यां सुधी तेनावडे थता पापथी लिप्त थाय छे; एटले ज्यां ते गयो होय त्यां ते पाप अविरतिवडे आवे छे. ए तत्त्वार्थ छे. ते विषे श्रीभगवती सूत्रना पांचमा शतकना छठ्ठा उद्देशामां कह्युं छे के, "हे भगवंत ! कोइ मनुष्य धनुष्यमांथी बाण छोडे अने तेनावडे जीव हणाय तो ते पुरुषने केटली क्रियाओ लागे ?" भगवंत उत्तर आपे छे के–"हे गौतम ! जे पुरुष धनुष्यवडे बाण छोडे छे तेने पांच

क्रियाओ लागे छे. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषकी, परितापकी अने प्राणातिपातिकी; अने जे जीवना देहथी ते धनुष्य विगेरे निपज्या होय छे ते जीवने पण ते पांच क्रियाथी स्पर्श थयेला कहेवाय छे. "

अहिं कोइ शंका करे के, " जेणे बाण मुक्युं, तेने तो ते क्रियाओ लागु पडे पण बीजा जीवोने शी रीते लागु पडे ? केमके ते तो मात्र कायरूप छे, अने तेनुं अचेतनपणुं छे. वळी जो एम कहेशो के मात्र शरीरथी पण क्रिया लागे तो सिद्ध थएला जीवोने पण प्रथम मूकेला देहने लीधे बळात्कारे बंध थवो जोइए. कारण के सिद्ध थयेला जीवनो देह पण कोइ ठेकाणे जीवघातनो हेतु होय. वळी जेम धनुष्य विगेरे पापना कारणो छे तेम ते जीवना देहथी थयेला पात्रदंड विगेरे जीवरक्षाना पण हेतु छे. तो ते पुण्यना कारण होवाथी तेनुं पुण्य ते जीवने लागवुं जोइए. एवी रीते बरोबर न्याय थवो जोइए. " तेना उत्तरमां कहे छे के, " अहिं तो अविरतिपणाना भावथी बंध थाय छे अने सिद्ध थयेला जीवोने तो सर्वसंवर होवाथी विरति छे तेथी तेमने बंध थवानो संभवज नथी. तथा पात्रादि जेना देहथी थयेला छे ते जीवोने ते संबंधी विवेकादिकनो अभाव छे माटे तेने पुण्यनो बंध थतो नथी. अथवा श्रीभगवंतना वचन होवाथी सर्व सत्य छे एम जाणवुं. " तेथी अन्य भवांतरे शस्त्रादिरूप थयेला देहनुं पण अधिकरणपणुं छे एम जाणीने अवश्य जेनो जेनो त्याग थइ शके तेम होय तेना तेना प्रत्याख्यान करवा ए भावार्थ छे.

वळी यत्नथी सर्व क्रियाने छोडी देवी; एटले के पोताना कार्यने माटे करेलुं होय पण कार्य समाप्त थये बळतुं इंधणुं पछी बुझावी नाखवुं. अहिं कोइ शंका करे के, ' अग्निने बुझाववामां पण दोष छे तेथी केम बुझावाय ?' ए वात खरी छे पण ' अग्नि दश मोढावाळुं शस्त्र होवाथी तेनावडे बीजा त्रसादि जीवोनो वध थाय छे ते न थवा माटे तेने बुझाववुं जोइए. '

वळी शोध्या वगरना इंधण, छाणा, धान्य अने पाणीनुं वापरवुं, मार्गमां हरित्काय एटले लीलां घास विगेरे उपर चालवुं, नकामा पुष्प अने पात्रां विगेरे तोडवां, भींतमांहेथी खेंचवानी भूगळ करवी, यतना वगर कमाडे अर्गला आपवी, अप्रासुक लवण एटले काचुं मीठुं वापरवुं, नकामा वृक्षनी शाखा तथा मृत्तिका चोळवी, वस्त्रमां रहेला जू विगेरे जीवोने जोयावगर धोबीने आपवा अने श्लेष्म–गलफा–थूंक विगेरे नाख्या पछी धूलि के राखथी न ढांकवा इत्यादि सर्व क्रिया प्रमादाचरण छे, तेथी ते सघळी क्रिया यतनावगर करवी नहीं.

गलफा विगेरेमां एक मुहूर्त्त पछी घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय छे. श्री लोकप्रकाश ग्रंथमां कह्युं छे केः—

पुरिषे च प्रश्रवणे, श्लेष्मसिंघाणयोरपि ।
वांते पित्ते शोणिते च, शुक्रे मृतकलेवरे ॥ १ ॥
पुये स्त्रीपुंससंयोगे, शुक्रपुद्गलविच्युतौ ।
पुरनिर्द्धमने सर्वे-ष्वपवित्रस्थलेषु च ॥ २ ॥

" १ विष्टामां, २ पिशाबमां, ३ श्लेष्म–गलफामां, ४ लींटमां, ५ वमनमां, ६ पित्तमां, ७ रुधिरमां, ८ वीर्यमां, ९ मुडदामां १० परुमां, ११ स्त्रीपुरुषना संयोगमां १२ वीर्यस्खलित थयेलामां, १३ नगरनी खाळमां अने १४ बीजा सर्व अपवित्र स्थळोमां–गर्भज मनुष्य संबंधी ए वस्तुओने विषे एटले पूर्वोक्त १४ स्थानकमां अंतर्मुहूर्त्तना आयुष्यवाळा, एक आंगुळना असंख्येय भाग जेवडा देहवाळा अने सात के आठ प्राणने धारण करनारा असंख्यात संमुर्छिम मनुष्यो उत्पन्न थाय छे." संग्रहिणीनी टीकामां 'नव प्राणवाळा जीव उत्पन्न थाय छे,' एम कहेलुं छे तथा श्रीपन्नवणासूत्रमां श्यामाचार्ये पण तेज प्रमाणे कह्युं छे. तेथी श्लेष्म गलफा विगेरेने यतनाथी ढांकवा.

वळी जुगार विगेरेनुं रमवुं–आदि शब्दथी सोगठाबाजी, गंजीफा, सेत्रंज विगेरेनुं रमवुं. अथवा आदिशब्दथी सात दुर्व्यसन सेववा ते प्रमादाचरण छे. तेथी तेने तजी देवां. कह्युं छे के–" जुगार, मांसभक्षण, सुरापान, वेश्यासंग, शीकार, चोरी अने परस्त्री सेवा आ सात दुर्व्यसन कहेवाय छे. ते प्राणीने घोरातिघोर नरकमां लइ जाय छे." जुगार विगेरेना व्यसनथी प्राणीने पगले पगले विपत्ति प्राप्त थाय छे. जुगार विषे एक कथा छे ते आ प्रमाणे—

जुगार विषे पुरंदरराजानी कथा.

सिद्धपुर नामना नगरमां पुरंदर नामे राजा हतो. ते सुंदर नामना कोइ जुगारी साथे जुगार रमवा लाग्यो. ते जोइ एक वखते तेनी राणीए अमृतसमान वाणीथी राजाने कह्युं के, " हे स्वामी ! जुगारथी नळराजा अने पांडवो पगले पगले निंदाने प्राप्त थइ दुःखी थया छे, तेथी सर्प जेम कांचळीने छोडी दे तेम तमे जुगारने छोडी दो.' इत्यादि वचनोवडे बहु निवार्यो, तोपण राजाए जुगार छोड्यो नहीं. एक वखते राजा तेना नाना भाइ साथे जुगार रमतां राज्य हार्यो. राज्यपाट हारवाथी अनुजबंधुए तेने नगरनी बहार काढी मूक्यो.

राजा राणी अने एक कुमारने लइने अरण्यमां चाली नीकळ्यो. मार्गे जतां कोइ भील्लनी साथे एवुं पण कर्युं के, ' जो हुं जीतुं तो तारी स्त्री लऊं अने हारुं तो माथुं आपुं. ' आवुं पण करी जुगार रम्यो, तेमां राजा जीत्यो. एटले जाणे काजळथी बनावी होय तेवी काळी अने दुर्भाग्यथी निर्माण करेली होय तेवी कुरूपा भीलडीने लइने राजा आगळ चाल्यो. मार्गे चालतां नीच भीलडीने विचार थयो के, ' आ राणी मारी सपत्नी (शोक्य) होवाथी मारी वैरिणी छे माटे तेने मारी नाखुं तो सुख थाय. ' एवो विचार करी जळ भरवानुं मिष करी राणीने कुवा पासे लइ जइ कुवामां नाखी दीधी अने पुरंदरराजा पासे आवीने कह्युं के, ' तमारी राणी तो कोइ बीजा पुरुषने लइने चाली गइ. ' राजा तेना वियोगथी घणो खेद पाम्यो. पछी भीलडी अने कुमारने लइने मार्गे चाल्यो. मार्गमां एक मोटी नदी आवी. भीलडी अने कुमार बंनेने एक साथे नदी उतारवाने असमर्थ होवाथी प्रथम भीलडीने लइने राजा नदीमां पेठो. त्यां कोइ मघर राजाने गळी गयो, अने भीलडी नदीमां तणाइ जवाथी मृत्यु पामी गइ. राजाना भारथी मघर वधारे चाली शक्यो नहीं, एटले कांठा उपर आवीने पड्यो. ढीमर लोकोए तेने पकडीने चीर्यो, एटले तेना उदरमांथी राजा नीकळ्यो. तेने शीतळ पवनथी संज्ञा आवी. एटले ढीमर लोकोए तेने पोताने घेर दास करीने राख्यो. एक वखते राजा मत्स्य लेवाने नदीमां पेठो, त्यां नदीना पूरमां तणाइ जवाथी मृत्यु पाम्यो.

अहिं राणी कुवामां पडी हती तेने कोइ मुसाफरोए कुवामांथी काढी. ते मुसाफरोना सार्थपतिए तेने ' तुं कोण छे ? ' एम पूछ्युं; एटले तेणीए पोतानुं वृत्तांत जे यथार्थ हतुं ते कही बताव्युं. तेथी तेणे पोतानी पासे तेने बहेन करीने राखी.

नदीने कांठे जे राजकुमार रह्यो हतो तेने कोइ विद्याधरी वैताढ्य पर्वत उपर लइ गइ; अने तेने घणी विद्याओनो पात्र करीने अनुक्रमे तेनो पिताना राज्य उपर बेसाड्यो.

एक वखते पेलो सार्थवाह सिद्धपुर नगरमां आव्यो. राणी पोतानुं नगर जाणी पुरुषनो वेष पहेरी सार्थपतिनी साथे सभामां गइ. त्यां पोताना पुत्रने जोइने हर्ष पामी. राजाए ते पुरुषवेषी स्त्रीने जोइने सार्थपतिने ' ते कोण छे ? ' एम पूछ्युं. एटले सार्थवाहे तेनुं बधुं वृत्तांत कही संभळाव्युं. कुमारे हर्ष पामी पोताना सभाजनोनी समक्ष तेना चरणमां प्रणाम कर्यो; अने पोतानी माताने

सुखविलासमय करी दीधी. पछी राजाए नगरमां जुगार विगेरे दुर्व्यसन बंध करवानो पडह वगडाव्यो, अने पोते पण अनर्थदंडथी विराम पामी स्वर्गे गयो.

" सर्पक्रीडा जेवी द्यूतक्रीडाने कयो पुरुष करे, के जेने लीधे पुरंदरराजा पगले पगले विपत्तिने पाम्यो हतो. " जुगार रमवाथी हास्य, वाचाळता (वाचाळपणुं) अने कठोर भाषण विगेरे दुर्गुणो अवश्य प्राप्त थाय छे. अने तेथी वैरनी वृद्धि पण थाय छे. पूर्वे कुमारपाळना प्रसंगमां द्यूतक्रीडा करतां तेनो बन्हेवी " मार मुंडाने " एम हास्यमां बोलवाथी मोटा अनर्थने पाम्यानुं वर्णन आ ग्रंथमांज करेलुं छे. तेथी जुगार विगेरे व्यसनो घणा दुःखने आपनारा छे, अने प्रमादाचरण छे, एम जाणी तेने त्यजी देवा.

वळी कौतुकथी नृत्य जोवुं नहीं. उपलक्षणथी गीत, वेश्या विगेरेनो नाच, भांडभवाइ अने इंद्रजाळ विगेरे पण जोवा नहीं; केमके ते पापने उत्पन्न करनारा छे. तेमज कामग्रंथ जे कोकशास्त्र विगेरे तेनी अंदर कहेला आसन, मंत्र, औषध अने कामोद्दीपन प्रयोग ते शीखवा नहीं. इत्यादि प्रमादाचरणने धर्मज्ञ पुरुषे छोडी देवा. ए बीजा श्लोकनो अर्थ पूर्ण थयो.

अनर्थदंडोऽपविचिंतनादिक–श्चतुर्विधोऽत्र ग्रथितः सदागमे ।
ततः प्रमादो गुणहानिहेतुको, विशेषमुच्यश्चरमे गुणव्रते ॥१॥

भावार्थः—" उत्तम एवा जिनागममां अपध्यान विगेरे चार प्रकारनो अनर्थदंड कहेलो छे, तेमां प्रमाद गुणनी हानि करवामां हेतुरूप छे तेथी छेल्ला गुणव्रतने विषे तेनो विशेषे त्याग करवो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ
अष्टमव्रतविषये पंचत्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१३५॥

इति नवम स्तंभः समाप्तः ।

भाग बीजो संपूर्ण.